

भारतीय भाषा ज्योति डोगरी



भारतीय भाषा संस्थान

(मानव संसाधन विकास मंत्रालय, माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा विभाग, भारत सरकार)

मानसगंगोत्री, मैसूर-570 006, भारत

एवं

डोगरी संस्था

जम्मू-180 001, भारत

भारतीय भाषा ज्योति **डोगरी**

संपादक

वीणा गुप्ता
बी० श्यामला कुमारी
एस० एस० यदुराजन



सत्यमेव जयते

भारतीय भाषा संस्थान

(मानव संसाधन विकास मंत्रालय, माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा विभाग, भारत सरकार)
मानसगंगोत्री, मैसूर - 570 006, भारत

एवं

डोगरी संस्था

जम्मू - 180 001, भारत

Bharatiya Bhasha Jyoti : Dogri

Edited by :

Veena Gupta

B. Syamala Kumari

S.S. Yadurajan

Pp : +

First Published : January 2003
Pausa 1924

© Central Institute of Indian Languages, Mysore, 2002

This material may not be reproduced or transmitted, either in part or in full, in any form or by any means, electronic, or mechanical, including photocopy, recording, or any information storage and retrieval system, without permission in writing from :

Prof. Udaya Narayana Singh

Director

Central Institute of Indian Languages

Manasagangotri, Mysore – 570 006, INDIA

Phone : 0091/0821-515820 (Director)

Telex : 0846-268 CIIL IN

E-mail : udaya@ciil.stpmv.soft.net (Director)

bhasha@sancharnet.in

EPABX : 0091/0821-515558

Grams : BHARATI

Fax : 0091/0821-515032

Website : <http://www.ciil.org>

Price : Rs. 100-00 (\$ 10-00)

For Copies :

Dogri Sanstha

Jammu - 180 001

India

&

Publication Unit

Central Institute of Indian Languages

Manasagangotri P.O., Hunsur Road

Mysore – 570 006, India

Published by Prof. Udaya Narayana Singh, Director

Central Institute of Indian Languages, Mysore and

Prof. Lalit Magotra, President

Dogri Sanstha, Jammu.

Printed by Kuldeep Sharma

Classic Printers, Bari Brahmana, Jammu – 181 133, India

विषय सूची

	पृष्ठ संख्या
प्राक्कथन	5
आभार	9
भूमिका	11
1. एह् केह् ऐ ? (यह क्या है ?)	17
2. तुस कु'न ओ ? (आप कौन हैं ?)	29
3. मेरा घर (मेरा घर)	39
4. जान-पन्छान (जान-पहचान)	50
5. रसोई-घर (रसोई-घर)	57
6. जनरल स्टोर (जनरल स्टोर)	66
7. ग्रांड-सुधार (ग्राम-सुधार)	77
8. स्कूलै दी तयारी (स्कूल की तैयारी)	87
9. दोस्तै दा घर (दोस्त का घर)	100
10. दोस्तें दी गल्लबात (दोस्तों की बातचीत)	114
11. पिकनिक बारै (पिकनिक के बारे में)	124

12. कुदरत दी गोदै च (प्रकृति की गोद में)	133
13. सब्झैरी (दोपहर का भोजन)	146
14. धाम बनाने दी त्यारी (सामूहिक भोजन बनाने की तैयारी)	157
15. किशतवाड़ दी यात्रा (किशतवाड़ की यात्रा)	170
16. घर-परिवार (घर-परिवार)	183
17. मेले जागे (मेले जाएँगे)	197
18. गल्लें-गल्लें च (बातों-बातों में)	209
19. डोगरी कान्फ्रेंस (डोगरी कान्फ्रेंस)	219
20. डोगरी बुझारतां (डोगरी पहेलियां)	230
21. जम्मू सूबे दे मशहूर धार्मिक थाहर (जम्मू प्रान्त के प्रसिद्ध धार्मिक स्थान)	234
22. ग्राई ते शैहरी वातावरण (ग्रामीण तथा शहरी वातावरण)	242
23. डुग्गर दे पर्व-तेहार (डुग्गर के पर्व-त्योहार)	250
24. डोगरी लोकगीत (डोगरी लोकगीत)	258
25. डोगरी साहित्य दा परिचे (डोगरी साहित्य का परिचय)	267

प्राक्कथन

सदियों से भारत में बहुभाषिकता का प्रचलन रहा है— यह बात अब सर्वजनविदित है। वाणिज्य और अर्थ—व्यवस्था की दृष्टि से बहुत आगे बढ़ गये हैं— ऐसे देश के निवासियों के लिए भारत की बहुभाषिकता अभी भी पहेली जैसी ही है। उनके देशों में अनेक नस्ल के लोग अपने गीत—संगीत, खाना—खजाना, वेश—आभूषण तथा रहन—सहन को लेकर आते रहे हैं, पर कुछ ही समय में उनका अपनत्व विलीन हो जाता है। अतः उनके लिए भारत में एक साथ अनेक भाषाओं का इस क्रूर सदियों से कथित, पठित, प्रस्फुटित रह पाना एक अजीबो—गरीब मिसाल जैसा है जिसकी व्याख्या दे पाना मुश्किल काम है। पर किसी भारतीय की रोजमर्रा की ज़िन्दगी की ओर अगर हम गौर करें तो यह देखेंगे कि वह एक ही साथ प्रतिदिन अलग—अलग काम में पृथक्—पृथक् परिस्थितियों में भिन्न—भिन्न भाषा का प्रयोग करता है। अगर हम देखते हैं कि कोई चाय के बगीचे में मज़दूरों के साथ बिहारी बोलियों में, उनके संचालकों के साथ असमिया में, दफ्तर में अंग्रेज़ी में और मनोरंजन के लिए फिल्म तथा टी०वी० में हिन्दी का व्यवहार करता है और घर में अपने लोगों के साथ बंगला में बात करता है तो हमें ऐसी स्थिति में कोई अस्वाभाविकता नज़र नहीं आती है। यहाँ न केवल व्यक्ति बहुभाषी है, भाषिक स्थितियों में भी बहुभाषिकता ग्रथित है। वह तभी संभव हो सकता है जब किसी मुल्क में भाषाएँ जोड़ने का काम करती हैं, तोड़ने का नहीं। लोग अक्सर यह भूल जाते हैं कि भारत में आये, बसे और जन्मे हज़ारों क्षेत्र के लोगों के लिए उनकी भाषाएँ ही वह साधन रही हैं जो एक दूसरे को आपस में जोड़ती रही हैं।

भारतीय भाषा संस्थान इसी भाषिक संयोग को, आदान—प्रदान को बरकरार रखने में और इसमें और इज़ाफ़ा करने के काम में अपने को समर्पित करता आया है। आधुनिक भारतीय भाषाओं के शिक्षण—प्रशिक्षण का क्षेत्र इस संस्थान के लिए सब से महत्वपूर्ण क्षेत्र रहा

है। यहाँ से प्रकाशित पौने चार सौ के करीब किताबों में से आधी से ज़्यादा भाषा-शिक्षण के क्षेत्र में ही हो रही हैं।

जैसा कि भारतीय भाषा के अध्ययन-अध्यापन से जुड़े लोगों को पता ही है, 1969 में स्थापित होने के बाद से भारतीय भाषा संस्थान का मुख्य उद्देश्य रहा है सभी भारतीय भाषाओं का विकास करना एवं उनमें आवश्यकतानुसार पाठ्य-सामग्री तैयार करना। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए मुख्य भारतीय भाषाओं के अलावा बहुत सी जन-जातीय भाषाओं पर शोध हो रहा है और उनमें पाठ्य-सामग्री तैयार की जा रही है। इसके अतिरिक्त त्रिभाषा सूत्र के अंतर्गत भारतीय भाषा संस्थान के मैसूर, पूणे, भुवनेश्वर, पटियाला, सोलन, लखनऊ एवं गुवाहाटी में स्थित क्षेत्रीय भाषा केन्द्रों के माध्यम से प्रति वर्ष जुलाई से अप्रैल तक भारत के विभिन्न राज्यों के अध्यापकों को उनकी इच्छानुसार अथवा संबंधित राज्य की भाषा प्रणाली के अन्तर्गत वांछित भाषाओं में दस मास का गहन प्रशिक्षण दिया जाता है। इस प्रशिक्षण के उपरान्त ये अध्यापक सीखी गई भाषा को सम्बन्धित राज्यों के विद्यालयों में पाठ्यक्रम के अन्तर्गत अथवा ऐच्छिक विषय के रूप में पढ़ाते हैं।

पर अब एक द्वितीय भाषा शिक्षण की जितनी अच्छी किताबें आती रही हैं- खास तौर पर भारतीय भाषाओं के सीखने सिखाने की किताबें- वे सभी अंग्रेजी के माध्यम से ही रची-बनी छपी-छपायी गयी हैं। उनके रचयिता और प्रकाशक शायद सोचते हैं कि अंग्रेजी के माध्यम को अपनाने से द्वितीय भाषा शिक्षण (Second language learning) और विदेशी भाषा शिक्षण (Foreign language learning) दोनों के लिए उनकी किताबें प्रयोग में आ सकती हैं। सोचा होगा कि इस तरह से ऐसी किताबें बाज़ार में खरी उतरेंगी। लेकिन दक्षिण एशियाई देशों में बसे और यहाँ के किसी न किसी भाषा को मातृभाषा के रूप में बोलने वालों के लिए किसी भारतीय जुबान को सीखना और इसके दायरे के बाहर के लोगों के लिए हमारी भाषाओं पर अधिकार प्राप्त करना तो बिलकुल अलग शिक्षण-प्रक्रियायें हैं। अतः इन दोनों लक्ष्य-गोष्ठियों के लिए दो अलग तरह की सामग्री की आवश्यकता है। एक और कदम आगे जा कर इस अपने लंबे तजुर्बे से मैं यह भी कह सकता हूँ कि अगर किसी भारतीय

को एक अन्य भारतीय भाषा सीखनी-सिखानी है तो वह काम अगर एक भारतीय भाषा के जरिये ही की जा सकती है। उस लिहाज़ से माध्यम भाषा के रूप में हिन्दी का नाम आना स्वाभाविक है कारण इसको मातृ-भाषा तथा अन्य-भाषा के रूप में बोलने-जानने वाले भारतीय लोगों की संख्या इतनी बड़ी है कि भारतीय संदर्भ में हिन्दी के माध्यम से अन्य अनुसूचित भाषाओं को सिखाने की वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत सामग्री अब तक क्यों नहीं आयी थी, यही एक आश्चर्य-जनक बात है। इस कमी की आपूर्ति के लिए और इन ज़रूरतों को देखते हुये भारतीय भाषा संस्थान ने 'भारतीय भाषा ज्योति' की एक पुस्तक-शृंखला की संकल्पना की है।

त्रिभाषा सूत्र के अन्तर्गत हिन्दी भाषी राज्यों में अन्य भारतीय भाषाओं का तीसरी भाषा के रूप में प्रचलन तो अवश्य हुआ है परन्तु भाषा अध्यापकों एवं पुस्तकों की कमी के कारण वांछित सफलता नहीं मिल पाई। अन्य भारतीय भाषाओं एवं विशेष रूप से दक्षिण भारतीय भाषाओं के अध्ययन एवं अध्यापन हेतु उत्तर प्रदेश की राज्य सरकार एवं कुछ स्वायत्त संस्थाओं ने एक अभियान कुछ वर्ष पहले प्रारंभ किया था। चयनित भाषाओं की वांछित पुस्तक एवं भाषा अध्यापकों के विशिष्ट प्रशिक्षण एवं नियुक्ति हेतु राज्य सरकार ने भारतीय भाषा संस्थान का सहयोग आवश्यक समझा। इसी सहयोग की कड़ी में उत्तर प्रदेश की राज्य सरकार के अनुरोध पर भारतीय भाषा संस्थान ने राज्य के भाषा विभाग के साथ मिलकर असमी, बंगला, उड़िया, मराठी, गुजराती, सिंधी, कश्मीरी, पंजाबी, कन्नड़, मलयालम, तमिल एवं तेलुगु भाषाओं की पाठ्य-सामग्री के निर्माण हेतु कार्यशालाएँ आयोजित कीं। इन कार्यशालाओं के माध्यम से इन सभी भाषाओं की पाठ्य पुस्तकें तैयार की गई थीं। ये पुस्तकें 'भारतीय भाषा ज्योति' पुस्तक-शृंखला के अंतर्गत आ रही हैं।

इस शृंखला के साथ एक और महत्वपूर्ण भाषा एवं संस्था जुड़ी हुई है और वह है जम्मू-कश्मीर राज्य के जम्मू प्रान्त की प्रमुख भाषा डोगरी एवं इस भाषा की प्रगति की ओर अग्रसर 'डोगरी संस्था, जम्मू'। इस संस्था के सहयोग से हमारी सामग्री का परीक्षण-निरीक्षण संभव हो रहा है और इस सामग्री को उत्साही जनता तक पहुँचाने में भी, यानि इसके प्रकाशन

और मुद्रण में इनका योगदान—सराहनीय रहा है। अतः “भारतीय भाषा ज्योति—डोगरी” पुस्तक इसी संस्था के सहयोग से प्रकाशित हुई है।

दोनों संस्थाओं की ओर से मैं आशा करता हूँ कि भारतीय भाषा ज्योति शृंखला की यह डोगरी पुस्तक समस्त हिन्दी भाषा—भाषियों के लिए उपयोगी होगी। इसके माध्यम से वे न केवल सम्बन्धित भाषा के अध्ययन में रुचि का परिचय देंगे, अपितु उसके प्रचार में भी अपना अमूल्य योगदान देंगे।

मैसूर

दिनांक : 17.10.2002


(उदय नारायण सिंह)

निदेशक, भारतीय भाषा संस्थान

आभार

भारतीय भाषा संस्थान द्वारा जुलाई-अगस्त, 1997 में स्नातकोत्तर डोगरी विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय के सहयोग से डोगरी विभाग जम्मू में एक कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें लगभग 11 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यशाला में उन लोगों के डोगरी सीखने के उद्देश्य से भारतीय भाषा ज्योति-डोगरी नामक 'एक गहन पाठ्यक्रम' की रूपरेखा एवं सामग्री तैयार की गई, जिनकी मातृभाषा डोगरी नहीं। तत्पश्चात् दिसम्बर 1997 में भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर की ओर से संस्थान में ही एक दस दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें इस पुस्तक की सामग्री को अन्तिम रूप दिया गया।

डोगरी सीखने के इच्छुक लोगों के लिए प्रस्तुत सामग्री की उपयोगिता आश्वस्त बनाने हेतु संस्थान की ओर से नवम्बर 1998 में डोगरी संस्था जम्मू के सहयोग से आठ दिवसीय प्रशिक्षण कोर्स का आयोजन डोगरी भवन, कर्ण नगर, जम्मू में किया गया, जिसमें विभिन्न कॉलेजों, हायर सैकेंड्री स्कूलों आदि से 21 अध्यापकों ने प्रशिक्षण लिया।

इस कार्य की सम्पूर्णता एवं सफल प्रकाशन में भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर ने जो अमूल्य योगदान दिया उसके लिए संस्थान के निदेशक प्रो० उदय नारायण सिंह के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ तथा शिक्षा सामग्री निर्माण तथा प्रशिक्षण विभाग की अनुसंधान अधिकारी श्रीमती बी० श्यामला कुमारी तथा अनुसंधान सहायक श्री एस०एस० यदुराजन जी के प्रयत्नों के लिए हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ।

मैं जम्मू विश्वविद्यालय के डोगरी विभाग की तत्कालीन अध्यक्ष प्रो० चम्पा शर्मा और उनके सहयोगियों का आभारी हूँ जिन्होंने कार्यशालाओं के आयोजन एवं प्रस्तुत सामग्री को प्रारूप देने में अपना भरपूर सहयोग दिया। भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर के तत्कालीन निदेशक डॉ० ओंकारनाथ कौल के प्रति आभार व्यक्त करना मेरा परम कर्तव्य है क्योंकि उन्होंने इस कार्य की योजना के लिए और इसकी सर्वांग सम्पन्नता के लिए भरपूर सहयोग दिया।

स्नातकोत्तर डोगरी विभाग की अध्यक्ष एवं डोगरी संस्था जम्मू की महामंत्री प्रो० वीणा गुप्ता का विशेष आभारी हूँ जिन्होंने इस सामग्री के संपादन एवं प्रकाशन कार्य में अनथक मेहनत व लगन का प्रमाण दिया।

प्रस्तुत पुस्तक की सामग्री तैयार करने हेतु आयोजित कार्यशाला के प्रतिभागियों-

1. प्रो० चम्पा शर्मा
2. डॉ० वीणा गुप्ता
3. डॉ० शशि पठानिया
4. डॉ० शिवदेव सिंह मन्हास
5. डॉ० सत्यपाल श्रीवत्स
6. डॉ० सुरिन्दर गंडलगाल
7. श्री लक्ष्मी दत्त शास्त्री
8. डॉ० सर्मिष्ठा शर्मा
9. डॉ० शशि बजाज
10. डॉ० चंचल भसीन और
11. श्री पवितर सिंह सलाथिया

के प्रति भी आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने सामग्री तैयार करने में लगन व परिश्रम का परिचय दिया।

प्रो० ललित भगोत्रा

प्रधान,
डोगरी संस्था, जम्मू।

भूमिका

रियासत जम्मू कश्मीर एकाधिक संस्कृतियों का संगम होने के कारण एक बहुभाषी राज्य है और डोगरी इस राज्य की द्वितीय प्रमुख भाषा है। राज्य की शीतकालीन राजधानी जम्मू प्रान्त के अधिकांश क्षेत्र की यह मातृभाषा है। राज्य के संविधान में मान्यता प्राप्त कश्मीरी, डोगरी, लद्दाखी, हिन्दी, बलती, पहाड़ी, पंजाबी, उर्दू आदि भाषाओं में भी इसे द्वितीय स्थान प्राप्त है। भारत की सीमावर्ती भाषा होने के कारण उत्तर-भारत के भाषाई नक्शे में इसका विशेष स्थान है। यह भारत की अन्य आधुनिक भाषाओं की अपेक्षा अधिक संयोगात्मकता, सुदृढ़ व्याकरणिक व्यवस्था एवं भाषाई विलक्षणताओं से गौरवान्वित है।

प्रस्तुत पुस्तक उन लोगों की सुविधा के लिए तैयार की गई है जिनकी मातृभाषा डोगरी नहीं है और जो डोगरी सीखने और उसमें बातचीत करने के इच्छुक हैं। जम्मू प्रान्त का अधिकांश क्षेत्र सीमावर्ती क्षेत्र होने के कारण रक्षा के विशेष साधनों से सम्पन्न रहता है अतः इस क्षेत्र में विशेष सैनिक बल सेवारत रहते हैं जिन्हें अपने सेवा-काल में इस क्षेत्र की भाषा को समझने और उसमें बातचीत करने की आवश्यकता होती है। दूसरा, पर्यटन की दृष्टि से भी इस प्रदेश का राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विशेष स्थान है। श्री वैष्णो देवी जी के पवित्र तीर्थ स्थल पर वर्ष भर श्रद्धालुओं का तान्ता बँधा रहता है। उधर श्री अमरनाथ जी के पवित्र दर्शनों के लिए भी देश भर से असंख्य श्रद्धालु आते हैं और इस यात्रा का मुख्य द्वार भी जम्मू ही है। श्रद्धालु जन आते-जाते जम्मू नगर में ही रुकते-ठहरते हैं। इसके अतिरिक्त वादी कश्मीर तथा जम्मू प्रान्त के अन्य पर्यटन स्थलों के लिए भी काफी संख्या में पर्यटक यहाँ आते हैं जिन्हें अपनी यात्रा-अवधि में जन-साधारण से सम्पर्क स्थापित करने एवं सामान्य सेवाओं की प्राप्ति हेतु डोगरी भाषा समझने और इसमें विचार-अभिव्यक्ति के लिए यह भाषा सीखने की आवश्यकता होती है। तीसरा, पिछले कुछ वर्षों से वादी कश्मीर में अस्थिर परिस्थितियों के कारण बहुत से कश्मीरी भाषी जम्मू क्षेत्र में आ बसे हैं जो डोगरी भाषा को न तो समझ ही सकते हैं और न ही इस क्षेत्र के लोगों से सम्यक रूपेण बातचीत कर सकते हैं। अतः इस क्षेत्र में अपना जीवन सुचारु ढंग से चलाने हेतु उन सब के लिए भी डोगरी भाषा सीखना अनिवार्य प्रतीत होता है।

इन सब बातों को दृष्टि में रखते हुए इस पुस्तक का प्रकाशन भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर की एक उपलब्धि है। यह पुस्तक हिन्दी माध्यम में तैयार की गई है इसकी भी विशेष उपयोगिता है। भारतवर्ष क्योंकि विभिन्न भाषा-बोलियों रूपी फूलों का एक सुंदर एवं वृहत् गुलदस्ता है और इस क्षेत्र में आने वाले पर्यटक एवं सैनिक बल विभिन्न भाषा-प्रदेशों से हो सकते हैं। जहां तक हिन्दी भाषा का सम्बन्ध है वह हमारे देश की राष्ट्रभाषा होने के कारण लगभग सभी भारतवासियों के बीच सम्पर्क-भाषा की भूमिका निभाती है। अतः हिन्दी भाषा के माध्यम से डोगरी सीखना अधिकांश लोगों के लिए उपादेय होगा।

यहां पर इस बात का उल्लेख करना अनुचित न होगा कि डोगरी भाषा की अपनी लिपि थी जिसको 'डोगरा अक्खर' अथवा 'डोगरा लिपि' कहा जाता था। उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त तक प्रदेश के सार्वजनिक क्षेत्र में इसका प्रयोग औपचारिक एवं अनौपचारिक कार्यों के लिए होता रहा और उस समय यह लिपि केवल डोगरी भाषा के लिए ही नहीं अपितु हिन्दी, उर्दू, पंजाबी, संस्कृत आदि भाषाओं के लिए भी प्रयुक्त होती रही। आज सार्वजनिक क्षेत्र में जहां अन्तर्राष्ट्रीय भाषा अंग्रेजी, राष्ट्रीय भाषा हिन्दी एवं राजकीय भाषा उर्दू का प्रयोग हो रहा है वहां डोगरी साहित्य-रचना के लिए देवनागरी लिपि का प्रयोग किया जा रहा है। इक्की-दुक्की रचनाओं को छोड़ लगभग समूचा साहित्य देवनागरी लिपि में ही प्रकाशित हुआ है और उधर हिन्दी-भाषा लेखन के लिए भी देवनागरी लिपि ही प्रयुक्त होती है। इस संदर्भ में एक महत्वपूर्ण बात यह है कि देवनागरी लिपि के अधिकांश वर्णों का उच्चारण डोगरी और हिन्दी दोनों भाषाओं में समान है केवल कुछ-एक वर्ण (लिपि चिन्ह) हैं जो डोगरी भाषा में हिन्दी भाषा से उच्चारण-भिन्नता रखते हैं। ये वर्ण हैं घ, झ, ढ, ध, भ और ह। शब्दों के आरम्भ में आने पर इनका उच्चारण अपने-अपने वर्ग के अघोष, अल्पप्राण व्यञ्जनों क्रमशः क्, च्, ट्, (ढ् शब्दादरम्भ में नहीं आती) त्, और प् में परिवर्तित होकर साथ में निम्नारोही सुर (Low-rising tone) का योग ग्रहण करता है। जैसे :

घर	(kàr)	“घर”	भूत	(pù:t)	“भूत”
ढोल	(tòl)	“ढोल”	धारा	(tà:ra:)	“धारा”
झूठ	(chù:th)	“झूठ”			

मध्यस्थिति में आने पर इन वर्णों का उच्चारण अपने-अपने वर्ग के सघोष, अल्पप्राण व्यञ्जनों में परिणत होकर परिवेश के आधार पर कभी उच्चावरोही (High-falling) और कभी निम्नारोही (Low-rising) सुर का योग ग्रहण करता है। यदि इन वर्णों से पूर्व दीर्घ एवं बलशाली अक्षर (स्वर) होता है तो इन वर्णों का उच्चारण उच्चावरोही सुर युक्त होता है और यदि इनके पूर्व ह्रस्व और बलहीन तथा बाद में दीर्घ एवं बलशाली स्वर होता है तो इनका उच्चारण निम्नारोही सुर से युक्त होता है जैसे :-

पूर्व स्वर (अक्षर) दीर्घ अथवा बलशाली	पश्चात्पूर्वी स्वर दीर्घ अथवा बलशाली
बाघड़ बिल्ला (bāgarbilla) “बाघ”	मघेर (mag̃er) “माघ”
रांझन (rānjan) “रांझा”	समझाना (s̃emjāna) “समझाना”
बड़दना (bād̃dāna) “काटना”	बढाना (b̃ēd̃āna) “कटवाना”
पढ़ना (pār̃ṇa) “पढ़ना”	पढ़ाना (p̃ēr̃āna) “पढ़ाना”
साधना (sādh̃ṇa) “साधना”	बधाना (b̃ēd̃āna) “बढ़ाना”
निभना (nīb̃ṇa) “निभना”	नभाना (ñēb̃āna) “निभाना”

शब्दान्त में इन वर्णों का परिवेश पूर्व स्वर के दीर्घ अथवा बलशाली होने की स्थिति वाला होता है अतः इनका उच्चारण भी सघोष अल्पप्राण व्यञ्जन के समान उच्चावरोही सुर युक्त होता है। जैसे :-

अर्घ (ārg) “अर्घ”	सांझ (sānj) “भाभीदारी”
कड़द (kād̃d) “निकाल”	पढ़ (p̃ēr̃) “पढ़”
बध (b̃ēd) “बढ़”	खब्ब (kh̃ēbb) “गड़ढा”

इसी प्रकार सघोष महाप्राण संघर्षी व्यञ्जन ‘ह’ भी वास्तविक रूप में कुछ एक शब्दों जैसे हाहाकार (हाहाकार), पैहा (पैसा), नेहा (नहीं था), नेहियां (नहीं थीं), नेहे (नहीं थे) नहो (नहीं) आदि शब्दों में ही अपने हकारत्व रूप में उच्चरित होता है या कालसूचक योजक क्रिया हा, हे, ही, हियां, में अन्यथा सघोष, महाप्राण, स्पर्श, व्यञ्जनों की भांति परिवेश के आधार पर केवल उच्चावरोही और निम्नारोही सुरों में परिणत हो जाता है। जैसे :-

हार	(àr)	“हार”	हैल	(èl)	“हैल”
हीरा	(ira)	“हीरा”	होर	(òr)	“होर”
हूर	(ùr)	“हूर”	हौला	(òla)	“हौला”
हेत	(èt)	“हेत”			

मध्य स्थिति में

पूर्व स्वर दीर्घ अथवा बलशाली

पश्चात् स्वर दीर्घ अथवा बलशाली

बाहर	(bár)	“बाहर”	ब्हार	(bàr)	“बाहर”
कीहल	(kíl)	मन्त्र द्वारा किसी अनिष्टकारी शक्ति के प्रभाव को नष्ट करना	कहानी	(kàni)	“कहानी”
चूहक	(chúk)	“छोर, कोना”	तम्हूड़ी	(təmùṛi)	“ततैया”
देहल	(dél)	“लड़के के विवाह पर बेटियों को दिया जाने वाला नेग”	दर्हेड़ना	(drèṛṇa)	“उधेड़ना”
मैहल	(mél)	“महल”	सरहैना	(sarḛna)	“तकिया”
कोहल	(kól)	अनाज भंडार करने के लिए मिट्टी का सन्दूक	थोना	(thòna)	“प्राप्त होना”
खौहरा	(khóra)	“कर्कश”	म्हौल	(mòl)	“माहौल”

शब्दान्त में ‘ह’ व्यञ्जन का उच्चारण सर्वदा अपने पूर्ववर्ती स्वर (अक्षर) को उच्चावरोही सुर प्रदान करता है और स्वयं लुप्त रहता है। जैसे :

साह	(sá)	“साँस”	बाह	(bá)	“वास्ता”
बीह	(bí)	“बीस”	त्रीह	(trí)	“तीस”
खूह	(khú)	“कुआँ”	मूँह	(mũ)	“मुँह”
रेह	(ré)	“रहे”	खेह	(khé)	“राख”
रोह	(ró)	“रोष”	मोह	(mó)	“मोह”

देवनागरी के 'ऋ' और 'ॠ' वर्णों का प्रयोग डोगरी में नहीं होता, किन्तु, हिन्दी, संस्कृत आदि के तत्सम, शब्दों में ये वर्ण लिखे अवश्य जाते हैं। इसी प्रकार देवनागरी के 'य' और 'व' वर्ण भी डोगरी में प्रायः शब्दारम्भ में 'ज' तथा 'ब' रूपों में उच्चरित होते हैं तथापि तत्सम शब्दों में इनका प्रयोग भी होता है।

प्रस्तुत पुस्तक 25 पाठों पर आधारित है। पुस्तक में पाठ-व्यवस्था डोगरी भाषा की व्याकरणिक व्यवस्था और भाषा की विलक्षणताओं को ध्यान में रखकर की गई है। हर पाठ की पाठ्य सामग्री वार्तालाप शैली में दी गई है और साथ में उनका हिन्दी अनुवाद भी दिया गया है ताकि लक्ष्य भाषा को समझने वाले, बोलने, पढ़ने और लिखने की योग्यता प्राप्त कर सकें। अभ्यास के बाद 'शब्दावली' के अन्तर्गत डोगरी शब्दों के हिन्दी समानार्थी-शब्द भी दिए गये हैं। शब्द उसी क्रम में रखे गए हैं जिस क्रम से पाठ में प्रयुक्त हुए हैं। अन्त में पाठ में प्रयुक्त व्याकरणिक ईकाइयों पर टिप्पणियां भी दी गई हैं।

पुस्तक के परिशिष्ट भाग में पुस्तक में आए हुए शब्दों की सांस्कृतिक टिप्पणियां दी गई हैं। जिनसे शिक्षार्थियों को डोगरी-संस्कृति के विशेष पक्ष की जानकारी भी प्राप्त हो सकेगी और ये भाषा और उसके संपूर्ण परिवेश से परिचित हो सकेंगे। आशा है यह पुस्तक डोगरी सीखने के इच्छुक लोगों, जिनकी मातृभाषा डोगरी नहीं है, के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

प्रो० वीणा गुप्ता
अध्यक्षा, डोगरी विभाग
जम्मू विश्व विद्यालय, जम्मू।

पाठ-1
एह केह ऐ?
(यह क्या है?)

विद्यार्थी : एह केह ऐ सर?

विद्यार्थी : यह क्या है सर?

अध्यापक : एह कताब ऐ, एह कापी
ऐ ते ओह पैसल ऐ।
अच्छा। एह केह ऐ?

अध्यापक : यह किताब है, यह कापी
है और वह पैसिल है।
अच्छा। यह क्या है?

विद्यार्थी : ओह कताब ऐ।

विद्यार्थी : वह किताब है।

अध्यापक : ते एह केह ऐ?

अध्यापक : और यह क्या है?

विद्यार्थी : ओह पैसल ऐ।

विद्यार्थी : वह पैसिल है।

अध्यापक : नेई, एह कान्नी ऐ।

अध्यापक : नहीं, यह कलम है।

विद्यार्थी : ओह केह ऐ सर?

विद्यार्थी : यह क्या है सर?

अध्यापक : ओह बारी ऐ दरोआजा
नेई।
ओह केह ऐ?

अध्यापक : वह खिड़की है दरवाजा
नहीं।
वह क्या है?

विद्यार्थी : ओह मेज ऐ नां?

विद्यार्थी : वह मेज है न?

अध्यापक : हां, ओह मेज ऐ
ते एह केह ऐ?

अध्यापक : हाँ वह मेज है
और यह क्या है?

विद्यार्थी : ओह कान्नी ऐ।

विद्यार्थी : वह कलम है।

अध्यापक : कताब केहड़ी ऐ ते
कापी केहड़ी ऐ?

अध्यापक : किताब कौन सी है और
कापी कौन सी है?

विद्यार्थी : एह कताब ऐ ते ओह
कापी।

विद्यार्थी : यह किताब है और वह
कापी।

- अध्यापक : एह केह ऐ ?
- विद्यार्थी : ओह कुर्सी ऐ।
- अध्यापक : एह कुर्सी नेई डैस्क ऐ।
ओह कुर्सी ऐ। ओह केह ऐ ?
- विद्यार्थी : ओह पक्खा ऐ नां ?
- अध्यापक : हां, ओह पक्खा ऐ।
दरोआजा केहड़ा ऐ ते
बारी केहड़ी ऐ ?
- विद्यार्थी : ओह दरोआजा ऐ ते
ओह बारी ऐ।
- अध्यापक : एह कताबां न।
ओह कापियां न।
- विद्यार्थी : एह कताबां न ते ओह
कापियां।
- अध्यापक : कापियां केहड़ियां न ते
पैसला केहड़ियां न ?
- विद्यार्थी : एह कापियां न ते ओह
पैसलां।
- अध्यापक : ओह मेज न। एह पक्खे न।
मेज केहड़े न ते पक्खे केहड़े ?
- विद्यार्थी : ओह मेज न ते एह पक्खे।
- अध्यापक : ओह दरोआजे न ते
ओह बारियां न। ओह
केह न ?
- अध्यापक : यह क्या है ?
- विद्यार्थी : वह कुर्सी है।
- अध्यापक : यह कुर्सी नहीं डेस्क है।
वह कुर्सी है। वह क्या है ?
- विद्यार्थी : वह पंखा है न ?
- अध्यापक : हाँ, वह पंखा है।
दरवाजा कौन सा है और
खिड़की कौन सी है ?
- विद्यार्थी : वह दरवाजा है और वह
खिड़की है।
- अध्यापक : ये किताबें हैं।
वे कापियें हैं।
- विद्यार्थी : ये किताबें हैं और वे
कापियां।
- अध्यापक : कापियें कौन सी हैं और
पेंसिलें कौन सी हैं ?
- विद्यार्थी : ये कापियें हैं और वे
पेंसिलें।
- अध्यापक : वे मेज़ हैं। ये पंखे हैं। मेज़
कौन से हैं और पंखे कौन से ?
- विद्यार्थी : वे मेज़ हैं और ये पंखे।
- अध्यापक : वे दरवाजे हैं और वे
खिड़कियां। वे क्या हैं ?

विद्यार्थी : ओह् डैस्क न।	विद्यार्थी : वे डेस्क हैं।
अध्यापक : बारियां केहड़ियां न ?	अध्यापक : खिड़कियां कौन सी हैं ?
विद्यार्थी : एह् बारियां न।	विद्यार्थी : ये खिड़कियां हैं।
अध्यापक : एह् माला ऐ ते एह् पैन। माला केहड़ी ऐ ?	अध्यापक : यह माला है और यह पेन। माला कौन सी है ?
विद्यार्थी : ओह् माला ऐ।	विद्यार्थी : वह माला है।
अध्यापक : एह् पैन न ते ओह् मालां न। पैन केहड़े न ?	अध्यापक : ये पेन हैं और वे मालाएं हैं। पेन कौन से हैं ?
विद्यार्थी : एह् पैन न।	विद्यार्थी : ये पेन हैं।
अध्यापक : ते मालां केहड़ियां ?	अध्यापक : और मालाएं कौन सी हैं ?
विद्यार्थी : ओह् मालां न नां।	विद्यार्थी : वे मालाएं हैं न।
अध्यापक : दोस्तो। एह् केह्-केह् न ?	अध्यापक : दोस्तो। ये क्या-क्या हैं ?
विद्यार्थी : सर! एह् मालां न, बारियां न, कापियां न, पेंसलां न, कताबां न ते कुर्सियां न।	विद्यार्थी : सर! ये मालाएं हैं खिड़कियां हैं, कापियां हैं, पेंसिलें हैं, किताबें हैं और कुर्सियां हैं।
अध्यापक : ते ओह् केह्-केह् न ?	अध्यापक : और वे क्या-क्या हैं ?
विद्यार्थी : ओह् पैन न, मेज न, डैस्क न, पक्खे न ते दरोआजे न।	विद्यार्थी : वे पेन हैं, मेज हैं, डेस्क हैं, पंखे हैं और दरवाजे हैं।

EXERCISES

1. Repetition Drill (पुनरुक्ति अभ्यास)

एह् कताब ऐ।

एह् कताबां न।

एह् कापी ऐ।

एह् कापियां न।

ओह कुर्सी ऐ।

ओह बारी ऐ।

एह मेज ऐ।

एह दरोआजा ऐ।

ओह पक्खा ऐ।

ओह डैस्क ऐ।

एह मेज ऐ ते ओह कुर्सी।

बारी केहड़ी ऐ ते दरोआजा केहड़ा ?

ओह कुर्सियां न।

ओह बारियां न।

एह मेज न।

एह दरोआजे न।

ओह पक्खे न।

ओह डैस्क न।

एह मेज न ते ओह कुर्सियां।

बारियां केहड़ियां न ते दरोआजे केहड़े ?

2. Substitution Drill (स्थानापन्न अभ्यास)

Model (i)

एह कुर्सी ऐ (कताब)

एह कताब ऐ।

(कापी)

(पैसल)

(कान्नी)

Model (iii)

ओह कुर्सियां न। (पैसलां)

ओह पैसला न।

(कताबां)

(कापियां)

(बारियां)

Model (ii)

ओह दरोआजा ऐ। (मेज)

ओह मेज ऐ।

(डैस्क)

(पक्खा)

(पैन)

Model (iv)

एह दरोआजे न। (पक्खे)

एह पक्खे न।

(मेज)

(पैन)

(डैस्क)

3. Response Drill (प्रश्न-उत्तर अभ्यास)

Model (i)

एह केह ऐ? (पैंसल)

एह पैंसल ऐ।

1. एह केह ऐ? (कताब)

2. एह केह ऐ? (कुर्सी)

3. एह केह ऐ? (कान्नी)

Model (ii)

ओह केह ऐ? (मेज)

ओह मेज ऐ।

1. ओह केह ऐ? (पक्खा)

2. ओह केह ऐ? (दरोआजा)

3. ओह केह ऐ? (डैस्क)

Model (iii)

एह केह न? (कताबां)

एह कताबां न।

1. एह केह न? (पैंसला)

2. एह केह न? (कापियां)

3. एह केह न? (कुर्सियां)

Model (iv)

ओह केह न? (पक्खे)

ओह पक्खे न।

1. ओह केह न? (दरोआजे)

2. ओह केह न? (पैन)

3. ओह केह न? (मेज)

4. Transformational Drill (रूपान्तर अभ्यास)

Model (i)

ओह कुर्सी ऐ?

ओह केह ऐ?

1. एह कापी ऐ।

2. एह मेज ऐ।

3. ओह डैस्क ऐ।

4. ओह कापी ऐ।

Model (ii)

ओह कुर्सियां न?

ओह केह न?

1. ओह कापियां न।

2. ओह कुर्सियां न।

3. एह पक्खे न।

4. एह पैन न।

5. एह पक्खा ऐ।

6. ओह पैसल ऐ।

Model (iii)

ओह कापी ऐ।

कापी केहड़ी ऐ ?

1. ओह कताब ऐ।

2. ओह कान्नी ऐ।

3. ओह बारी ऐ।

Model (v)

एह कापियां न।

कापियां केहड़ियां न ?

1. एह कताबां न।

2. एह पैसलां न।

3. एह बारियां न।

5. ओह कताबां न।

6. एह दरोआजे न।

Model (iv)

ओह पक्खा ऐ।

पक्खा केहड़ा ऐ ?

1. ओह डेस्क ऐ।

2. ओह मेज ऐ।

3. एह पैन ऐ।

Model (vi)

ओह दरोआजे न।

दरोआजे केहड़े न ?

1. ओह पक्खे न।

2. ओह मेज न।

3. ओह पैन न।

5. निम्नलिखित रिक्त स्थानों में कोष्ठक में दिए गए हिन्दी शब्दों के डोगरी के समानार्थक शब्द भरिए :-

1. एह ----- ऐ

(खिड़की)

2. ओह ----- ऐ

(किताब)

3. एह ----- ऐ

(पेंसिल)

4. ओह ----- ऐ

(पंखा)

5. एह ----- ऐ

(डेस्क)

- | | | |
|-----|-------------|-------------|
| 6. | ओह् ----- ऐ | (दरवाज़ा) |
| 7. | एह् ----- न | (पेसिले) |
| 8. | ओह् ----- न | (किताबें) |
| 9. | एह् ----- न | (खिड़कियां) |
| 10. | ओह् ----- न | (पंखे) |
| 11. | एह् ----- न | (दरवाज़े) |
| 12. | ओह् ----- न | (मेज़) |

6. 'केहड़ा' या 'केहड़ी' का उपयुक्त प्रयोग करते हुए रिक्त स्थान भरिए :-

दरोआजा ----- ऐ।

बारी ----- ऐ।

पक्खा ----- ऐ।

कापी ----- ऐ।

पैसल ----- ऐ।

मेज ----- ऐ।

कताब ----- ऐ।

कान्नी ----- ऐ।

7. 'केहड़े' या 'केहड़ियां' का उपयुक्त प्रयोग करते हुए रिक्त स्थान भरिए :-

1. मेज ----- न ते कुर्सियां ----- न।

2. कापियां ----- न ते कताबां ----- न।

3. कान्नियां ----- न ते पक्खे ----- न।

4. दरोआजे ----- न ते बारियां ----- न।

Vocabulary शब्दावली

एह	=	यह, ये	कान्नी	=	कलम
ओह	=	वह, वे	कताब	=	किताब
ऐ	=	है	कापी	=	कापी
न	=	हैं	पेंसल	=	पेंसिल
केह	=	क्या	बारी	=	खिड़की
केहड़ा	=	कौन सा	माला	=	माला
केहड़ी	=	कौन सी	मेज	=	मेज़
केहड़े	=	कौन से	पक्खा	=	पंखा
केहड़ियां	=	कौन सीं	पैन	=	पेन
डैस्क	=	डेस्क	दरोआजा	=	दरवाजा
विद्यार्थी	=	विद्यार्थी	अध्यापक	=	अध्यापक
अच्छा	=	अच्छा	ते	=	और
कुर्सी	=	कुर्सी	केह-केह	=	क्या-क्या
दोस्तो	=	दोस्त का सम्बोधन (बहुवचन में)			
सर	=	अंग्रेज़ी में अध्यापक के लिए सम्बोधन			

टिप्पणियाँ

- 1.1 प्रस्तुत पाठ में आप डोगरी के निश्चयवाचक सर्वनाम 'एह' (यह) तथा 'ओह' (वह), प्रश्नवाचक सर्वनाम 'केह' (क्या) और सहायक (पूरक) क्रिया 'ऐ' (है) से परिचित हुए हैं। जैसे :-

एह कताब ऐ।

यह किताब है।

ओह केह ऐ ?

वह क्या है ?

- 1.2 'एह' तथा 'ओह' सर्वनाम दोनों लिंगों-पुलिंग और स्त्रीलिंग तथा दोनों वचनों-एकवचन तथा बहुवचन की सूचना देते हैं :-

एह = यह / ये

ओह = वह / वे

'केह' सर्वनाम प्रायः एकवचन में ही प्रयुक्त होता है।

- 1.3 डोगरी में दो लिंग हैं- पुलिंग तथा स्त्रीलिंग सभी डोगरी संज्ञाएं (संज्ञाएं) इन दो लिंगों के अन्तर्गत आ जाती हैं। जैसे :-

मेज (पुलिंग)

कापी (स्त्रीलिंग)

डैस्क (पुलिंग)

कुर्सी (स्त्रीलिंग)

- 1.4 डोगरी में दो वचन हैं - एकवचन तथा बहुवचन

- (i) पुलिंग संज्ञाओं के एकवचन से बहुवचन बनाने के लिए दो प्रकार के नियम लागू होते हैं :-

- (क) आकारान्त पुलिंग संज्ञाओं के अंतिम -आ को -ए करने से बहुवचन रूप बनते हैं। जैसे :-

एकवचन

बहुवचन

दरोआजा

दरोआजे

पक्खा

पक्खे

- (ख) आकारान्त पुलिंग संज्ञाओं के अतिरिक्त अन्य सभी पुलिंग संज्ञाओं के अन्त में शून्य प्रत्यय लगाने से बहुवचन रूप बनते हैं। जैसे :-

एकवचन

बहुवचन

मेज

मेज

पैन

पैन

डैस्क

डैस्क

(ii) सभी स्त्रीलिंग संज्ञाओं के अन्त में आं प्रत्यय जोड़ने से संज्ञा के बहुवचन रूप बनते हैं। जैसे :-

एकवचन	बहुवचन
पैसल	पैसलां
कताब	कताबां
माला	मालां
बारी	बारियां
कुर्सी	कुर्सियां
कान्नी	कान्नियां

आकारान्त एकाक्षरी संज्ञाओं में प्रायः बहुवचन सूचक प्रत्यय -आं से पहले 'व्' अथवा 'म्' का योग होता है। जैसे :-

एकवचन	बहुवचन
मां	'मां' मावां/मामां "माताएं"
बांह	'भुजा' बाह्वां/बाह्मां "भुजाएं"

1.5 अन्यपुरुष के साथ योजक क्रिया के वर्तमान कालिक रूप इस प्रकार प्रयुक्त होते हैं :-

एकवचन ऐ	'है'
बहुवचन न	'हैं'

यह योजक क्रिया कर्ता और कर्म के वचन के अनुसार प्रयुक्त होती है। जैसे :-

एह पैसल ऐ।	'यह पैसिल है।'
एह पैसलां न।	'ये पैसिले हैं।'

1.6 डोगरी प्रश्नवाचक सर्वनाम 'केह्' 'क्या' प्रायः अप्राणिवाचक संज्ञाओं के लिए प्रयुक्त होता है। जैसे :-

एह केह् ऐ?	'यह क्या है?'
एह पैन ऐ।	'यह पेन है।'

कई बार मानवेतर प्राणियों के लिए भी 'केह्' सर्वनाम प्रयुक्त होता है। जैसे :-

ओह् केह् ऐ?

'वह क्या है?'

ओह् तोता ऐ।

'वह तोता है।'

'केह्' सर्वनाम का पुनरुक्त रूप 'केह्-केह्' का प्रयोग संज्ञाओं का वैभिन्न्य जानने के लिए किया जाता है। जैसे :-

ओह् केह्-केह् न?

'वे क्या-क्या हैं?'

ओह् कताबां न, पै न,

'वे किताबें हैं, पेन हैं,

कुर्सियां न ते बारियां न।

कुर्सियां हैं और खिड़कियां हैं।'

- 1.7 प्रश्नवाचक सर्वनाम 'केहड़ा' प्राणिवाचक और अप्राणिवाचक सभी प्रकार की संज्ञाओं के साथ प्रयुक्त होता है तथा उनके लिंग तथा वचन के अनुसार रूप ग्रहण करता है। जैसे :-

पुलिंग		स्त्रीलिंग	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
केहड़ा दरोआजा	केहड़े दरोआजे	केहड़ी बारी	केहड़ियां बारियां
'कौन सा दरवाज़ा'	'कौन से दरवाज़े'	'कौन सी खिड़की'	'कौन सी खिड़कियां'
दरोआजा केहड़ा ऐ?	'दरोआजे केहड़े न?	बारी केहड़ी ऐ?	बारियां केहड़ियां न?
'दरवाज़ा कौन सा है?'	'दरवाज़े कौन से हैं?'	'खिड़की कौन सी है?'	'खिड़कियां कौन सी हैं?'

- 1.8 दो शब्दों, दो वाक्यों आदि को जोड़ने के लिए 'ते' (और) का प्रयोग होता है। जैसे :-

मेज ते कुर्सी

'मेज और कुर्सी'

मेज केहड़ा ऐ ते कुर्सी केहड़ी ऐ?

'मेज कौन सा है और कुर्सी कौन सी है?'

- 1.9 'नेई' (नहीं) नकारात्मक अव्यय है। यह हां नेई (हाँ नहीं) वाले वार्तालाप वाक्यों के आरम्भ में भी आता है। जैसे :-

नेई, एह् कुर्सी नेई ऐ।

नहीं, यह कुर्सी नहीं है।

नेई, एह मेज ऐ।

नहीं, यह मेज है।

- 1.1.0 वाक्य के अन्त में क्रिया के बाद जब 'नां' आता है तो वह सकारात्मक अर्थ में प्रश्नात्मक अर्थ सूचित करता है। जैसे :-

ओह मेज ऐ नां ?

'वह मेज है न ?'

'क्या वह मेज है ?'

- 1.1.1 दोस्तो (दोस्तो)

यह 'दोस्त' संज्ञा का सम्बोधन कारकीय रूप है।

एकवचन में 'दोस्ता' रूप प्रयुक्त होता है और

बहुवचन में 'दोस्तो' रूप बनता है।

× × × ×

पाठ-2
तुस कु'न ओ?
(आप कौन हैं?)

अध्यापक : तूं मनदीप एं ?	अध्यापक : तुम मनदीप हो ?
मनदीप : हां जी, में मनदीप आं।	मनदीप : हाँ जी, मैं मनदीप हूँ।
अध्यापक : में अध्यापक आं ते ओह् प्रिंसीपल साहब न।	अध्यापक : मैं अध्यापक हूँ और वे प्रिंसीपल साहब हैं।
मनदीप : नमस्ते सर, नमस्ते।	मनदीप : नमस्ते सर, नमस्ते।
अध्यापक : नमस्ते। तूं कु'न एं।	अध्यापक : नमस्ते। तुम कौन हो ?
राजीव : जी में राजीव आं। एह् संजीव ऐ।	राजीव : जी मैं राजीव हूँ। यह संजीव है।
अध्यापक : तुस विद्यार्थी ओ ?	अध्यापक : तुम विद्यार्थी हो ?
राजीव : हां जी, अस विद्यार्थी आं।	राजीव : हाँ जी, हम विद्यार्थी हैं।
अध्यापक : तुस केहड़ी कलासा दे विद्यार्थी ओ ?	अध्यापक : तुम किस क्लास के विद्यार्थी हो ?
मनदीप : जी अस बी०ए० फाइनल दे विद्यार्थी आं।	मनदीप : जी हम बी०ए० फाइनल के विद्यार्थी हैं।
अध्यापक : राजीव, तूं बी डोगरा एं ?	अध्यापक : राजीव, तू भी डोगरा है ?
राजीव : नेई जी, में पंजाबी आं।	राजीव : नहीं जी, मैं पंजाबी हूँ।
अध्यापक : मनदीप। ओह् कु'न ऐ ?	अध्यापक : मनदीप ! वह कौन है ?
मनदीप : ओह् माली ऐ ते एह् कारीगिर ऐ।	मनदीप : वह माली है और यह कारीगिर है।
अध्यापक : ओह् दर्जी न ?	अध्यापक : वे दर्जी हैं ?

मनदीप : नेई जी, ओह तरखान न।
 अध्यापक : तुस कु'न ओ ?
 सुभाष : में सुभाष आं, में खदारी बी आं।
 अध्यापक : तुस डाक्टर ओ ?
 सुभाष : नेई जी, में इंजीनियर आं। एह, डाक्टर न। ओह प्रोफेसर न।
 अध्यापक : श्वेता ते श्यामली, तुस स्हेलियां ओ ?
 श्वेता : हां जी, अस स्हेलियां आं।
 अध्यापक : कंपोडर केहड़ा ऐ ते नर्स केहड़ी ऐ ?
 श्वेता : एह कंपोडर ऐ ते ओह नर्स ऐ।
 अध्यापक : मजदूर केहड़े न ?
 सुभाष : मजदूर ओह न।

मनदीप : नहीं जी, वे बढई हैं।
 अध्यापक : आप कौन हैं ?
 सुभाष : मैं सुभाष हूँ, मैं खिलाड़ी भी हूँ।
 अध्यापक : आप डाक्टर हैं ?
 सुभाष : नहीं जी, मैं इंजीनियर हूँ। यह डाक्टर हैं। वह प्रोफेसर हैं।
 अध्यापक : श्वेता और श्यामली, आप सहेलियां हैं ?
 श्वेता : हाँ जी, हम सहेलियां हैं।
 अध्यापक : कंपोडर कौन सा है और नर्स कौन सी है ?
 श्वेता : यह कंपोडर है और वह नर्स है।
 अध्यापक : मजदूर कौन से हैं ?
 सुभाष : मजदूर वे हैं।

EXERCISES

1. Repitition Drill (पुनरुक्ति अभ्यास)

Singular

में अध्यापक आं।

में राजीव आं।

Plural

अस विद्यार्थी आं।

अस स्हेलियां आं।

तू डोगरा एं ?	तुस विद्यार्थी ओ।
तू मनदीप एं ?	तुस कु'न ओ ?
ओह माली ऐ।	ओह दर्जी न।
ओह नर्स ऐ।	ओह तरखान न।
एह कंपोडर ऐ।	एह डाक्टर न।

2. Substitution (स्थानापन्न अभ्यास)

Model - I

में मनदीप आं।	(डाक्टर)
में डाक्टर आं।	(श्वेता)
	(कारीगिर)

Model - II

अस विद्यार्थी आं।	(इंजीनियर)
अस इंजीनियर आं।	(तरखान)
	(पंजाबी)

Model - III

तूं राजीव एं ?	(डोगरा)
तूं डोगरा एं ?	(नर्स)
	(सुभाष)

Model - IV

तुस विद्यार्थी ओ ?	(अध्यापक)
तुस अध्यापक ओ ?	(स्तेलियां)
	(कंपोडर)

Model - V

ओह सुभाष ऐ।	(माली)	ओह प्रिंसीपल साहब न।	(खढारी)
ओह माली ऐ।		ओह खढारी न।	
	(श्यामली)		(दर्जी)
	(संजीव)		(मजदूर)

3. Response Drill (प्रश्न उत्तर-अभ्यास)

(i)

तू कु'न एं? (माली)
में माली आं।

1. तू कु'न एं? (दर्जी)
2. तू कु'न एं? (पंजाबी)
3. तुस कु'न ओ? (प्रिंसीपल)
4. तुस कु'न ओ? (अध्यापक)
5. तुस कु'न ओ? (डाक्टर)

(iii)

ओह कु'न ऐ? (मनदीप)

1. ओह कु'न ऐ? (श्वेता)
2. ओह कु'न ऐ? (श्यामली)
3. ओह कु'न ऐ? (माली)
4. ओह कु'न ऐ? (कारीगर)
5. ओह कु'न साहब न? (डाक्टर)

(ii)

तुस कु'न ओ? (मजदूर)
अस मजदूर आं।

1. तुस कु'न ओ? (खढारी)
2. तुस कु'न ओ? (तरखान)
3. तुस कु'न ओ? (कंपोडर)
4. तुस कु'न ओ? (दर्जी)
5. तुस कु'न ओ? (इंजीनियर)

(iv)

ओह कु'न न? (संजीव ते सुभाष)

1. ओह कु'न न? (विद्यार्थी)
2. ओह कु'न न? (राजीव ते मनदीप)
3. ओह कु'न न? (प्रोफेसर)
4. ओह कु'न न? (मजदूर)
5. ओह कु'न न? (कंपोडर)

4. निम्नलिखित रिक्त स्थानों में योजक - क्रिया भरिए :

- | | |
|----------------------|-----------------|
| 1. में पंजाबी -----। | एह मनदीप -----। |
| 2. अस पंजाबी -----। | एह खढारी -----। |
| 3. तू श्वेता -----। | में कु'न -----। |

4. तुस स्हेलियां -----।

तूं बी डोगरा -----।

5. ओह दर्जी -----।

ओह कु'न -----।

6. ओह मजदूर -----।

तुस कु'न -----।

5. उदाहरणों का अनुसरण करते हुए वाक्यों में परिवर्तन कीजिए :

(i)

में खढारी आं ?

हां जी, तुस खढारी ओ।

1. में अध्यापक आं ?

2. में डाक्टर आं ?

(iii)

अस दर्जी आं ?

जी, तुस दर्जी ओ।

1. अस पंजाबी आं ?

2. अस स्हेलियां आं ?

3. अस तरखान आं ?

(v)

ओह मनदीप ऐ ?

हां जी, ओह मनदीप ऐ।

1. ओह राजीव ऐ ?

2. ओह श्वेता ऐ ?

(ii)

तूं कारीगिर एं ?

हां जी, में कारीगिर आं।

तूं मजदूर एं ?

तूं विद्यार्थी एं ?

(iv)

तुस कारीगिर ओ ?

नेई जी, अस कारीगिर नेई,
अस विद्यार्थी आं।

1. तुस प्रिंसीपल ओ ?

2. तुस डाक्टर ओ ?

3. तुस माली ओ ?

(vi)

ओह डाक्टर न ?

नेई जी, ओह डाक्टर नेई न।

ओह इंजीनियर न ?

ओह प्रोफैसर न ?

6. उदाहरणों का अनुसरण करते हुए वाक्य परिवर्तन कीजिए :

(i)

में डाक्टर आं ?

अस डाक्टर आं।

1. में पंजाबी आं।

2. में विद्यार्थी आं।

(ii)

तूं दर्जी एं।

तुस दर्जी ओ।

1. तूं प्रिंसीपल एं।

2. तूं अध्यापक एं।

(iii)

ओह् खढारी ऐ।

ओह् खढारी न।

1. ओह् माली ऐ।

2. ओह् मजदूर ऐ।

Vocabulary शब्दावली

कु'न	(कौन)	अध्यापक	(अध्यापक)
में	(मैं)	प्रिंसीपल	(प्रिंसीपल)
अस	(हम)	प्राफ़ेसर	(प्रोफेसर)
तूं	(तू)	दर्जी	(दर्जी)
तुस	(तुम । आप)	कारीगिर	(कारीगिर)
ओह्	(वह)	माली	(माली)
एह्	(यह)	तरखान	(बढ़ई)
हां	(हाँ)	डाक्टर	(डाक्टर)
हां जी	(हाँ जी)	इंजीनियर	(इंजीनियर)

नेई	(नहीं)	विद्यार्थी	(विद्यार्थी)
नेई जी	(नहीं जी)	नर्स	(नर्स)
साहब	(साहब)	कंपोडर	(कंपौंडर)
बी	(भी)	पंजाबी	(पंजाबी)
आं	(हूं)	डोगरा	(डोगरा)
एं	(है । हो)	खढारी	(खिलाड़ी)
ओ	(हो । हैं)	मजदूर	(मजदूर)
ऐ	(है)	स्हेलियां	(स्हेलियां)
न	(हैं)		

टिप्पणियाँ

2.1 इस पाठ में आपको डोगरी के पुरुषवाचक सर्वनाम, प्रश्नवाचक सर्वनाम और योजक क्रिया के कुछ रूपों से परिचित करवाया गया है।

2.2 डोगरी में पुरुषवाचक सर्वनाम तीन हैं :

प्रथमपुरुष सर्वनाम, मध्यमपुरुष सर्वनाम और अन्यपुरुष सर्वनाम। प्रथमपुरुष और मध्यमपुरुष सर्वनामों के एकवचन तथा बहुवचन में भिन्न-भिन्न रूप बनते हैं, जबकि अन्यपुरुष सर्वनाम एकवचन और बहुवचन में एक ही रूप में प्रयुक्त होता है। जैसे :-

एकवचन			बहुवचन	
प्रथमपुरुष	में	‘मैं’	अस	‘हम’
मध्यमपुरुष	तू	‘तू’	तुस	‘तुम / आप’

अन्यपुरुष

दूरवर्ती	ओह्	‘वह’	ओह्	‘वे’
समीपवर्ती	एह्	‘यह’	एह्	‘ये’

2.3 प्रश्नवाचक सर्वनाम 'कु'न' केवल मनुष्य जाति की संज्ञाओं के लिए प्रयुक्त होता है और इसमें भी वचन के लिए परिवर्तन नहीं होता। जैसे :-

एकवचन	बहुवचन
ओह कु'न ऐ ?	ओह कु'न न ?
'वह कौन है ?'	'वे कौन हैं ?'
ओह माली ऐ।	ओह दर्जी न।
'वह माली है।'	'वे दर्जी हैं।'

2.4 योजक क्रिया 'ऐ' (है) सभी पुरुषों के साथ वचन के अनुसार बदलती है। जैसे :-

में मनदीप आं।	प्रथमपुरुष, एकवचन
मैं मनदीप हूँ।'	
अस विद्यार्थी आं	प्रथमपुरुष, बहुवचन
'हम विद्यार्थी हैं।'	
तू कु'न एं ?	मध्यमपुरुष, एकवचन
'तुम कौन हो ?'	
तुस कु'न ओ ?	मध्यमपुरुष, बहुवचन
'तुम/आप कौन हो/हैं ?'	
ओह विद्यार्थी ऐ।	अन्यपुरुष, एकवचन
'वह विद्यार्थी है।'	
ओह विद्यार्थी न।	अन्यपुरुष, बहुवचन
'वे विद्यार्थी हैं।'	

प्रथमपुरुष में योजक 'आं' (हूँ/हैं) एकवचन तथा बहुवचन दोनों में समान रहती है।

2.5 'हां' ----- 'नेई' '(हाँ----- नहीं)' वाले प्रश्नोत्तर वाक्यों में प्रश्न सूचना अधिकतर अनुत्तान (वाक्य के उच्चारण ढंग) से हो जाती है। जैसे :

तू मनदीप एं ?	'तुम मनदीप हो ?'
हां जी में मनदीप आं।	'जी हाँ मैं मनदीप हूँ।'

2.6 प्रश्नोत्तर वाक्यों में 'हां' अथवा 'हां जी' सकारात्मक अर्थ के लिए आता है और 'नेई' अथवा 'नेई जी' नकारात्मक अर्थ के लिए प्रयुक्त होता है। जैसे :-

तुस विद्यार्थी ओ ?	'तुम विद्यार्थी हो ?'
हां जी, अस विद्यार्थी आं।	'जी हाँ, हम विद्यार्थी हैं।'
राजीव, तू बी डोगरा एं ?	'राजीव, तू भी डोगरा है ?'
नेई जी, में पंजाबी आं।	'जी नहीं, मैं पंजाबी हूँ।'

2.7 'होर', 'जी' और 'साहब' आदरसूचक शब्द हैं। इनका प्रयोग व्यक्तिवाचक नामों के साथ, विभिन्न व्यवसायिकों के साथ तथा अपने से बड़े रिश्तों के साथ होता है। जैसे :-

एह देवी शंकर होर न।	'ये देवीशंकर जी हैं।'
ओह मेरे पिताजी न।	'वे मेरे पिता जी हैं।'
एह तुन्दे जीजा होर न ?	'ये आपके जीजा जी हैं।'
एह मेरे मास्टर जी न।	'ये मेरे मास्टर जी हैं।'
ओह प्रोफेसर साहब न।	'वे प्रोफेसर साहब हैं।'
ओह कु'न साहब न ?	'वे कौन साहब हैं ?'
ओह डाक्टर साहब न।	'वे डाक्टर साहब हैं।'

2.8 इसके अतिरिक्त आदर सूचक अर्थ में सर्वनामों के बहुवचनीय रूप भी एकवचन के लिए प्रयुक्त होते हैं। जैसे :-

तुस डाक्टर ओ ?	'आप डाक्टर हैं ?'
----------------	-------------------

एह डाक्टर न।

‘ये डाक्टर हैं।’

ओह प्रोफैसर न।

‘वे प्रोफेसर हैं।’

- 2.9 ‘द्’ (क्) सम्बन्ध का चिह्न है। डोगरी में सम्बन्ध के चिह्न लिंग और वचन के अनुसार बदलते हैं। जैसे :-

एकवचन			बहुवचन	
पुलिंग	दा	‘का’	दे	‘के’
स्त्रीलिंग	दी	‘की’	दियां	‘की’

प्रथमपुरुष तथा मध्यमपुरुष एकवचन सर्वनाम (में और तूं) को छोड़कर अन्य सभी सर्वनामों तथा सभी संज्ञाओं के साथ दा, दे, दी, दियां कारक चिह्न प्रयुक्त होते हैं। जैसे :-

ओहदा	‘उसका’
एहदी	‘इसकी’
कोहदे	‘किसके’
जेहदियां	‘जिसकी (बहुवचन)’
राम दी	‘राम की’
लकड़ी दे	‘लकड़ी के’
मिट्टी दियां	‘मिट्टी की (बहुवचन)’
फलें दा	‘फलों का’

× × × ×

पाठ—3

मेरा घर

(मेरा घर)

- शिवनंदन : एह घर कोहदा/कुसदा ऐ ? शिवनंदन : यह घर किसका है ?
- मोहन : एह घर साढ़ा ऐ ते मोहन : यह घर हमारा है और
मेरा नां मोहन ऐ। मेरा नाम मोहन है।
- शिवनंदन : नमस्ते जी। शिवनंदन : नमस्ते जी।
- मोहन : नमस्ते जी, तुस कु'न ? मोहन : नमस्ते जी, आप कौन ?
- शिवनंदन : जी अस यात्रू आं। शिवनंदन : जी हम यात्री हैं।
मेरा नां शिवनंदन ऐ। मेरा नाम शिवनंदन है।
एह मेरे पिता जी न ते ये मेरे पिता जी हैं और
एह मेरी माता जी न। ये मेरी माता जी हैं।
- मोहन : ते एह तुन्दियां भैनां न ? मोहन : और ये आपकी बहनें हैं ?
- शिवनंदन : हां जी, एह मेरियां भैनां— शिवनंदन : जी हाँ, ये मेरी बहनें—रमा
रमा ते तारा न। तुन्दा भ्रा और तारा हैं। आपका भाई
सोहन मेरा दोस्त ऐ। सोहन मेरा दोस्त है।
- मोहन : सोहन, शिवनंदन तेरा मोहन : सोहन, शिवनंदन तुम्हारा
दोस्त ऐ ? दोस्त है ?
- सोहन : सुआगत ऐ। सुआगत ऐ। सोहन : स्वागत है। स्वागत है।
- शिवनंदन : सोहन, तेरे पिता जी ते शिवनंदन : सोहन, तुम्हारे पिता जी और
तेरी माता जी कु'तथै न ? तुम्हारी माता जी कहाँ हैं।
- सोहन : चरणवंदना माता जी, सोहन : चरणवंदना माता जी,
चरणवंदना पिता जी, चरणवंदना पिता जी,
नमस्ते भाबी जी। नमस्ते भाभी जी।
भाबी जी, तुस पंजाबन ओ ? भाभी जी आप पंजाबन हैं।

शिखा : नेई जी, में ते डोगरी आं।

सोहन : शिवनंदन! एह बक्सा
तुन्दा/थुआड़ा ऐ ?

शिवनंदन : हां, एह बक्सा साढ़ा ऐ।

सोहन : एह डब्बे बी तुन्दे/थुआड़े न ?

शिवनंदन : हां साढ़े न। सोहन!
थुआड़ी ताई जी कु'तै न ?

सोहन : ओह अन्दर न।

शिखा : एह उन्दियां पोतरियां न।

शिवनंदन : तुन्दी कुड़ी केहड़ी ऐ ?
सुलभा ?

शिखा : नेई जी, ओहदा नां जूही ऐ,
सुलभा ओहदी बुआ ऐ।

शिवनंदन : एह मकान तुन्दा अपना ऐ ?

सोहन : जी हां। एह साढ़ा अपना
मकान ऐ, कराए दा नेई।

शिवनंदन : अच्छा। बड़ा बड्डा मकान
ऐ ते नां बी 'मातृछाया'
बड़ा शैल ऐ।

शिखा : साढ़ी ननान सुलभा तुन्दी
भैन तारा दी स्हेली ऐ।

सोहन : साढ़ा नौकर रामू ते
तुन्दा नौकर शामू पहाड़ी
न।

शिखा : नहीं जी, मैं तो डोगरी हूँ।

सोहन : शिवनंदन! यह बक्सा
आपका है ?

शिवनंदन : हाँ, यह बक्सा हमारा है।

सोहन : ये डिब्बे भी तुम्हारे हैं ?

शिवनंदन : हाँ हमारे हैं। सोहन!
तुम्हारी ताई जी कहाँ हैं ?

सोहन : वे अन्दर हैं।

शिखा : ये उनकी पोतियां हैं।

शिवनंदन : आपकी लड़की कौन सी है ?
सुलभा ?

शिखा : नहीं जी, उसका नाम जूही है,
सुलभा उसकी फूफी है।

शिवनंदन : यह मकान आपका अपना है ?

सोहन : जी हाँ। यह हमारा अपना
मकान है, किराए का नहीं।

शिवनंदन : अच्छा। बहुत बड़ा मकान
है और नाम भी 'मातृछाया'
बहुत सुंदर है।

शिखा : हमारी ननद सुलभा आपकी
बहन तारा की सहेली है।

सोहन : हमारा नौकर रामू और
तुम्हारा नौकर शामू पहाड़ी
हैं।

शिखा : शामू दी लाड़ी सरला ते रामू
दी भैन ऐ।

शिखा : शामू की पत्नी सरला तो रामू
की बहन है।

शिवनंदन : तां ते अस सब दोस्त आं।

शिवनंदन : तब तो हम सब दोस्त हैं।

EXERCISES

1. Repitition Drill (पुनरुक्ति अभ्यास)

- | | |
|--------------------------|--------------------------|
| 1. घर कोहदा/कुसदा ऐ? | 1. अस यात्रू आं। |
| 2. शिवनंदन तेरा दोस्त ऐ। | 2. एह डब्बे तुन्दे न। |
| 3. में ते डोगरी आं। | 3. एह मेरियां भैनां न। |
| 4. ओहदा नां जूही ऐ। | 4. ओह अन्दर न। |
| 5. शामू दी लाड़ी सरला ऐ। | 5. एह तुन्दियां भैनां न? |
| 6. सुलभा ओहदी बुआ ऐ। | 6. अस सब दोस्त आं। |

2. Substitution Drill (स्थानापन्न अभ्यास)

Model - (1)

एह घर मेरा ऐ। (साढ़ा)
एह घर साढ़ा ऐ।

(ओहदा)

(तुन्दा)

(तेरा)

(उन्दा)

Model - (2)

एह डब्बे मेरे न। (साढ़े)
एह डब्बे साढ़े न।

(ओहदे)

(तुन्दे)

(तेरे)

(उन्दे)

Model - (3)

एह मेरी भैन ऐ। (साढ़ी)

Model - (4)

एह मेरियां भैनां न। (साढ़ियां)

एह साढ़ी भैन ऐ।

एह साढ़ियां भैनां न।

(ओहदी)

(ओहदियां)

(तुन्दी)

(तुन्दियां)

(तेरी)

(तेरियां)

(उन्दी)

(उन्दियां)

3. Response Drill (प्रश्न – उत्तर अभ्यास)

Model - (1)

एह घर कोहदा ऐ?

एह घर मेरा ऐ।

सोहन दे भ्रा दा नां केह ऐ?

जूही दी बुआ कु'न ऐ?

तारा दी स्हेली दा नां केह ऐ।

सरला कोहदी भैन ऐ?

Model - (2)

डब्बे कोहदे न?

डब्बे शिवनंदन हुन्दे न।

रमा ते तारा कोहदियां भैनां न?

ताई जी कु'तथै न?

रामू ते शामू कु'न न?

रामू ते शामू कु'न्दे नौकर न?

4. Transformation Drill (रूपान्तर अभ्यास)

Model - (1)

शिवनंदन दा दोस्त सोहन ऐ।

शिवनंदन दा दोस्त कु'न ऐ?

मोहन सोहन दा भ्रा ऐ।

शिखा सोहन दी भाबी ऐ।

बक्सा शिवनंदन दा ऐ।

सुलभा जूही दी बुआ ऐ।

Model - (2)

रामू ते शामू नौकर न।

रामू ते शामू कु'न न?

रमा ते तारा भैनां न।

सुलभा ते तारा स्हेलियां न।

सोहन दे माताजी ने पिताजी इत्थै न।

मोहन ते सोहन हुन्दे मकान दा नां

'मातृछाया' ऐ।

5. कोष्ठक में दिए गए सर्वनाम शब्दों में उपयुक्त परिवर्तन करके रिक्त स्थान भरिए :

1. ----- नां गायत्री ऐ। (ओह)
2. ----- नां सुलभा ऐ। (तुस)
3. ----- नां सोहन ऐ। (में)
4. ----- नां राधा ऐ? (कु'न)
5. ----- नां सोनु ऐ। (में)
6. ----- नां मनदीप ऐ। (तू)
7. ----- नां शिवनंदन ऐ? (कु'न)
8. ----- नां मोहन ऐ। (ओह)

6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

- | | |
|--------------------------|---------------------------|
| 1. मेरा नां केह ऐ? | 1. तुन्दा नां केह ऐ? |
| 2. साढ़ा ग्रां केहड़ा ऐ? | 2. एह कुड़ी कोहदी ऐ? |
| 3. एह पैन कोहदे न? | 3. डब्बे कोहदे न? |
| 4. ओह जागत कु'न्दा ऐ? | 4. शिवनंदन कोहदा दोस्त ऐ? |
| 5. शिखा कोहदा नां ऐ? | 5. ओहदा केह नां ऐ? |
| 6. उन्दा केह नां ऐ? | 6. तेरा केह नां ऐ? |

7. उदाहरणों का अनुसरण करते हुए वचन परिवर्तन कीजिए :-

Model - (1)

एह मेरा भ्राऽ ऐ।

एह मेरे भ्राऽ न।

1. एह तेरा घर ऐ।

Model - (2)

ओह साढ़ी भैन ऐ।

ओह साढ़ियां भैनां न।

1. एह तेरी कताब ऐ।

2. ओह थुआड़ा/तुन्दा
दरोआजा ऐ।
3. एह साढ़ा दोस्त ऐ।
4. एह ओहदा अध्यापक ऐ।
5. ओह उन्दा पैन ऐ।

2. एह थुआड़ी/तुन्दी बारी ऐ।
3. एह साढ़ी स्हेली ऐ।
4. ओह ओहदी धीऽ ऐ।
5. ओह उन्दी माला ऐ।

Vocabulary शब्दावली

घर	घर	कोहदा/कुसदा	किसका
ओहदी/उसदी	उसकी	मेरा	मेरा
कोहदे/कुसदे	किसके	साढ़ा	हमारा
ओहदे/उसदे	उसके	यात्रू	यात्री
ओहदियां/उसदियां	उसकी	मेरे	मेरे
कोहदी/कुसदी	किसकी	मेरी	मेरी
मेरियां	मेरी	पिताजी	पिताजी
माता होर	माताजी	भैनां	बहनें
कोहदियां/कुसदियां	किसकी	दोस्त	दोस्त
मकान	मकान	कु'न्दा	किनका
तेरा	तेरा	उन्दा	उनका
तेरे	तेरे	उन्दे	उनके
तेरियां	तेरी (बहुवचन)	उन्दी	उनकी (बहुवचन)
साढ़े	हमारे	कु'न्दे	किनके
साढ़ी	हमारी	केह-केह	क्या-क्या

साढ़ियां	हमारी (बहुवचन)	उन्दे	उनके
भाबीजी	भाभीजी	कुड़ियां	लड़कियां
चरणवन्दना	चरण छूकर प्रणाम	पंजाबन	पंजाबन
उन्दियां	उनकी	डोगरी	डोगरी
स्हेलियां	सहेलियां	बक्सा	बक्सा
तुन्दा/थुआड़ा	तुम्हारा/आपका	कु'न्दियां	किनकी
तुन्दे/थुआड़े	तुम्हारे/आपके	उन्दियां	उनकी
तुन्दी/थुआड़ी	तुम्हारी/आपकी	फाड़ी	पहाड़ी
तुन्दियां/थुआड़ियां	तुम्हारी/आपकी	फाड़न	पहाड़न
डब्बा	डिब्बा	ताई जी	ताई जी
आपूं	स्वयं	हैन	हैं
गै	ही	कुड़ी	लड़की
ओहदा/उसदा	उसका		

टिप्पणियां

- 3.1 इस पाठ में आप पुरुषवाचक तथा प्रश्नवाचक सर्वनामों के सम्बन्ध कारकीय रूपों से परिचित हुए हैं। डोगरी में ये रूप लिंग, वचन और कारक के अनुसार बदलते हैं। जैसे :-

पुलिंग

एकवचन		बहुवचन		
प्रथमपुरुष				
एकवचन	मेरा	‘मेरा’	साढ़ा	‘हमारा’
बहुवचन	मेरे	‘मेरे’	साढ़े	‘हमारे’

मध्यमपुरुष

एकवचन	तेरा	'तेरा'	तुन्दा/थुआढ़ा	'आपका'
बहुवचन	तेरे	'तेरे'	तुन्दे/थुआढ़े	'आपके'

अन्यपुरुष दूरवर्ती

एकवचन	ओहदा	'उसका'	उन्दा	'उनका'
बहुवचन	ओहदे	'उसके'	उन्दे	'उनके'

समीपवर्ती

एकवचन	एहदा	'इसका'	इन्दा	'इनका'
बहुवचन	एहदे	'इसके'	इन्दे	'इनके'

प्रश्नवाचन

एकवचन	कोहदा	'किसका'	कु'न्दा	'किनका'
बहुवचन	कोहदे	'किसके'	कु'न्दे	'किनके'

स्त्रीलिंग

एकवचन

बहुवचन

प्रथमपुरुष

एकवचन	मेरी	'मेरी'	साढ़ी	'हमारी'
बहुवचन	मेरियां	'मेरी'	साढ़ियां	'हमारी'

मध्यमपुरुष

एकवचन	तेरी	'तेरी/तुम्हारी'	तुन्दी/थुआढ़ी	'आपकी'
बहुवचन	तेरियां	'तेरी/तुम्हारी'	तुन्दियां/थुआढ़ियां	'आपकी'

अन्यपुरुष दूरवर्ती

एकवचन	ओह्दी	‘उसकी’	उन्दी	‘उनकी’
बहुवचन	ओह्दियां	‘उसकी’	उन्दियां	‘उनकी’

समीपवर्ती

एकवचन	एह्दी	‘इसकी’	इन्दी	‘इनकी’
बहुवचन	एह्दियां	‘इसकी’	इन्दियां	‘इनकी’

प्रश्नवाचन

एकवचन	कोह्दी	‘किसकी’	कु’न्दी	‘किनकी’
बहुवचन	कोह्दियां	‘किसकी’	कु’न्दियां	‘किनकी’

प्रयोग

एह् मेरा भ्राऽ ऐ।	‘यह मेरा भाई है।’
एह् मेरे भ्राऽ न।	‘ये मेरे भाई हैं।’
एह् मेरी भैन ऐ।	‘यह मेरी बहन है।’
एह् मेरियां भैनां न।	‘ये मेरी बहनें हैं।’
एह् साढ़ा भ्राऽ ऐ।	‘यह हमारा भाई ऐ।’
एह् साढ़े भ्राऽ न।	‘ये हमारे भाई हैं।’
एह् साढ़ी भैन ऐ।	‘यह हमारी बहन है।’
एह् साढ़ियां भैनां न।	‘ये हमारी बहनें हैं।’
एह् तेरा भ्राऽ ऐ।	‘यह तुम्हारा भाई है।’
एह् तेरे भ्राऽ न।	‘ये तुम्हारे भाई हैं।’
एह् तेरी भैन ऐ।	‘यह तुम्हारी बहन है।’

एह तेरियां भैनां न।	‘ये तुम्हारी बहनें हैं।’
एह तुन्दा/थुआढ़ा भ्राऽ ऐ।	‘यह आपका भाई है।’
एह तुन्दे/थुआढ़े भ्राऽ न।	‘ये आपके भाई हैं।’
एह तुन्दी/थुआढ़ी भैन ऐ।	‘यह आपकी बहन है।’
एह तुन्दियां/थुआढ़ियां भैनां न।	‘ये आपकी बहनें हैं।’
एह कोहदा घर ऐ ?	‘यह किसका घर है ?’
एह कोहदे मकान न ?	‘ये किसके मकान हैं ?’
एह कोहदी झोंपड़ी ऐ ?	‘यह किसकी झोंपड़ी है ?’
एह कोहदियां झोंपड़ियां न ?	‘ये किसकी झोंपड़ियां हैं ?’
एह ओहदा घर ऐ।	‘यह उसका घर है।’
एह ओहदे मकान न।	‘ये उसके मकान हैं।’
एह ओहदी झोंपड़ी ऐ।	‘यह उसकी झोंपड़ी है।’
एह ओहदियां झोंपड़ियां न।	‘ये उसकी झोंपड़ियां हैं।’
ओह इन्दा घर ऐ।	‘वह इनका घर है।’
ओह इन्दे कमरे न।	‘वे इनके कमरे हैं।’
ओह इन्दी झोंपड़ी ऐ।	‘वह इनकी झोंपड़ी है।’
ओह इन्दियां कताबां न।	‘वे इनकी किताबें हैं।’

3.2 आदर-भाव प्रकट करने के लिए एकवचन के स्थान पर सर्वनाम के बहुवचन रूप प्रयुक्त होते हैं। जैसे :-

एह मेरे पिता जी न।	‘ये मेरे पिता जी हैं।’
एह तुन्दियां माता जी न ?	‘ये आपकी माता जी हैं ?’

उन्दा नां श्यामला ऐ।

‘उनका नाम श्यामला है।’

इन्दा नां शशि ऐ।

‘इनका नाम शशि है।’

- 3.3 आदर-प्रदर्शन के लिए एकवचन के स्थान पर सर्वनाम के बहुवचनी रूपों के साथ क्रिया भी बहुवचन में ही आती है। जैसे :-

एह मेरे पिता जी न।

‘ये मेरे पिता जी हैं।’

तुस संदीप दियां भैन ओ ?

‘आप संदीप की बहन हैं ?’

ओह मेरे मित्र न।

‘वे मेरे मित्र हैं।’

एह मेरियां गुरु न।

‘ये मेरी गुरु हैं।’

- 3.4 ‘कु’त्थै’ (कहाँ), इत्थै (यहाँ), तां (तब), गै (ही) अर्थों में प्रयुक्त हुए हैं।

- 3.5 ‘अपना’ निजवाचक सर्वनाम ‘आप’ का सम्बन्ध कारकीय रूप है जो एकवचन के लिए प्रयुक्त होता है। जैसे :-

एह मकान तुन्दा अपना ऐ ?

“यह मकान आपका अपना है ?”

- 3.6 ‘अच्छा’ (अच्छा) विस्मय सूचक अव्यय है -----

- 3.7 ‘बड्डा’ (बड़ा) और ‘शैल’ (सुन्दर) विशेषण हैं।

× × × ×

पाठ-4
जान-पन्थान
(जान-पहचान)

सुधाकर : डा० प्रद्युमन दा कमरा
केहड़ा ऐ ?

रोगी : पता नेई जी। में बी
ओपरा आं।

बाबू : डाक्टर साहब हुन्दा
अपना कमरा ओह ऐ।
पर ओह इसलै कमरे च
नेई हैन। किश कम्म ऐ ?

सुधाकर : में दनसाल ग्रांड दा आं।
भला एह डाक्टर होर
दनसाल ग्रांड दे हरिराम
हुन्दे पुत्तर न नां ?

बाबू : नेई। एह ते वकील हीरालाल
जी दे पुत्तर न। ते हीरालाल
जी हरिराम दे भ्रांड न।

सुधाकर : अच्छा। तां तुस बी दनसाल
ग्रांड दे ओ ?

बाबू : नेई जी। में ते इत्थूं दा गैं।

सुधाकर : थुआड़ी मातृभाशा केहड़ी ऐ ?

बाबू : मेरी मातृभाशा डोगरी ऐ।

सुधाकर : अच्छा, अच्छा।

सुधाकर : डा० प्रद्युमन का कमरा
कौन सा है ?

रोगी : पता नहीं जी। मैं भी
अजनबी हूं।

बाबू : डाक्टर साहब का अपना
कमरा वह है। पर वे
इस समय कमरे में नहीं हैं।
कुछ काम है क्या ?

सुधाकर : जी मैं दनसाल गाँव का हूँ।
भला ये डाक्टर साहब
दनसाल गाँव के हरिरामजी
के बेटे हैं न ?

बाबू : नहीं। ये तो वकील हीरालाल
जी के बेटे हैं और हीरालाल
जी हरिराम जी के भाई हैं।

सुधाकर : अच्छा। तो तुम भी दनसाल
गाँव के हो ?

बाबू : नहीं जी। मैं तो यहीं का हूँ।

सुधाकर : आपकी मातृभाषा कौन सी है।

बाबू : मेरी मातृभाषा डोगरी है।

सुधाकर : अच्छा, अच्छा।

बाबू : साढ़े डाक्टर साहब दियां
माता जी बी डुगगर दियां न
ते उन्दी भाशा बी डोगरी ऐ।

सुधाकर : एह कु'न न ?

बाबू : एह बी इत्थै क्लर्क न।
इन्दा नां प्रकाश ऐ ते
इन्दे ग्रांड दा नां ऐ नगरोटा।
इन्दी अपनी इक हट्टी बी ऐ।

सुधाकर : थुआढ़ी बी हट्टी ऐ के ?

बाबू : नेई जी। इन्दे भ्रांड दी ऐ।
इन्दियां मशीनां न।

सुधाकर : ओह कमरा कोह्दा ऐ ?

बाबू : ओह कमरा डाक्टर अमर
हुन्दा ऐ।

सुधाकर : उ'ऐ डाक्टर अमर जि'न्दा
घर राजौरी ऐ ते जि'न्दी
कुड़ी प्रभा ऐ ते निशि ते
विभा नुहां न ?

बाबू : हां जी। उ'ऐ न।

सुधाकर : बाबू जी। एह डाक्टर अमर
कु'न न ?

बाबू : उ'ऐ जी, जि'न्दे अपने ट्रैक्टर
बी हैन ते बाग बी।

सुधाकर : अच्छा, अच्छा।

बाबू : हमारे डॉक्टर साहब की माता
जी भी डुगगर की हैं और
उनकी भाषा भी डोगरी है।

सुधाकर : ये कौन हैं ?

बाबू : ये भी क्लर्क हैं। इनका
नाम प्रकाश है और इनके
गाँव का नाम है नगरोटा।
इनकी अपनी दुकान भी है।

सुधाकर : क्या आपकी भी दुकान है ?

बाबू : जी नहीं। इनके भाई की है।
इनकी आटा-चक्कियां हैं।

सुधाकर : वह कमरा किसका है ?

बाबू : वह कमरा डॉक्टर अमर जी
का है।

सुधाकर : वह डॉक्टर अमर जिनका घर
राजौरी है, जिनकी बेटो
प्रभा है और निशि तथा विभा
बहुएँ न ?

बाबू : हाँ जी। वही हैं।

सुधाकर : बाबू जी। यह डाक्टर अमर
कौन है ?

बाबू : वही जी जिनके अपने ट्रैक्टर
भी हैं तथा बाग भी।

सुधाकर : अच्छा, अच्छा।

जि'न्दियां अपनियां कारां बी
हैन ते सतवारी कोठी बी।

जिनकी अपनी कारें भी हैं
और सतवारी कोठी भी।

बाबू : हां जी, उ'ऐ।

बाबू : हाँ जी, वही।

EXERCISES

1. Repetition Drill (पुनरुक्ति अभ्यास)

- | | |
|---|---|
| 1. डा० प्रद्युमन दा कमरा केहड़ा ऐ? | डाक्टर साहब हुन्दा अपना कमरा ओह ऐ। |
| 2. भला एह डाक्टर होर दनसाल
ग्रांऽ दे हरिराम हुन्दे पुत्तर न नां। | एह ते वकील हीरालाल जी
दे पुत्तर न। |
| 3. एह बी इत्थै कलर्क न।
इन्दा नां प्रकाश ऐ। | साढ़े डाक्टर साहब हुन्दियां माता
जी बी डुग्गर दियां न। |
| 4. इन्दी अपनी इक हट्टी बी ऐ। | नेई जी। इन्दे भ्राऽ दी ऐ। इन्दियां मशीनां न। |
| 5. उ'ऐ जी जि'न्दा सतवारी बाग ऐ। | जि'न्दे अपने ट्रैक्टर बी न। |
| 6. उ'ऐ डाक्टर अमर जि'न्दा घर
राजौरी ऐ, जि'न्दी कुड़ी प्रभा ऐ। | अच्छा-अच्छा। जि'न्दियां
अपनियां कारां बी हैन। |

2. Substitution Drill (स्थानापन्न अभ्यास)

Model - (1)

एह कमरा साढ़ा ऐ। (उन्दा)

एह कमरा उन्दा ऐ।

(इन्दा)

(अपना)

Model - (2)

एह कार मेरे भ्राऽ दी ऐ। (उन्दे)

एह कार उन्दे भ्राऽ दी ऐ।

(इन्दे)

(अपने)

Model - (3)

इक हट्टी मेरी ऐ। (उन्दी)

Model - (4)

मशीनां तुन्दियां बी न। (उन्दियां)

इक हट्टी उन्दी ऐ।

(इन्दी)

(अपनी)

मशीनां उन्दियां बी न।

(इन्दियां)

(अपनियां)

3. Transformation Drill (रूपान्तर अभ्यास)

Model - (1)

एह बाग अमर दा ऐ।

एह बाग कोहदा / कुस दा ऐ?

1. डा० अमर हुन्दे पुत्तर डाक्टर न।
2. ट्रैक्टर डा० अमन हुन्दे न।
3. प्रभा डा० अमर हुन्दी कुड़ी ऐ।
4. निशी ते विभा डा० अमर हुन्दियां नुहां न।

Model - (2)

डा० अमर हुन्दा घर राजौरी ऐ।

डा० अमर हुन्दा घर कु'त्यू ऐ?

1. सुधाकर दा घर दनसाल ऐ।
2. डा० अमन हुन्दी कोठी सतवारी ऐ।
3. साढ़े डाक्टर साहब हुन्दी माता जी डुगगर दियां न।
4. हीरालाल जी वकील न।

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :-

1. सुधाकर दा ग्रांS केहड़ा ऐ?
2. बाबू जी दी मातृभाशा केहड़ी ऐ?
3. डा० प्रद्युमन हुन्दे पिताजी दा नां केह ऐ?
4. डा० अमर हुन्दा घर कु'त्यू ऐ?
5. निशी ते विभा कु'न न?
6. डा० अमन हुन्दी कोठी कु'त्यू ऐ?
7. हीरालाल होर कु'न न?

5. कोष्ठक में दिए गए शब्दों के उपयुक्त रूपों से रिक्त स्थान भरिए :-

1. ----- अपनी इक हट्टी बी ऐ। (एह)
2. ओह मेरा ----- भ्राऽ ऐ। (आप)
3. ----- मातृभाशा केहड़ी ऐ ? (तुस)
4. डा० अमन हुन्दियां ----- कारां बी हैन। (आप)
5. उ'ऐ डाक्टर अमर ----- घर राजौरी ऐ। (जो)

6. निम्नलिखित शब्दों के वाक्य बनाइए :-

इन्दा, हट्टी, अपना, जि'न्दा, उन्दा, अपनी।

7. पढ़िए, समझिए और लिखिए :-

इन्दा ----- इन्दे	इन्दी ----- इन्दियां
अपना -----	अपनी -----
जि'न्दा -----	जि'न्दी -----
उन्दा -----	उन्दी -----
ओहदा -----	ओहदी -----
कुसदा -----	कुसदी -----
तुन्दा -----	तुन्दी -----
मेरा -----	मेरी -----
तेरा -----	तेरी -----
थुआढ़ा -----	थुआढ़ी -----

Vocabulary शब्दावली

कमरा	कमरा	हुन्दियां	जी की
ओपरा	अजनबी	इत्थै-	यहाँ
हुन्दा	जी का	ग्रांS	गाँव
इसलै	इस समय	इन्दी	इनकी
दनसाल	स्थान का नाम	अपनी	अपनी
डाक्टर	डॉक्टर	हट्टी	दुकान
पुत्तर	बेटा	इन्दियां	इनकी
भ्राS	भाई	मशीन	मशीन (आटा-चक्की)
इत्थूं	यहाँ से	जि'न्दा	जिनका
गै	ही	जि'न्दे	जिनके
मातृभाशा	मातृभाषा	जि'न्दी	जिनकी
अच्छा	अच्छा	नुहां	बहुएँ
बाग	बाग	कारां	कारें
कोठी	कोठी	नगरोटा	जगह का नाम

टिप्पणियाँ

- 4.1 इस पाठ में आपने निजवाचक सर्वनाम 'आप/आपू' (आप/स्वयं) सम्बन्धवाचक सर्वनाम 'जो/जेहड़ा' (जो) और प्रश्नवाचक सर्वनाम 'केह' (क्या) के सम्बन्ध कारकीय रूप की जानकारी प्राप्त की है। डोगरी में ये रूप लिंग, वचन और कारक के अनुसार बदलते हैं।
- 4.2 निजवाचक सर्वनाम 'आप' एवं 'आपू' में वचन के लिए परिवर्तन नहीं होता। लिंग और वचन के अनुसार इसके रूप निम्न प्रकार हैं :-

कर्ता	पुलिंग		स्त्रीलिंग	
	आप/आपू	‘स्वयं’	आप/आपू	‘स्वयं’
सम्बन्ध कारक				
एकवचन	अपना	‘अपना’	अपनी	‘अपनी’
बहुवचन	अपने	‘अपने’	अपनियां	‘अपनी’ (बहुवचन)

4.3 सम्बन्धवाचक सर्वनाम ‘जो/जेहड़ा’ में लिंग, वचन और पुरुष तीनों के लिए परिवर्तन होता है। जैसे :-

	पुलिंग		स्त्रीलिंग	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
कर्ता कारक	जो/जेहड़ा	‘जो’	जो/जेहड़े	‘जो’
सम्बन्ध कारक	जिसदा/जेहदा	‘जिसका’	जि’न्दा	‘जिनका’
	जिसदे/जेहदे	‘जिसके’	जि’न्दे	‘जिनके’

4.4 प्रश्नवाचक सर्वनाम ‘केह्’ (क्या) अप्राणिवाचक संज्ञाओं के लिए प्रयुक्त होता है और वह केवल एकवचन में आता है। सम्बन्ध कारक के लिए इसमें लिंग, वचन और कारक के अनुसार परिवर्तन होता है। जैसे :-

एकवचन			बहुवचन	
कर्ता कारक	केह्	‘क्या’	केह्	‘क्या’
सम्बन्ध कारक	कैह्दा	‘किस (चीज़) का’	कैह्दी	‘किस (चीज़) की’
	कैह्दे	‘किस (चीज़) के’	कैह्दियां	‘किस (चीज़) की’ (बहुवचन)

× × × ×

पाठ-5
रसोई घर
(रसोई घर)

- रानी : रुट्टी तयार ऐ ?
मम्मी : हां।
रानी : एह मिट्ठा भत्त ऐ ?
मम्मी : हां एह मिट्ठा भत्त ऐ ते ओह चिट्टे चौल।
रानी : मम्मी! तत्ता पानी केहड़ा ऐ ?
मम्मी : एह ठंडा पानी ऐ ते ओह तत्ता पानी।
रानी : एह दुख ऐ जां देहीं ?
मम्मी : एह दुख ऐ।
रानी : इन्ना दुख!
मम्मी : बड़ा मता ते नेई, त्रै किलो ऐ।
रानी : देहीं नेई है ?
मम्मी : देहीं बी है। घ्यो बी है।
रानी : कल देहीं मिट्ठा हा, केह अज्ज बी मिट्ठा ऐ ?
मम्मी : देहीं अज्ज बी मिट्ठा ऐ।
रानी : मम्मी, एह केहड़ी सब्जी ऐ ?
मम्मी : एह कश्मीरी आलू न।
रानी : मम्मी, क्या खाना तैयार है ?
मम्मी : हाँ-हाँ।
रानी : क्या यह मीठा भात है ?
मम्मी : हाँ यह मीठा भात है और वह सादा भात।
रानी : मम्मी! गर्म पानी कौन सा है ?
मम्मी : यह ठंडा पानी है और वह गर्म पानी।
रानी : यह दूध है या दही ?
मम्मी : यह दूध है।
रानी : इतना दूध!
मम्मी : बहुत अधिक तो नहीं, तीन किलो है।
रानी : क्या दही नहीं है ?
मम्मी : दही भी है। घी भी है।
रानी : कल दही मीठा था, क्या आज भी मीठा है ?
मम्मी : दही आज भी मीठा है।
रानी : मम्मी यह कौन सी सब्जी है ?
मम्मी : ये कश्मीरी आलू हैं।

रानी : दूई सब्जी केहड़ी ऐ ?

मम्मी : एह ऐ मटरपनीर।

रानी : सब्जी बड़ी मती ऐ।

मम्मी : इन्नी मती ते नेई।

रानी : केह एह मिट्टी चटनी ऐ ?

मम्मी : नेई एह खट्टी—मिट्टी ऐ।

रानी : कल चटनी सुआदली ही।

मम्मी : हां भाई, सुआदली ही।

रानी : एह चाह कनेही ऐ ?

मम्मी : एह चाह ठंडी ऐ।
बडलै आहली कनेही ही ?

रानी : बडलै चाह ठीक ही। मम्मी,
एह थाली नानी दी ऐ न ?

मम्मी : नेई एह ते तेरी दादी दी ऐ
ते एह थाली चांदी दी ऐ।

रानी : अच्छा। ते एह मेरी ऐ नां ?

मम्मी : हां। हून तेरी गै।

रानी : मां। कल खीरे कौड़े हे।
चंगे नेई हे।

मम्मी : पर अज्ज ते मिठे न।

रानी : मम्मी, एह ढोडे फाड़ी आटे
दे न ?

मम्मी : हां फाड़ी आटे दे न।

रानी : दूसरी सब्जी कौन सी है ?

मम्मी : यह है मटरपनीर।

रानी : सब्जी बड़ी ज्यादा है।

मम्मी : इतनी ज्यादा तो नहीं।

रानी : क्या यह मीठी चटनी है ?

मम्मी : नहीं यह खट्टी—मीठी है।

रानी : कल चटनी स्वादिष्ट थी।

मम्मी : हाँ भई, स्वादिष्ट थी।

रानी : यह चाय कैसी है ?

मम्मी : यह चाय ठंडी है।
सुबह की चाय कैसी थी ?

रानी : सुबह चाय अच्छी थी। मम्मी,
क्या यह बड़ी थाली नानी की है ?

मम्मी : नहीं, यह तेरी दादी की है
और यह थाली चाँदी की है।

रानी : अच्छा। तो यह मेरी है न ?

मम्मी : हां। अब यह तेरी ही है।

रानी : मां कल खीरे कड़वे थे।
अच्छे नहीं थे।

मम्मी : पर आज तो मीठे हैं।

रानी : मम्मी, ये मक्की की रोटियाँ
पहाड़ी आटे की हैं ?

मम्मी : हाँ। पहाड़ी आटे की हैं।

- रानी : तां गै इन्ने सुआदले न।
- मम्मी : ढोडे फाड़ी आटे दे गै सुआदले होदे न।
- रानी : केह् एह् सारे चिमचे चांदी दे न ?
- मम्मी : नेई ते। बड्डे स्टील दे न ते लौहके चांदी दे।
- रानी : मम्मी। एह् थालियाँ साफ न ?
- मम्मी : हां एह् सब साफ न।
- रानी : एह् थालियां किन्नियां न ?
- मम्मी : बड्डियां छे न ते लौहकियां न सत्त।
- रानी : चांदी दा सारा समान साफ ऐ नां, मम्मी ?
- मम्मी : सिर्फ चांदी दा गै नेई रसोई दा सारा समान साफ है।
- रानी : मम्मी एह् सब्जी दियां कटोरियां मेरियां न ?
- मम्मी : नेई। एह् ते सोनू दियां न।
- रानी : अज्ज किन्नियां सब्जियां न ?
- मम्मी : कल चार सब्जियां हियां ते अज्ज बी चार गै न।
- रानी : मम्मी, एह् सब्जियां ते ठंडियां न ?
- मम्मी : नेई, एह् ते गर्म न।
- रानी : मम्मी! एह् मड्डियां मिड्डियां न ?
- मम्मी : नेई। एह् ते लूनियां न।
- रानी : तभी तो इतनी स्वादिष्ट हैं।
- मम्मी : मक्की की रोटियाँ पहाड़ी आटे की ही स्वादिष्ट होती हैं।
- रानी : क्या ये सारे चमच चाँदी के हैं ?
- मम्मी : नहीं तो। बड़े स्टील के हैं और छोटे चाँदी के।
- रानी : मम्मी, क्या ये थालियाँ साफ हैं ?
- मम्मी : हाँ ये सभी साफ हैं।
- रानी : ये थालियां कितनी हैं ?
- मम्मी : बडी छः हैं और छोटी हैं सात।
- रानी : चाँदी का सब सामान साफ है न, मम्मी ?
- मम्मी : सिर्फ चाँदी का ही नहीं रसोई का सब सामान साफ है।
- रानी : मम्मी, ये सब्जी की कटोरियाँ मेरी हैं ?
- मम्मी : नहीं। ये तो सोनू की हैं।
- रानी : आज कितनी सब्जियाँ हैं ?
- मम्मी : कल चार सब्जियाँ थीं और आज भी चार ही हैं।
- रानी : मम्मी, ये सब्जियाँ तो ठंडी हैं।
- मम्मी : नहीं। ये तो गर्म हैं।
- रानी : मम्मी! ये मड्डियें मीठी हैं ?
- मम्मी : नहीं। ये तो नमकीन हैं।

EXERCISES

1. Repitition Drill (पुनरुक्ति अभ्यास)

Singular	Plural
1. एह मिट्ठा भत्त ऐ?	ओह चौल चिट्टे न।
2. गर्म पानी केहड़ा ऐ?	एह कश्मीरी आलू न।
3. कल देहीं मिट्ठा हा।	कल खीरे कौड़े हे।
4. एह केहड़ी सब्जी ऐ?	एह ढोडे फाड़ी आटे दे न।
5. कल चटनी सुआदली ही।	एह थालियां साफ न।
6. एह चाह ठंडी ऐ।	एह मट्टियां मिट्टियां न।
7. एह थाली चांदी दी ऐ।	एह ते लूनियां न।
8. बडलै चाह ठीक ही।	एह सब्जियां ते ठंडियां न।
9. रुट्टी त्यार ऐ।	एह थालियां किन्नियां न?
10. एह थाली नानी दी ऐ न?	बड्डियां छे न ते लौहकियां न सत्त।

2. Substitution Drill (स्थानापन्न अभ्यास)

Model - (1)	Model - (2)
एह ढोडा तत्ता ऐ। (ठंडा)	एह मट्ठी तत्ती ऐ। (ठंडी)
एह ढोडा ठंडा ऐ।	एह मट्ठी ठंडी ऐ।
(लौहका)	(लौहकी)
(बड्डा)	(बड्डी)
(सुआदला)	(सुआदली)
Model (3)	Model (4)
एह ढोडे तत्ते न। (ठंडे)	एह मट्टियां तत्तियां न। (ठंडियां)
एह ढोडे ठंडे न।	एह मट्टियां ठंडियां न।
(लौहके)	(लौहकियां)

(बड्डे)
(सुआदले)

(बड्डियां)
(सुआदलियां)

3. Transformation Drill (रूपान्तरण अभ्यास)

Model (1)

पानी ठंडा ऐ।
पानी कनेहा ऐ?
भत्त मिट्टा ऐ।
चटनी सुआदली ऐ।
चाह् ठंडी ऐ।

Model (3)

चिमचे पञ्ज न।
चिमचे किन्ने न।
पक्खे त्रै न।
मेज अट्ठ न।
डैस्क दस न।

Model (2)

चौल चिट्ठे न।
चौल कनेह् न?
खीरे कौड़े न।
सब्जियां ठंडियां न।
ढोडे सुआदले न।

Model (4)

थालियां छे न।
थालियां किन्नियां न?
सब्जियां चार न।
पैंसलां सत्त न।
कापियां नौ न।

4. A. Response Drill (प्रश्न-उत्तर अभ्यास)

Model (1)

देहीं कनेहा ऐ?
देहीं मिट्ठा ऐ।
भत्त कनेहा ऐ?
दुख् किन्ना ऐ?
पानी कनेहा ऐ?

Model (2)

चौल कनेह् न?
चौल चिट्ठे न।
खीरे कनेह् न?
ढोडे कनेह् न?
चिमचे किन्ने न?

Model (3)

चाह कनेही ऐ?

चाह ठंडी ऐ।

चटनी कनेही ऐ?

सब्जी किन्नी ऐ?

बडलै चाह कनेही ही?

Model (4)

सब्जियां किन्नियां न?

सब्जियां चार न।

मट्टियां कनेहियां न?

सब्जियां कनेहियां न?

थालियां किन्नियां न?

B. उदाहरण का अनुसरण करते हुए उपयुक्त शब्दों से रिक्त स्थान भरिए :-

उदाहरण :- एह पानी ठंडा ऐ ते ओह पानी गर्म ऐ।

1. स्टील दे चिमचे ----- न ते ओह चिमचे ----- न।
2. एह मट्टियां ----- न ते ओह मट्टियां ----- न।
3. कल खीरे ----- हे ते अज्ज ----- न।
4. छे थालिया ----- न ते सत्त थालियां ----- न।

Vocabulary शब्दावली

चिट्ठा	सफेद	त्रै	तीन
बड्डा	बड़ा	सत्त	सात
मिट्ठा	मीठा	छे	छः
लौहका	छोटा	भत्त	पकाए हुए चावल
कौड़ा	कड़वा	देहीं	दही
लूना	नमकीन	दुद्ध	दूध
केहड़ा	कौन सा	ढोडा	मक्की की रोटी
किन्ना	कितना	खट्ठा	खट्टा
इन्ना	इतना	ठंडा	ठंडा
बडला	सुबह		

टिप्पणियाँ

5.1 इस पाठ में आप डोगरी विशेषणों से परिचित हुए हैं।

5.2 डोगरी में विशेषणों का प्रयोग दो प्रकार होता है :

- (i) 'सैल्ला' (हरा) 'लौहका' (छोटा) 'थोहड़ा' (कम)

आदि आकारान्त पुलिंग विशेषण संज्ञा के लिंग, वचन आदि के अनुसार बदलते हैं। जैसे :-

	पुलिंग		स्त्रीलिंग	
एकवचन	सैल्ला	'हरा'	सैल्ली	'हरी'
बहुवचन	सैल्ले	'हरे'	सैल्लियां	'हरी' (बहुवचन)
प्रयोग	सैल्ला कुर्ता		'हरा कुर्ता'	
	सैल्ले कुर्ते		'हरे कुर्ते'	
	सैल्ली कमीज		'हरी कमीज'	
	सैल्लियां कमीजां		'हरी कमीजें'	

- (ii) आकारान्त पुलिंग विशेषणों को छोड़ कर बाकी सभी विशेषण संज्ञाओं के लिंग, वचन आदि के लिए नहीं बदलते। जैसे :-

शैल कपड़ा	'सुन्दर कपड़ा'
शैल कुड़ी	'सुन्दर लड़की'
शैल कपड़े	'सुन्दर कपड़े'
शैल कुड़ियां	'सुन्दर लड़कियाँ'
केसरी पजामा	'केसरी पाजामा'
केसरी धोती	'केसरी धोती'
केसरी पजामे	'केसरी पाजामे'
केसरी धोतियां	'केसरी धोतियाँ'

5.3 डोगरी में विशेषणों का प्रयोग प्रायः संज्ञाओं से पूर्व होता है। जैसे :-

एह बड़्डे गिलास न।	‘ये बड़े गिलास हैं।’
एह मिट्ठा भत्त ऐ।	‘यह मीठा भात है।’
ओह चिट्टे चौल न।	‘वे सादा चावल हैं।’

5.4 जब विशेषण का प्रयोग क्रिया के साथ होता है तब वह संज्ञा के बाद आता है। जैसे:-

एह चाह ठण्डी ऐ।	‘यह चाय ठण्डी है।’
एह चटनी मिट्ठी ऐ।	‘यह चटनी मीठी है।’
एह खीरे कौड़े न।	‘ये खीरे कड़ेवे हैं।’
ओह कौलियां मेरियां न।	‘वे कटोरियाँ मेरी हैं।’

5.5 संख्यावाचक विशेषणों में से गणनासूचक विशेषणों की दस तक संख्या इस प्रकार है:-

इक	‘एक’	छे	‘छः’
दो	‘दो’	सत्त	‘सात’
त्रै	‘तीन’	अट्ठ	‘आठ’
चार	‘चार’	नौ	‘नौ’
पञ्ज	‘पाँच’	दस	‘दस’

5.6 ‘किन्ना’ (कितना) प्रश्नात्मक संख्यावाचक विशेषण है। इसमें संज्ञाओं के लिंग, वचन आदि के अनुसार परिवर्तन होता है। जैसे :-

किन्ना दुख	‘कितना दूध’
किन्ने रपेऽ	‘कितने रुपये’
किन्नी खंड	‘कितनी चीनी’
किन्नियां कताबां	‘कितनी किताबें’

5.7 'कनेहा' (कैसा) प्रश्नात्मक गुणावाचक विशेषण भी संज्ञाओं के लिंग, वचन आदि के अनुसार बदलता है। जैसे :-

कनेहा कपड़ा	'कैसा कपड़ा'
कनेह् कपड़े	'कैसे कपड़े'
कनेही कमीज	'कैसी कमीज'
कनेहियां कमीजां	'कैसी कमीजें'

5.8 'घट्ट' (कम) 'थोहड़ा' (थोड़ा) 'मता' (अधिक) अनिश्चित संख्या की सूचना देने वाले विशेषण हैं। यहाँ पर भी आकारान्त विशेषणों 'थोहड़ा', 'मता' आदि में संज्ञा के लिंग, वचन आदि के लिए तब्दीली होती है। जैसे :-

थोहड़ा दुध	'थोड़ा दूध'
थोहड़े गलास	'थोड़े गिलास'
थोहड़ी खंड	'थोड़ी चीनी'
थोहड़ियां चीजां	'थोड़ी चीजें'
मता कम्म	'अधिक काम'
मते गलास	'अधिक गिलास'
मती रुट्टी	'अधिक रोटी'
मतियां पैसलां	'अधिक पेंसिलें'

पाठ-6
जनरल स्टोर
(जनरल स्टोर)

- | | |
|--|--|
| छवि : कपड़े हैं ? | छवि : कपड़े हैं ? |
| दकानदार : हां। | दुकानदार : हाँ। |
| छवि : एह कोट ऐ ? | छवि : यह कोट है ? |
| दकानदार : हां, एह लाल ते
नाहब्बी दोऐ कोट न। | दुकानदार : हाँ, यह लाल कोट है और
वह उन्नाबी कोट है। |
| छवि : एह पैह्ला कोट लम्मा
किन्ना ऐ ? | छवि : यह पहला कोट लम्बा
कितना है ? |
| दकानदार : इक मीटर लम्मा ऐ। | दुकानदार : एक मीटर लम्बा है। |
| छवि : शशि, इन्ना लम्मा ठीक ऐ ? | छवि : शशि, इतना लम्बा ठीक है ? |
| शशि : नेई, एह छुट्टा ऐ। | शशि : नहीं, यह छोटा है। |
| छवि : दूआ कोट केहड़ा ऐ ? | छवि : दूसरा कोट कौन सा है ? |
| दकानदार : दूआ छुट्टा ऐ ते त्रिया
लम्मा ऐ। | दुकानदार : दूसरा छोटा है और तीसरा
लम्बा है। |
| शशि : एह किन्ने दा ऐ ? | शशि : यह कितने का है ? |
| दकानदार : ढाई सौ रपेऽ दा। | दुकानदार : ढाई सौ रुपये का। |
| शशि : किश घट्ट नेई ? | शशि : कुछ कम नहीं ? |
| दकानदार : चलो, पौने दो सौ रपेऽ सेही। | दुकानदार : चलो, पौने दो सौ रुपये सही। |
| शशि : ओह चौथा कोट बधिया ऐ ? | शशि : वह चौथा कोट बढ़िया है ? |
| छवि : नेई ओह घटिया ऐ। | छवि : नहीं, वह घटिया है। |

सोनू : दीदी, एह पजमा कोट
शैल ऐ ?

छवि : नेई एह नाहब्बी कोट
शैल ऐ।

शशि : छेमां, सतमां ते अठमां
दपट्टा केह्दा ऐ ?

दकानदार : एह सारे जयपुरी न।

छवि : फही नौमां ते दसमां
कनेह् न ?

दकानदार : एह दोऐ अमरीकी न ?

शशि : एह दपट्टा केह्दा ऐ ?

दकानदार : एह शफान दा ऐ।

शशि : कुल किन्ने दपट्टे न ?

दकानदार : बीह् न।

छवि : होर केह्दा-केह्दा समान ऐ ?

दकानदार : सब किश है, दाल, चाह,
क्रीम, पौडर आदि।

शशि : देसी घ्यो दा अद्धे किलो
दा डब्बा है ?

दकानदार : नेई, किल्लो दा ऐ।

शशि : घटिया ते नेई ?

दकानदार : नेई जी, खालस ऐ।

छवि : एह साड़ी सूती ऐ ?

सोनू : दीदी, यह पाँचवाँ कोट
अच्छा है ?

छवि : नहीं, यह उन्नाबी कोट
अच्छा है।

शशि : छठा, सातवाँ और आठवाँ
दुपट्टा किसका है ?

दुकानदार : ये सभी जयपुरी हैं।

छवि : फिर, नौमाँ और दसवाँ
कैसे हैं ?

दुकानदार : यह दोनों अमरीकी हैं।

शशि : यह दुपट्टा कौन सा है ?

दुकानदार : यह शुफान का है।

शशि : कुल कितने दुपट्टे हैं ?

दुकानदार : बीस हैं।

छवि : और कौन-कौन सा सामान है ?

दुकानदार : सब कुछ है, दाल, चाय,
क्रीम, पाऊडर आदि

शशि : देसी घी का आधा किलो
ग्राम का डिब्बा है ?

दुकानदार : नहीं किलोग्राम का है।

शशि : घटिया तो नहीं ?

दुकानदार : नहीं जी, शुद्ध है।

छवि : यह साड़ी सूती है ?

दकानदार : नेई, एह रेशमी ऐ।

छवि : केसरी रंग है ?

दकानदार : हां, केसरी बी है।

शशि : एह सवा पञ्ज मीटर ऐ ?

दकानदार : नेई, एह साड्डे पञ्ज मीटर ऐ।

छवि : एह पैट किन्ने दी ऐ ?

दकानदार : एह इक सौ रपेऽ दी ऐ ते ओह दो सौ दी ऐ।

छवि : इन्ने ते मते न।

दकानदार : एह माल असली ऐ नकली नेई।

शशि : ओह प्याजी सूट ऐ ?

दकानदार : हां, सूट ऐ।

छवि : किन्ने दा ऐ ?

दकानदार : एह त्रै सौ रपेऽ दा ऐ।

शशि : एह ते दूना मुल्ल ऐ।

छवि : अच्छा, कश्मीरी जैकट बी है ?

दकानदार : नेई, लद्दाखी ऐ। एह बड़ी मशहूर ऐ।

छवि : किन्ने दी ऐ ?

दकानदार : इक ज्हार रपेऽ दी।

दुकानदार : नहीं, यह रेशमी है।

छवि : केसरी रंग है ?

दुकानदार : हाँ, केसरी भी है।

शशि : यह सवा पाँच मीटर है ?

दुकानदार : नहीं, यह साढ़े पाँच मीटर है।

छवि : यह पैट कितने की है ?

दुकानदार : यह एक सौ रुपयों की है और वह दो सौ रुपयों की है।

छवि : इतने तो अधिक हैं।

दुकानदार : यह माल असली है, नकली नहीं।

शशि : वह गुलाबी सूट है ?

दुकानदार : हाँ, सूट है।

छवि : कितने का है ?

दुकानदार : यह तीन सौ रुपयों का है।

शशि : यह तो दुगुणा मूल्य है।

छवि : अच्छा, कश्मीरी जैकट भी है ?

दुकानदार : नहीं लद्दाखी है। यह बहुत मशहूर है।

छवि : कितने की है ?

दुकानदार : एक हजार रुपयों की।

- छवि : एह ते त्रीनी मैहगी ऐ।
दकानदार : एह पशमीने दी ऐ ते
पशमीना मैहगा ऐ।
शशि : ओह डब्बा कनेहा ऐ ?
दकानदार : ओह देसी ध्यो दा डब्बा ऐ।
शशि : एह टोपी ठंडी ऐ ?
दकानदार : नेई, टोपी गर्म ऐ।
सोनू : एह नसवारी जराब मेरी ऐ ?
शशि : नेई, फरोजी जराब तेरी ऐ।
छवि : लाल कोट किन्ने न ?
दकानदार : लाल कोट जारां न।
शशि : एह कोट बधिया न ?
छवि : नेई, घटिया न।
शशि : पैहले कोट घटिया हे ?
दकानदार : नेई, उ'ब्बी बधिया न।
छवि : एह नाह्बी कमीज तंग ऐ ?
शशि : नेई, एह मिगी बड़ी खु'ल्ली ऐ।
छवि : एह नाह्बी कमीजां
किन्नियां न ?
दकानदार : एह नाह्बी कमीजां बारां न।
सोनू : एह स्वैटर कनेह न ?
शशि : एह मोनू दे स्वैटर न।
- छवि : यह तो तीन गुणा मैहगी है।
दुकानदार : यह पशमीने की है और
पशमीना मैहगा है।
शशि : वह डिब्बा कैसा है ?
दुकानदार : वह देसी घी का डिब्बा है।
शशि : यह टोपी ठंडी है ?
दुकानदार : नहीं, टोपी गर्म है।
सोनू : यह नसबारी जुराब मेरी है ?
शशि : नहीं फिरोजी जुराब तुम्हारी है।
छवि : लाल कोट कितने हैं ?
दुकानदार : लाल कोट ग्यारह हैं।
शशि : यह कोट बढ़िया हैं ?
छवि : नहीं, घटिया हैं।
शशि : पहले कोट घटिया थे ?
दुकानदार : नहीं, वह भी बढ़िया थे।
छवि : यह उन्नाबी कमीज तंग है ?
शशि : नहीं यह मुझे बहुत खुली है।
छवि : यह उन्नाबी कमीजें
कितनी हैं ?
दुकानदार : ये उन्नाबी कमीजें बारह हैं।
सोनू : ये स्वैटर कैसे से हैं ?
शशि : ये मोनू के स्वैटर हैं।

छवि	: एह् स्वेटर गर्म न ?	छवि	: ये स्वेटर गर्म हैं ?
शशि	: नेई, एह् कैश्मीलोन दे न।	शशि	: नहीं, ये कैश्मीलॉन के हैं।
छवि	: दालां साफ न ?	छवि	: दालें साफ हैं ?
दकानदार	: हां, एह् दालां साफ न।	दुकानदार	: हां, ये दालें साफ हैं।
शशि	: तां गै एह् दालां मैह्गियां न ?	शशि	: तभी ये दालें मँहगी हैं ?
दकानदार	: ओह् ते ठीक ऐ साफ चीजां मैह्गियां न।	दुकानदार	: वह तो ठीक है साफ चीजें मँहगी हैं।

EXERCISES

1. Repitition Drill (पुनरुक्ति अभ्यास)

Model (1)

1. एह् कोट ऐ।

एह् पैह्ला कोट लम्मा किन्ना ऐ ?

ओह् चौथा कोट बधिया ऐ।

एह् पजमां कोट शैल ऐ।

एह् दपट्टा केहड़ा ऐ ?

एह् शफान दा ऐ।

एह् पैट किन्ने दी ऐ ?

एह् टोपी ठंडी ऐ।

एह् नसवारी जराब मेरी ऐ।

एह् नाहब्बी कमीज तंग ऐ।

Model (2)

एह सारे दपट्टे जयपुरी न।

छेमां, सतमां ते अठमां दपट्टा कैहदा ऐ?

लाल कोट किन्ने न?

लाल कोट जारां न।

एह कोट बधिया न।

नाह्बी कमीजां बारां न।

एह स्वेटर कनेह न?

एह स्वेटर गर्म न?

एह दालां साफ न।

एह दालां मैहगियां न।

2. Substitution Drill (स्थानापन्न अभ्यास)

1. एह कोट लाल ऐ।

(नाह्बी)

(गटेई)

(केसरी)

(बधिया)

(घटिया)

एह कोटी लाल ऐ।

(नाह्बी)

(गटेई)

(केसरी)

(बधिया)

(घटिया)

एह कोट लाल न।

(नाह्बी)

(गटेई)

(केसरी)

(बधिया)

(घटिया)

एह लाल कोटियां न।

(नाह्बी)

(गटेई)

(केसरी)

(बधिया)

(घटिया)

3. Transformation Drill (रूपान्तरण अभ्यास)

(i)

एह लाल कोट बधिया ऐ?
नेई, एह घटिया ऐ।

1. एह सारा माल असली ऐ?
2. एह साड़ी सूती ऐ?
3. एह नाहब्बी कमीज तंग ऐ?
4. एह टोपी ठंडी ऐ?

(ii)

एह दुपट्टे जयपुरी न?
हां, एह जयपुरी न।

- एह देसी ध्यो खालस ऐ?
- एह साड़ी सवा पञ्ज मीटर ऐ?
- एह दालां साफ न?
- ओह प्याजी सूट ऐ?

4. निम्नलिखित शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुन कर रिक्त स्थान भरिए :-

घटिया, ठंडी, सवा मीटर, नौ, प्याजी, तेरे, नाहब्बी, जयपुरी, खुल्लियां, त्रै सौ, पैन्ट।

1. एह चीज बधिया ऐ ते ओह न।
2. एह कोट ऐ ते ओह ऐ।
3. एह पैन्ट सौ रपेऽ दी ऐ ते ओह ऐ।
4. एह दपट्टा शफान दा ऐ ते ओह ऐ।
5. एह टोपी गर्म ऐ ते ओह ऐ।
6. एह कमीजां तंग न ते ओह न।
7. एह कोट इक मीटर लम्मा ऐ ते ओह ऐ।
8. एह साड़ियां केसरी न ते ओह न।
9. गर्म टोपियां सत्त न ते ठंडियां टोपियां न।
10. एह शैल कपड़े मेरे न ते ओह कपड़े न।

5. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :-

1. पैहला कोट किन्ना लम्मा ऐ?
2. कुल दपट्टे किन्ने न?

3. लद्दाखी जैकट किन्ने दी ऐ?

4. लाल कोट किन्ने न?

5. नाहब्बी कमीजां किन्नियां न?

6. निम्नलिखित शब्दों से वाक्य बनाइए :-

लाल, जयपुरी, मेरे, केसरी, त्रै, सवा पञ्ज, चार, प्याजी, केहड़ा, कोहदा, कनेह, किन्ना, शैल, सतमां, त्रीनी, तंग, शफान, पशमीना, साफ।

Vocabulary शब्दावली

लाल	लाल	पैंट	पैंट
नाहब्बी	उन्नाबी	दकानदार	दुकानदार
लम्मा	लम्बा	फरोजी	फीरोजी
इन्ना	इतना	पैहले	पहले
छुट्टा	छोटा	नेई	नहीं
किन्ना	कितना	खुल्ली	खुली
घट्ट	कम	नकली	नकली
बधिया	बढ़िया	सूती	सूती
घटिया	घटिया	दपट्टा	दुपट्टा
शफान	शुफान	केहड़ा	कौन सा
सब	सब	समान	सामान
खालस	शुद्ध	केहड़ी	कौन सी
किन्ने	कितने	शैल	अच्छा
त्रै	तीन	पञ्ज	पाँच
मशहूर	मशहूर	देसी घ्यो	देसी घी
जराब	जुराब	मिगी	मेरे को
मैहगी	मँहगी	बीह	बीस
किल्लो	किलो	इक	एक

टिप्पणियाँ

6.1 इस पाठ में आप डोगरी के संख्यावाचक विशेषणों के भिन्न-भिन्न रूपों से परिचित हुए हैं।

6.2 क्रमसूचक संख्यावाचक विशेषण निम्न रूपों में प्रयुक्त होते हैं :-

पैह्ला	‘पहला’	छेमां	‘छठा’
दूआ	‘दूसरा’	सतमां	‘सातवाँ’
त्रीआ	‘तीसरा’	अठमां	‘आठवाँ’
चौथा	‘चौथा’	नौमां	‘नवाँ’
पजमां	‘पाँचवाँ’	दसमां	‘दसवाँ’

6.3 दस के आगे की भी सभी संख्याओं के साथ ‘-मां’ प्रत्यय लगाने से क्रमसूचक रूप बनते हैं।
जैसे :-

जा'रमां	‘ग्यारहवाँ’	काह्ठमां	‘इकसठवाँ’
उ'न्नीमां	‘उन्नीसवाँ’	व्हत्तरमां	‘बहत्तरवाँ’
ठाईमां	‘अट्ठाईसवाँ’	बासीमां	‘बयासीवाँ’
पैंतीमां	‘पैंतीसवाँ’	छेआनमेमां	‘छियांनवेवाँ’
कतालीमां	‘इकतालीसवाँ’	सौमां	‘सौवाँ’

6.4 क्रमसूचक संख्यावाचक विशेषण भी संज्ञा के लिंग, वचन आदि के अनुसार बदलते हैं।
जैसे :-

पैह्ला जागत	‘पहला लड़का’
पैह्ली कुड़ी	‘पहली लड़की’
पैह्ले पज्ज कमरे	‘पहले पाँच कमरे’
पैहलियां पज्ज बारियां	‘पहली पाँच खिड़कियाँ’

6.5 डोगरी के अपूर्ण – अंक संख्यावाचक विशेषण निम्न हैं :-

अद्धा	‘आधा’
पौना	‘पौन/तीन चौथाई’
सवा	‘सवा’
साइंढे	‘साढ़े’ वगैरा

6.6 ‘पौना’ विशेषण संज्ञाओं के लिंग अनुसार बदलता है। जैसे :-

पौना गलास	‘पौन गिलास’
पौनी रुट्टी	‘पौन रोटी’

6.7 संख्याओं के साथ ‘पौना’ विशेषण हमेशा ‘पौने’ रूप में ही प्रयुक्त होता है। जैसे :-

पौने दो बजे	‘पौने दो बजे’
पौने चार रपेऽ	‘पौने चार रुपये’
पौने दस मीटर	‘पौने दस मीटर’

6.8 ‘सवा’ और ‘साइंढे’ विशेषणों में कोई परिवर्तन नहीं होता। जैसे :-

सवा दो बजे	‘सवा दो बजे’
सवा त्रै रपेऽ	‘सवा तीन रुपये’
साइंढे चार मीटर	‘साढे चार मीटर’
साइंढे दस बजे	‘साढे दस बजे’

6.9 एक और आधे के योग के लिए ‘डेढ’ (डेढ) तथा दो और आधे के योग के लिए ‘ढाई’ (अढाई) शब्द प्रयुक्त होते हैं।

6.10 ‘कुल्ल’ (कुल) विशेषण में कोई परिवर्तन नहीं होता।

6.11 चलो। (ठीक / अच्छा) आदि स्वीकृति सूचक अर्थ देता है और इसका प्रयोग अव्यय के समान होता है।

6.1.2 संख्यावाचक विशेषणों में से गणनासूचक विशेषणों की 11 (ग्यारह) से 20 (बीस) तक की संख्या इस प्रकार हैं :-

आरां	‘ग्यारह’	सोलां	‘सोलह’
बारां	‘बारह’	सतारां	‘सतरह’
तेरां	‘तेरह’	ठारां	‘अठारह’
चौदां	‘चौदह’	उन्नी	‘उन्नीस’
पन्दरां	‘पन्द्रह’	बीह्	‘बीस’

* * *

पाठ—7
ग्रां५—सुधार
(ग्राम—सुधार)

- सोहन : ओह ओपरे आदमी कु'न हे ? सोहन : वे अजनबी आदमी कौन थे ?
- मोहन : जेहडे हूनै—हूनै इत्थै हे ? मोहन : जो अभी—अभी यहाँ थे ?
- सोहन : हां—हां। सोहन : हाँ—हाँ।
- मोहन : ओह इत्थूं दे बी.डी.ओ. न ते मोहन : वे यहाँ के बी.डी.ओ. हैं और
उन्दे दफ्तरै दे किश कर्मचारी। उनके दफ्तर के कुछ कर्मचारी।
- सोहन : कल ते एह तुआहीं हे। सोहन : कल तो ये उधर थे।
अज्ज इद्धर कि'यां ? आज इधर कैसे ?
- मोहन : अज्ज साढे स्कूलै दी इमारत मोहन : आज हमारे स्कूल की इमारत
दी इंस्पेक्शन ऐ। की इंस्पेक्शन है।
- सोहन : हून ओह लोक कु'त्थै न ? सोहन : अब वे लोग कहाँ हैं ?
- मोहन : ओह उद्धर बागै दे पिच्छें खेतरे मोहन : वे उधर बाग के पीछे खेतों में
च न। हैं।
- सोहन : तुआंह उन्दे कश होर कु'न— सोहन : वहाँ उनके पास और कौन—
कु'न ऐ ? कौन है ?
- मोहन : सरपंच, ग्रामसेवक, चौकीदार, मोहन : सरपंच, ग्रामसेवक, चौकीदार,
पटवारी ते किश होर पटवारी तथा कुछ और
लोक बी उत्थै गै न। लोग भी वहाँ ही हैं।
- सोहन : अज्ज तां इत्थूं दे सारे खास सोहन : आज तो यहाँ के सारे खास
लोक उत्थै मज्जुद न। लोग वहाँ मौजूद हैं।
- मोहन : हाँ। एहदी ते सभनें गी कल मोहन : हाँ। इसकी तो कल शाम से
स'जां दी गै खबर ही। ही सभी को खबर थी।

सोहन : ब, में कल बडले थमां गै इत्थै
हा, मिगी हूनै तगर
कोई पता नेई।

मोहन : अज्जकल साढ़ा चौकीदार किश
ठिल्ला ऐ, इसै करी
सूचना नेई ही।

सोहन : अच्छा। ओह कदू दा मांदा ऐ ?

मोहन : मांदा ते ओह परं दा गै ऐ,
ब बिच्च किश चिर
ठीक बी हा।

सोहन : हां। सच्चें गै बचैरे गी रातीं -
प्रभाती, बडलै-संजां, इत्तर-
उत्तर, ताहीं-तुआहीं दूर-नेई
बड़ी दौड़-भज्ज ऐ।

मोहन : एह सब ते सच्च ऐ। इ'यै
नेह कर्मठ अज्जकल
बड़े घट्ट न।

सोहन : हां जी। इस संसारै च अज्जकल
खरे मनुक्खें दी बड़ी कमी ऐ।

मोहन : इसै करी कोई खरा कम्म अज्ज
सैहज नेई।

सोहन : हां। साढ़े ग्रांड दे पुलै दी गल्ल
बी ते इसै दा गै प्रमाण ऐ।

मोहन : खैर, किश लोक ते कर्मठ हैन,
इसै लेई एह संसार बरकरार

सोहन : पर, मैं तो कल सुबह से ही
यहाँ था, मुझे अभी तक
कोई खबर नहीं।

मोहन : आजकल हमारा चौकीदार
कुछ ठीक नहीं, इसी कारण
सूचना नहीं थी।

सोहन : अच्छा। वह कब से बीमार है ?

मोहन : बीमार तो वह पिछले साल
से ही है, किन्तु बीच में कुछ
देर ठीक भी था।

सोहन : हाँ। सच ही बैचारे को रात
प्रभात, सुबह-शाम, इधर-
उधर, यहाँ-वहाँ, दूर-पास
बहुत भाग-दौड़ है।

मोहन : यह सब तो सच है। इस
प्रकार के कर्मठ आजकल
बहुत कम हैं।

सोहन : हाँ जी। इस संसार में आजकल
भले लोगों की बहुत कमी है।

मोहन : इसीलिए कोई भला काम आज
सहज नहीं।

सोहन : हाँ हमारे गाँव के पुल की
बात भी तो इसी का प्रमाण है।

मोहन : खैर, कुछ लोग तो कर्मठ हैं,
इसीलिए यह संसार बरकरार

ऐ। साढ़े स्कूलै दी एह
इमारत इसै दा गै नतीजा ऐ।

है। हमारे स्कूल की यह
इमारत इसी का नतीजा है।

सोहन : हां जी। पैहले साढ़े गां च
बढ़ियां मुश्कलां हियां, ब हून
काफी सहूलतां न। स्कूलै दी
इमारत दी कमी ही, हून ओह
बी नेई ऐ।

सोहन : हाँ जी, पहले हमारे गाँव में
बहुत कठिनाइयाँ थीं, किन्तु
अब काफी सहूलतें हैं। स्कूल की
इमारत की कमी थी अब
वह भी नहीं है।

EXERCISES

1. Repetition Drill (पुनरुक्ति अभ्यास)

1. ओह ओपरे आदमी कु'न हे ?
2. ओह इत्थूं दे बी. डी. ओ. न।
3. अज साढ़े स्कूलै दी इमारत दी इस्पैक्शन ऐ।
4. ओह उद्धर बागै दै पिच्छे खेतरे च न।
5. तुआंह उन्दे कश होर कु'न-कु'न ऐ ?
6. किश होर लोक बी उत्थै गै न।
7. एहदी ते सभनें गी कल स'जां दी गै खबर ही।
8. सच्चें गै बचैरे गी रातीं- प्रभाती, बडलै - स'जां, इद्धर - उद्धर ताहीं-तुआहीं
दूर-नेडै बड़ी दौड़-भज्र ऐ।
9. इ'यै नेह कर्मठ अजकल बड़े घट्ट न।
10. खैर किश लोक ते कर्मठ हैन, इसै लेई एह संसार बरकरार ऐ।

2. Substitution Drill (स्थानापन्न अभ्यास)

Model (1)

ओह इद्धर ऐ। (उद्धर)

Model (2)

ओह इद्धर न। (उद्धर)

ओह उद्धर ऐ।

ओह उद्धर न।

(इत्थै)

(इत्थै)

(उत्थै)

(उत्थै)

(तांह)

(तांह)

(तुआंह)

(तुआंह)

3. Transformation Drill (रूपान्तरण अभ्यास)

Model (i)

ओह बागै दे पिच्छें न।

ओह बागै दे अगगें न।

ओह इद्धर हे।

ओह ताहीं हा।

ओह उत्थै गै न।

ओह अज इत्थै ऐ।

ओह दूर ऐ।

Model (ii)

ओह ओपरा आदमी ऐ।

ओह ओपरा आदमी नेई ऐ।

ओह मांदा ऐ।

ओह बी. डी. ओ. न।

अज साढ़े स्कूलै दी इन्स्पैक्शन ऐ।

सभनें गी कल स'जां दी खबर ही।

कल एह तुआहीं हे।

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :-

1. ओह ओपरे आदमी कु'न हे ?
2. चौकीदार कदू दा मांदा ऐ ?
3. चौकीदार की मांदा ऐ ?
4. ग्रांड च किस स्थूलता दी कमी ही ?
5. बागै पिच्छें खेतरें च कु'न-कु'न हा ?

5. निम्नलिखित शब्दों में से उपयुक्त शब्दों से रिक्त स्थान भरिए :-

परुं, हून, पिच्छें, उत्थै, इद्धर

1. ----- ग्रांड च सब्भै स्थूलतां न।

2. ओह् ----- दा मांदा ऐ।
3. ओह् होर लोक बी----- गै न।
4. किश बागै ----- खेतरे च हे।
5. ओह् अज्ज ----- कि'यां न।

6. पढ़िए, समझिए और लिखिए :-

इद्धर ----- उद्धर
 इत्थै -----
 अग्गे -----
 बडलै -----
 ताहीं -----
 दूर -----
 कल -----
 इत्थूं -----

7. शब्दों को उपयुक्त क्रम में रख कर वाक्य बनाइए :-

1. ताहीं हे गै थमां बडलै ओह्।
2. मुशकल निर्णा हा गै।
3. हे ओह् ताहीं।
4. मांदा हा चौकीदार दा परूं।
5. कि'यां अज्ज न इद्धर ओह्।

8. निम्नलिखित शब्दों से वाक्य बनाइए :-

परूं,	उत्थै,	कु'त्थै,	कदूं,	ढिल्ला,
हून,	बडला,	कर्मठ,	अज्ज।	

Vocabulary शब्दावली

ओपरे	अजनबी	कल्ल	कल
कु'न	कौन	स'ज	शाम
हूनै-हूनै	अभी-अभी	बडलै	प्रातः
दफ्तर	कार्यालय	मिगी	मुझे
कर्मचारी	कर्मचारी	हून	अभी
ताहीं	इस ओर	इद्धर	इधर
अज्रकल्ल	आजकल	उ'ऐ	वही
ढिल्ला	ढीला	मांदा	बीमार
कु'त्थै	कहाँ	बिच	बीच
किश	कुछ	चिर	देर
उद्धर	उधर	रातीं	रात को
पिच्छें	पीछे	प्रभातीं	प्रभात को
खेतर	खेत	तुआंह	उस ओर
कोल	समीप	सबेला	जल्दी
होर	और	अगें	आगे
उत्थै	वहाँ	दूर	दूर
अज्र	आज	नेड़ै	पास
पूरा	पूरा	सद्यें	सच ही
किट्ठ	इकट्ठ	दौड़-भज्र	भाग-दौड़
एहदी	इसकी	कर्मठ	कर्मठ
सभनें	सबने	घट्ट	कम
सैहज	सहज	बरकरार	बरकरार
सहूलत	सुविधा	मुश्कल	कठिन

टिप्पणियाँ

- 7.1 इस पाठ में आपने योजक क्रिया के भूतकालिक रूपों तथा काल, स्थान और दिशा सूचक क्रिया विशेषणों के बारे में जानकारी प्राप्त की है।
- 7.2 भूतकाल में योजक क्रिया 'ऐ' (है) वाक्य के कर्ता के लिंग और वचन के अनुसार बदलती है। पुरुष के लिए इसमें कोई तब्दीली नहीं होती। जैसे :-

	पुलिंग	स्त्रीलिंग
एकवचन	हा 'था'	ही 'थी'
बहुवचन	हे 'थे'	हियां 'थीं'
प्रयोग	निर्णा गै मुश्कल हा।	'निणर्य ही मुश्कल था'
	एह ओपरे आदमी कु'न हे ?	'ये अजनबी आदमी कौन थे ?'
	कल स'जां दी गै खबर ही।	'कल शाम से ही खबर थी'
	ग्रांऽ च बड़ियां मुश्कलां हियां।	'गाँव में बहुत मुश्किलें थीं।'

- 7.3 डोगरी के स्थान सूचक क्रियाविशेषण निम्न हैं :-

इत्थै	'यहाँ'	नेड़ै	'समीप'
उत्थै	'वहाँ'	कु'त्थै	'कहाँ'
अगें	'आगे'	कोल	'नज़दीक'
पिच्छे	'पीछे'	दूर	'दूर'

- 7.4 डोगरी के कुछ दिशा सूचक क्रिया विशेषण निम्न हैं :-

इद्धर	'इधर'	उद्धर	'उधर'
तांह	'इधर/ इस ओर'	तुआंह	'उधर/उस ओर'
ताहीं	'इस ओर'	तुआहीं	'उस ओर'

7.5 काल सूचक क्रिया विशेषण निम्न हैं :-

अज्र	‘आज’	राती	‘रात को’
कल	‘कल’	प्रभाती	‘सुबह-सवेरे’
अज्रकल	‘आजकल’	बडलै	‘सुबह’
हून	‘अब’	चिरें	‘देर से’
हूनै	‘अभी’	सवेल्ला	‘जल्दी’
हूनै-हूनै	‘अभी-अभी’	स’जां	‘शाम को’
कदूं	‘कब’	पैह्ले	‘पहले’
पिच्छूं	‘बाद में’		

7.6 स्थान, काल और दिशासूचक क्रिया विशेषण अपने मूल रूपों में (अकेले) भी आते हैं और अपादान में ‘दा’, ‘थमां’ (से) आदि कारक चिह्नों के साथ भी आते हैं। जैसे :-

(i) मूलरूप में

कल एह तुआहीं हे।

‘कल ये उधर थे’।

जेहड़े हूनै-हूनै इत्थै हे ?

‘जो अभी-अभी यहाँ थे?’

हून ओह लोक कु’त्थै न ?

‘अब वे लोग कहाँ हैं?’

अज्र सारे खास लोक

‘आज सभी खास लोग’

उत्थै मजूद न।

‘वहाँ मौजूद है।’

(ii) अपादान और सम्बन्ध कारक के अर्थ में ‘दा’, ‘दे’, ‘थमां’ आदि कारक चिह्नों के साथ :-

ओह इत्थूं दे बी. डी. ओ. न।

‘वे यहाँ के बी. डी. ओ. हैं।’

एहदी ते सभनें गी कल

‘इसकी तो सभी को कल शाम

स’जां दी गै खबर ही।

से ही सूचना थी।’

ओह कदू दा मांदा ऐ?

‘वह कब से बीमार है?’

मांदा ते ओह परू दा गै।

‘बीमार तो वह पिछले साल से ही है।’

7.7 इसै लेई (इसीलिए) इसै करी (इसी कारण) दो उपवाक्यों को जोड़ते हैं और किसी परिणाम की सूचना देते हैं। जैसे :-

खैर किश लोक ते कर्मठ हैन, इसै लेई एह संसार बरकरार ऐ।

‘‘खैर कुछ लोग तो कर्मठ हैं, इसीलिए यह संसार बरकरार है।’’

अजकल साढ़ा चौकीदार किश ढिल्ला ऐ, इसै करी सूचना नेई ही।

‘‘आजकल हमारा चौकीदार कुछ ठीक नहीं है, इसी कारण सूचना नहीं थी।’’

7.8 ‘व’ (पर / किन्तु / परन्तु) विरोध सूचक अर्थ की सूचना देता है। यह अव्यय प्रायः संयुक्त वाक्यों में प्रयुक्त होता है। जैसे :-

में ते कल उत्थै हा ब मिगी खबर नेई।

‘मैं तो कल वहाँ था किन्तु मुझे सूचना नहीं’।

कभी-कभी यह वाक्य के आरम्भ में भी आता है। जैसे :-

ब, में कल बडले थमां गै इत्थै हा,

मिगी हूनै तगर कोई खबर नेई।

‘किन्तु मैं तो कल सुबह से ही यहाँ था, मुझे अभी तक कोई खबर नहीं।’

7.9 विशेषणों के साथ ‘बड़ा’ (बहुत) का प्रयोग क्रियाविशेषण का काम करता है। डोगरी में यह क्रियाविशेषण संज्ञाओं के लिंग, वचन के अनुसार बदलता है, इसलिए *बड़ा, बड़े, बड़ी, बड़ियां* आदि रूपों में प्रयुक्त होता है। जैसे :-

बड़ा घट्ट कम्म

‘बहुत कम काम’

बड़े घट्ट रपेऽ

‘बहुत कम रुपये’

बड़ी घट्ट सब्जी

‘बहुत कम सब्जी’

बड़ियां घट्ट कताबां

‘बहुत कम किताबें।’

7.10 'इ' 'यै' 'नेह्' (ऐसे) विशेषण की भांति प्रयुक्त होकर तुलना अथवा उदाहरण का अर्थ प्रकट कर रहा है। जैसे :-

इ'यै नेह् कर्मठ अजकल बड़े घट्ट न।

ऐसे कर्मठ आजकल बहुत कम हैं।

7.11 'च' (में) अधिकरण कारक का चिह्न है जो आश्रय के अर्थ में प्रयुक्त होता है। जैसे:-

पैहले साढ़े ग्रांऽ च बड़ियां मुश्कलां हियां।

'पहले हमारे गाँव में बहुत कठिनाइयाँ थीं।'

पाठ-8
स्कूलै दी तयारी
(स्कूल की तैयारी)

- | | |
|---|--|
| मां : बच्चू, उटूठ, तौलकर।
राधा बच्ची, तु'म्मी उड्ड। | मां : बेटा उठ, जल्दी कर।
राधा बेटा, तू भी उठ। |
| बच्चे : मम्मी, असेंगी ब्रश देओ। | बच्चे : मम्मी, हमें ब्रश दीजिए। |
| मां : हां-हां। लैओ पैहले ब्रश करो ते
पही न्हवो-धोवो ते बर्दी लाओ। | मां : हां-हां। लो पहले ब्रश करो और
फिर नहाओ-धोवो और वर्दी पहनो। |
| बच्चे : मम्मी दिक्खो। अस दोऐ तयार आं। | बच्चे : मम्मी देखो। हम दोनों तैयार हैं। |
| राधा : मम्मी मेरा टिफिन इधर रक्खो
ते राजू दा बस्ते च पाओ। | राधा : मम्मी मेरा टिफिन इधर रखिए
और राजू का बस्ते में डालिए। |
| राजू : पानियै दी बोटल कु'त्थै ऐ मम्मी ?
मिगी देओ। | राजू : पानी की बोटल कहाँ है मम्मी ?
मुझे दीजिए। |
| मां : एह लै, फड़ अपनी बोटल।
राधा दी बोटल कु'त्थै ऐ ? | मां : यह ले, पकड़ अपनी बोटल।
राधा की बोटल कहाँ है ? |
| राधा : मेरी बोटल मेरे कोल ऐ। मम्मी!
मेरे नमें कपड़े कु'त्थै न ? | राधा : मेरी बोटल मेरे पास है। मम्मी!
मेरे नए कपड़े कहाँ हैं ? |
| मां : सारे कपड़े ट्रैकै बिच्च न। राधा
अज तूं सुत्थन-कुर्ता ला।
नमें कपड़े कल लाएआं। | मां : सारे कपड़े संदूख में हैं। राधा
आज तुम सुत्थन कुर्ता पहनो।
नए कपड़े कल पहनना। |
| राधा : ठीक ऐ मम्मी। | राधा : ठीक है मम्मी। |
| मां : शाबाश बेटा, शाबाश। | मां : शाबाश बेटा, शाबाश। |
| राधा : राजू, तूं अज मेरे कनै नेई
आ। अज साढ़े स्कूल डांस दा | राधा : राजू, तुम आज मेरे साथ नहीं
आओ। आज हमारे स्कूल डांस |

अभ्यास ऐ। कार्यक्रम कल ऐ।
कल तूं मेरे कन्नै चलेआं।

मां : अच्छा राजू, अज्ज तूं शामू कन्नै
स्कूल जा। कल तूं ते राधा
दोऐ किट्ठे जाएओ।

राजू : मम्मी मेरे बूट कु'त्थै न ?

राधा : मेरे कमरे च न। जा ते
दिक्ख चंगी चाल्ली।

पिता जी : बच्चो। बडलै-बडलै
रौला नेई पाओ। चुप-चपीते
अपना-अपना कम्म करो।

मां : हून तुस बी उडो नां। जरा अपने
लाडले गी त्यार ते करो।

पिता जी : अच्छा कमला। तूं राजू दी
चिन्ता नेई कर। राजू तूं बी
मम्मी गी तंग नेई करेआं।

राधा : राजू अपनियां सारिया कताबां
बस्ते च पा ते शामू कन्नै स्कूल
जा। दिक्खेआं कोई बी कताब
नेई भुल्लेआं।

राजू : अच्छा दीदी। दीदी तूं अगें-
अगें चल अस तेरे पिच्छें-पिच्छें।

का अभ्यास है। कार्यक्रम कल है।
कल तुम मेरे साथ चलना।

मां : अच्छा राजू, आज तुम शामू के
साथ स्कूल जाओ। कल तुम
और राधा दोनों इकट्ठे जाना।

राजू : मम्मी मेरे बूट कहाँ हैं ?

राधा : मेरे कमरे में है। जाओ और
देखो अच्छी तरह।

पिता जी : बच्चो। सुबह-सुबह शोर मत
करो। चुप-चाप अपना-अपना
काम करो।

मां : अब आप भी उठिए न। जरा
अपने लाडले को तैयार तो कीजिए।

पिताजी : अच्छा कमला। तुम राजू की
चिन्ता मत करो। राजू तुम भी
मम्मी को तंग मत करना।

राधा : राजू अपनी सभी किताबें बस्ते
में डालो और शामू के साथ
स्कूल जाओ। देखना कोई भी
किताब मत भूलना।

राजू : अच्छा दीदी। दीदी तुम आगे-
आगे चलो हम तुम्हारे पीछे-पीछे।

EXERCISES

1. Repetition Drill (पुनरुक्ति अभ्यास)

(i)	(ii)
1. बच्चू उड़।	असेंगी ब्रश देओ।
2. एह लै, फड़ अपनी बोतल।	न्हवो-धोवो ते बर्दी लाओ।
3. अज्र तूं सुत्थन-कुर्ता ला।	बडलै-बडलै रौला नेई पाओ।
4. तूं अग्गे-अग्गे चल।	मिगी पानियै दी बोतल देओ।
5. तूं अज्र शामू कन्नै जा।	राजू दा टिफन बस्ते च पाओ।
6. तूं राजू दी चिन्ता नेई कर।	हून तुस बी उड़ो नां।
7. नमें कपड़े कल लाएआं।	चुप-चपीते अपना कम्म करो।
8. दिक्खेआं इक बी कताब नेई भुल्लेआं।	कल तूं ते राधा दोऐ किट्ठे जाएओ।

2. Substitution Drill (स्थानापन्न अभ्यास)

<i>Model (i)</i>	<i>Model (ii)</i>
राजू उड़। (पढ़)	राजू तूं कल जाएआं। (पढ़ेआं)
राजू पढ़।	राजू तूं कल पढ़ेआं।
(न्हौ)	(आमेआं)
(पढ़)	(न्हमेआं)
(जा)	(बर्दी लाएआं)
<i>Model (iii)</i>	<i>Model (iv)</i>
बच्चेओ न्हवो-धोवो।	बच्चेओ किट्ठे जाएओ।
(स्कूल जाओ)	(खाएओ)

बच्चेओ स्कूल जाओ।

बच्चे किट्टे खाएओ।

(रौला नेई पाओ)

(पढ़ेओ)

(ब्रश करो)

(चलेओ)

(बर्दी लाओ)

(टुरेओ)

3. कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरिए :-

न्हवो-धोवो, रक्खो, पाओ, लाएआं, चलेआं, जाएओ, कम्म करो, भुल्लेआं, नमें कपड़े, कल
चुप-चपीते अपना-अपना -----

-----ते बर्दी लाओ।

कल तूं ते राधा दोऐ किट्टे -----

मम्मी मेरा टिफन इद्धर -----

कल तूं मेरे कन्नै -----

राजू दा टिफन बस्ते च -----

दिक्खेआ कोई बी कताब नेई -----

4. Transformation Drill (रूपान्तरण अभ्यास)

• Model (i)

राजू अज्ज तूं शामू कन्नै स्कूल जा।

राजू कल तूं शामू कन्नै स्कूल जाएआं।

1.. राधा अज्ज तूं सुत्थन कुर्ता ला।

2. शामू अज्ज तूं अखबार पढ़।

3. राधा अज्ज तूं गीत सुन।

4. कमला तूं चिन्ता नेई कर।

Model (ii)

बच्चेओ! अञ्ज तुस नमें कपड़े लाओ।

बच्चेओ! कल तुस नमें कपड़े लाएओ।

1. मम्मी मेरा टिफन इद्धर रक्खो।
2. मम्मी राजू दा टिफन बस्ते च पाओ।
3. अञ्ज चुप-चपीते अपना-अपना कम्म करो।
4. जरा अपने लाडले गी त्यार करो।

5. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :-

1. बच्चे मम्मी गी केह आखदे न?
2. ब्रश दिन्दे होई मां केह आखदी ऐ?
3. राधा मम्मी गी अपने टिफन आस्तै केह गलांदी ऐ?
4. राजू दा टिफन कु'तथै रक्खने लेई आखदी ऐ?
5. राधा राजू गी अञ्ज कोहदे कन्नै स्कूल जाने लेई आखदी ऐ?
6. मां राधा गी अञ्ज केह लाने लेई आखदी ऐ?
7. पिता जी राजू गी केह समझांदे न?

6. कोष्ठक में दिए गए क्रिया रूपों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए :-

देना (दे, देओ),

न्हौना (न्हौ, न्हवो)

रक्खना (रक्ख, रक्खो);

लाना (ला, लाओ)

जाना (जाएआं, जाएओ);

चलना (चलेआं, चलेओ)

भुल्लना (भुल्लेआं, भुल्लेओ);

करना (करेआं, करेओ)

Vocabulary शब्दावली

बच्चू	बेटा (बेटे को प्यार से सम्बोधन)	बच्ची	बेटी (बेटी को प्यार से सम्बोधन)
तु'म्मी	तुम भी	असेंगी	हमें
बर्दी	वर्दी,	त्यार	तैयार
टिफन	टिफिन	बस्ता	बस्ता
बोतल	बोतल	नमें	नए
कपड़े	कपड़े	सुत्थन	जनाना चूड़ीदार पाजामा
कुर्ता	कमीज (चूड़ीदार पाजामे के साथ पहनी जाने वाली कुर्तानुमां कमीज)	कम्म	काम
ट्रैंक	संदूख	ठीक	ठीक
डांस	नृत्य, नाच	अभ्यास	अभ्यास
बूट	बूट	कमरा	कमरा
कताबां	किताबें	हां-हां	हाँ-हाँ
अच्छा	अच्छा	ठीक	ठीक
शाबाश	शाबाश	किट्ठे	इकट्ठे
उठ	उठ	तौल	जल्दी
कर	कर, करो	देओ	दीजिए
लैओ	लीजिए	लाओ	पहनो, पहनिए
पाओ	डालिए	रक्खो	रखिए

ला	पहन, लगा	लाएआं	पहनना
आ	आ, आओ	चलेआं	चलना
जा	जा, जाओ	जाएओ	जाना, जाइएगा
तंग करना	तंग करना	चिन्ता करना	चिन्ता करना
अपनियां	अपनी (बहुवचन)	सारियां	सभी
दिक्खेआं	देखना	भुल्लना	भूलना
कनै	साथ, के साथ	पही	फिर, बाद में
दोऐ	दोनों	कोल	पास
चंगी चाल्ली	अच्छी तरह, भली भाँति	बद्येओ	बद्यो
रौला	शोर	बडलै-बडलै	सुबह-सुबह
ते	तो, और	बी	भी

टिप्पणियाँ

- 8.1 इस पाठ में आप क्रिया के आज्ञार्थ वाले रूपों तथा संज्ञाओं के तिर्यक् (विभक्तिवाले) रूपों से परिचित हुए हैं।
- 8.2 आज्ञार्थ वर्तमान काल और भविष्यत् काल में आता है और केवल मध्यम पुरुष के लिए प्रयुक्त होता है। जैसे :-

वर्तमान काल

भविष्यत् काल

तू जा 'तुम जाओ'

तुस जाओ 'आप जाएं'

तू जाएआं 'तुम जाना'

तुस जाएओ 'आप जाना/ जाइएगा'

- 8.3 डोगरी में वर्तमान काल के आज्ञार्थ में मध्यम पुरुष एक वचन के लिए धातु (क्रिया के मूल रूप) में कोई परिवर्तन नहीं होता और बहुवचन के लिए धातु के अन्त में – ओ प्रत्यय जुड़ता है। जैसे :-

एकवचन		बहुवचन	
उट्ठ	‘उठ/ उठो’	उट्ठो	‘उठो / उठिए’
दे	‘दो’	देओ	‘दो/ दीजिए’
कर	‘कर / करो’	करो	‘करो / कीजिए’
पी	‘पी / पीओ’	पीओ	‘पीओ / पीजिए’
जा	‘जा / जाओ’	जाओ	‘जाओ / जाइए’
खा	‘खा / खाओ’	खाओ	‘खाओ / खाइए’
चल	‘चल / चलो’	चलो	‘चलो / चलिए’
दिक्ख	‘देख / देखो’	दिक्खो	‘देखो / देखिए’

- 8.4 औकारान्त धातुओं में ‘ओ’ बहुवचन सूचक प्रत्यय लगने से पहले अन्तिम ‘औ’ को अव् आदेश हो जाता है। जैसे :-

न्हौ = न्हव + ओ = न्हवो ‘नहाओ / नहाइए’

सौ = सव् + ओ = सवो ‘सोओ / सोइए’

रौह् = र’व् + ओ = र’वो ‘रहो / रहिए’

- 8.5 भविष्यत्काल के आज्ञार्थ में मध्यम पुरुष एकवचन के लिए धातु के साथ ‘आं’ और बहुवचन के लिए ‘एओ’ प्रत्यय जुड़ते हैं। जैसे :-

धातु	एकवचन		बहुवचन	
जा	जाएआं	‘जाना’	जाएओ	‘जाना/जाइएगा’
सुन्	सुनेआं	‘सुनना’	सुनेओ	‘सुनना/सुनिएगा’
पढ़्	पढ़ेआं	‘पढ़ना’	पढ़ेओ	‘पढ़ना/पढ़िएगा’
कर्	करेआं	‘करना’	करेओ	‘करना/करिएगा’

- 8.6 आज्ञार्थ क्योंकि मध्यम पुरुष के लिए आता है और मध्यम पुरुष हमेशा प्रत्यक्ष रूप में सामने होता है। इसलिए मध्यम पुरुष में यदि मनुष्य जाति की संज्ञाएं हों तो उनके रूप सम्बोधन कारक में होते हैं। जैसे :-

बच्चु, तौल कर।	‘बेटे, जल्दी करो।’
जागतो, स्कूल जाओ।	‘लड़को, स्कूल जाओ।’
बच्चेओ, रुट्टी खाओ।	‘बच्चो, खाना खाओ।’
कुड़ियो, कताब पढ़ो।	‘लड़कियो, किताब पढ़ो।’
मुड़ेओ, कल स्कूल जाएओ।	‘लड़को, कल स्कूल जाना।’
जागता, अज्र बाहर नेई जाएआं।	‘लड़के, आज बाहर मत जाना।’

- 8.7 ‘गी’ (को) कारक चिह्न डोगरी में कर्म तथा सम्प्रदान कारकों के अर्थ में प्रयुक्त होता है। जैसे :-

मम्मी, असेंगी ब्रश देओ।	‘मम्मी, हमें ब्रश दीजिए।’
-------------------------	---------------------------

- 8.8 ‘कन्नै’ (के साथ) करण कारक का चिह्न है और ‘च’ (में) अधिकरण कारक का। जैसे:-

राजू, तूं अज्र मेरे कन्नै नेई जाएआं।
‘राजू तुम आज मेरे साथ नहीं जाना।’
बूट मेरे कमरे च न।
‘बूट मेरे कमरे में हैं।’

- 8.9 सभी प्रकार के कारक चिह्न संज्ञाओं के विभक्ति युक्त रूपों के साथ प्रयुक्त होते हैं। सरल रूपों के साथ नहीं। जैसे :-

कमरा	कमरे च	‘कमरे में’
मेरा	मेरे कन्नै	‘मेरे साथ’
अस	असें गी	‘हमें’

8.10 डोगरी में पुलिंग संज्ञाओं के विभक्ति वाले रूप दो प्रकार के होते हैं।

- (i) आकारान्त पुलिंग संज्ञाओं के अन्तिम 'आ' को 'ए' कर देने से तिर्यक् एकवचन रूप बनते हैं और 'एं' कर देने से बहुवचन रूप। जैसे :-

संज्ञा	एकवचन		बहुवचन	
कमरा	कमरे	'कमरे'	कमरें	'कमरों'
बस्ता	बस्ते	'बस्ते'	बस्तें	'बस्तों'
लाडला	लाडले	'लाडले'	लाडलें	'लाडलों'

- (ii) आकारान्त संज्ञाओं के अतिरिक्त बाकी सभी पुलिंग संज्ञाओं में तिर्यक् कारक के एकवचन के लिए या तो कोई तब्दीली नहीं होती और या 'ऐ' लगता है। किन्तु बहुवचन के लिए संज्ञा के अन्त में 'एं' प्रत्यय ही जुड़ता है। जैसे :-

संज्ञा	एकवचन		बहुवचन	
जागत 'लड़का'	जागत	जागतै 'लड़के'	जागतें	'लड़कों'
साधु 'साधु' साधु	साधुऐ	'साधु'	साधुएं	'साधुओं'
माली 'माली' माली	मालियै	'माली'	मालियें	'मालियों'

8.11 प्रथमपुरुष सर्वनाम के विभक्ति वाले रूप हैं :-

	एकवचन	बहुवचन
	मेरे 'मेरे'	साढ़े 'हमारे'
जैसे:-	मेरे कनै	'मेरे साथ'
	साढ़े कनै	'हमारे साथ'

8.1 2 मध्यमपुरुष सर्वनाम के विभक्ति वाले रूप हैं :-

	एकवचन	बहुवचन
	तेरे 'तेरे / तुम्हारे'	तुम्हारे/ तुम्हारे 'आपके'
जैसे:-	तेरे कन्ने	'तेरे साथ'
	तुम्हारे कन्ने	'आपके साथ'
	तुम्हारे कन्ने	'आपके साथ'

8.1 3 अन्यपुरुष सर्वनाम के विभक्ति वाले रूप हैं :-

	एकवचन	बहुवचन
दूरवर्ती -	उसके / ओहके 'उसके'	उन्हे 'उनके'
जैसे:-	उसके / ओहके कन्ने	उन्हे कन्ने
	'उसके साथ'	'उनके साथ'
समीपवर्ती -	इसके / एहके 'इसके'	इन्हे 'इनके'
जैसे :-	इसके / एहके कन्ने	इन्हे कन्ने
	'इसके साथ'	'इनके साथ'

8.1 4 अनिश्चय वाचक सर्वनाम के विभक्ति वाले रूप हैं :-

	एकवचन	बहुवचन
	कुसै	'किसी'
जैसे :-	कुसै कन्ने	'किसी के साथ'
इनका बहुवचन में प्रयोग नहीं होता।		

8.1 5 प्रश्नवाचक सर्वनाम 'कु'न' के विभक्ति वाले रूप हैं :-

	एकवचन	बहुवचन
	कुसदे/ कोहदे 'किसके'	कु'न्दे 'किनके'

जैसे :- कुसदे/कोहदे कन्नै कु'न्दे कन्नै
 'किसके साथ।' 'किनके साथ।'

8.16 सम्बन्धवाचक सर्वनाम 'जो' के विभक्ति वाले रूप हैं :-

एकवचन		बहुवचन	
जिसदे/जेहदे	'जिसके'	जि'न्दे	'जिनके'
जैसे :-	जिसदे /जेहदे कन्नै	जि'न्दे कन्नै	
	'जिसके साथ'	'जिनके साथ'	

8.17 निजवाचक सर्वनाम 'आप/आपूँ' विभक्ति के साथ एकवचन तथा बहुवचन में एक ही रूप में मिलता है :-

एकवचन	बहुवचन
अपने	अपने
जैसे :-	
एकवचन	तू अपने कन्नै मिगी लेई चल। 'तुम अपने साथ मुझे ले चलो'।
बहुवचन	तुस अपने कन्नै मिगी लेई चलो। 'आप अपने साथ मुझे ले चलिए'।

8.18 सर्वनामों के कर्म कारक की विभक्ति वाले रूप हैं। जैसे :-

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष सर्वनाम	मि	असें
मध्यमपुरुष सर्वनाम	तु	तुसें
अन्यपुरुष सर्वनाम		
दूरवर्ती	उस	उ'नें
समीपवर्ती	इस	इ'नें
अनिश्चय वाचक सर्वनाम	कुसै	

प्रश्नवाचक सर्वनाम

कुस

कु'नें

सम्बन्धवाचक सर्वनाम

जिस

जि'नें

निजवाचक सर्वनाम

आपू / अपने

आपू / अपने

प्रयोग

मिगी पता नेई।

‘मुझे मालूम नहीं।’

असेंगी केह पता ?

‘हमें क्या मालूम ?’

तुगी पता नेई।

‘तुझे मालूम नहीं।’

तुसेंगी पता नेई।

‘आपको मालूम नहीं।’

उसी केह पता ?

‘उसे क्या मालूम ?’

उ'नेंगी पता नेई।

‘उन्हें मालूम नहीं।’

इसी छोड़।

‘इसे छोड़ो’

इ'नेगी फड़।

‘इन्हें पकड़ो।’

कुसै गी कोई फायदा नेई।

‘किसी को कोई फायदा नहीं’

कुसगी सनांऽ ?

‘किसे सुनाऊँ ?’

कु'नेगी पुच्छां ?

‘किन्हें पूछूँ ?’

जिसगी दिक्खेआ हा।

‘जिसे देखा था।’

जि'नेगी पुच्छेआ।

‘जिन्हें पूछा।’

आपू/अपने गी सब पता ऐ।

‘अपने को सब मालूम है।’

8.19 ‘बी’ (भी) बलसूचक अव्यय है। वाक्य में जिस शब्द पर बल देना होता है उसके साथ ‘बी’ का प्रयोग होता है। जैसे :—

तुस बी उठो।

‘आप भी उठें’।

कताब बी पढ़ो।

‘किताब भी पढ़ें’।



पाठ-9
दोस्तै दा घर
(दोस्त का घर)

- | | |
|--|---|
| रमेश : आओ जी। धन्न भाग। तुस अज्ज कल लभदे गै नेई ? | रमेश : आओ जी। अहोभाग्य। आप आजकल दिखते ही नहीं ? |
| सुरेश : में रोज अखनूर जंदा आं/ जन्नां। | सुरेश : मैं रोज अखनूर जाता हूँ। |
| रमेश : अखनूर। अखनूर केहड़े पास्तै ऐ ? | रमेश : अखनूर। अखनूर किस ओर है ? |
| सुरेश : बस चन्हां दरेआ टपदे गै अखनूर आई जंदा ऐ। ते तुस कुद्धर होंदे ओ ? | सुरेश : बस चिनाब दरिया पार करते ही अखनूर आ जाता है। और आप किधर होते हैं ? |
| रमेश : में दकाना पर होन्नां। | रमेश : मैं दुकान पर होता हूँ। |
| सुरेश : उत्थै बड़ा कम्म होँदा ऐ ? | सुरेश : वहां बहुत काम होता है ? |
| रमेश : कम्म ते होँदा गै ऐ। बडलै पैहलें सोत-फंड दिन्नां। फही चीजां-बस्तां टकानै रक्खनां। परमात्मा अग्गे मत्था टेकनां। | रमेश : काम तो होता ही है। सुबह पहले झाडू देता हूँ, फिर चीजें-वस्तुएं ठिकाने पर लगाता हूँ। परमात्मा के आगे सिर झुकाता हूँ। |
| सुरेश : ते फही ? | सुरेश : तो फिर ? |
| रमेश : ते फही दिन भर गाहकें दी सेवा करनां। | रमेश : फिर दिन भर ग्राहकों की सेवा करता हूँ। |
| बिट्ठू : नमस्ते चाचा जी, | बिट्ठू : नमस्ते चाचा जी। |
| सुरेश : सनाऽ बेटा ठीक एं ? | सुरेश : सुनाओ, बेटा ठीक हो ? |
| बिट्ठू : जी, चाचा जी, ठीक आं। | बिट्ठू : जी चाचा जी, ठीक हूँ। |
| सुरेश : अज्जकल बी मैच खेदना एं ? | सुरेश : आजकल भी मैच खेलते हो ? |

- बिट्टू : मैच बी खेढनां ते
कम्प्यूटर बी सिक्खनां।
- सुरेश : सुनीता कु'तै ऐ ?
क्या घर नेई ऐ ?
- रमेश : नेई, अन्दर गै। हूनै औंदी ऐ।
- सुनीता : चाचा जी, नमस्ते।
- सुरेश : खुश रौह, बच्ची। तूं बड़ा मता
पढ़नी एं तां गै लिस्सी एं।
- सुनीता : पढ़नी बी आं पर अज़कल
स्कूला दा कम्म मता थोंदा ऐ।
उ'ऐ मकान्नी आं।
- सुरेश : अच्छा बच्चू। जा कम्म कर पर
सेहतू दा बी खेआल रक्खेआं।
- रमेश : अज़कल छुट्टियां न। पवित्तर
ते सुरिन्दर बी इत्थै गै न।
- सुरेश : अच्छा। तां फही बड़ी
रौनक होंदी ऐ।
- रमेश : होर केहू जी। ब'रा भर ते कल्ल-
मकल्ले गै रौहन्ने आं।
- सुरिन्द्र : भापा जी, पैरें पौन्ने आं।
- सुरेश : जीदे र'वो। बड़े-बड़े बनो।
सनाओ कदे उधमपुर
बी जंदे ओ ?
- सुरिन्दर : जदू-कदे मौका मिलदा ऐ
तां जरूर जन्नां।
- बिट्टू : मैच भी खेलता हूँ और
कम्प्यूटर भी सीखता हूँ।
- सुरेश : सुनीता कहाँ है ?
क्या घर पर नहीं है ?
- रमेश : नहीं, भीतर ही है। अभी आती है।
- सुनीता : चाचा जी, नमस्ते।
- सुरेश : खुश रहो बेटा। तुम बहुत अधिक
पढ़ती हो इसीलिए कमज़ोर हो।
- सुनीता : पढ़ती भी हूँ परंतु आजकल स्कूल
से काम अधिक मिलता है। वही
करती हूँ।
- सुरेश : अच्छा बच्ची। जाओ काम करो।
परन्तु स्वास्थ्य का भी ध्यान रखना।
- रमेश : आजकल छुट्टियां हैं। पवित्तर
और सुरिन्द्र भी यहीं पर हैं।
- सुरेश : अच्छा, तो फिर बहुत रौनक
होती है ?
- रमेश : और क्या ? वर्ष भर तो
अकेले ही रहते हैं।
- सुरिन्द्र : भाई जी, चरण स्पर्श।
- सुरेश : जीते रहो। बड़े-बड़े बनो।
सुनाइए कभी उधमपुर
भी जाते हो ?
- सुरेन्द्रा : जब कभी समय मिलता है
तो वहां अवश्य जाता हूँ।

सुरेश : शशि ते चंचल कुद्धर न ?
 सुरिन्द्र : इत्थै गै न। दिक्खो हूनै औदियां न।
 शशि ते चंचल : नमस्ते भापा जी।
 सुरेश : नमस्ते। सनाओ राजी खुशी ओ ?
 शशि ते चंचल : जी, सारे राजी खुशी न।
 सुरेश : दोऐ इक्कै शैहर रौहदियां ओ ?
 शशि : नेई जी, में ते रामबन रौहन्नी आं
 ते चंचल, डूडू बसंतगढ़ रौहदी
 ऐ। बस छुट्टियें च गै अस
 इत्थै किट्ठियां होन्नियां।
 सुरेश : चंचल बेटा, तुन्दे सस्स-सौहरा
 कु'त्थै होदे न ?
 चंचल : ओह् डूडू बसंतगढ़ गै रौहदे न।
 सुरेश : ते शशि, तेरियां दरानियां –
 जठानिया कु'त्थै रौहदियां न ?
 शशि : भापा जी, मेरी दरानी कोई –
 नेई ऐ। दो जठानियां न ते
 ओह् उधमपुर गै रौहदियां न।
 सुरेश : थुआढ़े च सुरिन्द्र सारें शा बड़ा
 ते चंचल सारें शा लौहकी ऐ नां ?
 शशि : जी भापा जी।
 सुरेश : भरजाई होर कु'त्थै न ?
 इत्थै नेई लभदियां।

सुरेश : शशि और चंचल कहाँ हैं ?
 सुरिन्द्र : यहाँ ही हैं। देखिए अभी आती हैं।
 शशि और चंचल : नमस्ते भाई साहिब।
 सुरेश : नमस्ते। सुनाओ, राजी खुशी से हो ?
 शशि और चंचल : जी, सभी कुशल हैं।
 सुरेश : दोनों एक ही शहर में रहती हो ?
 शशि : नहीं जी, मैं रामबन रहती हूँ
 और चंचल डूडू बसंतगढ़ में
 रहती है। बस केवल छुट्टियों
 में हम यहाँ पर इकट्ठी होती हैं।
 सुरेश : चंचल बेटा, तुम्हारे सास-
 ससुर कहाँ होते हैं ?
 चंचल : वे डूडू बसन्तगढ़ में ही रहते हैं।
 सुरेश : तो शशि, तुम्हारी देवरानी
 और जेठानी कहाँ रहती हैं ?
 शशि : भाई साहब, मेरी देवरानी कोई
 नहीं है। दो जठानियें है और
 वे उधमपुर में ही रहती हैं।
 सुरेश : आपमें सुरिन्द्र सबसे बड़ा
 और चंचल सबसे छोटी है न ?
 शशि : हाँ, भाई साहब।
 सुरेश : भाभी जी कहाँ हैं ?
 यहाँ दिखती नहीं हैं।

रमेश : हूँ लभदियां न।
दिखो लभदियां न जां नेई ?

रमेश : अभी दिखाई पड़ती हैं।
देखो दिखाई पड़ती हैं कि नहीं ?

सुरेश : आहा। अज सच्चें गै सब्भै किट्ठे
आं। मिगी बड़ा चंगा लगदा ऐ।

सुरेश : आहा। आज सच ही सब इकट्ठे
हैं। मुझे बहुत अच्छा लगता है।

EXERCISES

1. Repitition Drill (पुनरुक्ति अभ्यास)

1. में रोज अखनूर जन्नां।
2. तुस कुद्धर होदे ओ ?
3. अजकल बी मैच खेढना एं ?
4. अजकल मता पढ़नी एं ?
5. सुनीता कु'त्थै रौहदी ऐ ?
6. तुन्दे सस्स-सौहरा कु'त्थै रौहदे न ?
7. छुट्टियां होन तां अस इत्थै किट्टियां औन्नियां।
8. दोऐ इक्के थाहर रौहदियां ओ ?
9. भापा जी, पैरें पौन्ने आं।
10. अजकल छुट्टियां न।

2. Substitution Drill (स्थानापन्न अभ्यास)

Model (1)

में रोज पढ़ना आं। (लिखना)
में रोज लिखना आं।
(खेढना)
(औना)

Model (2)

में रोज पढ़नी आं। (लिखना)
में रोज लिखनी आं।
(खेढना)
(औना)

Model (3)

અસ રોજ જન્ને આં। (પઢના)

અસ રોજ પઢને આં।

(ખાના)

(નહૌના)

Model (4)

અસ રોજ જન્દિયાં આં (પઢના)

અસ રોજ પઢદિયાં/પઢનિયાં આં।

(ખાના)

(નહૌના)

Model (5)

તૂં રોજ ઔંદા ઍં। (બૌહદા)

તૂં રોજ બૌહદા ઍં।

(પઢના)

(ચલના)

Model (6)

તૂં રોજ ઔંદી/ઔન્ની ઍં। (બૌહદા)

તૂં રોજ બૌહદી/બૌહન્ની ઍં।

(પઢના)

(ચલના)

Model (7)

તુસ રોજ પઢદે ઓ। (ઔના)

તુસ રોજ ઔંદે ઓ।

(લઘ્ભના)

(ટુરના)

Model (8)

તુસ રોજ પઢદિયાં ઓ। (ઔના)

તુસ રોજ ઔંદિયાં ઓ।

(લઘ્ભના)

(ટુરના)

Model (9)

ઓહ્ રોજ ટુરદા ઍં। (લઘ્ભના)

ઓહ્ રોજ લઘ્દા ઍં।

(જાના)

(પઢના)

Model (10)

ઓહ્ રોજ ટુરદી ઍં। (લઘ્ભના)

ઓહ્ રોજ લઘ્દી ઍં।

(જાના)

(પઢના)

Model (11)

ઓહ્ રોજ ઔંદે ન। (જાના)

Model (12)

ઓહ્ રોજ ઔંદિયાં ન। (જાના)

ओह रोज जंदे न।

ओह रोज जंदियां न।

(न्हौना)

(न्हौना)

(दिक्खना)

(दिक्खना)

3. Transformation Drill (रूपान्तरण अभ्यास)

Model (1)

सुरिन्दर रोज औंदा ऐ।

छवि रोज औंदी ऐ।

पवित्तर बसोहली रौंहदा ऐ।

ओह स्कूल जंदा ऐ।

ओह रुट्टी खंदा ऐ।

ओह खेढदा ऐ।

ओह कम्प्यूटर सिखदा ऐ।

ओह पढ़दा ऐ।

Model (2)

ओह रोज औंदे न।

ओह रोज औंदियां न।

ओह बसोहली रौंहदे न।

ओह स्कूल जंदे न।

ओह रुट्टी खंदे न।

ओह खेढदे न।

ओह कम्प्यूटर सिखदे न।

ओह पढ़दे न।

Model (3)

तूं कम्म करना एं।

तुस कम्म करदेओ।

तूं पढ़ना एं।

में जन्नी आं।

ओह औंदा ऐं।

सुधा सोत दिन्दी ऐ।

पवित्तर रुट्टी खंदा ऐ।

चंचल कम्प्यूटर सिखदी ऐ।

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :-

1. सुरेश रोज कु'त्थै जंदा ऐ?
2. रमेश दिन भर केह करदा ऐ?
3. शशि कु'त्थै रौहदी ऐ?
4. शशि दियां जठानियां किन्नियां न?
5. चंचल दे सस्स-सौहरा कु'त्थै रौहदे न?

5. कोष्ठक में दी गई क्रियाओं के उपयुक्त रूप के साथ रिक्त स्थान भरिए :-

1. स्कूला दा कम्म मता----- ऐ। (थ्होना)
2. में रोज अखनूर ----- आं। (जाना)
3. में चीजां-बस्तां टकानै ----- आं। (रक्खना)
4. तूं अज्जकल बी मैच ----- एं। (खेढना)
5. ओह् ब'रा भर कल्लमुकल्ले ----- न। (रौहना)

6. निम्नलिखित क्रियापदों में से उपयुक्त क्रियापद चुनकर रिक्त स्थान भरिए :-

खन्नी आं, पढ़दा ऐ, खेढने आं, लान्दी ऐ, दिखदे न, जंदिंयां न।

1. सोनू दसमीं च ----- ।
2. कल्पना शैल कपड़े ----- ।
3. में दुआई ----- ।
4. अस चैस ----- ।
5. माता होर मन्दर ----- ।
6. जागत टी. वी. बड़ा ----- ।

Vocabulary शब्दावली

धन्नभाग	अहोभाग्य	खुश	खुश
रोज	रोज	रौह	रह
जन्नां	जाता हूँ	पढ़नी आं	पढ़ती हूँ
पासै	ओर	कारक	कारक
स्कूला (दा)	स्कूल का	बस	बस
दरेआ	दरिया		(अव्यय)
थ्होंदा	मिलता	टपदे गै	पार करते ही
मकान्नी आं	खत्म करती हूँ	आई जन्दा/ सेहतू (दा)	आ जाता सेहत का
होंदे ओ	होते हो	(कारक चिन्ह)	
खेआल	ख्याल	छुट्टियां	छुट्टियाँ
पर	पर (कारक चिन्ह)	होन्नां	होता हूँ
बड़ी	बड़ी	सोत-फंड	झाड़-बुहार
रौनक	रौनक	दिन्नां	देता हूँ
लगदी ऐ	लगती है	फही	फिर
ब'रा भर	वर्ष भर	चीजां-बस्तां	चीजें-वस्तुएं
कल्लमकुल्ले	अकेले	टकानै	ठिकाने
पैरें पौन्नेआं	पाँव लागें	रक्खनां	रखता हूँ
जीदें र'वो	जीते रहो	परमात्मा	परमात्मा

बड़्डे-बड़्डे बनो	बड़े-बड़े बनो	मत्था	माथा
मिलदा ऐ	मिलता है	टेकनां	टेकता हूँ
गाहकें	ग्राहकों	भापाजी	भाई जी
सेवा	सेवा	राजी खुशी	राजी खुशी
करनां	करता हूँ	थाहर	जगह
चाचाजी	चाचाजी	रामबन	एक गाँव का नाम
सनाऽ	सुनाओ	डूडू बसन्तगढ	एक गाँव का नाम
ठीक	ठीक	होन	हों
मैच	मैच	किड्डियां	इकट्ठीं
खेढना एं/ खेढदा एं	खेलते हो	सस्स-सौहरा	सास-ससुर
कम्प्यूटर	कम्प्यूटर	जठानियां	जेठानियें
सिक्खनां	सीखता हूँ	पंचैरी	एक गाँव का नाम
औंदी ऐ	आती है	चंगा	अच्छा
सारें शा बड़्डा	सबसे बड़ा	सभनें शा	सबसे
लम्मी	लम्बी	इसकरी	इसलिए

टिप्पणियाँ

9.1 इस पाठ में आप डोगरी के वर्तमान काल के क्रिया-रूपों से परिचित हुए हैं।

9.2 डोगरी में क्रिया के वर्तमान कालिक रूप दो प्रकार से बनते हैं।

(i) 'ला' (पहन) 'पी' (पी) 'सौ' (सो) 'खड़ो' (खड़ा हो) आदि स्वरांत धातुओं के साथ

‘न्द्’ प्रत्यय लगने से क्रिया का वर्तमान कालिक रूप बनता है। ‘न्द्’ प्रत्यय के बाद लिंग और वचन की सूचना देने वाले प्रत्यय भी जुड़ते हैं। जैसे :-

हो + न्द् + आ =	होंदा	‘होता’	(पुलिंग एकवचन)
हो + न्द् + ए =	होंदे	‘होते’	(पुलिंग बहुवचन)
हो + न्द् + ई =	होंदी	‘होती’	(स्त्रीलिंग एकवचन)
हो + न्द् + इयां =	होंदियां	‘होतीं’	(स्त्रीलिंग बहुवचन)
पी + न्द् + आ =	पींदा	‘पीता’	(पुलिंग एकवचन)
ले + न्द् + ई =	लेंदी	‘लेती’	(स्त्रीलिंग एकवचन)
सौ + न्द् + ए =	सौंदे	‘सोते’	(पुलिंग बहुवचन)
न्हौ + न्द् + आ =	न्हौंदा	‘नहाता’	(पुलिंग एकवचन)
खा + न्द् + आ =	खंदा	‘खाता’	(पुलिंग एकवचन)
जा + न्द् + आ =	जंदा	‘जाता’	(पुलिंग एकवचन)
सी + न्द् + ई =	सींदी	‘सीती’	(स्त्रीलिंग एकवचन)

‘जा’ और ‘खा’ धातुओं को वर्तमान कालिक रूपों में ‘ज’ और ‘ख’ आदेश हो जाता है।
जैसे :-

जा → ज----- जंदा, जंदे, जंदी, जंदियां में और

खा → ख----- खंदा, खंदे, खंदी, खंदियां में

- (ii) ‘पढ़्’, ‘लिख्’, ‘कर्’ आदि व्यञ्जनांत धातुओं के साथ ‘अद्’ प्रत्यय लगने से क्रिया का वर्तमान कालिक रूप बनता है। इसके साथ भी लिंग और वचन की सूचना देने वाले प्रत्यय जुड़ते हैं। जैसे :-

पढ़् + अद् + आ = पढ़दा ‘पढ़ता’

पढ़् + अद् + ए = पढ़दे ‘पढ़ते’

पढ़्	+	अद्	+	इ	=	पढ़दी	‘पढ़ती’
पढ़्	+	अद्	+	इयां	=	पढ़दियां	‘पढ़तीं’
लिख्	+	अद्	+	आ	=	लिखदा	‘लिखता’
टुर्	+	अद्	+	ए	=	टुरदे	‘चलते’
कर्	+	अद्	+	ई	=	करदी	‘करती’
बल्	+	अद्	+	इयां	=	बलदियां	‘जलतीं’

9.3 डोगरी में वर्तमान काल के क्रियारूपों में पुरुष की सूचना योजक क्रिया ‘ऐ’ (है) के रूपों से मिलती है। जैसे :-

(i) प्रथमपुरुष

पुलिंग

एकवचन	में जन्दा आं/जन्नां	‘मैं जाता हूँ’
बहुवचन	अस जन्दे आं/ जन्नेआं	‘हम जाते हैं’

स्त्रीलिंग

एकवचन	में जन्दी आं/जन्नी आं	‘मैं जाती हूँ’
बहुवचन	अस जंदिया आं/जन्नियां	‘हम जाती हैं’

(ii) मध्यमपुरुष

पुलिंग

एकवचन	तूं जन्दा एं/जन्नां एं	‘तुम जाते हो’
बहुवचन	तुस जंदे ओ	‘आप जाते हैं’

स्त्रीलिंग

एकवचन	तूं जंदी एं/जन्नी एं।	‘तुम जाती हो’
बहुवचन	तुस जंदियां ओ।	‘आप जाती हैं’

(iii) अन्यपुरुष

पुलिंग

एकवचन	ओह् जंदा ऐ।	‘वह जाता है’
बहुवचन	ओह् जंदे न।	‘वे जाते हैं’

स्त्रीलिंग

एकवचन	ओह् जंदी ऐ।	‘वह जाती है’
बहुवचन	ओह् जंदियां न।	‘वे जाती हैं’

- 9.4 क्रिया के जिन वर्तमान कालिक रूपों के साथ योजक क्रिया अनुनासिक रूपों (आं तथा एं) में होती है, उन क्रिया रूपों की ‘द्’ ध्वनि न् में परिवर्तित हो जाती है। जैसे :-

जंदा आं	=	जन्नां	‘मैं जाता हूँ’
जंदी एं	=	जन्नी एं	‘तुम जाती हो’
जंदे आं	=	जन्ने आं	‘हम जाते हैं’
जंदियां आं	=	जन्नियां	‘हम जाती हैं’
जंदी आं	=	जन्नी आं	‘मैं जाती हूँ’

- 9.5 डोगरी में सामान्य वर्तमान काल के रूप धातु के वर्तमान कालिक रूप के साथ योजक क्रिया के योग से बनते हैं। जैसे :-

ओह् पढ़दा ऐ।	‘वह पढ़ता है’
अजकल बड़ी रौनक लगदी ऐ।	‘आजकल बड़ी रौनक होती है?’
भापा जी पैरें पौन्ने आं।	‘भाई साहब चरण छूता हूँ।’
तुस दोऐ इक्कै थाहर रौह्दियां ओ।	‘आप दोनों एक ही स्थान पर रहती हैं।’

- 9.6 डोगरी वाक्यों की संरचना में शब्दों का क्रम प्रायः इस प्रकार रहता है :-

कर्ता + कर्म + धातु का वर्तमान कालिक रूप + योजक क्रिया जैसे :-

ओह् रुट्टी खंदा ऐ।	‘वह रोटी खाता है।’
--------------------	--------------------

में रुट्टी पकान्नी आं।	‘मैं रोटी बनाती हूँ।’
तुस रुट्टी बंडदे ओ।	‘आप खाना बाँटते हैं।’
जागत खत लिखदा ऐ।	‘लड़का पत्र लिखता है।’
रमा टल्ले धोंदी ऐ।	‘रमा कपड़े धोती है।’
कुड़ियां गीत गांदियां न।	‘लड़कियां गीत गाती हैं।’

9.7 आदरसूचक वाक्यों में मध्यमपुरुष और अन्यपुरुष एकवचन के स्थान पर बहुवचन सर्वनामों का प्रयोग होता है और क्रिया भी बहुवचन में आती है। जैसे :-

तुस रोज अखनूर जंदे ओ ?	‘आप रोज अखनूर जाते हैं ?’
ओह् रोज अखनूर जंदे न।	‘वे रोज अखनूर जाते हैं।’

9.8 वाक्य में नकारात्मक अव्यय ‘नेई’ (नहीं) क्रिया के वर्तमान कालिक रूप से पहले आता है और इसके आने से योजक का प्रयोग प्रायः नहीं होता। जैसे :-

नेई जी, अस किड़ियां नेई रौहदियां।
‘नहीं जी, हम इकट्ठी नहीं रहती’
भरजाई होर इत्थै नेई लभदियां ?
‘भाभी जी यहां नहीं दिखाई पड़तीं।’

9.9 ‘टपदे गै’ (फादते ही/ पार करते ही) क्रियारूप वर्तमान काल में क्रिया के तत्काल होने की सूचना देता है। इसमें क्रिया के वर्तमान काल के पुलिङ्ग बहुवचन रूप के साथ ‘गै’ (ही) अव्यय का प्रयोग होता है। जैसे :-

जंदे गै	‘जाते ही’
पुजदे गै	‘पहुँचते ही’
खंदे गै	‘खाते ही’
दिखदे गै	‘देखते ही’

- 9.10 'आई जंदा ऐ' (आ जाता है) संयुक्त क्रिया है इसमें 'आई' (आ) मुख्य क्रिया है 'जंदा' (जाता) सहायक क्रिया और 'ऐ' (है) योजक क्रिया।
- 9.11 'कल्ल मुकल्ले' (बिल्कुल अकेले) विशेषण शब्द है। यह 'कल्ले-कल्ले' (अकेले-अकेले) पुनरुक्त विशेषण के बीच 'मु' मध्य प्रत्यय के जुड़ने से बना है। जैसे :- कल्ले + मु + कल्ले = कल्लमुकल्ले
- 9.12 'सारें शा' (सभी से) विशेषण शब्दों के साथ उत्तम अवस्था का भाव सूचित करने के लिए प्रयुक्त होता है। जैसे :-

सुरिन्दर सारें शा बड़्हा ऐ।

'सुरेन्द्र सबसे बड़ा है।'

चंचल सारें शा लौहकी ऐ।

'चंचल सबसे छोटी है।'

* * *

पाठ-10
दोस्तेँ दी गल्लबात
(दोस्तेँ की बातचीत)

- | | |
|--|--|
| मोहन : तुस लोक इत्थै केहू करा करदे ओ ? केहू स्कूल नेई जंदे ? | मोहन : तुम लोग यहाँ क्या कर रहे हो ? क्या स्कूल नहीं जाते ? |
| सोहन : अस सन्तोलिया खेडा करने आं। | सोहन : हम सन्तोलिया खेल रहे हैं। |
| मोहन : ओहू जागत ते स्कूल जा करदे न ते तूं इत्थै खेडा करना एं ? | मोहन : वे लड़के तो स्कूल जा रहे हैं और तुम यहाँ खेल रहे हो ? |
| सोहन : नेई मेरा स्कूल इन्नी सबेला नेई लगदा। हूँ तोड़ी ते में मास्टर जी कशा नाच सिक्खा करदा हा। | सोहन : नहीं मेरा स्कूल इतनी सुबह नहीं लगता। अभी तक तो मैं मास्टर जी से नृत्य सीख रहा था। |
| मोहन : कदूं थमां सिक्खा करना एं ? कल-परसों थमां ? | मोहन : कब से सीख रहे हो ? कल-परसों से ? |
| सोहन : नेई, में पिछले द'ऊं महीनें थमां नाच दा अभ्यास करा करनां। | सोहन : नहीं मैं पिछले दो महीनों से नृत्य का अभ्यास कर रहा हूँ। |
| मोहन : केहड़ा नाच ? कुड्ड जां कोई होर ? | मोहन : कौन सा नृत्य ? कुड्ड या कोई दूसरा ? |
| सोहन : में 'फु'म्मनी नाच सिक्खा करनां। | सोहन : मैं 'फु'म्मनी' नृत्य सीख रहा हूँ। |
| मोहन : ते ओहू कुड़ियां केहड़ा नाच सिक्खा करदियां न ? | मोहन : और वे लड़कियाँ कौन सा नृत्य सीख रही हैं ? |
| सोहन : नाच ? ओहू नच्चा नेई करदियां। ओहू ते रस्सा टप्पा करदियां न। दिक्खा नेई करदा ? | सोहन : नाच ? वे नृत्य नहीं कर रही हैं। वे तो रस्सा फाँद रही हैं। देख नहीं रहे हो ? |

- मोहन : हूँ तगर दुए जागत बी कुड्ड
नच्चा करदे हे के नेई ?
- मोहन : अभी तक दूसरे लड़के भी कुड्ड
नाच रहे थे या नहीं ?
- सोहन : हाँ-हाँ
- सोहन : हाँ-हाँ
- दिनेश : तुस दोए इत्थै केह गल्ल करा
करदे ओ ?
- दिनेश : तुम दोनों यहाँ क्या बात
कर रहे हो ?
- सोहन : अस इ'यां गै गल्लां करा करने आं।
- सोहन : हम यूँ ही बातें कर रहे हैं।
- मोहन : अस नाचें दे बारे च गल्लां
करा करदे हे।
- मोहन : हम नाचों के बारे में बातें कर
रहे थे।
- सोहन : उस थमां पैहलें में फु'म्मनी नाच
दा अभ्यास करा करदा हा ते तू ?
- सोहन : उसके पहले मैं फु'म्मनी नाच का
अभ्यास कर रहा था और तुम ?
- दिनेश : में जागतें दी खेद दिक्खा करदा हा।
- दिनेश : मैं लड़कों का खेल देख रहा था।
- मोहन : कु'त्थै ? नैहरा दे कंठे ?
जित्थै कुड़ियां कपड़े धोआ
करदियां न।
- मोहन : कहां ? नहर के किनारे ?
जहाँ लड़कियाँ कपड़े धो
रही हैं ?
- दिनेश : तु'म्मी केह आक्खा करना एं ?
में उत्थै पानी भरा करदा हा।
- दिनेश : तुम भी क्या कह रहे हो ?
मैं वहां पानी भर रहा था।
- सोहन : की ?
- सोहन : क्यों ?
- दिनेश : अपनियें टमाटरें दी क्यारियें
लेई।
- दिनेश : अपनी टमाटरों की क्यारियों के
लिए।
- मोहन : अच्छा। दोए कम्म कन्नै-कन्नै।
टमाटरें दियें क्यारियें लेई
पानी भरना ते खेद बी दिक्खना।
- मोहन : अच्छा दोनों काम साथ-साथ।
टमाटरों की क्यारियों के लिए
पानी भरना और खेल भी देखना।
- सोहन : दिनेश। क्या तूं हून दकानै
पर नौकरी नेई करा करदा ?
- सोहन : दिनेश। क्या तुम अब दुकान
पर नौकरी नहीं कर रहे हो ?

दिनेश : हां ---- हां दकानै पर बी जन्नां ते थोहड़ा-मता खेतीबाड़ी दा कम्म बी करनां।	दिनेश : हाँ ---- हाँ। दुकान पर भी जाता हूँ और थोड़ा-बहुत खेतीबाड़ी का काम भी देखता हूँ।
मोहन : तां पही तुन्दे घर टल्ले सीने दा कम्म कु'न करा करदा ऐ ? तेरा भ्राऽ ?	मोहन : तो फिर तुम्हारे घर में सिलाई का काम कौन कर रहा है ? तुम्हारा भाई ?
दिनेश : नेई, मेरा भ्राऽ ते कम्पोडर ऐ। भरजाई सलाई दा कम्म करदी ऐ। लौहका भ्राऽ ते इन्जीनियरी दा कोर्स करा करदा ऐ।	दिनेश : नहीं, मेरा भाई तो कम्पौंडर है। भाभी सिलाई का काम करती है। छोटा भाई तो इंजीनियरिंग का कोर्स कर रहा है।
मोहन : तेरी लौहकी भैन मैडीकल कालज पढ़ा करदी ऐ नां ?	मोहन : तुम्हारी छोटी बहन मेडिकल कालेज में पढ़ रही है न ?
दिनेश : मेरी कोई भैन नेई। मेरी भरजाई दी भैन मीरा मैडीकल कालज च पढ़ा करदी ऐ। गर्मियें दियां छुटियां न, तां ओह इत्थै ऐ।	दिनेश : मेरी कोई बहन नहीं है। भाभी जी की छोटी बहन मीरा मेडिकल कालेज में पढ़ रही है। गर्मियों की छुटियां हैं न, इसलिए वह यहाँ है।
मोहन : अच्छा। चलनां। में शैहर जाना ऐ।	मोहन : अच्छा। चलता हूँ। मुझे शहर जाना है।
सोहन : मिम्मी स्कूल जाना ऐ।	सोहन : मुझे भी स्कूल जाना है।
दिनेश : चंगा। अस सब चलने आं।	दिनेश : अच्छा। हम सब चलते हैं।

EXERCISES

1. Repitition Drill (पुनरुक्ति अभ्यास)

1. तुस लोक इत्थै केहू करा करदे ओ ?
2. अस सन्तोलिया खेडा करने आं।

3. ओह जागत ते स्कूल जा करदे न ते तूं इत्थै खेडा करना एं ?
4. ओह कुड़ियां केहड़ा नाच सिक्खा करदियां न।
5. ओह नच्चा नेई करदियां ओह ते रस्सा टप्पा करदियां न।
6. तुस दोऐ इत्थै केह गल्लां करा करदे ओ ?
7. अस इ'यां गै गल्लां करा करने आं।
8. दिनेश, क्या तूं हून दकानै पर नौकरी नेई करा करदा ?
9. दकानै पर बी जन्नां ते थोहड़ा-मता खेतीबाड़ी दा कम्म बी करनां।
10. मेरा भ्राऽ ते कम्पोडर ऐ। भरजाई सलाई दा कम्म करदी ऐ। लौहका भ्राऽ ते इन्जीनियरी दा कोर्स करा करदा ऐ।

2. Substitution Drill (स्थानापन्न अभ्यास)

Model (1)

में खेडा करनी आं।

में खेडा करना आं।

ओह नाच सिक्खा करदी ऐ।

कुड़ी कपड़े धोआ करदी ऐ।

जागत स्कूल जा करदा ऐ।

ओह फुटबाल खेडा करदा ऐ।

ओह फु'म्मनी नाच सिक्खा करदा ऐ।

ओह इन्जीनियरी दा कोर्स करा करदा ऐ।

Model (2)

में पानी भरा करदा हा।

अस पानी भरा करदे हे।

जागत खेड दिक्खा करदा हा।

ओह नौकरी करदा ऐ।

कुड़ी कपड़े सीआ करदी ऐ।

तूं गल्लां करा करना एं।

में ते पढ़ा करदा हा।

तूं कुद्धर जा करदा हा ?

3. Transformation Drill (रूपान्तरण अभ्यास)

अस सन्तोलिया खेडा करने आं।

तुस इत्थै केहू करा करदे ओ ?

1. जागत स्कूल जा करदे न।
2. में पिछले द'ऊं म्हीनें थमां नाच दा अभ्यास करा करनां।
3. में फु'म्मनी नाच सिक्खा करनां।
4. टल्ले सीने दा कम्म भरजाई करदी ऐ।
5. मीरा भरजाई दी लौहकी भैन ऐ।
6. लौहका भ्राऽ इन्जीनियरी दा कोर्स करा करदा ऐ।
7. कुड़ियां नच्चा नेई करदियां ओह ते रस्सा टप्पा करदियां न।
8. अस इ'यां गै गल्लां करा करने आं।
9. में जागतें दी खेढ दिक्खा करदा हा।
10. में पानी अपनियें टमाटरें दियें क्यारियें लेई भरा करदा हा।

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :-

1. सोहन केहड़ा नाच सिक्खा करदा ऐ ?
2. कुड़ियां केहू करा करदियां न ?
3. टल्ले सीने दा कम्म कु'न करदा ऐ ?
4. दिनेश दा लौहका भ्राऽ केहू करा करदा ऐ ?
5. मीरा कु'त्थै पढ़ा करदी ऐ ?
6. मीरा कु'न ऐ ?
7. दिनेश केहू कम्म-काज करदा ऐ ?

5. कोष्ठक में दी गई क्रियाओं को उपयुक्त रूप में परिवर्तित करके रिक्त स्थान भरिए :-

1. में करनां। (जाना)

2. दिनेश स्कूल करदा ऐ। (खेढना)
3. ओह मास्टर जी कशा नाच करदा ऐ। (सिक्खना)
4. कुड़ियां रस्सा करदियां न। (टप्पना)
5. अस गल्लां करने आं। (करना)
6. जागत फु'म्मनी नाच करदे हे। (दिक्खना)
7. कुड़ी कपड़े करदी ऐ। (धोना)

6. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए :-

कुड़, फु'म्मनी, सन्तोलिया, सलाई, कल, सिक्खना, नाच, परसों, अभ्यास, क्यारी, खेतीबाड़ी, गल्ल, छुट्टी।

(ग) निम्नलिखित वाक्यों को नकारात्मक वाक्यों में बदलिए :-

1. अस सन्तोलिया खेढा करने आं।
2. जागत स्कूल जा करदे न।
3. तूं कुड़ पा करना ऐ।
4. ओह फु'म्मनी सिक्खा करदे हे।
5. ओह फिङगत्ता खेढा करदा ऐ।
6. अनीता पानी भरा करदी ही।
7. सीता पट्टू धोआ करदी ऐ।
8. अस सलाई सिक्खा करदियां हियां।

(घ) निम्नलिखित वाक्यों का डोगरी में अनुवाद कीजिए :-

1. मैं खेल रहा हूँ।
2. हम नाच रहे थे।
3. सोहन नाच सीख रहा था।

4. दिनेश स्कूल जा रहा था।
5. लड़के जम्मू जा रहे थे।
6. वह गीत गा रहे हैं।
7. वह सुन्दर लड़का है।

‘Vocabulary’ शब्दावली

खेडना	‘खेलना’	गुआंढनां	पड़ोसिनें
अस	‘हम’	सब्भै	सभी
सन्तोलिया	‘एक लोक खेल’	जागत	‘लड़का’
सबेल्ला	‘जल्दी’	कुड्ड	‘डोगरलोक नाच’
फु’म्मनी	‘डोगरा लोक नाच’	कुड़ियां	लड़कियाँ
रस्सा	‘रस्सा’	टप्पना	‘फाँदना’
शैल-शैल	‘अच्छी-अच्छी’	फिडगत्ता	‘लोक खेल’
सारे	सभी	रुट्टी	‘रोटी’
पट्टू	कम्बल	त्रैवै	तीनों
निक्का	छोटा	मंझला	बीच वाला
बड्डा	बड़ा	ननानां	ननदें
लौहकी	छोटी	निक्की	छोटी
दरानी	देवरानी	जठानी	जेठानी

टिप्पणियाँ

- 10.1 इस पाठ में आप क्रिया के वर्तमान तथा भूतकालिक निरन्तरता सूचक रूपों से अवगत हुए हैं। साथ ही समुदाय सूचक संख्यावाचक विशेषणों से भी परिचित हुए हैं।

10.2 डोगरी में निरन्तरता सूचक अर्थ के लिए इस प्रकार के क्रिया रूपों का प्रयोग होता है।

अस सन्तेलिया खेढा करने आं।	कुड़ियां रस्सा टप्पा करदियां न।
‘हम सन्तेलिया खेल रहे हैं।’	‘लड़कियां रस्सा फाँद रही हैं।’

दुए जागत बी कुड़ नच्चा करदे हे।
‘दूसरे लड़के भी कुड़ नाच रहे थे।’

10.3 डोगरी में वर्तमान कालिक निरन्तरता सूचक क्रिया रूप इस प्रकार बनते हैं:-

(i) मुख्य क्रिया आकारान्त रूप में आती है, जैसे :-

करा (कर)	टप्पा (फाँद)	नच्चा (नाच)
----------	--------------	-------------

(ii) निरन्तरतावाचक सहायक क्रिया ‘कर’ वर्तमान कालिक रूपों में आती है। जैसे :-

करदा,	करदे,	करदी,	करदियां।
-------	-------	-------	----------

(iii) काल, पुरुष आदि की सूचना के लिए योजक क्रिया ‘ऐ’ (है) का प्रयोग भिन्न-भिन्न कालों और पुरुषों के अनुसार होता है। जैसे :-

में खेढा करदा आं। करनां।	‘में खेल रहा हूँ।’
अस खेढा करदे आं/करने आं।	‘हम खेल रहे हैं।’
तू खेढा करदा एं/करना एं।	‘तुम खेल रहे हो।’
तुस खेढा करदे ओ।	‘आप खेल रहे हैं।’
ओह खेढा करदा ऐ।	‘वह खेल रहा है।’
ओह खेढा करदे न।	‘वे खेल रहे हैं।’

ये सभी प्रथम पुरुष, मध्यमपुरुष और अन्यपुरुष के पुलिङ्ग रूप थे। स्त्रीलिङ्ग के रूपों के लिए ‘कर’ सहायक क्रिया के रूपों में परिवर्तन होता है। बाकी मुख्य क्रिया और योजक क्रिया के रूप पुलिङ्ग रूपों की भांति ही प्रयुक्त होते हैं। जैसे :-

में खेढा करदी आं/करनी आं।

झल्लने	झेलनी
पौनियां	पड़तीं
ओपरे	अनजान
जाइयै	जाकर
पुच्छनी	पूछनी
लेनियां	ले जानी
में	में
दुआइयां	दवाइयाँ
उत्थै	वहाँ
दकानां	दुकानें
ढक्कियां	ढक्कियां
बड़ी	बहुत
बब्ब	बाप
छोड़ियै	छोड़कर
भैन	बहन
फही	फिर
दस्सी छोड़ेओ	बता देना
लोड़दियां	चाहिए
किट्ठियां	इकट्ठीं
इन्नी	इतनी
तुन्दा	आपका
आवा करदियां	आ रहीं
सरथल देवी	एक स्थानीय देवी

ठैहरने	ठहरने
जाची लै	जांच लें
उप्पर	पर
जंदे	जाते
मन्दर	मन्दिर
तगर	तक
बडलै	सुबह
न्हैरै	अन्धेरे
रुकदी	रुकती
अद्धे	आधे
निक्के	छोटे
चंगी	अच्छी
कु'सी	किसे/किसको
बड्डी	बड़ी
सद्दी लैनी	बुला लेनी
बलाई लैनी	बुला लेनी
भजाई देना	भेज/भिजवा देना
पैहलें	पहले
करी लेदियां	कर लीं
बड़मुल्ली	बहुमूल्य
मता	बहुत
धन्नवाद	शुक्रिया

‘मैं खेल रही हूँ।’

अस खेढा करदियां आं/करनियां।

‘हम खेल रही हैं।’

- 10.4 भूतकालिक निरन्तरता सूचक क्रिया रूप भी वर्तमान कालिक क्रियारूपों की तरह बनते हैं। केवल योजक क्रिया ‘ऐ’ (है) के रूप भूतकाल में प्रयुक्त हैं। जैसे :-

में नाच सिक्खा करदा हा।

‘मैं नाच सीख रहा था।’

अस नाच सिक्खा करदे हे।

‘हम नाच सीख रहे थे।’

ओह् रस्सा टप्पा करदी ही।

‘वह रस्सा फाँद रही थी।’

ओह् रस्सा टप्पा करदियां हियां।

‘वे रस्सा फाँद रही थीं।’

निरन्तरता सूचक भूतकाल के रूपों में पुरुष सूचक भेद नहीं होता।

- 10.5 ‘दोऐ’ (दोनों), ‘त्रैवै’ (तीनों), ‘चारै’ (चारों) सब्भै (सभी) संख्यावाचक विशेषण हैं जो अपनी-अपनी संख्या के समुदाय की सूचना दे रहे हैं। प्रत्येक संख्या के साथ ‘ऐ’ प्रत्यय जुड़ने से समुदायवाचक रूप बनते हैं। जैसे :-

दो + ऐ = दोऐ ‘दोनों’

त्रै + ऐ = त्रैवै ‘तीनों’

चार + ऐ = चारै ‘चारों’

पञ्ज + ऐ = पञ्जै ‘पाँचों’

झल्लने	झेलनी
पौनियां	पड़तीं
ओपरे	अनजान
जाइयै	जाकर
पुच्छनी	पूछनी
लेनियां	ले जानी
में	में
दुआइयां	दवाइयाँ
उत्थै	वहाँ
दकानां	दुकानें
ढक्कियां	ढक्कियां
बड़ी	बहुत
बब्ब	बाप
छोड़ियै	छोड़कर
भैन	बहन
फही	फिर
दस्सी छोड़ेओ	बता देना
लोड़दियां	चाहिए
किट्ठियां	इकट्ठीं
इन्नी	इतनी
तुन्दा	आपका
आवा करदियां	आ रहीं
सरथल देवी	एक स्थानीय देवी

ठैहरने	ठहरने
जाची लै	जांच लें
उप्पर	पर
जंदे	जाते
मन्दर	मन्दिर
तगर	तक
बडलै	सुबह
न्हैरै	अन्धेरे
रुकदी	रुकती
अद्धे	आधे
निक्के	छोटे
चंगी	अच्छी
कु'सी	किसे/किसको
बड्डी	बड़ी
सद्दी लैनी	बुला लेनी
बलाई लैनी	बुला लेनी
भजाई देना	भेज/भिजवा देना
पैहलें	पहले
करी लेदियां	कर लीं
बड़मुल्ली	बहुमूल्य
मता	बहुत
धन्नवाद	शुक्रिया

10.6 'कशा' (से) करण कारक का चिह्न है। प्रयोग :-

कोहदे कशा?

'किससे'

मास्टरजी कशा

'मास्टर जी से।'

10.7 'जां' (या/अथवा) का प्रयोग दो शब्दों तथा दो वाक्यों के बीच होता है। जैसे :-

केहड़ा नाच कुड्ड जां कोई होर?

'कौन सा नाच कुड्ड अथवा कोई दूसरा?'

यह अव्यय दो या अधिक विकल्पों में से किसी एक की प्रस्तुति करता है। जैसे :-

सोहन जां मोहन जां दिनेश बजार जा करदा हा।

'सोहन या मोहन अथवा दिनेश बाजार जा रहा था।'

10.8 'भरना' (भरना), 'दिखना' (देखना) आदि क्रिया के संज्ञार्थक रूप हैं। ये संज्ञाओं की भाँति प्रयुक्त होते हैं। जैसे :-

दोऐ कम्म कन्नै-कन्नै। पानी भरना ते खेढ बी दिक्खना।

'दोनों काम साथ-साथ। पानी भरना और खेल भी देखना।'



झल्लने	झेलनी	ठैहरने	ठहरने
पौनियां	पड़तीं	जाची लै	जांच लें
ओपरे	अनजान	उप्पर	पर
जाइयै	जाकर	जंदे	जाते
पुछनी	पूछनी	मन्दर	मन्दिर
लेनियां	ले जानी	तगर	तक
में	में	बडलै	सुबह
दुआइयां	दवाइयाँ	न्हैरै	अन्धेरे
उत्थै	वहाँ	रुकदी	रुकती
दकानां	दुकानें	अद्धे	आधे
ढक्कियां	ढक्कियां	निक्के	छोटे
बड़ी	बहुत	चंगी	अच्छी
बब्ब	बाप	कु'सी	किसे/किसको
छोड़ियै	छोड़कर	बड्डी	बड़ी
भैन	बहन	सद्दी लैनी	बुला लेनी
फही	फिर	बलाई लैनी	बुला लेनी
दस्सी छोड़ेओ	बता देना	भजाई देना	भेज/भिजवा देना
लोड़दियां	चाहिए	पैह्लें	पहले
किट्ठियां	इकट्ठीं	करी लेदियां	कर लीं
इन्नी	इतनी	बड़मुल्ली	बहुमूल्य
तुन्दा	आपका	मता	बहुत
आवा करदियां	आ रहीं	धन्नवाद	शुक्रिया
सरथल देवी	एक स्थानीय देवी		

पाठ-11
पिकनिक बारे
(पिकनिक के बारे में)

- | | |
|--|--|
| <p>मून : केह तू कल स्कूल औगा ?</p> <p>सेतु : नेई, कल ते छुट्टी ऐ।</p> <p>मून : मेरा मतलब हा परसों।
पिकनिक आहले दिन ?</p> <p>सेतु : पिकनिक आस्तै ते में जरूर औड।</p> <p>मून : रज्जू, तु'म्मी औगी जां नेई ?</p> <p>रज्जू : में किश जरूरी कम्म करना ऐ,
पर औने दी कोशिश करड।
तुस सब जा करदे ओ नां ?</p> <p>मून : पक्का। अस सब जाहूगे।
सन्नी ते हनी बी औडन।</p> <p>सेतु : परसों इसलै किन्ना मजा होग !</p> <p>मून : हां-हां। अस सारे जा करदे होंगे।
गाने बी गा करदे होंगे। भांत-
सभांते दिशिश बी दिक्खा करदे
होंगे।</p> <p>रज्जू : तूं हूनै गै सुखने लैन लगेआ एं ?</p> <p>मून : हां-हां। सुखने केह ओह ते सच्च
गै होग।</p> <p>सेतु : दस्स भला, में इसलै केह सोचा
करदा होड ?</p> | <p>मून : क्या तू कल स्कूल आएगा ?</p> <p>सेतु : नहीं, कल तो छुट्टी है।</p> <p>मून : मेरा मतलब था परसों।
पिकनिक वाले दिन ?</p> <p>सेतु : पिकनिक के लिए तो मैं जरूर आऊँगा।</p> <p>मून : रज्जू, तू भी आएगी या नहीं ?</p> <p>रज्जू : मुझे कुछ जरूरी काम करना है,
परन्तु आने की कोशिश करूँगी।
क्या आप सब जा रहे हैं न ?</p> <p>मून : जरूर। हम सब जाएँगे। सन्नी और
हनी भी आएँगी।</p> <p>सेतु : परसों इस बक्त कितना मजा होगा !</p> <p>मून : हा हां। हम सब जा रहे होंगे।
गाने भी गा रहे होंगे। तरह-
तरह के दृष्य भी देख रहे
होंगे।</p> <p>रज्जू : तुम अभी से सपने लेने लगे हो ?</p> <p>मून : हा-हां सपने क्या वह तो सचाई
ही होगी।</p> <p>सेतु : जरा बताओ, मैं अब क्या सोच
रहा हूँगा ?</p> |
|--|--|

टिप्पणियाँ

15.1 इस पाठ में आपने 'चाहिदा' (चाहिए) और 'पौना' (पड़ना) सहायक क्रियाओं के प्रयोग परिचय किया है।

15.2 डोगरी में 'चाहिदा' सहायक क्रिया संज्ञार्थक रूपों वाली मुख्य क्रियाओं के साथ प्रयुक्त होती है और 'पौना' सहायक क्रिया संज्ञार्थक रूपों वाली मुख्य क्रिया तथा ईकारान्त मुख्य क्रिया के साथ प्रयुक्त होती है। जैसे :-

जाना चाहिदा ऐ।	'जाना चाहिए'
लिखना चाहिदा हा।	'लिखना चाहिए था'
जाना पेआ।	'जाना पड़ा'
जाना पौग।	'जाना पड़ेगा।'
रोई पेआ।	'रो पड़ा'

15.3 'चाहिदा' सहायक क्रिया अकर्मक और सकर्मक दोनों प्रकार की मुख्य क्रियाओं के साथ आती है और इसके वाक्यों का कर्ता कर्म कारक में आता है। जैसे :-

असें गी कु'त्यूँ जाना चाहिदा ऐ ?	'हमें कहाँ जाना चाहिए ?'
तुगी पढ़ना चाहिदा ऐ।	'तुम्हें पढ़ना चाहिए।'
मिगी कपड़े धोने चाहिदे न।	'मुझे कपड़े धोने चाहिएँ।'

15.4 अकर्मक मुख्य क्रियाओं के साथ 'चाहिदा' सहायक क्रिया पुलिङ्ग एकवचन में ही रहती है। जैसे :-

दस्तो हां कु'स-केहड़े थाहर जाना चाहिदा ऐ ?

'बताइए कौन से स्थान पर जाना चाहिए ?'

हूनै तगर उसी पुज्जना चाहिदा हा।

'अब तक उसे पहुँचना चाहिए था।'

रज्जू : एह ते साफ ऐ। पिकनिक च केह—
केह चीजां खाने गी थोडन उसदे
बारे च गै तूं सोचा करदा होगा।

सेतु : झूठ। में ते खाने दे बारे च नेई
सोचा करदा। में सोचा करदा हा
जे उल्लै झीला दे कंढे टुरने च
किन्ना मजा औग ?

मून : में ते छड़ा कंढे पर टुरने कन्नै
गै संतुष्ट नेई होई जाड। में
ते झीला च तरना ऐ।

रज्जू : तूं ते बड़ा शरारती एं। मास्टर
जी तुगी कदें तरन नेई देडन।
हून तूं एह दस्स जे में इसलै पिकनिक
उप्पर केह करा करदी होगी ?

सेतु : एह दस्सना ते औकखी गल्ल नेई।

रज्जू : फही बी जरा दस्स ते सेही।

मून : तूं ते अनु, हनी, तारा ते बाकी
कुड़ियें कन्नै रलियै नच्चा—गा
करदी होगी।

रज्जू : तुस लोक केह आखा करदे ओ ?
कुड़ियां सिर्फ नच्चने—गाने
आस्तै गै न ?

मून : तां दस्स तूं उल्लै केह करदी होगी ?

रज्जू : बड़ा किश करड। झीला च पानी
पीन मते हारे पैछी औने न नां,

रज्जू : यह तो साफ है। पिकनिक में क्या—
क्या चीजें खाने के लिए मिलेंगी,
उसके बारे में ही तुम सोच रहे होंगे।

सेतु : झूठ। मैं तो खाने के बारे में नहीं
सोच रहा हूँ। मैं सोच रहा था कि
वहाँ झील के किनारे चलने में
कितना आनन्द आएगा ?

मून : मैं तो सिर्फ किनारे पर चलने से
ही तृप्त नहीं हूँगा। मैंने तो झील
में तैरना है।

रज्जू : तुम तो बहुत शरारती हो। मास्टर
जी तुम्हें कभी तैरने नहीं देंगे।
अब तुम बोलो कि मैं इस समय
पिकनिक पर क्या कर रही हूँगी ?

सेतु : यह कहना तो मुश्किल बात नहीं है।

रज्जू : फिर भी जरा बताओ न।

मून : तुम तो अनु, हनी, तारा और
अन्य लड़कियों के साथ मिल
नाच—गा रही होगी।

रज्जू : तुम लोग क्या कह रहे हो ?
लड़कियां सिर्फ नाच—गाने के
लिए ही हैं ?

मून : तब बतलाओ तुम वहाँ क्या करती
होगी ?

रज्जू : बहुत कुछ करूँगी। झील में पानी
पीने के लिए बहुत सारे पक्षी

रोज बमार रौहदे ओ कुसै डाक्टरै गी दस्सना ते चाहिदा ऐ।

‘रोज बीमार रहते हो किसी डाक्टर को दिखाना तो चाहिए।’

5.5 सकर्मक मुख्य क्रियाओं के साथ जब ‘चाहिदा’ सहायक क्रिया आती है तो इसके रूप वाक्य के कर्म के लिंग और वचन के अनुसार होते हैं। जैसे :—

पर्यटन विभाग दे कन्नै रावता करी लेना चाहिदा हा।

‘पर्यटन विभाग के साथ सम्पर्क कर लेना चाहिए था।’

किश्तवाड़ ते भद्रवाह जनेह् थाहर जरूर दिक्खने चाहिदे न।

‘किश्तवाड़ और भद्रवाह जैसे स्थान जरूर देखने चाहिएँ।’

ठैहरने दी थाहर बी दिक्खी—सुनी लेनी चाहिदी ऐ।

‘ठहरने की जगह भी देख—सुन लेनी चाहिए।’

सफर पर अपनी जरूरत दियां चीजां गै लेनियां चाहिदियां न।

‘सफर पर अपनी जरूरत की चीजें ही लेनी चाहिएँ।’

1 5.6 ‘चाहिदा’ क्रिया के साथ मुख्य क्रिया के स्थान पर जब कोई ‘संज्ञा’ होती है तो ‘चाहिदा’ के रूप संज्ञा के लिंग, वचन के अनुसार होते हैं। जैसे :—

दुआइयां चाहिदियां होंडन तां लब्धी जाडन।

‘दवाइयें चाहिएँ (होंगी) तो मिल जाएँगी।’

कैमरा चाहिदा होग तां दस्सेओ।

‘कैमरा चाहिए (होगा) तो कहिएगा।’

मिगी पैसे चाहिदे न।

‘मुझे पैसे चाहिएँ।’

उसी कताब चाहिदी ऐ।

‘उसे पुस्तक चाहिए।’

रोज बमार रौंहे ओ कुसै डाक्टरै गी दस्सना ते चाहिदा ऐ।

‘रोज बीमार रहते हो किसी डाक्टर को दिखाना तो चाहिए।’

5.5 सकर्मक मुख्य क्रियाओं के साथ जब ‘चाहिदा’ सहायक क्रिया आती है तो इसके रूप वाक्य के कर्म के लिंग और वचन के अनुसार होते हैं। जैसे :-

पर्यटन विभाग दे कन्नै रावता करी लेना चाहिदा हा।

‘पर्यटन विभाग के साथ सम्पर्क कर लेना चाहिए था।’

किश्तवाड़ ते भद्रवाह जनेह् थाहर जरूर दिक्खने चाहिदे न।

‘किश्तवाड़ और भद्रवाह जैसे स्थान जरूर देखने चाहिएँ।’

ठैहरने दी थाहर बी दिक्खी-सुनी लेनी चाहिदी ऐ।

‘ठहरने की जगह भी देख-सुन लेनी चाहिए।’

सफर पर अपनी जरूरत दियां चीजां गै लेनियां चाहिदियां न।

‘सफर पर अपनी जरूरत की चीजें ही लेनी चाहिएँ।’

1 5.6 ‘चाहिदा’ क्रिया के साथ मुख्य क्रिया के स्थान पर जब कोई ‘संज्ञा’ होती है तो ‘चाहिदा’ के रूप संज्ञा के लिंग, वचन के अनुसार होते हैं। जैसे :-

दुआइयां चाहिदियां होंडन तां लब्धी जाडन।

‘दवाइयें चाहिएँ (होंगी) तो मिल जाएँगी।’

कैमरा चाहिदा होग तां दस्सेओ।

‘कैमरा चाहिए (होगा) तो कहिएगा।’

मिगी पैसे चाहिदे न।

‘मुझे पैसे चाहिएँ।’

उसी कताब चाहिदी ऐ।

‘उसे पुस्तक चाहिए।’

उन्दे फंघ झीला दे कंठै चबकवै
खिल्लरे दे होने न।
में उ'नेगी किट्ठा करना चाहड।

आएंगे न, उनके पंख चारों ओर
झील के किनारे बिखरे होंगे।
मैं उन्हें इकट्ठा करना चाहूँगी।

सेतु : सिर्फ इन्ना गै ? किश खागी
नेई ? गागी नेई ? नचगी नेई ?

सेतु : सिर्फ इतना ही ? कुछ खाओगी
नहीं ? गाओगी नहीं, नाचोगी नहीं ?

रजू : खाना, गान ते होग गै पर नच्चड
नेई। नच्चने च मिगी दिलचस्पी
नेई। फंघ किट्ठे करने दे इलावा
में बकख-बकख रंगें दे पत्तर बी
किट्ठे करना चाहड।

रजू : खाना-खाना तो होगा पर नाचूंगी
नहीं। नाचने में मेरी दिलचस्पी
नहीं है। पंख इकट्ठे करने के
इलावा मैं भिन्न-भिन्न रंग के पत्ते
भी इकट्ठे करना चाहूँगी।

मून : मेरा बी इक प्रोग्राम ऐ।

मून : मेरा भी एक कार्यक्रम है।

सेतु : केह ओह बड्डा प्रोग्राम ऐ ?
मिगी बी कनै रखगा नां ?

सेतु : क्या वह बड़ा कार्यक्रम है ?
मुझे भी साथ रखोगे नां ?

मून : जरूर। अस दोऐ परसों इसलै
मच्छियें गी आटा पा करदे होंगे।
तदूं आटा खाने आस्तै खचोपड़
बी आवा करदे होडन। तां में उन्दा
सभनें दा फोटू खिच्चना चाहड। में
अपने भापे दा कैमरा लेई चलड।

मून : जरूर। हम दोनों परसों इस वक्त
मछलियों को आटा डाल रहे होंगे।
तब आटा खाने के लिए कछुए भी
आ रहे होंगे। तब मैं उन सबका
फोटो लेना चाहूँगा। मैं अपने भैया
का कैमरा ले चलूँगा।

रजू : तां तूं पैछियें दे फोटो बी जरूर खिचगा।

रजू : तब तुम पक्षियों के फोटो भी जरूर लोगे।

सेतु : अच्छा हून ते अस पिकनिक दा
प्रोग्राम बना करने आं पर परसों
अस पिकनिक दियां असली गल्लां
करा करदे होंगे।

सेतु : अच्छा। अब तो हम पिकनिक की
योजना बना रहे हैं, पर परसों हम
पिकनिक की असली बातें कर रहे
होंगे।

15.7 डोगरी में 'चाहिए' के अर्थ में 'चाहिदा' के सादृश्य पर 'लोड़दा' प्रयोग भी होता है जैसे :-

असेंगी कु'नें गल्लें दा ध्यान रक्खना लोड़दा ऐ ?

'हमें किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ?'

जे किश लोड़दा होग जरूर दस्सेओ।

'जो कुछ चाहिए (होगा) जरूर बतलाइएगा।'

15.8 'चाहिदा' वाले वाक्यों में काल और अर्थ संबन्धी सूचना योजक क्रिया के रूपों से होती है जैसे :-

चाहिदा ऐ 'चाहिए' चाहिदा होग 'चाहिए होगा'

चाहिदा हा 'चाहिए था' चाहिदा होऐ 'चाहिए हो।'

15.9 'पौना' सहायक क्रिया अकर्मक और सकर्मक दोनों प्रकार की मुख्य क्रियाओं के साथ है। अकर्मक क्रियाओं के साथ दो रूपों में प्रयुक्त होती है।

(i) संज्ञार्थक रूपों के साथ

(ii) ईकारान्त रूपों के साथ

15.9.1 संज्ञार्थक रूपों के साथ यह पुलिंग एक वचन में आती है और वाक्य का कर्ता कर्म व में होता है। जैसे :-

उ'नें गी टुरना पेआ।

'उन्हें चलना पड़ा।'

जागतै गी पढ़ना पौग।

'लड़के को पढ़ना पड़ेगा (होगा)'

उसी नच्चना पेआ।

'उसे नाचना पड़ा।'

15.9.2 सकर्मक क्रियाओं के ईकारान्त रूपों के साथ 'पौना' सहायक के रूप वाक्य के काल, लिंग, वचन तथा पुरुष के अनुसार प्रयुक्त होते हैं। जैसे :-

मैं हस्सी पेआ।

'मैं हँस पड़ा।'

EXERCISES

1. Repitition Drill (पुनरुक्ति अभ्यास)

1. कल तू स्कूल औगा ?
2. नेई, कल ते छुट्टी ऐ।
3. पिकनिक आस्तै ते में जरूर औड।
4. रज्जू, तु'म्मी औगी जां नेई ?
5. परसों इसलै किन्ना मजा होग !
6. अस सारे जा करदे होंगे। गाने बी गा करदे होंगे। भान्त-सभांते द्रिशश बी दिक्खा करदे होंगे।
7. पिकनिक च केह-केह चीजां खाने गी ध्ण्डन ?
8. में ते खाने दे बारे च नेई सोचा करदा। में सोचा करदा हा जे उत्थै झीला दे कंठै टुरने च किन्ना मजा औग ?
9. तू ते बड़ा शरारती एं, मास्टर जी तुगी कदें तरन, नेई देडन।
10. अस दोऐ परसों इसलै झीलै च मच्छियें गी आटा पा करदे होंगे।
11. तां तू पैछियें दे फोटो बी जरूर खिचगा।
12. अच्छा हून ते अस पिकनिक दा प्रोग्राम बना करने आं पर परसों अस पिकनिक दियां असली गल्लां करा करदे होंगे।

2. Substitution Drill (स्थानापन्न अभ्यास)

Model (1)

तू कल स्कूल औगा। (जाना)
तू कल स्कूल जागा। (पढ़ना)
(होना)
(बौहना)

Model (2)

तू कल स्कूल औगी। (जाना)
तू कल स्कूल जागी। (पढ़ना)
(होना)
(बौहना)

अस हस्सी पे।	‘हम हँस पड़े।’
ओह हस्सी पेई।	‘वह हँस पड़ी।’
में हस्सी पौन्नी आं।	‘मैं हँस पड़ती हूँ।’
तुस हस्सी पवो।	‘आप हँस पड़ें।’
तूं हस्सी पौगी।	‘तुम हँस पड़ोगी।’

15.10 सकर्मक मुख्य क्रियाओं के साथ ‘पौना’ सहायक क्रिया आती है तो इसके रूप वाक्य के कर्म के अनुसार होते हैं। जैसे :-

रातीं लै स्वैटर ते तुसें लाना गै पौना ऐ।
‘रात को स्वेटर तो आपको पहनना ही पड़ेगा।’
गर्म कपड़े ते लेने गै पौने न।
‘गर्म कपड़े तो ले जाने ही पड़ेंगे।’
रस्ते च इक फाड़ी बी चढ़नी पौनी ऐ।
‘रास्ते में एक पहाड़ी भी चढ़नी पड़ेगी।’
बत्तै दियां मुश्कलां बी झल्लनियां पौनियां न।
‘रास्ते की मुश्किलें भी झेलनी पड़ेंगी।’

15.11 ‘पौना’ क्रिया के साथ मुख्य क्रिया के स्थान पर जब कोई संज्ञा आती है तो ‘पौना’ सहायक के रूप उस संज्ञा के लिंग, वचन के अनुसार होते हैं। जैसे :-

परूं मती ठंड पेई ही।	‘पिछले वर्ष अधिक ठंड पड़ी थी।’
ऐतकी मती गर्मी पेई ऐ।	‘इस साल अधिक गर्मी पड़ी है।’
चार साल पैहले काल पेआ हा।	‘चार वर्ष पूर्व अकाल पड़ा था।’
उसी कल मार पेई ही।	‘उसे कल मार पड़ी थी।’

Model (3)

तुस कल नचगे। (पढ़ना)
 (टुरना)
 (लब्धना)

Model (5)

ओह नच्चग। (दौड़ना)
 ओह दौड़ग।
 (हस्सना)
 (राहना)
 (धोना)

Model (7)

में औड। (पढ़ना)
 में पढ़ड।
 (लिखना)
 (तैरना)
 (उट्ठना)
 अस नचगे। (टुरना)
 अस टुरगे। (दौड़ना)
 (न्हौना)
 (नच्चना)

Model (4)

तुस कल नचगियां। (पढ़ना)
 (टुरना)
 (लब्धना)

Model (6)

ओह नचडन। (दौड़ना)
 ओह दौड़डन।
 (हस्सना)
 (राहना)
 (धोना)

Model (8)

में औड। (पढ़ना)
 में पढ़ड।
 (लिखना)
 (तैरना)
 (उट्ठना)
 अस नचगियां। (टुरना)
 अस टुरगियां। (दौड़ना)
 (न्हौना)
 (नच्चना)

3. Transformation Drill (रूपान्तरण अभ्यास)**Model (1)**

में जा करना आं।
 में जा करदा होड।

Model (2)

अस पढ़ा करने आं।
 अस पढ़ा करदे होंगे।

15.12 'पौना' सहायक क्रिया के साथ मुख्य क्रिया का संज्ञार्थक रूप 'आकारान्त' के अतिरिक्त 'एकारान्त' या 'ऐकारान्त' भी होता है। जैसे :-

मिगी सफर पैदल तैह् करने पौना ऐ।

'मुझे सफर पैदल तय करना पड़ेगा (होगा)'

उसी ढक्की ढलने / ढलनै पौनी ऐ।

'उसे ढक्की उतरना पड़ेगी (होगी)'

मिगी कल उत्थै जाने / जानै पेआ।

'मुझे कल वहाँ जाना पड़ा।'



झल्लने	झेलनी
पौनियां	पड़तीं
ओपरे	अनजान
जाइयै	जाकर
पुच्छनी	पूछनी
लेनियां	ले जानी
में	मैं
दुआइयां	दवाइयाँ
उत्थै	वहाँ
दकानां	दुकानें
ढक्कियां	ढक्कियां
बड़ी	बहुत
बब्ब	बाप
छोड़ियै	छोड़कर
भैन	बहन
फही	फिर
दस्सी छोड़ेओ	बता देना
लोड़दियां	चाहिए
किट्ठियां	इकट्ठीं
इन्नी	इतनी
तुन्दा	आपका
आवा करदियां	आ रहीं
सरथल देवी	एक स्थानीय देवी

ठैहरने	ठहरने
जाची लै	जांच लें
उप्पर	पर
जंदे	जाते
मन्दर	मन्दिर
तगर	तक
बडलै	सुबह
न्हेरै	अन्धेरे
रुकदी	रुकती
अद्धे	आधे
निक्के	छोटे
चंगी	अच्छी
कु'सी	किसे/किसको
बड़्डी	बड़ी
सद्दी लैनी	बुला लेनी
बलाई लैनी	बुला लेनी
भजाई देना	भेज/भिजवा देना
पैह्लें	पहले
करी लेदियां	कर लीं
बड़मुल्ली	बहुमूल्य
मता	बहुत
धन्नवाद	शुक्रिया

झल्लने	झेलनी	ठैहरने	ठहरने
पौनियां	पड़तीं	जाची लै	जांच लें
ओपरे	अनजान	उप्पर	पर
जाइयै	जाकर	जंदे	जाते
पुच्छनी	पूछनी	मन्दर	मन्दिर
लेनियां	ले जानी	तगर	तक
में	में	बडलै	सुबह
दुआइयां	दवाइयाँ	न्हैरै	अन्धेरे
उत्थै	वहाँ	रुकदी	रुकती
दकानां	दुकानें	अद्धे	आधे
ढक्कियां	ढक्कियां	निक्के	छोटे
बड़ी	बहुत	चंगी	अच्छी
बब्ब	बाप	कु'सी	किसे/किसको
छोड़ियै	छोड़कर	बड्डी	बड़ी
भैन	बहन	सद्दी लैनी	बुला लेनी
फही	फिर	बलाई लैनी	बुला लेनी
दस्सी छोड़ेओ	बता देना	भजाई देना	भेज/भिजवा देना
लोड़दियां	चाहिए	पैहलें	पहले
किट्ठियां	इकट्ठीं	करी लेदियां	कर लीं
इन्नी	इतनी	बड़मुल्ली	बहुमूल्य
तुन्दा	आपका	मता	बहुत
आवा करदियां	आ रहीं	धन्नवाद	शुक्रिया
सरथल देवी	एक स्थानीय देवी		

मोहन खेढा करदा ऐ।

मून लिखा करदा ऐ।

तूं आवा करना एं।

तूं हस्सा करना एं।

Model (3)

में लिखा करनी आं।

में लिखा करदी होड।

ओह गा करदी ऐ।

ओह खेढा करदी ऐ।

तूं पानी भरा करनी एं।

तूं कपड़े सीआ करनी एं।

ओह खेढा करदे न।

ओह दौड़ा करदे न।

तुस नच्चा करदे ओ।

तुस गा करदे ओ।

Model (4)

अस बुना करनियां आं।

अस बुना करदियां होगियां।

ओह पढ़ा करदियां न।

ओह लिखा करदियां न।

तुस कपड़े धोआ करदियां ओ।

तुस पानी पीआ करदियां ओ।

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :-

1. मून पिकनिक पर जाइयै केह-केह करना चाहदा ऐ?
2. रज्जू पिकनिक पर नच्चग की नेई?
3. मास्टर जी मून गी झीलै च तरन की नेई देडन?
4. किन्ने बच्चे पिकनिक पर जाने दा प्रोग्राम बना करदे न?
5. झीलै दे केहड़े जीव-जन्तु बच्चें दे आकर्शन दा खास केन्द्र न?

5. कोष्ठक में दी गई क्रियाओं के निरन्तरता सूचक रूप बनाकर रिक्त स्थान भरिए :-

1. तुस सब । (जाना)
2. अस सारे । (खाना)
3. भान्त-सभांते द्रिशश बी । (दिक्खना)

5. प्रिया ने सोनू गी केह करने आस्तै आखेआ ?

6. गर्मी च ओह्दा बुरा हाल कि'यां होआ ?

7. दफ्तर केह करदे थक्की जान होदा ऐ ?

8. छुट्टी आहले दिन केह करदे टैमा दा पता नेई चलदा ?

8. निम्नलिखित कृदन्तों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए :-

बनांदे-बनांदे,	खपदे-खपदे,	ढोंदे-ढोंदे,	पकांदे-पकांदे,
डुबदे-डुबदे,	खेढी-खाढियै,	चढ़दे-उतरदे,	नचदे-टपदे,
लिखदे-पढ़दे,	पुछदी-पछांदी,	खाई-खाइयै,	चली-चलियै,
न्हाई-न्हूई,	दिक्खी-सुनी,	खाई-पी,	लेटे-लेटे,
सुत्ते-बैठे,	बैठे-बैठे,		

Vocabulary शब्दावली

बनांदे-बनांदे	बनाते-बनाते	खपदे-खपदे	खपते-खपते
ढोंदे-ढोंदे	ढोते-ढोते	पकांदे-पकांदे	पकाते-पकाते
खंदे-खंदे	खाते-खाते	डुबदे-डुबदे	डूबते-डूबते
करदे-करदे	करते-करते	खेढी-खाढियै	खेल-कूद कर
नचदे-टपदे	नाचते-कूदते	चढ़दे-उतरदे	चढ़ते-उतरते
लिखदे-पढ़दे	लिखते-पढ़ते	पुछदी-पछांदी	पूछते-पूछते
खाई-खाइयै	खा-खाकर	चली-चलियै	चल-चलकर
न्हाई-न्हूई	नहा-वहा	दिक्खी-सुनी	देख-सुन
खाई-पी	खा-पीकर	बैठे-बैठे	बैठे-बैठे

लेटे-लेटे	लेटे-लेटे	इक्कली	अकेली
पुज्जी	पहुँची	बजारा	बाज़ार से
अज्ज	आज	मुन्नन	मुंडन संस्कार
आहले	वाले	तौले	जलदी
थक्की	थकी	कु'तै	कहाँ
सेई	सो	जन्ने आं	जाते हैं
परसा	पसीना	थुआढ़े	आपके।
पौड़ियां	सीढ़ियाँ		

टिप्पणियाँ

- 16.1 इस पाठ में आप पुनरुक्त क्रियाओं तथा क्रियाओं के कर्तावाचक रूपों से अवगत हुए हैं।
- 16.2 डोगरी में पुनरुक्त क्रियाओं का प्रयोग अधिकतर वर्तमान कालिक और भूतकालिक क्रिया-रूपों की पुनरुक्ति से होता है। जैसे :-

बनांदे-बनांदे	‘बनाते-बनाते’
खन्दे-खन्दे	‘खाते-खाते’
बैठे-बैठे	‘बैठे-बैठे’
खड़ोते-खड़ोते	‘खड़े-खड़े’
नचदे-टपदे	‘नाचते-कूदते’
फिरी-फिरियै	‘फिर-फिर कर’

- 16.3 वर्तमान कालिक क्रिया-रूपों से बनी पुनरुक्त क्रियाएं प्रायः दो रूपों में मिलती है :

- समान क्रियाओं की पुनरुक्ति से बनी
- भिन्न क्रियाओं की पुनरुक्ति से बनी

16.4 दो समान क्रियाओं से वर्तमान कालिक रूपों की पुनरुक्ति से बनी 'पुनरुक्त क्रियाएं' हैं :

मकान बनांदे-बनांदे साल होई गेआ ऐ।

'मकान बनाते-बनाते साल बीत गया है।'

फुल्के पकांदे-पकांदे परसा आई गेआ ऐ।

'रोटियाँ बनाते-बनाते पसीना आ गया है।'

सारा दिन मजूरे कन्नै खपदे-खपदे ते समान ढोदे-ढोदे थक्की गे आं।

'दिन भर मजदूरों से खपते-खपते और समान ढोते-ढोते थक गए हैं।'

यह सभी पुनरुक्त क्रियाएं एकारान्त रूप में आने के कारण अविकारी रूप में हैं और कार्य की निरन्तरता सूचित करते हुए क्रिया विशेषण का काम कर रही हैं।

16.5 वर्तमान कालिक क्रियाओं के ये पुनरुक्त रूप वाक्य के कर्ता के लिंग, वचन के अनुसार भी प्रयुक्त होते हैं। जैसे :-

ओह रुट्टी खा करदी ही खंदी-खंदी गै सेई गई।

'वह खाना खा रही थी खाती-खाती ही सो गई।'

ओहदियां सहेलियां घर पुछदियां-पुछदियां आई गेइयां।

'उसकी सहेलियें घर पूछती-पूछती आ गई।'

ज्याणा रोंदा-रोंदा सेई गेआ।

'बच्चा रोता-रोता सो गया।'

16.6 दो भिन्न-भिन्न क्रियाओं के वर्तमान कालिक रूपों की पुनरुक्ति से बनी 'पुनरुक्त क्रियाएं' इस प्रकार हैं :-

बच्चे सारा दिन नचदे-टपदे रौहदे न।

'बच्चे सारा दिन नाचते-कूदते रहते हैं।'

पैहले रुट्टी खाई लैओ ते पही लिखदे-पढ़दे र'वेओ।

‘पहले खाना खा लें फिर बाद में लिखते-पढ़ते रहें।’

इन दोनों उदाहरणों की पुनरुक्त क्रियाएं कर्ता के पुलिङ्ग-बहुवचनी रूप के अनुसार पुलिङ्ग बहुवचन में ही हैं। इसके साथ ही ये ‘एकारान्त’ रूप में आकर अविकारी भी रहती हैं। जैसे :-

कुड़ी नचदे-टपदे डिङ्गी पेई।

‘लड़की नाचते-कूदते गिर पड़ी।’

कुड़ियां लिखदे-पढ़दे थक्की गेइयां।

‘लड़कियाँ लिखते-पढ़ते थक गईं।’

नौकर नचदे-टपदे डिङ्गी पेआ।

‘नौकर नाचते-कूदते गिर पड़ा।’

16.7 भूतकालिक क्रिया-रूपों से पुनरुक्त क्रियाएं भी दो प्रकार की होती हैं :-

(i) समान क्रियाओं की पुनरुक्ति से बनी

(ii) भिन्न क्रियाओं की पुनरुक्ति से बनी

16.8 दो समान भूतकालिक क्रिया रूपों से बनी पुनरुक्त क्रियाएं

बैठे-बैठे किश चिर गै होई गेआ।

‘बैठे-बैठे कुछ देर ही हो गई।’

खरा। लेटे-लेटे अखबार गै पढ़ी लैन्नां।

‘चलो। लेटे-लेटे अखबार ही पढ़ लेता हूँ।’

इन वाक्यों में भूतकालिक पुनरुक्त रूप क्रिया की स्थिति सूचित कर रहे हैं और ‘एकारान्त’ रूप में होने के कारण कर्ता के लिंग, वचन के अनुसार नहीं है। किन्तु ये वाक्य के कर्ता के अनुसार रूप ग्रहण करते हुए भी क्रिया विशेषणों का कार्य करते

हैं। जैसे :-

ओह बैठा-बैठा अखबार पढ़ता रहा।

‘वह बैठा-बैठा अखबार पढ़ता रहा।’

शीला लेटी-लेटी टी. वी. दिखा करदी ही।

‘शीला लेटी-लेटी टी. वी. देख रही थी।’

16.9 दो भिन्न-भिन्न क्रियाओं के भूतकालिक रूपों की पुनरुक्ति से बनी पुनरुक्त क्रियाएं हैं :-

तू सुत्ती-बैठी केह सोचदी रौहन्नी एं ?

‘तुम सोई-बैठी क्या सोचती रहती हो ?’

ओह बैठा-खड़ोता इक्कै गल्ल करदा रौह्दा ऐ।

‘वह बैठा-खड़ा एक ही बात करता रहता है।’

ऊपर दिए गए वाक्यों में पुनरुक्त क्रियाएं कर्ता के लिंग, वचन अनुसार हैं और क्रिया विशेषण के अर्थ में प्रयुक्त हैं। यही पुनरुक्त क्रियाएं एकारान्त रूप में आकर अविकारी भी रहती हैं। जैसे :-

तू सुत्ते-बैठे केह सोचदी रौहन्नी एं ?

‘तुम सोए-बैठे क्या सोचती रहती हो ?’

ओह बैठे-खड़ोते इक्कै गल्ल करदा रौह्दा ऐ।

‘वह बैठे-खड़े एक ही बात करता रहता है।’

16.10 पूर्व कालिक क्रिया रूपों की पुनरुक्ति से भी पुनरुक्त क्रियाएं बनती हैं और ऐसी पुनरुक्त क्रियाएं एक ही रूप में रहती हैं। जैसे :-

ज्याणे खेडी-खेडियै सेई जंदे न।

‘बच्चे खेल-खेल कर सो जाते हैं।’

फिरी-फिरियै मेरा हाल बुरा होई गेआ ऐ।

‘फिर-फिर कर मेरा हाल बुरा हो गया है।’

इन वाक्यों में 'खेड़ी-खेड़ियै' और 'फिरी-फिरियै' पूर्व कालिक क्रिया रूपों की क्रमशः 'खेड़ियै' और 'फिरियै' के पुनरुक्त रूप हैं। इन पुनरुक्ति रूपों में संक्षेपीकरण की प्रवृत्ति रहती है इसीलिए 'फिरियै-फिरियै' के स्थान पर 'फिरी-फिरियै' और 'खेड़ियै-खेड़ियै' के स्थान पर 'खेड़ी-खेड़ियै' रूप प्रयुक्त होते हैं।

1 6 . 1 1	नच्चने आहली	'नाचने वाली'
	गाने आहलियां	'गाने वाली'
	खाने आहले	'खाने वाले'
	रुट्टी बनाने आहला	'रोटी बनाने वाला'

क्रियाओं के कर्ता वाचक रूप हैं। ये संज्ञार्थक क्रियाओं को अन्त में 'आ' के स्थान पर 'ए' आदेश करके साथ में 'आहला' (वाला) लगाने से बने हैं और जिस क्रिया से बनते हैं उसके कर्ता के अर्थ का भाव प्रकट करते हैं।

1 6 . 1 2 क्रियाओं के कर्तावाचक रूप संज्ञा और विशेषण दो रूपों में प्रयुक्त होते हैं।

(i) संज्ञा के रूप में

चार गाने आहलियां सद्दी दियां न।

'चार गाने वाली बुलाई हुई हैं।'

रुट्टी बनाने आहले ने बी कमाल कीता हा।

'रोटी बनाने वाले ने भी कमाल किया था।'

(ii) विशेषण के रूप में

ओह गाने आहलियां कुड़ियां कु'न हियां ?

'वे गाने वाली लड़कियाँ कौन थीं ?'

रुट्टी बनाने आहला लुहाई इत्थूं दा हा ?

'रोटी बनाने वाला हलवाई यहाँ का था ?'

16.13 'गाने आहलियां' शब्द वाक्य में जब संज्ञा के अर्थ में प्रयुक्त होता तो संज्ञा की भूमिका निभाता है और यदि इसके साथ आगे कोई संज्ञा (जैसे कुड़ियां) जुड़ जाती है तो यह उस संज्ञा की विशेषता बतलाने के कारण विशेषण का काम करता है। जैसे गाने आहलियां कुड़ियां (गाने वाली लड़कियाँ)

16.14 कर्तवाचक क्रिया-रूप संज्ञा और विशेषण दोनों रूपों में कर्ता के लिंग, वचन कारक, के अनुसार रहते हैं। जैसे :-

(i) संज्ञा रूप में

पुलिंग

एकवचन रुट्टी बनाने आहले ने बी कमाल कीता हा।

'रोटी बनाने वाले ने भी कमाल किया था।'

(कर्ता कारक विभक्ति युक्त)

बहुवचन खाने आहले सारे गै तरीफ करा करदे हे।

'खाने वाले सभी तारीफ कर रहे थे।'

(कर्ता कारक सरल)

स्त्रीलिंग

एकवचन इक नच्चने आहली सद्दी दी ही।

(कर्म कारक सरल)

'एक नाचने वाली बुलाई (हुई) थी।'

बहुवचन चार गाने आहलियां बी सद्दी दियां हियां।

(कर्म कारक सरल)

'चार गाने वाली भी बुलाई (हुई) थीं।'

संज्ञा के रूप में आने पर इन कर्तवाचक रूपों में कारक के लिए भी परिवर्तन होता है।

(ii) विशेषण के रूप में

पुलिंग

एकवचन	रुट्टी बनाने आह्ला लुहाई कुत्थूं दा हा ? 'रोटी बनाने वाला हलवाई कहाँ का था ?'
बहुवचन	दिक्खने आह्ले लोक बी 'इ'ये पुच्छा करदे हे । 'देखने वाले लोग भी यही पूछ रहे थे ।'

स्त्रीलिंग

एकवचन	ओह नच्चने आहली कुड़ी कुतूं बाहरा दा आई दी थी । 'वह नाचने वाली लड़की कहीं बाहर से आई थी ।'
बहुवचन	गाने आहलियां कुड़ियां कु'न हियां ? 'गाने वाली लड़कियाँ कौन थीं ?'

विशेषण रूपों में प्रयुक्त होने पर ये कर्तावाचक रूप संज्ञा के लिंग, वचन और कारक के अनुसार होते हैं ।



पाठ-17
मेले जागे
(मेले जाएंगे)

नीतू : मीनू। तुगी अपना वायदा भुल्ली
गेआ ? इत्थै बैठे-बैठे केह सोचा
करनी एं ? चल तौले-तौले त्यार
हो।

मीनू : तूं केहड़े वायदे दी गल्ल करा
करनी एं ? में केई वायदे कीते
होडन।

नीतू : तां एह गल्ल ऐ। चेता कर हां
उस दिन शवाले मंदर टुरदे-
टुरदे तूं केह आखेआ होग ?

मीनू : नीतू। में केइयें चीजे दे बारे च
आखदी होड। तूं दस्स तुगी केह
चाहिदा ऐ ? तूं इ'यां फलौहनियां
की पा करनी एं ? साफ-साफ
की नेई दसदी ?

नीतू : चीजे दे बारे च तूं कुसै होर गी
आखेआ होग। सच्चें-मुच्चें मिगी
तेरे शा किश नेई लोड़दा ते नां
गै में कोई फलौहनियां पा करनी
आं। चेता कर हां तूं आखेआ
नेई हा जे शिवारात्री आहले दिन
अस साथें-साथें मंदर जागे। उत्थै
उस दिन बड़े प्रोग्राम होने न।

नीतू : मीनू। तुम अपना वादा भूल गई ?
यहाँ बैठे-बैठे क्या सोच रही हो ?
चल जल्दी से तैयार हो।

मीनू : तुम कौन से वादे की बात कर
रही हो ? मैंने तो केई वादे किए
होंगे।

नीतू : तो यह बात है। याद करो न उस
दिन शिवालय मन्दिर चलते-चलते
तूने क्या कहा होगा ?

मीनू : नीतू। मैं कई चीजों के बारे में
कहती हूँगी। तुम बताओ तुम्हें
क्या चाहिए। तुम इस प्रकार
पहेलियां क्यों बुझा रही हो ? साफ-
साफ क्यों नहीं कहती ?

नीतू : चीजों के बारे में तूने किसी और
से कहा होगा। यकीन मानो मुझे
तुम से कुछ नहीं चाहिए और न
ही मैं कोई पहेली बुझा रही हूँ।
याद करो तुमने कहा नहीं था
कि शिवारात्रि वाले दिन हम साथ-
साथ मन्दिर जाएंगे। उस दिन वहाँ
बहुत से कार्यक्रम होंगे।

मीनू : ठीक-ठीक। तू सच्च आखा
करनी एं। में जरूर तुगी
आखेआ होना ऐ ते घर आनियै
मम्मी गी बी सनाया होग जे अस
दोऐ रहोली-रहोली मंदर जागियां।

नीतू : तां ते मम्मी जाने आस्तै जरूर
मन्नी जाडन ?

मीनू : हां। ओह ते पक्क गै मन्नी जाडन
पर मुश्कल एह ऐ जे ओह इसलै
घर नेई न ते नां गै मिगी पता ऐ
जे ओह कु'त्थै गेइयां होडन।

नीतू : कोई गल्ल नेई तू अपनी भाबी
गी सनाई आ ते चल। ओह ते
घर गै होनी ऐ ?

मीनू : इसलै ओह बी घर नेई। पर,
ओह अपनी भैन दे घर गै गेई
होनी ऐ।

नीतू : उन्दे घर फोन ते होना गै तू
उसी फोन पर दस्सी ओड़ ते
फटोफट त्यार होई जा।

मीनू : फोन करने दी लोड़ नेई अस
किश चिर बलगी लैन्ने आं।
उ'न्नै तौले गै आई जाना ऐ।

नीतू : ठीक ऐ। इन्ने तगर तू त्यार
होई जा। में तेरे आस्तै कपड़े
तालनी आं।

मीनू : ठीक-ठीक। तुम सच कह रही
हो मैंने जरूर तुम्हें कहा होगा
और घर आकर मम्मी को भी
बताया होगा कि हम दोनों साथ-
साथ मंदिर जाएँगी।

नीतू : तब तो मम्मी जाने के लिए जरूर
मान जाएँगी ?

मीनू : हाँ। वे तो पक्का मान जाएँगी
पर मुश्किल यह है कि वे इस
समय घर पर नहीं और न ही
मुझे मालूम है कि वे कहाँ गई होगी।

नीतू : कोई बात नहीं, तुम अपनी भाभी
को कह दो और चलो। वह तो
घर पर ही होगी ?

मीनू : इस वक्त वह भी घर पर नहीं।
पर, वह अपनी बहन के घर तक
ही गई होगी।

नीतू : उनके यहाँ फोन तो होगा ही तुम
उसे फोन पर बता दो और जल्दी
से तैयार हो जाओ।

मीनू : फोन करने की जरूरत नहीं।
हम कुछ देर प्रतीक्षा कर लेते हैं
वह जल्दी ही आ जाएगी।

नीतू : ठीक है। इतने में तुम तैयार हो
जाओ। मैं तुम्हारे लिए कपड़ों का
चयन करती हूँ।

मीनू : एह चंगी गल्ल ऐ। एह मेरी
लमारी ऐ। दस्स में केह लां ?

नीतू : दिक्ख। एह नीला टिमकड़े
आह्ला कनेहा शैल सूट ऐ !

मीनू : पर एह में अदुं तारा दे ब्याह
पर बी लाया हा।

नीतू : फही केह होआ तूं अज्ज बी
इसी लाई सकनी एं ?

मीनू : पर परती-परतियै इक्कै सूट
लाना भिगी चंगा नेई लगदा।

नीतू : तां फही एह फुल्लें आह्ला सैल्ला
सूट लाई लै ते कनै एह सैल्ला
शाल बी लेई लै।

मीनू : शाल दी केह लोड़ ऐ ? इन्नी
ठण्ड ते होन नेई लगी।

नीतू : बेशक्क। हून भामें ठण्ड नेई ऐ
पर तुगी पता ऐ जे असें दिनभर
उत्थै मेला दिक्खना ऐ ते फही
उत्थै गै रातीं शिवजी दा ब्याह
बी सुनने दा प्रोग्राम बनाया हा ?

मीनू : हां। ओह ते ठीक ऐ।

नीतू : जि'यां-जि'यां दिन घरोग उ'आं
ठण्ड बी बधदी जाग। इसकरी
शालै बगैर ते तूं ठरी जागी।

मीनू : ठीक-ठीक। में समझी गई ओह
दिक्ख मेरी भाबी बी आई गई

मीनू : यह अच्छी बात है। यह मेरी
अलमारी है। बताओ क्या पहनूँ ?

नीतू : देखो। यह नीला बिन्दियों वाला
सूट कितना सुन्दर है !

मीनू : पर यह मैंने तब तारा की शादी
पर भी पहना था।

नीतू : तो क्या ? तुम आज भी इसे पहन
सकती हो ?

मीनू : किन्तु, बार-बार एक ही सूट
पहनना मुझे अच्छा नहीं लगता।

नीतू : तो फिर यह फूलों वाला हरा
सूट पहन लो और साथ में यह
हरा शाल भी ले लो।

मीनू : शाल की क्या जरूरत है ? इतनी
ठंड तो होगी नहीं।

नीतू : बेशक। इस समय चाहे सर्दी नहीं
है पर तुमको मालूम है कि हमने
दिन भर वहाँ मेला देखना है और
फिर रात को वहीं शिव विवाह
सुनने का प्रोग्राम भी बनाया था ?

मीनू : हाँ। वह तो ठीक है।

नीतू : जैसे-जैसे दिन ढलेगा वैसे-वैसे ठंड
भी बढ़ती जाएगी। इसलिए
शाल के बिना तो तुम ठिठुर जाओगी

मीनू : ठीक-ठीक। मैं समझ गई। वह
देखो मेरी भाभी भी आ गई है।

ऐ। हून तूं पञ्ज मिन्ट बलग। में
फटाफट त्यार होई जन्नी आं।
नीतू : पञ्ज की ? पन्दरां मिन्ट बलगड।
तूं मजे-मजे कनै त्यार हो। फही
गै जाने दा बी अनन्द ऐ।

अब तुम पांच मिन्ट प्रतीक्षा करो।
मैं झटपट तैयार हो जाती हूँ।
नीतू : पाँच क्यों ? पन्द्रह मिनट प्रतीक्षा
करूंगी। तू मजे-मजे से तैयार
हो। तभी जाने का भी मजा है।

EXERCISES

1. मौखिक उत्तर दीजिए :-

1. नीतू मीनू गी केहड़े वायदे लेई चेता करा दी ही ?
2. नीतू ते मीनू दौनें शवाले मंदर कदूं जाना हा ?
3. शिवरात्री आहले रोज शवाले मंदर केह-केह होंदा ऐ ?
4. मीनू ने नीतू गी किश चिर बलगने आस्तै की आखेआ ?
5. नीतू ने मीनू गी केहड़ा सूट लाने दी सलाह दित्ती ?
6. नीतू टिमकड़ें आहला नीला सूट लाने लेई की नेई मन्नी ?
7. नीतू ने मीनू गी शाल लैने आस्तै की आखेआ ?
8. नीतू केहड़ा सूट लाइयै मंदरै लेई त्यार होन लगी ही ?

2. उदाहरण वाक्यों के समान अलग-अलग वाक्य बनाएँ :-

ओह कु'त्थै गेई होग ?

ओह कु'त्थै गेइयां होडन ?

ओह कु'त्थै गेआ होग ?

ओह कु'त्थै गे होडन ?

राम कु'त्थै.....।

कुड़ियां कु'त्थै.....।

4. तू । (सोचना)
 5. में इसलै पिकनिक उप्पर केह । (करना)
 6. ओह मच्छियें गी आटा । (पाना)
 7. ओह फोटू । (खिच्चना)

Vocabulary शब्दावली

मानसर	डुग्गर की एक प्रसिद्ध झील	चूपना	चूसना
पिकनिक	पिकनिक	तु'म्मी	तुम भी
सुखना	सपना	कंढा	किनारा
शरारती	शरारती	औखा	कठिन
चबक्खै	चहुं ओर	पत्तर	पत्ता
खचोपड़	कछुआ	दिलचस्पी	रुचि
फंघ	पंख	भापा	भैया
सोचना	सोचना	आखना	कहना

टिप्पणियाँ

- 1.1.1 इस पाठ में आप भविष्यत् काल के सामान्य तथा निरन्तरता सूचक क्रिया रूपों से परिचित हुए हैं।
 1.1.2 डोगरी में भविष्यत् काल के क्रिया रूप कर्ता के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार बदलते हैं।
 जैसे :-

पुलिंग रूप

एकवचन

प्रथमपुरुष	में जाड	'मैं जाऊँगा'
मध्यमपुरुष	तूं जागा	'तू/तुम जाएगा/जाओगे'
अन्यपुरुष	ओह जाग	'वह जाएगा'

पहले रुट्टी खाई लैओ ते फही लिखदे-पढ़दे र'वेओ।

‘पहले खाना खा लें फिर बाद में लिखते-पढ़ते रहें।’

इन दोनों उदाहरणों की पुनरुक्त क्रियाएं कर्ता के पुलिंग-बहुवचनी रूप के अनुसार पुलिंग बहुवचन में ही हैं। इसके साथ ही ये ‘एकारान्त’ रूप में आकर अविकारी भी रहती हैं।
जैसे :-

कुड़ी नचदे-टपदे डिग्गी पेई।

‘लड़की नाचते-कूदते गिर पड़ी।’

कुड़ियां लिखदे-पढ़दे थक्की गेइयां।

‘लड़कियाँ लिखते-पढ़ते थक गईं।’

नौकर नचदे-टपदे डिग्गी पेआ।

‘नौकर नाचते-कूदते गिर पड़ा।’

1 6.7 भूतकालिक क्रिया-रूपों से पुनरुक्त क्रियाएं भी दो प्रकार की होती हैं :-

(i) समान क्रियाओं की पुनरुक्ति से बनी

(ii) भिन्न क्रियाओं की पुनरुक्ति से बनी

1 6.8 दो समान भूतकालिक क्रिया रूपों से बनी पुनरुक्त क्रियाएं

बैठे-बैठे किश चिर गै होई गेआ।

‘बैठे-बैठे कुछ देर ही हो गई।’

खरा। लेटे-लेटे अखबार गै पढ़ी लैन्नां।

‘चलो। लेटे-लेटे अखबार ही पढ़ लेता हूँ।’

इन वाक्यों में भूतकालिक पुनरुक्त रूप क्रिया की स्थिति सूचित कर रहे हैं और ‘एकारान्त’ रूप में होने के कारण कर्ता के लिंग, वचन के अनुसार नहीं है। किन्तु ये वाक्य के कर्ता के अनुसार रूप ग्रहण करते हुए भी क्रिया विशेषणों का कार्य करते

हैं। जैसे :-

ओह बैठा-बैठा अखबार पढ़ता रहा।

‘वह बैठा-बैठा अखबार पढ़ता रहा।’

शीला लेटी-लेटी टी. वी. दिक्खा करदी ही।

‘शीला लेटी-लेटी टी. वी. देख रही थी।’

16.9 दो भिन्न-भिन्न क्रियाओं के भूतकालिक रूपों की पुनरुक्ति से बनी पुनरुक्त क्रियाएं हैं :-

तू सुत्ती-बैठी केह सोचदी रौहन्नी एं ?

‘तुम सोई-बैठी क्या सोचती रहती हो ?’

ओह बैठा-खड़ोता इक्के गल्ल करदा रौह्दा ऐ।

‘वह बैठा-खड़ा एक ही बात करता रहता है।’

ऊपर दिए गए वाक्यों में पुनरुक्त क्रियाएं कर्ता के लिंग, वचन अनुसार हैं और क्रिया विशेषण के अर्थ में प्रयुक्त हैं। यही पुनरुक्त क्रियाएं एकारान्त रूप में आकर अविकारी भी रहती हैं। जैसे :-

तू सुत्ते-बैठे केह सोचदी रौहन्नी एं ?

‘तुम सोए-बैठे क्या सोचती रहती हो ?’

ओह बैठे-खड़ोते इक्के गल्ल करदा रौह्दा ऐ।

‘वह बैठे-खड़े एक ही बात करता रहता है।’

16.10 पूर्व कालिक क्रिया रूपों की पुनरुक्ति से भी पुनरुक्त क्रियाएं बनती हैं और ऐसी पुनरुक्त क्रियाएं एक ही रूप में रहती हैं। जैसे :-

ज्याणे खेढी-खेढियै सेई जंदे न।

‘बच्चे खेल-खेल कर सो जाते हैं।’

फिरी-फिरियै मेरा हाल बुरा होई गेआ ऐ।

‘फिर-फिर कर मेरा हाल बुरा हो गया है।’

इन वाक्यों में 'खेढी-खेढियै' और 'फिरी-फिरियै' पूर्व कालिक क्रिया रूपों की क्रमशः 'खेढियै' और 'फिरियै' के पुनरुक्त रूप हैं। इन पुनरुक्त रूपों में संक्षेपीकरण की प्रवृत्ति रहती है इसीलिए 'फिरियै-फिरियै' के स्थान पर 'फिरी-फिरियै' और 'खेढियै-खेढियै' के स्थान पर 'खेढी-खेढियै' रूप प्रयुक्त होते हैं।

16.11	नच्चने आहली	'नाचने वाली'
	गाने आहलियां	'गाने वाली'
	खाने आहले	'खाने वाले'
	रुट्टी बनाने आहला	'रोटी बनाने वाला'

क्रियाओं के कर्ता वाचक रूप हैं। ये संज्ञार्थक क्रियाओं को अन्त में 'आ' के स्थान पर 'ए' आदेश करके साथ में 'आहला' (वाला) लगाने से बने हैं और जिस क्रिया से बनते हैं उसके कर्ता के अर्थ का भाव प्रकट करते हैं।

16.12 क्रियाओं के कर्तावाचक रूप संज्ञा और विशेषण दो रूपों में प्रयुक्त होते हैं।

(i) संज्ञा के रूप में

चार गाने आहलियां सद्दी दियां न।

'चार गाने वाली बुलाई हुई हैं।'

रुट्टी बनाने आहले ने बी कमाल कीता हा।

'रोटी बनाने वाले ने भी कमाल किया था।'

(ii) विशेषण के रूप में

ओह गाने आहलियां कुड़ियां कु'न हियां ?

'वे गाने वाली लड़कियाँ कौन थीं ?'

रुट्टी बनाने आहला लुहाई इत्थूं दा हा ?

'रोटी बनाने वाला हलवाई यहाँ का था ?'

16.13 'गाने आहलियां' शब्द वाक्य में जब संज्ञा के अर्थ में प्रयुक्त होता तो संज्ञा की भूमिका निभाता है और यदि इसके साथ आगे कोई संज्ञा (जैसे कुड़ियां) जुड़ जाती है तो यह उस संज्ञा की विशेषता बतलाने के कारण विशेषण का काम करता है। जैसे गाने आहलियां कुड़ियां (गाने वाली लड़कियाँ)

16.14 कर्तवाचक क्रिया-रूप संज्ञा और विशेषण दोनों रूपों में कर्ता के लिंग, वचन कारक, के अनुसार रहते हैं। जैसे :-

(i) संज्ञा रूप में

पुलिंग

एकवचन रुट्टी बनाने आहले ने बी कमाल कीता हा।

'रोटी बनाने वाले ने भी कमाल किया था।'

(कर्ता कारक विभक्ति युक्त)

बहुवचन खाने आहले सारे गै तरीफ करा करदे हे।

'खाने वाले सभी तारीफ कर रहे थे।'

(कर्ता कारक सरल)

स्त्रीलिंग

एकवचन इक नच्चने आहली सद्दी दी ही।

(कर्म कारक सरल)

'एक नाचने वाली बुलाई (हुई) थी।'

बहुवचन चार गाने आहलियां बी सद्दी दियां हियां।

(कर्म कारक सरल)

'चार गाने वाली भी बुलाई (हुई) थीं।'

संज्ञा के रूप में आने पर इन कर्तवाचक रूपों में कारक के लिए भी परिवर्तन होता है।

बहुवचन

प्रथमपुरुष	अस जागे	‘हम जाएँगे’
मध्यमपुरुष	तुस जागे	‘तुम/आप जाओगे/जाएँगे’
अन्यपुरुष	ओह जाडन	‘वे जाएँगे’

स्त्रीलिंग रूप

एकवचन

प्रथमपुरुष	में जाड/जागी	मैं जाऊँगी
मध्यमपुरुष	तू जागी	‘तू/तुम जाएगी/जाओगी’
अन्यपुरुष	ओह जाहग	‘वह जाएगी’

बहुवचन

प्रथमपुरुष	अस जागियां	‘हम जाएँगी’
मध्यमपुरुष	तुस जागियां	‘तुम/आप जाओगी/जाएँगी’
अन्यपुरुष	ओह जाडन	‘वे जाएँगी’

भविष्यत् काल में अन्यपुरुष के क्रिया-रूपों में लिंग-भेद नहीं होता।

1.1.3 निरन्तरता सूचक भविष्यत् काल के रूप, जैसे :-

में जा करदा होड।	‘मैं जा रहा हूँगा।’
अस जा करदे होंगे।	‘हम जा रहे होंगे।’
तू जा करदी होगी।	‘तुम जा रही होंगी।’
ओह जा करदियां होडन।	‘वे जा रही होंगी।’

ये रूप वर्तमान और भूतकालिक निरन्तरता सूचक रूपों की भांति ही प्रयुक्त होते हैं। केवल योजक क्रिया ‘हो’ के रूपों में अन्तर है। वह यहाँ पर सामान्य भविष्यत् काल के रूपों में प्रयुक्त होती है। जैसे :-

पुलिंग स्त्रीलिंग

प्रथमपुरुष

एकवचन	होड	‘हूँगा’	होड/होगी	‘हूँगी’
बहुवचन	होगे	‘होंगे’	होगियां	‘होंगी’

मध्यमपुरुष

एकवचन	होगा	‘होगा/होगे’	होगी	‘होगी’
बहुवचन	होगे/ होगेओ/	‘होंगे’	होगियां	‘होंगी’

अन्यपुरुष

एकवचन	होग	‘होगा’	होग	‘होगी’
बहुवचन	होडन	‘होंगे’	होडन	‘होंगी’

- 11.4 ‘आस्तै’ (के लिए) सम्प्रदान कारक का सूचक चिह्न है जो प्रायः संज्ञा, सर्वनाम आदि के विभक्ति वाले रूपों के साथ आता है।

पिकनिक आस्तै ते में जरूर औड।

‘पिकनिक के लिए तो मैं जरूर आऊँगा/आऊँगी।’

रमा मेरे आस्तै फुल्ल आहनग।

‘रमा मेरे लिए फूल लाएगी।’

- 11.5 ‘सुखने लैन लगेआ एं (सपने लेने लगे हो) प्रयोग में सुखने लैन लगना ‘सपने लेने लगना’ संयुक्त क्रिया है। इसमें ‘लैन’ मुख्य क्रिया है और ‘लगना’ सहायक क्रिया, ऐ (हो) योजक क्रिया है।

‘सुखने’ ‘लैना’ मुख्य क्रिया की कर्म पूर्ति है। ‘लगना’

सहायक क्रिया किसी काम को आरम्भ करने की सूचना देती है।



- अरुण : रमेश, तुम दोऐ सन्नासर बी
गे हे नेई ?
- रमेश : हां, में ते पिकी उत्थै बी गे हे।
सन्नासर दे नजारे ने ते असेंगी
बड़ा गै मोह्त करी लेआ हा।
- अरुण : रमेश, तुगी सन्नासरै दी केह
खासियत लब्धी ?
- रमेश : केह दस्सां अरुण, उत्थूं दे
कुदरती शलैपे ने ते असेंगी
कुतै होर जान गै नेई दिता।
- अरुण : सन्नासर पानी कन्नै भरोचे दा हा ?
- रमेश : सन्नासर कोई मता बड्डा सरोवर
नेई ऐ। पर जिन्ना बी है उस
दिन उत्थै छड़ी बर्फ गै बर्फ ही।
अस ओहदे उपर खूब दौड़े हे।
- अरुण : सच्च गै ? जेकर उस उपर कुतै
खुब्बी जंदे तां केह होदा ?
- रमेश : इ'यां गै खुब्बी जंदे! जिसलै कोई
झील जम्मी जंदी ऐ तां उस उपर
चलने-खेढने दी इजाजत स्पोर्टस
अथॉरटी कोला लैती जंदी ऐ।
- अरुण : तुसें गी इजाजत मिली गई ?
- रमेश : होर केह ? तां गै ते अस उपर
दौड़े हे।
- अरुण : रमेश, तुम उत्थै किन्ने दिन रेह ?
- अरुण : तुम दोनों सन्नासर भी गये थे
कि नहीं ?
- रमेश : हां, मैं और पिकी वहाँ भी गये
थे। सन्नासर के नजारे ने हमें
तो मोहित कर लिया था।
- अरुण : रमेश, तुम्हें सन्नासर की क्या
विशेषता लगी ?
- रमेश : क्या बतलाऊँ अरुण, वहाँ के
प्राकृतिक सौन्दर्य ने तो हमें कहीं
और जाने ही नहीं दिया।
- अरुण : सन्नासर पानी के साथ भरा हुआ था ?
- रमेश : सन्नासर कोई बहुत बड़ा सरोवर
नहीं पर जितना भी है उस दिन तो
वह बर्फ से ढका हुआ था। हम उस
पर खूब दौड़े थे।
- अरुण : सच यदि तुम लोग कहीं उसमें
धंस जाते तो क्या होता ?
- रमेश : ऐसे ही धंस जाते! जब कोई झील
जम जाए तो उस पर चलने-खेलने
की आज्ञा स्पोर्टस अथॉरटी से ली
जाती है।
- अरुण : क्या तुम लोगों को आज्ञा मिल गई ?
- रमेश : और क्या ? तभी तो हम उस पर
दौड़े थे।
- अरुण : रमेश, तुम वहाँ कितने दिन रहे ?

रमेश : असें इक रात पत्तनी टॉप
कट्टी ही ते इक सन्नासर च।

अरुण : तुसें गी ठंड नेई ही लग्गी ?

रमेश : ठंड ते है गै ही पर असें कन्नै गर्म
कपड़े बी खूब लेते दे हे ते खाने—
पीने दा खासा चंगा समान बी।

अरुण : तुस गे कदू हे ?

रमेश : अस उत्थै अट्ठ तरीक पुज्जे हे।
उस दिन राती खूब बरखा होई
ते बर्फ बी खूब पेई, पर दुए दिन
चंगी धुप्प निकली आई। इसकरी
असेंगी असानी कन्नै सन्नासरै
दे कोला आहलिये फाड़िये उप्पर
चढ़ने दा मौका बी मिलेआ हा।

अरुण : रमेश, किन्ना चंगा होंदा जे तूं
मिगी बी कन्नै लेई जंदा। में बी
इ'नें जगहें गी दिक्खी सकदा।

रमेश : अरुण, तूं मेरे उप्पर यकीन नेई
करदा। मिगी कोई हर्ज हा के तुगी
लेने च ? पर जिसलै में तुगी बलाने
गी आया तां तूं साम्बै गेदा हा।

रमेश : हमने एक रात पत्तनी टॉप में
काटी थी और एक सन्नासर में।

अरुण : आपको सर्दी नहीं लगी थी ?

रमेश : सर्दी तो थी ही पर हमने साथ गर्म
कपड़े भी खूब लिए थे और खाने—पीने
का सामान भी।

अरुण : तुम गये कब थे ?

रमेश : हम वहाँ आठ तारीख को पहुँचे
थे। उस दिन रात भर खूब वर्षा
हुई और बर्फ भी गिरी, पर दूसरे
दिन अच्छी धूप निकल आई।
इसलिए हमें आसानी से सन्नासर
के पास वाली पहाड़ियों पर चढ़ने
का अवसर मिल गया था।

अरुण : रमेश, कितना अच्छा होता कि
तुम मुझे भी साथ ले जाते। तो मैं
भी इन स्थानों को देख सकता।

रमेश : अरुण, तुम मेरे पर विश्वास नहीं
करते तुम्हें ले जाने में मेरा क्या नुक्सान
था ? पर जब मैं तुम्हें बुलाने आया
तो तुम साम्बा गए हुए थे।

EXERCISES

1. Repitition Drill (पुनरुक्ति अभ्यास)

1. तूं कल कु'त्थै हा ?

2. देआरें दे बड्डे—बड्डे उच्चे ते झौंगले बूहटे दिक्खे ते कन्नै किश जंगली जानवर।

3. तू उस उप्पर दौड़ेआ ते खेढेआ बी ?
4. उत्थै तुस कुप्पड़ें उप्पर बी बैठे हे ?
5. सन्नासर दे नजारे ने ते असेंगी बड़ा गै मोह्त करी लेआ हा।
6. तुगी सन्नासर दी केह् खासियत लब्धी ?
7. असें इक रात पत्तनी टॉप कट्टी ही ते इक सन्नासर।
8. उस दिन उत्थै छड़ी बर्फ गै बर्फ ही।
9. अस ओह्दे उप्पर खूब दौड़े हे।
10. उत्थूं दे कुदरती शलैपे ने ते असेंगी कुतै होर जान गै नेई दित्ता।

2. Substitution Drill (स्थानापन्न अभ्यास)

Model (1)

रमेश सन्नासर गेआ हा। (दौड़ना)

रमेश सन्नासर दौड़ेआ हा।

(खेढना)

(औना)

(पढ़ना)

(दौड़ना)

कमला बैठी ही।

(लेटना)

कमला लेटी ही।

(जाना)

(औना)

(रौहना)

(दौड़ना)

Model (2)

ओह् आए हे।

(जाना)

ओह् गे हे।

(न्हौना)

(बौहना)

(हस्सना)

(नच्चना)

ओह् खेढियां हियां

(चलना)

ओह् चलियां हियां।

(सोना)

(नच्चना)

(बौहना)

(टुरना)

3. Transformation Drill (रूपान्तरण अभ्यास)

Model (1)

में क्रिकेट खेडना आं।
में क्रिकेट खेडेआ ऐ।
तूं रुट्टी खन्ना एं।
ओह सन्तोलिया खेडदा ऐ।

Model (1)

अस नाच सिक्खने आं।
असें नाच सिक्खेआ ऐ।
तुस मैच दिखदे ओ।
ओह सैर करदे न।

Model (2)

में क्रिकेट खेडनी आं।
में क्रिकेट खेडेआ ऐ।
तूं रुट्टी पकानी एं।
ओह सन्तोलिया खेडदी ऐ।

Model (2)

अस नाच सिक्खनियां आं।
असें नाच सिक्खेआ ऐ।
तुस मैच दिखदियां ओ।
ओह सैर करदियां न।

4. कोष्ठक में दी गई क्रियाओं के साथ उपयुक्त योजक क्रिया का प्रयोग करके रिक्त स्थान भरिए :-

- | | | |
|---------------------------------------|---|-----------|
| 1. रमेश सन्नासर | । | (जाना) |
| 2. तूं बर्फ उप्पर | । | (दौड़ना) |
| 3. मोहन ने फोटू | । | (खिच्चना) |
| 4. ओह धुप्पा च | । | (खड़ोना) |
| 5. तुगी सन्नासरै दी केहू खासियत | । | (लब्धना) |

5. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :-

रमेश कु'त्थै गेदा हा ?

रमेश केहूडे मौसम सैर करन गेआ हा ?

रमेश कन्नै होर कु'न गेदा हा ?

क्या अरुण बी सन्नासर गेआ हा ?

“सन्नासर” बारै पञ्ज वाक्य लिखो।

6. निम्नलिखित वाक्यों का डोगरी में अनुवाद कीजिए :-

सन्नासर पानी से भरा हुआ था।

हम बर्फ पर खूब दौड़े थे।

वहाँ बर्फ भी देखी कि नहीं ?

मैं कल पत्तनी टॉप गया था।

तब तुम लोगों को खूब आनंद आया।

तुम वहाँ कितने दिन रहे ?

कितना अच्छा होता कि तुम मुझे भी साथ ले जाते।

7. निम्नलिखित वाक्यों को निषेधात्मक वाक्यों में बदलिए :-

रमेश पत्तनीटॉप गेआ हा।

अरुण सन्नासर गेआ ऐ।

उत्थै बड़ी धुप्प ही।

पत्तनीटॉप सर्दियें च धुप्प निकलदी ऐ।

अज्जकल उत्थै बर्फ पेदी ऐ।

रमेश सन्नासर पैदल गेआ हा।

पिंकी घर गै रेहा हा।

तू मेरे उप्पर भामे यकीन कर।

तू मिगी बी कन्नै की लेई गेआ ?

Vocabulary

पत्तनी टॉप	जम्मू क्षेत्र में एक विशेष पर्यटन स्थल	देआर	देवदार
		बर्फ	बर्फ
दौड़ना	दौड़ना	धुप्प	धूप
नन्द	आनन्द	बक्खरा	अलग
कुप्पड़	चट्टान	नजारा	दृष्य
छड़ी	केवल	खुब्भना	धंसना
इजाजत	आज्ञा	ठंड	ठंड, सर्दी
खासा	काफी, अधिक	पैदल	पैदल
बरखा	बारिश	दिक्खना	देखना

टिप्पणियाँ

1 2.1 इस पाठ में आप डोगरी क्रियाओं के भूतकालिक रूपों से परिचित हुए हैं।

1 2.2 डोगरी में सामान्य भूतकाल के रूप निम्न दो प्रकार के होते हैं :-

(i) व्यञ्जनांत धातुओं के रूप

(ii) स्वरांत धातुओं के रूप

1 2.3 व्यञ्जनांत धातुओं के सामान्य भूतकालिक रूप इस प्रकार हैं :-

दिक्खेआ (देखा)

दिक्खे (देखे)

दौड़ेआ (दौड़ा)

दौड़े (दौड़े)

खेढेआ (खेला)

खेढे (खेले)

लब्भेआ/लब्भा (मिला/दिखा)

लब्भे (मिले/दिखे)

व्यञ्जनांत धातुओं के साथ भूतकाल के लिए प्रायः ‘शून्य’ प्रत्यय लगता है और उनके साथ केवल लिंग और वचन सूचक प्रत्ययों का योग होता है। ‘एआ/आ’ पुलिङ्ग एकवचन सूचक, ‘ए’ पुलिङ्ग बहुवचन सूचक तथा ‘ई’ स्त्रीलिङ्ग एकवचन सूचक तथा ‘इयां’ स्त्रीलिङ्ग बहुवचन सूचक प्रत्यय लगने से भूतकालिक रूप बनते हैं। जैसे :-

दिक्ख्	+	एआ	=	दिक्खेआ	(देखा)
दौड़	+	ए	=	दौड़े	(दौड़े)
खेह्	+	ई	=	खेही	(खेली)
लब्भ्	+	इयां	=	लब्भिभ्यां	(मिलीं/दिखीं)

1.2.4 स्वरांत धातुओं के सामान्य भूतकालिक रूप निम्न प्रकार हैं :-

लेता/लेआ	(लिया)	ले	(लिए)
खड़ोता	(खड़ा हुआ)	खड़ोते	(खड़े हुए)
बैठा	(बैठा)	बैठे	(बैठे)
सीता	(सिया)	सीते	(सिए)
पीता	(पिया)	पीते	(पिए)
न्हाता	(नहाया)	न्हाते	(नहाए)
सुत्ता	(सोया)	सुत्ते	(सोए)
धोता	(धोया)	धोते	(धोए)
खाद्धा	(खाया)	खाद्धे	(खाए)

स्वरान्त धातुओं के साथ भूतकाल के लिए प्रायः ‘त्’ प्रत्यय लगता है और एक आध स्थानों पर ‘ट्’ अथवा ‘द्ध्’ प्रत्यय और बाद में ‘आ’, ‘-ए’, ‘ई’ तथा ‘इयां’ लिंग और वचन सूचक प्रत्यय लगते हैं। जैसे :-

खड़ो + त् + आ = खड़ोता (खड़ा हुआ)

सी + त् + ए = सीते (सिए)

खा + ख् + ई = खाखी (खाई)

बौह-बैह् + ठ् + इयां = बैठियां (बैठीं)

12.5 कुछ एक स्वरांत धातु जैसे आ, जा, कू, रो, हो आदि के साथ 'त्', 'ठ्' आदि के स्थान पर व्यञ्जनांत धातुओं की तरह शून्य प्रत्यय लगता है और केवल लिंग, वचन सूचक प्रत्यय लगते हैं। जैसे :-

रो + 0 + एआ = रोएआ (रोया)

आ + 0 + ए = आए (आए)

कू + 0 + इ = कूई (बोली)

रो + 0 + इयां = रोइयां (रोईं)

'जा' धातु को भूतकाल में 'ग्' आदेश होता है। जैसे :-

जा - ग् + एआ = गेआ (गया)

ग् + ए = गे (गए)

ग् + ई = गेई (गई)

ग् + इयां = गेइयां (गईं)

12.5 डोगरी में सामान्य भूतकाल का अर्थ इन्हीं क्रिया-रूपों से व्यक्त होता है। यदि क्रिया सकर्मक हो तो क्रिया का रूप कर्म के लिंग, वचन के समान होता है और यदि अकर्मक हो तो वाक्य के कर्ता के लिंग, वचन के समान होता है। जैसे :-

सकर्मक क्रिया

पुलिंग

एकवचन- उतथै तूं केह-केह दिक्खेआ ? 'वहाँ तूने क्या-क्या देखा' ?

बहुवचन- देआरें दे बड़े-बड़े बूहटे दिक्खे। देवदार के बड़े-बड़े पेड़ देखे।

स्त्रीलिंग

एकवचन- सन्नासर दी केह खासियत लब्धी ? 'सन्नासर की क्या विशेषता दिखी ?'

बहुवचन- रमेश ने उत्थै बड़ियां मरगाइयां फड़ियां।
रमेश ने वहाँ बहुत सी मुरगाबियें पकड़ीं।'

अकर्मक क्रिया

पुलिंग

एकवचन- तूं उत्थै दोड़ेआ ते खेढेआ बी ?

'तुम वहाँ दौड़े और खेले भी ?'

बहुवचन- अस उत्थै उच्चे-उच्चे कुप्पड़ें पर बी बैठे।

'हम वहाँ ऊँची-ऊँची चट्टानों पर भी बैठे।'

स्त्रीलिंग

एकवचन- ओह कल घर गई।

'वह कल घर गई।'

बहुवचन- अस बड़ी चिरे तकर सुत्तियां।

'हम बहुत देर तक सोई।'

12.7 क्रियाओं के सामान्य भूतकालिक रूपों के साथ योजक क्रिया के प्रयोग से पूर्ण भूतकाल और पूर्ण वर्तमान काल के रूप बनते हैं। जैसे :-

(i) पूर्णभूत काल

उत्थै तुस उच्चे-उच्चे कुप्पड़ें पर बी बैठे हे ?

'वहाँ आप ऊँची-ऊँची चट्टानों पर भी बैठे थे ?'

तुस उत्थै फाड़ें उप्पर बी चढ़े हे ?

'आप वहाँ पहाड़ों पर भी चढ़े थे ?'

अस उत्थै अड्ड तरीक पुज्जे हे।

‘हम वहाँ आठ तारीख पहुँचे थे।’

असेंगी फाड़ियें उप्पर चढ़ने दा मौका मिलेआ हा।

‘हमें पहाड़ियों पर चढ़ने का अवसर मिला था।’

ऊपर दिए गए वाक्य पूर्ण भूतकाल के हैं। क्रिया के सामान्य भूतकालिक रूपों के साथ योजक क्रिया के भूतकालिक रूप (हा, हे, ही, हियाँ) जोड़ने से पूर्ण भूतकालिक क्रिया बनती है।

(ii) पूर्ण वर्तमान काल के प्रयोगों में क्रिया के सामान्य भूतकालिक रूपों के साथ योजक क्रिया भी वर्तमान कालिक रूपों में आती है। जैसे :-

शाम अज्ज गै घर गेआ ऐ।

‘शाम आज ही घर गया है।’

मेला दिक्खन बड़े लोक आए न।

‘मेला देखने बहुत लोग आए हैं।’

माली ने बूहटें गी पानी दित्ता ऐ।

‘माली ने पौधों को पानी दिया है।’

अज्ज उ’नै सारियां चीजां साफ

‘आज उसने सारी चीजें साफ की हैं।’

कीतियां न।

में कल पत्तनी टॉप गेदा हा।

‘में कल पत्तनी टॉप गया हुआ था।’

अज्जकल उत्थै बड़ी बर्फ पेदी ऐ।

‘आजकल वहाँ बहुत बर्फ गिरी हुई है।’

इन वाक्यों में ‘गेदा हा’ (गया हुआ था) और ‘बर्फ पेदी ऐ’ (बर्फ गिरी हुई है) प्रयोग क्रमशः पूर्ण भूत और पूर्ण वर्तमान के अर्थों से काफी समानता रखते हैं और लगभग इन्हीं अर्थों को अभिव्यक्त करते हैं, लेकिन इनकी रचना में भेद है। यहाँ पर क्रिया के सामान्य भूतकालिक रूप के साथ वाक्य के कर्ता के लिंग, वचन के अनुसार ‘दा’, और ‘दी’ आदि का प्रयोग हुआ है। जैसे :-

गेआ दा = गेदा

पेई दी = पेदी

ये भूतकाल के संयुक्त रूप होते हैं जिनमें भूतकालिक रूप के साथ ‘हुआ’ अर्थ में ‘दा’, ‘दे’, ‘दी’, ‘दियाँ’ का प्रयोग होता है। जैसे :-

में उत्थै खड़ोते दा हा।

‘में वहाँ खड़ा था’ (हुआ)

कुड़ी इत्थै बेठी दी ही।

‘लड़की यहाँ बैठी (हुई) थी’

सब उत्थै पुज्जी दियां न।

‘सभी यहाँ पहुँची (हुई) हैं।’

तुस इत्थै कि’यां आए दे ओ ?

‘आप यहाँ कैसे आए (हुंए) हैं।’

सन्नासर पानी कन्नै भरोचे दा हा।

‘सन्नासर पानी से भरा (हुआ) था।’

12.9 भूतकाल में सम्भाव्य, संदिग्ध आदि भिन्न-भिन्न अर्थों के लिए क्रिया के सामान्य भूतकालिक रूपों के साथ ‘हो’ (हो) योजक क्रिया में परिवर्तन होता है। जैसे :—

संदिग्ध अर्थ

तूँ गोआ होगा।

‘तुम गए होंगे’

में गोआ होड।

‘मैं गया हूँगा’

सम्भाव्य अर्थ

अस गे होचै।

‘हम गए हों।’

तुस गे होवो।

‘आप गए हों।’

12.10

‘खेढे रेह’ (खेलते रहे)

‘खड़ोते रेह’ (खड़े रहे)

‘निकली आई’ (निकल आई)

ये सभी संयुक्त क्रिया प्रयोग हैं, जिनमें क्रमशः ‘खेढे’ (खेलते), ‘खड़ोते’ (खड़े) और ‘निकली’ (निकल) मुख्य क्रिया रूप हैं और ‘रेह’ (रहे) और ‘आई’ (आई) सहायक क्रियाएं हैं। ‘रेह’ सहायक मुख्य क्रिया की निरन्तरता सूचित कर रहा है और ‘आई’ क्रिया की पूर्णता।

12.11 जेकर — तां (यदि — तो) प्रयोग संकेतार्थ की सूचना देता है।

इसका प्रयोग संयुक्त वाक्यों में होता है। एक उपवाक्य के साथ ‘जेकर’ (यदि) आता है और दूसरे उपवाक्य के साथ ‘तां’ (तो) जैसे:—

जेकर अस ऊपर कुतै खुब्भी जंदे तां केह होंदा ?

‘यदि हम ऊपर कहीं धंस जाते तो क्या होता।’

किन्ना चंगा होंदा जेकर मिगी बी कन्नै लेई जंदा, में बी इ’नें जगहें गी दिक्खी सकदा।

‘कितना अच्छा होता यदि मुझे भी साथ ले जाते (तो) मैं भी इन जगहों को देख सकता।’

यहाँ पर संकेतार्थ भूतकाल के अर्थ में है और ये वाक्य की दोनों क्रियाओं के न होने की सूचना देता है।

- 1 2. 1 2 सकर्मक क्रियाओं के भूतकाल में कर्ता के साथ 'ने' का प्रयोग होता है और क्रिया के रूप कर्म के लिंग और वचन के अनुसार होते हैं। जैसे :-

राधा ने खत लिखेआ।	'राधा ने पत्र लिखा।'
राधा ने खत लिखे।	'राधा ने पत्र लिखे।'
राधा ने साड़ी खरीदी।	'राधा ने साड़ी खरीदी।'
राधा ने साड़ियां खरीदियां।	'राधा ने साड़ियां खरीदीयां।'

- 1 2. 1 3 डोगरी में भूतकालिक वाक्यों में 'में' (मैं) और 'तू' (तू) सर्वनाम जब कर्ता के स्थान पर आते हैं तो उनके साथ 'ने' का प्रयोग नहीं होता। जैसे :-

तू उत्थै केह-केह दिक्खेआ ?
'तुमने वहाँ क्या-क्या देखा ?'
में उत्थै देआरें दे उच्चे-उच्चे बूहटे दिक्खे।
'मैंने वहाँ देवदारों के ऊँचे-ऊँचे पेड़ देखे।'

- 1 2. 1 4 भूतकालिक सकर्मक क्रियाओं के साथ वाक्य का कर्ता और कर्म दोनों यदि कारक चिह्नों के समेत आते हैं तो क्रिया का प्रयोग पुलिङ्ग एकवचन में होता है। जैसे :-

सन्नासर दे नजारे ने असेंगी बड़ा मोह्त कीता।
'सन्नासर के दृष्य ने हमें बहुत आकर्षित किया।'
सीता ने राधा गी पढ़ाया।
'सीता ने राधा को पढ़ाया।'



पाठ-13
सब्बैरी
(दोपहर का भोजन)

- संगीता : मां, में रुट्टी खानी ही।
- उषा : हां बेटी, सब्बैरी दा समां ते है।
अजें में किश ढोडे सेकने हे।
कन्नै तेरे पिता जी गी बलगा
करदी ही। में सोचेआ हा जे अज्ज
अस सब्बै किट्ठे रुट्टी खाचै।-
- संगीता : खरा मां, में उ'आं बी कल्लै
आहले मेतेहानै दी त्यारी
करनी ही। इसलेई किश चिर
पढ़ी लैन्नी आं।
- उषा : हां बेटी, तूं पढ़ी लै। में किश
कपड़े धोने हे सै धोई लैं।
- संगीता : मां, जिसलै पिता जी औडन तां
मिगी सद्दी लैएओ।
- उषा : ठीक ऐ बेटी। जा तूं पढ़ी लै।
अस चाहन्ने आं जे तूं खरे नंबर
लेइयै पास होएं।
- उषा : लगदा ऐ जे तेरे पिताजी आई
गे न।
- दिनेश : तुस मां-धी केहू सलाह करै
दियां हियां ?
- संगीता : माँ, मुझे खाना खाना था।
- उषा : हाँ बिटिया, दोपहर के भोजन
का समय हो चुका है। पर अभी मैंने
मकई की कुछ रोटियां सेंकनी थीं।
साथ ही तेरे पिता जी की प्रतीक्षा भी
कर रही थी। मैंने सोचा कि आज हम
सभी एक साथ खाना खाएँ।
- संगीता : ठीक है माँ, मैंने वैसे भी कल
की परीक्षा की तैयारी करनी
थी। इसलिए कुछ देर पढ़
लेती हूँ।
- उषा : हाँ बेटी, तुम पढ़ लो। मैंने कुछ
कपड़े धोने थे सो धो लूँ।
- संगीता : माँ, जब पिता जी आएँ तो मुझे
बुला लेना।
- उषा : अच्छा बेटी। जाओ तुम पढ़ो।
हम चाहते हैं कि तुम अच्छे अंक
लेकर पास होवो।
- उषा : मालूम होता है कि तेरे पिता जी
आ गए हैं।
- दिनेश : तुम माँ-बेटी क्या परामर्श कर
रही थीं ?

उषा : अस तुसेई गै सबैरी आस्ते
बलगा करदियां हियां।

दिनेश : दिक्खो नां, अज्ज मेरे कन्नै
कु'न आए न ? सक्सेना जी न।
मेरे दफ्तर च गै मेरे कन्नै कम्म
करदे न। इ'नें कुतै होर जाना हा,
पर में इ'नें गी प्रार्थना कीती जे
अज्जे दी सबैरी किट्ठे गै करचै।

सक्सेना : नमस्ते भैन जी। नमस्ते बेटी।

उषा : नमस्ते जी। रुट्ठी दा समां होई
गेदा ऐ। आओ चलचै पैहलें
सबैरी करी लैचै।

सक्सेना : अज्ज में रुट्ठी कुतै होर खानी
ही पर दिनेश होर ताहीं खिच्ची
लेई आए।

उषा : में बी अज्ज मते कम्मै करी
तौला च ढोडे, साग, भत्त ते
धिया-कद्दू गै बनाया ऐ। पता
नेई तुसें गी मेरा पकाए दा परसिंद
बी आवै जां नेई ?

दिनेश : जेकर तूं अपने हत्थें बनाएं ?
बरताएं तां कु'न आखग जे
रुट्ठी सुआदली नेई है ?

सक्सेना : दिनेश जी, जेकर अज्ज तुस मिगी
इत्थै औने आस्ते मजबूर नेई करदे

उषा : हम दोपहर के भोजन के लिए
आपकी ही प्रतीक्षा कर रही थीं।

दिनेश : देखिए न, आज मेरे साथ कौन
आए हैं ? यह सक्सेना जी हैं।
मेरे कार्यालय में ही मेरे साथ काम
करते हैं। इन्होंने कहीं और जाना
था, पर मैंने इनसे प्रार्थना की कि आज
दोपहर का भोजन एक साथ करें।

सक्सेना : नमस्ते बहन जी। नमस्ते बेटी।

उषा : नमस्ते जी। भोजन का समय
हो चुका है। आइए चलें पहले
भोजन कर लें।

सक्सेना : आज मैंने खाना कहीं और
खाना था, पर दिनेश जी मुझे
खींच कर इधर ले आए।

उषा : मैंने भी आज बहुत काम के कारण
जल्दी में मकई की रोटी, साग भात
और धिया-कद्दू ही पकाया है। पता
नहीं आप को मेरा पकाया पसंद भी
आए कि नहीं।

दिनेश : यदि तुम अपने हाथों से खाना
पकाओ और परोसो तो कौन
कहेगा कि भोजन स्वादिष्ट नहीं
है ?

सक्सेना : दिनेश जी, यदि आप आज
मुझे यहाँ आने के लिए विवश

तां में सच—मुच गै इस स्वादले ,
भोजन थमां बंचित होई जंदा।

न करते तो मैं सच—मुच ही इस
स्वादिष्ट भोजन से वंचित रह जाता।

दिनेश : सक्सेना जी, आओ हथ—मुंह
धोचै तां जे अस भोजन करना
शुरू करचै।

दिनेश : सक्सेना जी, आइए हाथ—मुँह
धोएँ ताकि हम भोजन करना
शुरू करें।

EXERCISES

1. Repitition Drill (पुनरुक्ति अभ्यास)

1. में रुट्टी खानी ही।
2. अजें में किश ढोडे सेकने हे, कन्नै तेरे पिताजी गी बलगा करदी ही।
3. में सोच्चेआ हा जे अज्ज अस सब्भै किट्ठे रुट्टी खाचै।
4. हां बेटी, तूं पढ़ी लै, में किश कपड़े धोने हे सै धोई लैं।
5. जिसलै पिताजी औडन तां मिगी सद्दी लैएओ।
6. सक्सेना जी मेरे दफ्तर च गै मेरे कन्नै कम्म करदे न।
7. इ'नें कुतै होर जाना हा पर में इ'नें गी प्रार्थना कीती जे आओ, अज्जै दी सब्बैरी किट्ठे गै करचै।
8. में बी अज्ज मते कम्मै करी तौला च ढोडे, साग, भत्त ते धिया—कद्दू गै बनाया ऐ।
9. तुसें गी मेरा पकाए दा पसिंद बी आवै जां नेई।
10. आओ हथ—मुंह धोचै तां जे अस भोजन करना शुरू करचै।

2. Substitution Drill (स्थानापन्न अभ्यास)

Model (1)

में जाना हा।

(सौना)

Model (2)

असें जाना हा।

(सौना)

में सौना हा।

उ'न्न खेढना हा।

(चलना)

(पढ़ना)

(लिखना)

Model (3)

में कमीज धोनी ही।

(कताब, पढ़ना)

में कताब पढ़नी ही।

तू रुट्टी खानी ही।

(चिट्ठी, लिखना)

(रुट्टी, पकाना)

(प्रार्थना, करना)

Model (5)

में कताबां पढ़नियां हियां।

(रुट्टी, पकाना)

में रुट्टियां पकानियां हियां।

तू पूनियां कत्तनियां हियां।

(सलाह, करना)

(पूड़ी, खाना)

(भिण्डी, बनाना)

असें सौना हा।

उ'नें खेढना हा।

(चलना)

(पढ़ना)

(लिखना)

Model (4)

असें क्रिकेट खेढना हा।

(पानी, पीना)

असें पानी पीना हा।

तुसें कम्म करना हा।

(मतेहान, देना)

(स्वैटर, बुनना)

(मकान, बनाना)

Model (6)

असें मैच खेढने हे।

(डंड, कड्ढना)

असें डंड कड्ढने हे।

तुसें टल्ले धोने हे।

(ढोडा, सेकना)

(कपड़ा, सीना)

(दोहाना, खाना)

तुसें क्रिकेट खेडना ऐ।

तुसें क्रिकेट खेडना ऐ जां नेई ?

तूं जाना ऐ।

कुड़ी ने पेंटिंग बनानी ऐ।

उ'न्न रियासी जाना ऐ।

में उत्थै औना ऐ।

असें मैच दिक्खना ऐ।

उ'नें क्रिकेट खेडना ऐ।

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :-

1. संगीता उषा दी केह लगदी ऐ ?
2. सब्हैरी आस्तै दिनेश अपने कन्नै होर कुसी लेई आया हा ?
3. उषा ते संगीता सब्हैरी लेई कुसी बलगा दियां हियां ?
4. उषा ने सब्हैरी लेई केह-केह बनाए दा हा ?
5. दिनेश ते उषा दा आपूं बिच्चें केह रिश्ता हा ?

5. दिए हुए शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर खाली स्थान भरिए :-

किट्ठे, सब्हैरी, ढोडे, बलगा, खरे।

1. तेरे पिताजी गी.....करदी ही।
2. तूं.....नंबर लेइयै पास होएं।
3. पैहले.....करी लैचै।
4. में अजें.....सेकने न।

5. आओ अज्जै दी सब्हेरी.....गै करचै।

6. पढ़िए, समझिए तथा लिखिए :-

जा	—	जाचै	—	जाना
खा	—		—	
पढ़	—		—	
चल	—		—	
सौ	—		—	
दौड़	—		—	
लिख	—		—	
बौह	—		—	
बलग	—		—	

7. निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग वाक्यों में कीजिए :-

मतेहान, नंबर, धोना, सेकना, सुआदला, हत्थ - मूँह, सब्हेरी

8. निम्नलिखित वाक्यों का डोगरी में अनुवाद करें :-

1. आज उसने भी आना था।
2. तुम अच्छे अंक लेकर पास हो जाओ।
3. मुझे कुछ कपड़े धोने थे सो धो लूँ।
4. तुम पढ़ लो।
5. आज मैंने कहीं और खाना खाना था।
6. आइए, हाथ-मुँह धोएं ताकि भोजन करना शुरू करें।

Vocabulary शब्दावली

सब्ज़ेरी	दोपहर का भोजन	रुट्टी	भोजन
ढोडा	मक्की की रोटी	मतेहान	परीक्षा
धोना	धोना	सद्दना	बुलाना
खरा	अच्छा	नम्बर	अंक
बरताना	परोसना	सुआदला	स्वादिष्ट
घिया कद्दू	घिया	तां जे	ताकि
प्रार्थना	प्रार्थना	सलाह	परामर्श
बलगना	प्रतीक्षा करना	भत्त	भात
साग	शाक	किट्ठे	इकट्ठे
त्यारी	तैयारी		

टिप्पणियाँ

- 1 3.1 इस पाठ में आप क्रियाओं के विधि अर्थ तथा सम्भाव्य अर्थ प्रयोगों से अवगत हुए हैं।
- 1 3.2 विधि अर्थ के लिए क्रिया के संज्ञार्थक रूप के साथ योजक क्रिया का प्रयोग होता है। जैसे :—
- में रुट्टी पकानी ही। 'मैंने खाना बनाना था।'
- में किश ढोडे सेकने हे। 'मैंने मक्की की कुछ रोटियाँ सेकनी थीं।'
- इ'नें कुतै होर जाना ऐ। 'इन्हें कहीं और जाना है।'
- 1 3.3 विधि अर्थ अकर्मक और सकर्मक दोनों प्रकार की क्रियाओं में होता है। जैसे :— अकर्मक क्रिया में

में जाना ऐ।	'मैंने जाना है।'
उ'नै पढ़ना हा।	'उसे पढ़ना था।'
असें सौना ऐ।	'हमें सोना है।'
जागतै न्हौना ऐ।	'लड़के को नहाना है।'
हून तूं सौना होग।	'अब तुमे सोना होगा।'

अकर्मक क्रियाओं के विधि अर्थ में संज्ञार्थक क्रिया के साथ योजक क्रिया हमेशा पुलिङ्ग, एकवचन में रहती है और यह भूत, वर्तमान तथा भविष्यत् तीनों कालों में प्रयुक्त होती है।

1 3.4 सकर्मक क्रियाओं के विधि अर्थ में संज्ञार्थक क्रियाओं के रूप वाक्य के कर्म के लिंग और वचन के अनुसार होते हैं। जैसे :-

पुलिङ्ग

एकवचन-	कम्म करना ऐ	‘काम करना है’
बहुवचन-	कपड़े धोने न	‘कपड़े धोने हैं’

स्त्रीलिङ्ग

एकवचन-	मतेहानै दी त्त्यारी करनी ऐ।	‘इम्तिहान की तैयारी करनी है’
बहुवचन-	कताबां साम्भनियां न।	‘किताबें सम्भालनी हैं।’

1 3.5 सकर्मक क्रियाओं के विधि अर्थ में योजक क्रिया के रूप केवल भूतकाल में वाक्य के कर्म के लिंग, वचन के अनुसार रहते हैं जैसे :-

मैं कम्म करना हा।	‘मुझे काम करना था।’
मैं टल्ले सकाने हे।	‘मुझे कपड़े सुखाने थे।’
मैं मतेहानै दी त्त्यारी करनी ही।	‘मुझे इम्तिहान की तैयारी करनी थी।’
तू कताबां साम्भनियां हियां।	‘तुझे किताबें सम्भालनी थीं।’

1 3.6 वर्तमान और भविष्यत् काल के रूपों में संज्ञार्थक क्रियाओं के रूपों में लिंग और वचन सूचक भेद रहता है किन्तु योजक क्रिया में केवल वचन भेद होता है लिंग भेद नहीं। जैसे :-

वर्तमान काल

पुलिङ्ग

एकवचन-	राधा ने रुट्ठी पकानी ऐ।	‘राधा को रोटी बनानी है।’
--------	-------------------------	--------------------------

स्त्रीलिङ्ग

एकवचन-	राधा ने कम्म करना ऐ।	‘राधा को काम करना है।’
--------	----------------------	------------------------

पुलिंग

बहुवचन- राधा ने कपड़े धोने न। 'राधा को कपड़े धोने हैं।'

स्त्रीलिंग

बहुवचन- राधा ने चिट्ठियां लिखनियां न। 'राधा को चिट्ठियां लिखनी हैं।'

भविष्यत् काल

पुलिंग

एकवचन- उसने खत पढ़ना होग। 'उसे पत्र पढ़ना होगा।'

स्त्रीलिंग

एकवचन- उसने कताब पढ़नी होग। 'उसे किताब पढ़नी होगी।'

पुलिंग

बहुवचन- उसने कपड़े धोने होडन। 'उसे कपड़े धोने होंगे।'

स्त्रीलिंग

बहुवचन- उसने चीजां आहननियां होडन। 'उसे चीजें लानी होंगी।'

1.3.7 डोगरी में क्रियाओं के सम्भाव्य अर्थ-रूप अकर्मक और सकर्मक दोनों प्रकार की क्रियाओं में मिलते हैं। इनके रूप निम्न प्रकार हैं :-

अकर्मक क्रिया - चलना 'चलना'

एकवचन

बहुवचन

प्रथमपुरुष	चलां	'चलूं'	चलचै	'चलें'
मध्यमपुरुष	चलें	'चलो'	चलो	'चलो/चलें'
अन्यपुरुष	चलै	'चले'	चलन	'चलें'

सकर्मक क्रिया - पीना 'पीना'

एकवचन

बहुवचन

प्रथमपुरुष	पीआं	'पियूं'	पीचै	'पिएं'
------------	------	---------	------	--------

मध्यमपुरुष	पीएं	‘पियो’	पीओ	‘पियो/पिएं’
अन्यपुरुष	पीऐ	‘पिए’	पीन	‘पिएं’

- 13.8 पढ़ी लैन्नी आं। ‘पढ़ लेती हूँ’।
 धोई लैं। ‘धो लूँ’।
 सद्दी लैएओ। ‘बुला लेना’।
 सब्बैरी करी लैचै। ‘दोपहर का भोजन कर लें’।

संयुक्त क्रिया के प्रयोग हैं जिनमें ‘पढ़’, ‘धो’, ‘सद्द्’, कर
 मुख्य धातुओं के साथ ‘लैना’ (लेना) सहायक क्रिया का प्रयोग हुआ है।

- 13.9 डोगरी में ‘लैना’ सहायक क्रिया के साथ मुख्य क्रियाएं इकारान्त रूप में रहती हैं।
 जैसे :-

पढ़ी लैना	‘पढ़ लेना’
लिखी लैना	‘लिख लेना’
खाई लैना	‘खा लेना’
हस्सी लैना	‘हंस लेना’ आदि

- 13.10 ‘लैना’ सहायक क्रिया के रूप भूत और वर्तमान कालों में लिंग और वचन के अनुसार बदलते हैं। जैसे :-

(i) भूतकाल

में खत लिखी लेआ/लैता।	‘मैंने पत्र लिख लिया।’
में खत लिखी ले/लैते।	‘मैंने पत्र लिख लिए।’
में चिट्ठी पढ़ी लेई/लैती।	‘मैंने चिट्ठी पढ़ ली।’
में चिट्ठियां पढ़ी लेइयां/लैतियां।	‘मैंने चिट्ठियाँ पढ़ लीं।’

(ii) वर्तमान काल

रमेश खत पढ़ी लैदा ऐ।	‘रमेश खत पढ़ लेता है।’
----------------------	------------------------

रमा खत पढ़ी लैदी ऐ।

‘रमा खत पढ़ लेती है।’

जागत कम्म करी लैदे न।

‘लड़के काम कर लेते हैं।’

कुड़ियां कम्म करी लैदियां न।

‘लड़कियाँ काम कर लेती हैं।’

पुरुष संबन्धी सूचना ‘हो’ धातु के रूपों से मिलती है।

1 3. 1 1 भविष्यत् काल में ‘लैना’ सहायक क्रिया कर्ता के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार रूप ग्रहण करती हैं। जैसे :-

में सेई लैड।

‘में सो लूँगा/लूँगी।’

तू सेई लैगा/लैगी।

‘तुम सो लोगे/लोगी।’

तुस सेई लैगेओ/लैगियां।

‘आप सो लेंगे/लेंगी।’

ओह सेई लैग।

‘वह सो लेगा/लेगी।’

ओह सेई लैडन

‘वो सो लेंगे। लेंगी।’

1 3. 1 2 जेकर.....तां (यदि – तो)

ये संकेतार्थ सूचक अव्यय हैं। संयुक्त वाक्यों में एक उपवाक्य के साथ ‘जेकर’ अथवा ‘जे’ (यदि) आता है और दूसरे उपवाक्य के साथ ‘तां’ (तो) का प्रयोग होता है। जैसे :-

जेकर तू अपने हत्थें बनाएं – बरताएं तां कु’न आखग जे रुट्टी सुआदली नेई।

‘यदि तुम अपने हाथ से खाना बनाओ और परोसो तो कौन कहेगा कि भोजन स्वादिष्ट नहीं।’

1 3. 1 3 खिच्ची लेई आए (‘खींच लाए/ले आए’) संयुक्त क्रिया का प्रयोग है।



धाम बनाने की तयारी

(सामूहिक भोजन बनाने की तैयारी)

शामलाल : कु'न करी सकदा ऐ एह कम्म ?

रामू : जनाव गणेश करी सकदा
ऐ, उसी आखो।

शामलाल : करी ते केदार बी सकदा ऐ,
वैष्णो बी करी सकदी ऐ। इ'नें
त्रौं चा जेहड़ा चाह पी ऐठा ऐ
उसी मेरे कश भेजी देओ।

रामू : मेरा खेआल ऐ त्रैवै चाह पी
चुके दे न। दस्सो कु'सी भेजां ?

शामलाल : तु'म्हीं अजें तगर चाह पीती
ऐ जां नेई ? नेई तां चाह पीऐ
वैष्णो गी सदद।

वैष्णो : बाबू जी। में इत्थै गै आं।
में ते दुर्गी अस दोऐ चाह
पी बैठियां आं। तुस दस्सो
केहड़ा कम्म करना ऐ ?

शामलाल : वैष्णो। नां ते तूं इक्कली एह
सारा कम्म करी सकनीं एं
ते नां गै तुस दोऐ रलियै करी
सकदियां ओ।

रामू : नेई बाबू जी। दुर्गी जां वैष्णो
गी इ'यां गै नेई समझो एह

शामलाल : कौन कर सकता है यह काम ?

रामू : जनाव गणेश कर सकता है,
उसे कहिए।

शामलाल : कर तो केदार भी सकता है, वैष्णो
भी कर सकती है। इन तीनों में से
जो चाय पी चुका है उसे मेरे पास
भेज दो।

रामू : मेरा ख्याल है कि सभी चाय पी
चुके हैं। बताइए किसे भेजूं ?

शामलाल : तुम ने अभी तक चाय पी है या
नहीं ? नहीं तो चाय पीकर वैष्णो
को बुलाओ।

वैष्णो : बाबूजी मैं यहीं पर हूँ। मैं
और दुर्गी हम दोनों चाय
पी चुकी हैं। आप बतलाइए
कौन सा काम करना है ?

शामलाल : वैष्णो, न ही तुम अकेली यह सारा
काम कर सकती हो और न ही तुम
दोनों, मिलकर कर सकती हो।

रामू : नहीं, बाबूजी, दुर्गी या वैष्णो
को ऐसे ही न समझिए। यह

कम्म तुस इ'नें गी सौंपियै
दिक्खी सकदे ओ। एह जरूर
इसी करी लैडन।

काम आप इनको सौंप कर
देख सकते हैं। ये अवश्य
ही यह काम कर लेंगी।

शामलाल : रामू तू अपना नां की नेई
लैदा ? तु'म्मी करी सकनां
एं जां नेई ?

शामलाल : रामू, तुम अपना नाम क्यों
नहीं लेते ? तुम भी कर
सकते हो या नहीं ?

रामू : हां जनाव, मिम्मीं करी सकनां।
अस सब करी सकने आं।

रामू : हाँ जनाब, मैं भी कर सकता
हूँ। हम सब कर सकते हैं।

शामलाल : एह होई नां गल्ल। मिगी पूरी
मेद ही जे तू करी सकगा पर,
तू हूनै तगर दस्सेआ की
नेई ?

शामलाल : यह हुई न बात। मुझे पूरी
आशा थी कि तुम कर
सकोगे, परन्तु तुम ने अभी
तक बताया क्यों नहीं ?

रामू : तुसें मिगी सिद्धा पुछेआ गे नेहा।
जे पुछदे ते में आखी ओड़दा।

रामू : आपने मुझे सीधा पूछा ही नहीं था।
यदि पूछते तो मैं कह देता।

शामलाल : में तेरा मतेहान लै करदा
हा। बैहस च काफी समां
होई चुकेआ ऐ। चलो हून
कम्मा दी गल्ल करचै।

शामलाल : मैं तुम्हारी परीक्षा ले रहा था।
अच्छा बातचीत में काफी समय
जा चुका है। चलिए अब काम
की बात करें।

रामू : जनाब दिक्खो गणेश आई
गेआ ऐ। दस्सो असेंगी केह
करना ऐ ?

रामू : जनाब, देखें गणेश भी आ
गया है। बताइए हमने क्या
करना है ?

शामलाल : औंदे सोमवारें असें संस्था
च इक लौहकी जनेही धाम
करनी ऐ। अपने मेम्बरें दे
इलावा कोई 50 हारे होर
लोकें गी बी सद्दे दा ऐ।

शामलाल : आगामी सोमवार के दिन हमने
अपनी संस्था में एक छोटा सा प्रीति
भोज आयोजित करना है। अपने
सदस्यों के अतिरिक्त लगभग 50
लोग बाहर से भी बुलाए गए हैं।

इस लेई असें कोई डेढ सौ
लोकें दी रुट्टी बनानी ऐ।

रामू : तां एह कम्म ऐ। तुसें पैहलें
गल्ल गै नेई कीती। गणेश ते
केदार दोऐ रलियै एह कम्म
करी सकदे न।

शामलाल : चेता रक्खेआं इक बजे
तगर सारा किश त्यार
होना चाहिदा ऐ।

गणेश : जनाब तुस चिंता नेई करो।
अस करी लैगे। वैष्णो ते
दुर्गी सलाद-सब्जी चीरने च
मदद करडन।

दुर्गी : हां जनाब। अस हर कम्मा
च इन्दा हत्थ बंडागियां।

रामू : तुस एह रुट्टी बाहर पकागेओ
जां रसोई च ? चेता रक्खेओ
एह बरसांती दा मौसम ऐ
अगर बरखा होई तां ?

गणेश : बाबू जी, चिन्ता नेई करो।
उसलै तगर ड्हान कडिड्यै
दाल, भत्त, पूरियां खमीरे
सब किश त्यार होई चुके
दा होना ऐ।

केदार : बाबू जी, एह ठीक आखा
दा ऐ। जेकर एह्दी गल्ल

इसलिए हमने लगभग डेढ सौ लोगों
का खाना बनाना है।

रामू : तो यह काम है ? आपने पहले
बात ही नहीं की। गणेश और
केदार दोनों मिलकर यह
काम कर सकते हैं।

शामलाल : याद रखना एक बजे तक
सब कुछ तैयार होना
चाहिए।

गणेश : जनाब, आप चिन्ता मत
करें। हम कर लेंगे। वैष्णो
और दुर्गी सलाद-सब्जी
काटने में सहायता करेंगी।

दुर्गी : हाँ जनाब, हम हर काम में
इनका हाथ बटाएंगी।

रामू : तुम लोग खाना बाहर
पकाओगे या रसोई में ? याद
रखना यह बरसात का
मौसम है, यदि वर्षा हुई तो ?

गणेश : बाबूजी, चिन्ता मत करें।
उस समय तक ड्हान (लम्बा
चूल्हा) खोदकर दाल,
भात, पूरी, भटूरे सब कुछ
तैयार हो चुका होगा।

केदार : बाबू जी, यह ठीक कह रहा
है। यदि इसकी बात ठीक न

ठीक नेई होई तां में दंदें
नु'क्क चुक्कड।

हुई तो मैं अपने दाँतों से जूता
उठाऊँगा।

शामलाल : ओह्दी लोड़ नेई। मिगी
तुन्दे पर पूरा भरोसा ऐ।
हून तुस चीजें दी लिस्ट त्यार
करो। रामू कशा पैसे लेइयै
बजारा समान खरीदी आह्नो।
तारें स'आं तगर दुर्गी ते वैष्णो
बी सब्जियां लेई आई दियां
होडन।

शामलाल : इसकी जरूरत नहीं है। मुझे
तुम सब पर पूरा भरोसा है।
अब तुम सामान की सूची
तैयार करो। रामू से पैसे
लेकर बाजार से सामान
खरीद लाओ। रविवार की
शाम तक दुर्गी और वैष्णो
भी सब्जियें ला चुकी होंगी।

गणेश : जी जनाब। हर कम्म जि'यां
तुस आखदेओ इ'या गै होग।

गणेश : जी जनाब। जैसे आप कहेंगे,
हर काम वैसे ही होगा।

EXERCISES

1. Repitition Drill (पुनरुक्ति अभ्यास)

1. कु'न करी सकदा ऐ, एह कम्म ?
2. करी ते केदार बी सकदा ऐ, वैष्णो बी करी सकदी ऐ।
3. मेरा खेआल ऐ त्रैवै चाह पी चुके दे न।
4. दस्सो, कु'सी भेजां ?
5. तु'म्मीं अजें चाह पीती ऐ जां नेई ?
6. जनाब मिम्मीं करी सकनां। अस सब करी सकने आं।
7. में तेरा मतेहान लै करदा हा।
8. बैहसा चा काफी समां होई चुकेआ ऐ।
9. तुस चिंता नेई करो। अस करी लैगे।
10. हून तुस चीजें दी लिस्ट त्यार करो।

11. रामू कशा पैसे लेइयै बजारा समान खरीदी आह्नो।

2. Substitution Drill (स्थानापन्न अभ्यास)

Model (1)

ओह पढ़ी बैठा ऐ। (लिखना)

ओह लिखी बैठा ऐ।

ओह खाई बैठा ऐ।

(पीना)

(न्हौना)

(खेठना)

Model (2)

ओह पकाई बैठी ऐ। (सीना)

ओह सी बैठी ऐ।

ओह उट्ठी बैठी ऐ।

(दौड़ना)

(पीहना)

(धोना)

Model (3)

ओह आखी बैठे न। (बोलना)

ओह बोल्ली बैठे न।

ओह सौपी बैठे न।

(दस्सना)

(पुच्छना)

(तुप्पना)

Model (4)

ओह खाई बैठियां न। (पकाना)

ओह पकाई बैठियां न।

ओह रलाई बैठियां न।

(फंडना)

(तोलना)

(बंडना)

3. Transformation Drill (रूपान्तरण अभ्यास)

Model (1)

में पढ़ी बैठा आं।

में पढ़ी चुकेआ आं।

ओह दौड़ी बैठा ऐ।

शाम खाई बैठा ऐ।

तूं पी बैठा एं।

Model (2)

में पढ़ी बैठा हा।

में पढ़ी चुकेआ हा।

औह दौड़ी बैठा हा।

केदार खाई बैठा हा।

तूं पी बैठा हा।

Model (3)

में कपड़े धोई बैठी आं।
 में कपड़े धोई चुकी आं।
 ओहू ढोडे पकाई बैठी ऐ।
 वैष्णो पानी भरी बैठी ऐ।
 उषा सोत देई बैठी ऐ।

Model (5)

अस दौड़ी बैठे आं।
 अस दौड़ी चुके आं।
 ओह लिखी बैठे न।
 तुस सेई बैठे ओ।
 ओह खेळी बैठे न।

Model (7)

अस सेई बैठियां आं।
अस सेई चुकियां आं।
ओह् दौड़ी बैठियां न।
तुस पकाई बैठियां ओ।
तुस पीह बैठियां ओ।

Model (4)

में क्रिकेट खेदी बैठी ही।
में क्रिकेट खेदी चुकी ही।
ओह् त्त्यारी करी बैठी ही।
मनीषा पढी बैठी ही।
ओह् टल्ले धोई बैठी ही।

Model (6)

अस दौड़ी बैठे हे ।
 अस दौड़ी चुके हे ।
 ओह लिखी बैठे हे ।
 तुस सेई बैठे हे ।
 ओह खेटी बैठे हे ।

Model (8)

अस सेई बैठियां हियां।
अस सेई चुकियां हियां।
ओह् दौड़ी बैठियां हियां।
तुस पकाई बैठियां हियां।
तुस पीह् बैठियां हियां।

4. पढ़िए, समझिए और लिखिए :-

(क) करना, करी सकना, करी चुकना, करी बौहना, करी देना
भरना

आखना ,..... ,..... ,

भेजना ,..... ,..... ,

(ख) पढ़, पढ़ियै, सी, सीऐ

सौंप पी

आख जी

दे पीह

5. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :-

1. किन्ने लोकें लेई धाम बनाने दा प्रबन्ध कीता जा करदा हा ?
2. रुट्टी त्यार करने दा कम्म कु'सी सौंपेआ गेआ ?
3. वैष्णो ते दुर्गी दे जिम्मै केह् कम्म आया ?
4. धामा च केहड़े पकवान बनाने दा प्रोग्राम हा ?
5. शामलाल ने किन्ने बजे तगर रुट्टी त्यार करने लेई आखेआ हा ?

6. शब्दों को उचित क्रम में रखकर वाक्य बनाइए :-

1. सकदा बी करी केदार ते ऐ।
2. ऐ अजें तु'म्मी चाह तगर पीती।
3. कम्म तुस केहड़ा करना दस्सो ऐ।
4. नेहा गै तुसें सिद्धा पुच्छेआ मिगी।
5. हा लै मतेहान में करदा तेरा।
6. हत्थ कम्मा अस च बंडागियां हर इन्दा।
7. न कम्म एह् सकदे गणेश दोऐ केदार रलियै ते करी।

7. दिए हुए क्रिया शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर उनके सही रूप खाली स्थानों में भरिए :-

कड़टना, रखना, चीरना, लैना, सौंपना।

1. तुसें सभनें चेता.....ऐ।
2. गणेश ने ड्हान.....ऐ।
3. वैष्णो ने सब्जियां.....न।
4. अस करी.....।
5. शामलाल गणेश गी कम्म.....बैठा ऐ।

Vocabulary शब्दावली

धाम	प्रीतिभोज	खेआल	ख्याल
कम्म	काम	भेजना	भेजना
दस्सना	बताना, दिखाना	रलना	मिलना
सौंपना	सौंपना	समझना	समझना
मेद	आशा	सिद्धा	सीधा
काफी	काफी	बैहस	बहस
पुच्छना	पूछना	लौहका	छोटा
मेम्बर	सदस्य	इलावा	इलावा, अतिरिक्त
लोक	लोग	चेता	स्मरण
चिंता	चिंता	बरसांत	बरसात
ड्हान	जमीन खोद कर सामूहिक भोजन के लिए बनाया लम्बा सा चूल्हा	सब्जी	सब्जी
		पूड़ी	पूड़ी
		खमीरा	भटूरा, खमीरा

टिप्पणियाँ

1 4.1 इस पाठ में आपने 'चुकना' और 'सकना' सहायक क्रियाओं के प्रयोग से परिचय किया है।

1 4.2 डोगरी में 'चुकना' और 'सकना' सहायक क्रियाओं के साथ मुख्य क्रिया हमेशा ईकारान्त रूप में रहती है। जैसे :-

पी चुकना	'पी चुकना'	करी सकना	'कर सकना'
होई चुकना	'हो चुकना'	चुक्की सकना	'उठा सकना'
खाई चुकना	'खा चुकना'	बनाई सकना	'बना सकना'
लिखी चुकना	'लिख चुकना'	पढ़ी सकना	'पढ़ सकना'

1 4.3 'चुकना' और 'सकना' दोनों क्रियाएं वर्तमान, भूत और भविष्यत् तीनों कालों में सहायक क्रिया के रूप में प्रयुक्त होती हैं।

1 4.4 वर्तमान काल

(i) 'चुकना' क्रिया

गणेश चाह पी चुकदा ऐ।	'गणेश चाय पी चुकता है।'
में चाह पी चुकनी आं।	'मैं चाय पी चुकती हूँ।'
तुस चाह पी चुकदे ओ।	'आप चाय पी चुकते हैं।'
ओह चाह पी चुकदे न।	'वे चाय पी चुकते हैं।'

(ii) 'सकना' क्रिया

वैष्णो कम्म करी सकदी ऐ।	'वैष्णो काम कर सकती है।'
तूं कम्म करी सकनी एं।	'तुम काम कर सकती हो।'
अस कम्म करी सकने आं।	'हम काम कर सकते हैं।'
ओह कम्म करी सकदे न।	'वे काम कर सकते हैं।'

1 4.5 वर्तमान काल में 'चुकना' और 'सकना' दोनों सहायक क्रियाओं के रूप क्रिया के वर्तमान कालिक रूपों की भाँति बनते हैं।

1 4.6 भूतकाल

(i) 'चुकना' क्रिया

गणेश चाह पी चुकेआ हा।

'गणेश चाय पी चुका था।'

में चाह पी चुकी ही।

'मैं चाय पी चुकी थी।'

अस चाह पी चुके हे।

'हम चाय पी चुके थे।'

तुस चाह पी चुकियां हियां।

'आप चाय पी चुकी थीं।'

ओह चाह पी चुकी ही।

'वह चाय पी चुकी थी।'

(ii) 'सकना' क्रिया

गणेश कम्म नेहा करी सकेआ।

'गणेश काम नहीं कर सका था।'

ओह कम्म करी सके हे।

'वे काम कर सके थे।'

तूं कम्म नेही करी सकी।

'तुम काम नहीं कर सकी थी।'

अस सब कम्म करी सकियां हियां।

'हम सब काम कर सकी थीं।'

1 4.7 भूतकाल में 'चुकना' और 'सकना' दोनों सहायक क्रियाओं के रूप क्रिया के भूतकालिक रूपों की भाँति बनते हैं। साथ में प्रयुक्त होने वाली योजक क्रिया भूतकालिक रूप में आती हैं।

1 4.8 भविष्यत् काल

(i) 'चुकना' सहायक क्रिया

गणेश चाह पी चुकग तां दस्सेआं।

'गणेश चाय पी चुके गा तो बताना।'

जिसलै में कम्म करी चुकड उसलै
आमेआं।

'जब मैं काम कर चुकूंगी तब
आना।'

जिसलै तूं पढ़ी चुकगी उसलै कम्म
करेआं।

'जब तुम पढ़ चुकोगी तब काम
करना।'

(ii) 'सकना' सहायक क्रिया

में कम्म करी सकड।

'मैं काम कर सकूँगा/सकूँगी।'

तुस कम्म करी सकगे ओ।

'आप काम कर सकेंगे।'

ओह् कम्म करी सकडन।

'वे काम कर सकेंगे। सकेंगी।'

तुस कम्म करी सकगियां।

'आप काम कर सकेंगी।'

1 4. 9 भविष्यत् काल में 'चुकना' और 'सकना' सहायक क्रियाओं के रूप क्रिया के भविष्यत् कालीन रूपों की भाँति ही बनते हैं और इनमें लिंग, वचन तथा पुरुष के लिए परिवर्तन भी होता है। जैसे :-

चुकड ' (मैं) चुकूँगा/चुकूँगी'

चुकगी ' (तू) चुकेगी'

चुकग ' (वह) चुकेगा'

चुकडन ' (वे) चुकेंगे/चुकेंगी'

सकड ' (मैं) सकूँगा/सकूँगी'

सकगियां ' (तुम/आप/हम)/सकोगी/सकेंगी'

सकग ' (वह) सकेगा/सकेगी'

सकगा ' (तुम)/सकोगे'

1 4. 1 0 (पी) चुके दा,

(चुका/चुका हुआ)

(पी) चुके दे

(चुके/चुके हुए)

(पी) चुकी दी

(चुकी/चुकी हुई)

(पी) चुकी दियां

(चुकीं / चुकी हुईं)

ये भी सभी भूतकालिक प्रयोग हैं किन्तु यहाँ पर 'चुके', 'चुकी' के साथ हुआ अर्थ में 'दा', 'दे', 'दी', 'दियां' का प्रयोग होने से संयुक्त रूप बने हुए हैं। जैसे :-

त्रैवै चाह पी चुके दे न।

'तीनों चाय पी चुके हैं।'

इसी प्रकार

वैष्णो ते दुर्गी सब्जियां लेई आई दियां होडन।

'वैष्णो और दुर्गी सब्जियाँ ले आई होंगी'

में भी, 'लेई आई दियां होडन' संयुक्त क्रिया प्रयोग में 'आई दियां' भूतकालिक क्रिया का संयुक्त रूप है।

- 1 4. 1 1 डोगरी में 'ऐठा' अथवा 'बैठा' 'बैठियां', 'बैठे' आदि भी क्रमशः चुका, चुकियां, चुके आदि के अर्थ में प्रयुक्त होते हैं। जैसे :-

इ'ने त्र'ऊं चा जेहड़ा चाह पी ऐठा ऐ उसी मेरे कश भेजी देओ।

'इन तीनों में से जो चाय पी चुका है। उसे मेरे पास भेज दो।'

में ते दुर्गी अस दोऐ चाह पी बैठियां आं।

'मैं और दुर्गी हम दोनों चाय पी चुकी हैं।'

- 1 4. 1 2 'जे.....तां' (यदि.....तो)

ये संकेतार्थ सूचक अव्यय हैं। संयुक्त वाक्यों में एक उपवाक्य के साथ 'जे' अथवा 'जेकर' आता और दूसरे उपवाक्य के साथ 'तां' का प्रयोग होता है। जैसे :-

जेकर तुस मिगी पुछदे तां में आखी ओड़दा।

'यदि आप मुझे पूछते तो मैं कह देता।'

जेकर रुट्टी पक्की दी होग तां बुआज मारेआं।

'यदि खाना तैयार होगा तो आवाज लगाना।'

- 1 4. 1 3 'नां.....नां गै' (न.....न ही)

ये निषेधार्थवाचक अव्यय है। संयुक्त वाक्यों में एक उपवाक्य के साथ 'नां' और दूसरे उपवाक्य के साथ 'नां गै' का प्रयोग होता है। जैसे :-

नां ते तू इक्कली एह सारा कम्म करी सकनी एं ते नां गै तुस दोऐ रलियै करी सकदियां ओ।

'न तो तुम अकेले यह सारा काम कर सकती हो और न ही तुम दोनों मिलकर कर सकती हो।'

दो या अधिक शब्दों के बीच भी ये निषेधार्थ वाचक अव्यय प्रयुक्त होते हैं। जैसे :-

नां रुट्टी, नां टल्ला, नां गै मकान मिलेआ ऐ।

“न रोटी, न कपड़ा और न ही मकान मिला है।”

1 4.1 4 ‘पीऐ’ (पीकर) क्रिया रूप

“क्रिया को समाप्त करने अथवा साथ-साथ करने” का अर्थ प्रकट करता है। इसीलिए इसे पूर्व कालिक कृदन्त कहते हैं। जैसे :-

खाइयै	‘खाकर’	टुरियै	‘चलकर’
जाइयै	‘जाकर’	दौड़ियै	‘भाग कर’
हस्सियै	‘हंसकर’	रोइयै	‘रोकर’
गाइयै	‘गाकर’	नच्चियै	‘नाच कर’

धातु के साथ ‘इयै’ प्रत्यय लगने से ये पूर्वकालिक कृदन्ती रूप बनते हैं। जैसे :-

खा+इयै = खाइयै टुर+इयै = टुरियै

जा+इयै = जाइयै दौड़+इयै = दौड़ियै

इहान : धरती खोद कर बनाया गया गड्ढा और लम्बा चूल्हा जिसमें बड़ी-बड़ी लकड़ियां जलाई जाती हैं। विवाह-शादी एवं धार्मिक अवसरों आदि पर अधिक लोगों के लिए भोजन प्रायः इन्हीं चूल्हों (इहानों) पर बनाया जाता है।

खमीरा : तली हुई खमीरी रोटी जो प्रायः उत्सवों-त्योहारों अथवा विवाह-शादी आदि अवसरों पर बनाई जाती है।



किश्तवाड़ दी यात्रा (किश्तवाड़ की यात्रा)

- रवि : भाई जी, गर्मियें दियां छुट्टियां
आवा कर दियां न दस्सो हां कुस
केहड़े थाहर जाना चाहिदा ऐ ?
- रवि : भाई साहब, ग्रीष्मावकाश हो रहा
है, बताइए तो कौन से स्थान पर
जाना चाहिए।
- शाम : जम्मू प्रान्त च नेकां थाहर न।
समां होऐ तां किश्तवाड़ जां
भद्रवाह जनेह् थाहर जरूर
दिक्खने चाहिदे न।
- शाम : जम्मू प्रान्त में अनेक स्थल हैं।
समय हो तो किश्तवाड़ या
भद्रवाह जैसे स्थान जरूर देखने
चाहिए।
- रवि : फही किश्तवाड़ ठीक रौहग।
उत्थै जाने आस्तै केहड़ियें गल्लें
दा ध्यान रक्खना लोड़दा ऐ ?
- रवि : फिर किश्तवाड़ ठीक रहेगा। वहाँ
जाने के लिए कौन-कौन सी
बातों का ध्यान रखना चाहिए ?
- शाम : जाने कोला पैहलें पर्यटन विभाग
कन्नै रावता करी लैना चाहिदा ते
उत्थै अपने ठैहरने दा बाकी थाहर
बी जाची लैना चाहिदा। सफर उप्पर
जंदे बेल्लै जरूरी चीजां गै लेनियां
चाहिदियां न। इक टार्च ते जरूर
अपने कन्नै रक्खनी चाहिदी ऐ ते
इक स्टोव ते किश भांडे बी अपने
कन्नै लेई जाने चाहिदे न।
- शाम : जाने से पहले पर्यटन विभाग से
सम्पर्क करना चाहिए और वहाँ
अपने ठहरने का स्थान भी
निश्चित कर लेना चाहिए। बाकी
यात्रा पर जाते समय जरूरी—
जरूरी सामान ही लेना चाहिए।
एक टार्च तो अवश्य ही साथ
रक्खनी चाहिए और एक स्टोव
एवं कुछ बर्तन भी साथ लेने चाहिए।
- रवि : हां। किश जरूरी दुआइयां बी
कन्नै रक्खनियां चाहिदियां न।
- रवि : हां। कुछ जरूरी दवाएं भी साथ
रक्खनीं चाहिए।
- रवि : उत्थै किन्नी ठण्ड पौंदी ऐ ? क्या
गर्म कपड़े बी कन्नै पाई लैने
- रवि : वहाँ कितनी ठण्ड पड़ती है ? क्या
गर्म कपड़े भी साथ में ले जाने

चाहिदे न ? बरखा होने उपर
खबर लाड़ी गी बरसांती कोट बी
चाहिदा होऐ ?

शाम : दपैहरीं ते मौसम बड़ा रौसला
होई जंदा ऐ। हां, राती लै जरसी
जां स्वैटर ते तुसें लाना गै पौना
ऐ। जेकर बरखा पेई जा तां गर्म
कपड़े बी तुसेंगी चाहिदे होइन।

रवि : तुसें मिगी बड़े कम्मै दियां गल्लां
दस्सियां न। नेई तां, मिगी मतियां
मुश्कलां झल्लने पौनियां हियां।
ओपरे थाहरै परिवार कनै जाइयै
परेशान होना पौंदा। इक गल्ल
होर पुच्छनी ऐ। क्या सरथल देवी
दे मन्दर तककर असें गी पैदल
जाना पौग ?

शाम : किशतबाड़ थमां रोज बडलै न्हैरै
इक गड्डी सरथल देवी दे मन्दर
तगर जंदी ऐ। ओह गड्डी तुसें
पकड़नी पौनी ऐ। मन्दर शा किश
दूरी उपर ओह रुकदी ऐ। उत्थूं
दा कोई अद्धे किलो मीटर दा
फ्हाड़ी सफर तुसेंगी पैदल तैह
करना पौना ऐ।

रवि : दरअसल बच्चे अजे बड़े निकके न।
इस लेई उ'नें गी बी लेना पौना ऐ।

चाहिए ? बारिश होने पर शायद
पत्नी को बरसाती कोट भी
चाहिए होगा ?

शाम : दोपहर को तो मौसम बड़ा
सुहावना हो जाता है। हाँ, रात
के समय जरसी या स्वैटर तो
आपको पहनना ही पड़ेगा। यदि
बारिश हो जाए तो गर्म कपड़े भी
आपको चाहिए होंगे।

रवि : आपने मुझे बहुत उपयोगी बातें
बताई हैं। नहीं तो, मुझे बहुत
कठिनाइयें झेलनी पड़तीं। अनजान
जगह पर परिवार के साथ जा कर
परेशान होना पड़ता। एक बात
और पूछनी है। क्या सरथल देवी
के मन्दिर तक हमें पैदल जाना
पड़ेगा ?

शाम : किशतबाड़ से रोज सुबह-सवेरे
एक गाड़ी सरथल देवी के मन्दिर
तक जाती है। वह गाड़ी आपको
पकड़नी पड़ेगी। मन्दिर से कुछ
दूरी पर वह रुकती हैं। वहां से
कोई आधा किलो मीटर का
पहाड़ी सफर आपको पैदल ही
तय करना पड़ेगा।

रवि : दरअसल बच्चे अभी बहुत छोटे हैं।
इसलिए उन को भी ले जाना पड़ेगा।

शाम : बड़ी चंगी गल्ल ऐ मां-बब्ब सैर करन जान तां बच्चें गी बी कन्नै लेई जाना चाहिदा। घर कुसी छोड़ियै जा करदे ओ ? बड्डी भैन सद्दी लैनी चाहिदी ही जां पही मासी होरें गी बुलाई लैना हा।

रवि : बड्डी भैन ते अज्जकल मांदी ऐ। हां मासी होरें गी गै बुलाना पौना ऐ।

शाम : जेकर सफर आस्तै कोई चीज चाहिदी होऐ ते मिगी दस्सी छोड़ेओ। में भजाई देड। कैमरा चाहिदा होऐ तां भेजी देड।

रवि : नेई जी, जो-जो चीजां मिगी पता हियां में पैहलें गै किट्ठियां करी लेई दियां न। इन्नी बड़मुल्ली जानकारी देने दा तुदा मता-मता धन्नवाद।

शाम : बहुत अच्छी बात है। माता-पिता सैर करने जाएं तो बच्चों को भी साथ ले जाना चाहिए। घर किसे छोड़ कर जा रहे हैं ? बड़ी बहन को बुला लेना चाहिए था या फिर मौसी जी को बुला लेना था।

रवि : बड़ी बहन जी तो आजकल बीमार हैं। हाँ मौसी जी को ही बुलाना होगा।

शाम : यदि सफर के लिए किसी वस्तु की जरूरत हो तो मुझे बता दीजिएगा मैं भिजवा दूंगा। कैमरा चाहिए भेज दूंगा।

रवि : नहीं जी, जो-जो वस्तुएं मुझे मालूम थीं मैंने पहले से ही जुटा ली हैं। इतनी बहुमूल्य जानकारी देने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

EXERCISES

1. Repitition Drill (पुनरुक्ति अभ्यास)

- 1) गर्मियें दियें छुट्टियें च कुस केहड़ी थाहर जाना चाहिदा ऐ ?
- 2) किशतबाड़ जां भद्रवाह जनेह थाहर जरूर दिक्खने चाहिदे न।
- 3) सफर आस्तै मतियें गल्लें दा ध्यान रक्खना लोड़दा ऐ।
- 4) पर्यटन विभाग कन्नै रावता करी लैना चाहिदा हा।
- 5) रौहने आहली थाहर जाची लैनी चाहिदी ही।

27) તુસે તાં જાનાં યોગીં યોગીં દેવાં હોગ, દસ્તે।

9) બરખા હોને ઉપ્પર ખબરૈં બરસાંતી કોટ બીં યોગીં હોએ।

10) ઠણ્ઠૂ ચ તુસેંગીં સ્વૈટર લાના પૌના એ।

11) ગર્મિયેં દે મૌસમ ચ તુસેં ગીં સૂતીં કપડેં યોગીં હોડન।

12) તુસ નેઈં હોંદે તાં મિગીં મતિયાં મુશ્કલાં ઝાલ્લને પૌનિયાં હિયાં।

13) મન્દર તગર તુસેં ગીં પૈદલ ગૈં જાના પૌના।

14) અઢ્ઠે થમાં ગઢ્ઠી પકડની પૌની એ।

15) કિશ્તબાઢ દી યાત્રા ચ તુસેંગીં પ્હાઢ ચઢને પૌને ન।

16) મન્દર દે રસ્તે ચ કેઈં ઢક્કિયાં ઉતરનિયાં પૌનિયાં ન।

17) દકાનદારૈં ગીં પૂરે પૈહે દેને લોઢદે ન।

18) ઘરા આસ્તૈં માસી હોર બુલાઈં લૈનિયાં લોઢદિયાં હિયાં।

19) સફર આસ્તૈં કિશ હોર ચીજાં બીં યોગીં હોન તાં મંગેઓ।

20) મેરા કૈમરા યોગીં હોગ તાં દસ્સેઓ।

2. Substitution Drill (સ્થાનાપન અભ્યાસ)

1) તુસેં ઘર જાના યોગીં એ। (ખાના)

તુસેં ફલ ખાના યોગીં એ। (ન્હૌના)

(લાના)

(પઢના)

(સૌના)

(હસ્સના)

(કુર્તા)

(પૈન)

3) મિગી ઘડી ચાહિદી હી।

(ટાર્ચ)

મિગી ટાર્ચ ચાહિદી હી।

(બોતલ)

(ચાહ)

(લસ્સી)

(પતીલી)

(સૂઈ)

4) તુગી ખતાઈયાં ચાહિદિયાં ન।

(સલાઈયાં)

તુસી સલાઈયાં ચાહિદિયાં ન।

(દુઆઈયાં)

(સૂઈયાં)

(તીલાં)

(બોતલાં)

5) શીલા ગી જાના પૌના એ।

(પઢના)

શીલા ગી પઢના પૌના એ।

(ગાના)

(નચ્ચના)

(ખેઢના)

उसी रीना ढौग।

(जगाना)

(चलाना)

(लखाना)

(जताना)

(करलाना)

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :-

1. गर्मियों दी छुट्टियों च रवि ने केह करना चाहिदा ऐ ?
2. किशतबाड़ जाने आस्तै रवि गी केहड़ियें गल्लें दा ध्यान रक्खना चाहिदा ऐ ?
3. किशतबाड़ च कसरी होई जाने उप्पर रवि गी केह करना चाहिदा ऐ ?
4. रवि ने सफर उप्पर कन्नै केह-केह लेई जाना चाहिदा ऐ ?
5. किशतबाड़ थमां सरथल देवी दे मन्दर तगर पुज्जने आस्तै रवि गी केह-केह करना ढौग ?
6. क्या सरथल देवी दे मन्दर बच्चे बी लेई जाने चाहिदे न ?
7. रवि ने घर कु'सी सद्दी लैना चाहिदा हा ?

4. कोष्ठक में दी गई क्रियाओं से रिक्त स्थान भरिए :-

1. किशतबाड़ चाहिदा ऐ। (जाना)
2. टार्च चाहिदी ऐ। (लैना)
3. सिर्फ जरूरी चीजां चाहिदियां न। (खरीदना)
4. रातीं स्वैटर ढौना ऐ। (लाना)
5. मुश्कलां ढौनियां हियां। (झल्लाना)

5. निम्नलिखित पंक्तियों का हिन्दी में अनुवाद करें :-

तुसें गी केह चाहिदा ऐ ? मिगी किश रपेऽ चाहिदे न। इक टार्च बी चाहिदी ऐ। क्या उसी दुआइयां चाहिदियां न। उ'नें गी इक जरसी चाहिदी ही। तुसें गी किन्नियां जरसियां चाहिदियां हियां। जेकर मेरे कोला किश चाहिदा होग तां मंगी लैएओ। जो-जो चीजां चाहिदियां होइन, में मंगोआई लैड।

Vocabulary शब्दावली

डोगरी	हिन्दी	डोगरी	हिन्दी
किश्तवाड़	किश्तवाड़ (डुंगर का एक पहाड़ी इलाका)	गर्मियें	गर्मियों
होइन	होंगी	थाहर	जगह
किन्नी	कितनी	नेकां	अनेक
पोंदी	पड़ती	समां	समय
खबरै	शायद	जेह	जैसे
लाड़ी	पत्नी	दिक्खने	देखने
दपैहरी	दोपहर को	गल्लें	बातें/बातों
रौसला	सुहावना	आस्तै	लिए
जंदा	जाता	केहड़ियें	कौन - सी
पौना	पड़ना	लोड़दा	चाहिए
बरखा	बारिश	जेकर	यदि
मिगी	मुझे	तुसें	आपने/तुमने
कम्मै दियां	उपयोगी	इ'नें	इन्हें
गल्लां दस्सियां	बातें बताईं	कन्नै	साथ
मतियां	बहुत (सारी)	बी	भी
		रावता	सम्पर्क
		लैना	लेना

झल्लने	झेलनी	ठैहरने	ठहरने
पौनियां	पड़तीं	जाची लै	जांच लें
ओपरे	अनजान	उप्पर	पर
जाइयै	जाकर	जंदे	जाते
पुच्छनी	पूछनी	मन्दर	मन्दिर
लेनियां	ले जानी	तगर	तक
में	मैं	बडलै	सुबह
दुआइयां	दवाइयाँ	न्हैरै	अन्धेरे
उत्थै	वहाँ	रुकदी	रुकती
दकानां	दुकानें	अद्धे	आधे
ढक्कियां	ढक्कियां	निक्के	छोटे
बड़ी	बहुत	चंगी	अच्छी
बब्ब	बाप	कु'सी	किसे/किसको
छोड़ियै	छोड़कर	बड्डी	बड़ी
भैन	बहन	सद्दी लैनी	बुला लेनी
फही	फिर	बलाई लैनी	बुला लेनी
दस्सी छोड़ेओ	बता देना	भजाई देना	भेज/भिजवा देना
लोड़दियां	चाहिए	पैहलें	पहले
किट्ठियां	इकट्ठीं	करी लेदियां	कर लीं
इन्नी	इतनी	बड़मुल्ली	बहुमूल्य
तुन्दा	आपका	मता	बहुत
आवा करदियां	आ रहीं	धन्नवाद	शुक्रिया
सरथल देवी	एक स्थानीय देवी		

टिप्पणियाँ

- 15.1 इस पाठ में आपने 'चाहिदा' (चाहिए) और 'पौना' (पड़ना) सहायक क्रियाओं के प्रयोग से परिचय किया है।
- 15.2 डोगरी में 'चाहिदा' सहायक क्रिया संज्ञार्थक रूपों वाली मुख्य क्रियाओं के साथ प्रयुक्त होती है और 'पौना' सहायक क्रिया संज्ञार्थक रूपों वाली मुख्य क्रिया तथा ईकारान्त मुख्य क्रिया के साथ प्रयुक्त होती है। जैसे :-

जाना चाहिदा ऐ।	'जाना चाहिए'
लिखना चाहिदा हा।	'लिखना चाहिए था'
जाना पेआ।	'जाना पड़ा'
जाना पौग।	'जाना पड़ेगा।'
रोई पेआ।	'रो पड़ा'

- 15.3 'चाहिदा' सहायक क्रिया अकर्मक और सकर्मक दोनों प्रकार की मुख्य क्रियाओं के साथ आती है और इसके वाक्यों का कर्ता कर्म कारक में आता है। जैसे :-

असें गी कु'त्थै जाना चाहिदा ऐ?	'हमें कहाँ जाना चाहिए?'
तुगी पढ़ना चाहिदा ऐ।	'तुम्हे पढ़ना चाहिए।'
मिगी कपड़े धोने चाहिदे न।	'मुझे कपड़े धोने चाहिएँ।'

- 15.4 अकर्मक मुख्य क्रियाओं के साथ 'चाहिदा' सहायक क्रिया पुलिङ्ग एकवचन में ही रहती है। जैसे :-

दस्सो हां कु'स-केहड़े थाहर जाना चाहिदा ऐ?
'बताइए कौन से स्थान पर जाना चाहिए?'
हूनै तगर उसी पुज्जना चाहिदा हा।
'अब तक उसे पहुँचना चाहिए था।'

रोज बमार रौंहे ओ कुसै डाक्टरै गी दस्सना ते चाहिदा ऐ।

‘रोज बीमार रहते हो किसी डाक्टर को दिखाना तो चाहिए।’

- 1 5.5 सकर्मक मुख्य क्रियाओं के साथ जब ‘चाहिदा’ सहायक क्रिया आती है तो इसके रूप वाक्य के कर्म के लिंग और वचन के अनुसार होते हैं। जैसे :-

पर्यटन विभाग दे कन्नै रावता करी लेना चाहिदा हा।

‘पर्यटन विभाग के साथ सम्पर्क कर लेना चाहिए था।’

किश्तवाड़ ते भद्रवाह जनेह् थाहर जरूर दिक्खने चाहिदे न।

‘किश्तवाड़ और भद्रवाह जैसे स्थान जरूर देखने चाहिएँ।’

ठैहरने दी थाहर बी दिक्खी-सुनी लेनी चाहिदी ऐ।

‘ठहरने की जगह भी देख-सुन लेनी चाहिए।’

सफर पर अपनी जरूरत दियां चीजां गै लेनियां चाहिदियां न।

‘सफर पर अपनी जरूरत की चीजें ही लेनी चाहिएँ।’

- 1 5.6 ‘चाहिदा’ क्रिया के साथ मुख्य क्रिया के स्थान पर जब कोई ‘संज्ञा’ होती है तो ‘चाहिदा’ के रूप संज्ञा के लिंग, वचन के अनुसार होते हैं। जैसे :-

दुआइयां चाहिदियां होंडन तां लब्धी जाडन।

‘दवाइयें चाहिएँ (होंगी) तो मिल जाएँगी।’

कैमरा चाहिदा होग तां दस्सेओ।

‘कैमरा चाहिए (होगा) तो कहिएगा।’

मिगी पैसे चाहिदे न।

‘मुझे पैसे चाहिएँ।’

उसी कताब चाहिदी ऐ।

‘उसे पुस्तक चाहिए।’

15.7 डोगरी में 'चाहिए' के अर्थ में 'चाहिदा' के सादृश्य पर 'लोड़दा' प्रयोग भी होता है।
जैसे :-

असेंगी कु'नें गल्लें दा ध्यान रक्खना लोड़दा ऐ?

'हमें किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?'

जे किश लोड़दा होग जरूर दस्सेओ।

'जो कुछ चाहिए (होगा) जरूर बतलाइएगा।'

15.8 'चाहिदा' वाले वाक्यों में काल और अर्थ संबन्धी सूचना योजक क्रिया के रूपों से होती है।
जैसे :-

चाहिदा ऐ 'चाहिए' चाहिदा होग, 'चाहिए होगा'

चाहिदा हा 'चाहिए था' चाहिदा होऐ 'चाहिए हो।'

15.9 'पौना' सहायक क्रिया अकर्मक और सकर्मक दोनों प्रकार की मुख्य क्रियाओं के साथ आती है। अकर्मक क्रियाओं के साथ दो रूपों में प्रयुक्त होती है।

(i) संज्ञार्थक रूपों के साथ

(ii) ईकारान्त रूपों के साथ

15.9.1 संज्ञार्थक रूपों के साथ यह पुलिङ्ग एक वचन में आती है और वाक्य का कर्ता कर्म कारक में होता है। जैसे :-

उ'नें गी टुरना पेआ।

'उन्हें चलना पड़ा।'

जागतै गी पढ़ना पौग।

'लड़के को पढ़ना पड़ेगा (होगा)'

उसी नच्चना पेआ।

'उसे नाचना पड़ा।'

15.9.2 सकर्मक क्रियाओं के ईकारान्त रूपों के साथ 'पौना' सहायक के रूप वाक्य के कर्ता के लिङ्ग, वचन तथा पुरुष के अनुसार प्रयुक्त होते हैं। जैसे :-

में हस्सी पेआ।

'मैं हँस पड़ा।'

अस हस्सी पे।

‘हम हँस पड़े।’

ओह हस्सी पेई।

‘वह हँस पड़ी।’

में हस्सी पौन्नी आं।

‘मैं हँस पड़ती हूँ।’

तुस हस्सी पवो।

‘आप हँस पड़ें।’

तूं हस्सी पौगी।

‘तुम हँस पड़ोगी।’

15.10 सकर्मक मुख्य क्रियाओं के साथ ‘पौना’ सहायक क्रिया आती है तो इसके रूप वाक्य के कर्म के अनुसार होते हैं। जैसे :-

रातीं लै स्वेटर ते तुसें लाना गै पौना ऐ।

‘रात को स्वेटर तो आपको पहनना ही पड़ेगा।’

गर्म कपड़े ते लेने गै पौने न।

‘गर्म कपड़े तो ले जाने ही पड़ेंगे।’

रस्ते च इक पहाड़ी बी चढ़नी पौनी ऐ।

‘रास्ते में एक पहाड़ी भी चढ़नी पड़ेगी।’

बत्तै दियां मुश्कलां बी झल्लनियां पौनियां न।

‘रास्ते की मुश्किलें भी झेलनी पड़ेंगी।’

15.11 ‘पौना’ क्रिया के साथ मुख्य क्रिया के स्थान पर जब कोई संज्ञा आती है तो ‘पौना’ सहायक के रूप उस संज्ञा के लिंग, वचन के अनुसार होते हैं। जैसे :-

परूं मती ठंड पेई ही।

‘पिछले वर्ष अधिक ठंड पड़ी थी।’

ऐतकी मती गर्मी पेई ऐ।

‘इस साल अधिक गर्मी पड़ी है।’

चार साल पैहले काल पेआ हा।

‘चार वर्ष पूर्व अकाल पड़ा था।’

उसी कल मार पेई ही।

‘उसे कल मार पड़ी थी।’

15.12 'पौना' सहायक क्रिया के साथ मुख्य क्रिया का संज्ञार्थक रूप 'आकारान्त' के अतिरिक्त 'एकारान्त' या 'ऐकारान्त' भी होता है। जैसे :-

मिगी सफर पैदल तैह् करने पौना ऐ।

'मुझे सफर पैदल तय करना पड़ेगा (होगा)'

उसी ढक्की ढलने / ढलनै पौनी ऐ।

'उसे ढक्की उतरना पड़ेगी (होगी)'

मिगी कल उत्थै जाने / जानै पेआ।

'मुझे कल वहाँ जाना पड़ा।'



पाठ— 16
घर—परिवार
(घर—परिवार)

- | | |
|--|---|
| पूनम : मते चिरें दे तुस साढे घर नेई आए ? | पूनम : बहुत देर से आप हमारे घर नहीं आए। |
| प्रिया : गल्ल ते ठीक ऐ पर केह करां ?
मकान बनांदे—बनांदे साल होई
गेआ ऐ, अजें तगर पूरा नेई होआ। | प्रिया : बात तो ठीक है पर क्या करूं ?
मकान बनाते—बनाते साल हो गया
है, अभी तक पूरा नहीं हुआ। |
| पूनम : तां ते अज्जकल बड़ा कम्म होना ऐ। | पूनम : तब तो आजकल बहुत काम होगा। |
| प्रिया : होर केह, सारा दिन मजदूरें कन्नै
खपदे—खपदे ते समान ढोंदे—ढोंदे
सब जनें थक्की जन्ने आं। | प्रिया : और क्या, सारा दिन मजदूरों के
साथ खपते—खपते और समान
ढोते—ढोते सब लोग थक जाते हैं। |
| पूनम : रुट्टी बनी गई ? | पूनम : खाना बन गया ? |
| प्रिया : बनी ते गई पर गर्मी च फुल्ले
पकांदे—पकांदे परसा आई गेआ ऐ। | प्रिया : बन तो गया पर गर्मी में चपातियां
पकाते—पकाते पसीना आ गया है। |
| पूनम : गुड़िया कु'त्थै गेदी ऐ ? | पूनम : गुड़िया कहाँ गई है ? |
| प्रिया : ओह सेई गेदी ऐ। | प्रिया : वह सो गई है। |
| पूनम : ओह इन्नी तौले सेई गई। | पूनम : वह इतनी जल्दी सो गई। |
| प्रिया : हां, ओह रुट्टी खा करदी ही
ते रुट्टी खंदे—खंदे गै सेई गई। | प्रिया : हाँ, वह खाना खा रही थी और
खाना खाते—खाते ही सो गई। |
| पूनम : थुआढे कन्नै आहलें दे जागते
दा केह हाल ऐ ? | पूनम : आपके साथ वालों के लड़के का
क्या हाल है ? |
| प्रिया : ओहदा। ओह ते कल नैहरा च
डुबदे—डुबदे बचेआ। अस बी
मसीबता कोला बची गे। | प्रिया : उसका। वह तो कल नहर में
डूबते—डूबते बच गया। हम भी
संकट से बच गए। |

पूनम : अच्छा ते हून में चलनी आं
गुड़िया दे पापा आई गे न, सोनू
दे पापा बी आई गे लभदे न।

प्रिया : अज्ज ते बड़ा चिर लाई ओड़ेआ ?

रमेश : हां, कम्म ज्यादा हा। बैठे-बैठे
किश चिर गै होई गेआ ऐ। प्रिया,
अजकल बच्चे पढ़दे बी हैन जां
खेडी-खाढियै गै सेई जंदे न ?

प्रिया : सारा दिन नचदे गै रौहदे न।
आखा ते बिन्द मनदे गै नेई।

रमेश : में उ'नें गी आखनां जे रुट्टी
त्यार ऐ।

प्रिया : हां, पैहले रुट्टी खाई लैओ ते
फही लिखदे-पढ़दे र'वेओ।

रमेश : तूं अज्ज दिनेश हुंदे घर मुन्नने
उप्पर गेदी ही ?

प्रिया : हां, मिगी ते उन्दा घर बी पता
नेई हा पर फही बी पुछदी-पुछदी
पुज्जी गै गई।

रमेश : खरा कीता जाना जरूरी हा।
तूं बापस इक्कली गै आई ही ?

प्रिया : नेई, में ते नीलम किट्ठियां
आइयां हां। औंदे मौके मैटाडोर
आहले ने असें गी बड़ी दूर
लुआही ओड़ेआ ते गर्मी य चली-

पूनम : अच्छा तो अब मैं चलती हूँ। गुड़िया
के पापा आ गए हैं। सोनू के पापा
भी आ गए लगते हैं।

प्रिया : आज तो बड़ी देर लगा दी ?

रमेश : हाँ, काम अधिक था बैठे-बैठे कुछ
देर ही हो गई है। प्रिया, आजकल
बच्चे कुछ पढ़ते भी हैं या खेल-
कूद कर ही सो जाते हैं ?

प्रिया : सारा दिन नाचते ही रहते हैं।
कहना तो बिलकुल मानते ही नहीं।

रमेश : मैं उन्हें कहता हूँ कि खाना तैयार
है।

प्रिया : हाँ, पहले खाना खा लो और फिर
लिखते-पढ़ते रहना।

रमेश : तुम आज दिनेश के घर मुण्डन
पर गई थी ?

प्रिया : हाँ, मुझे तो उनका घर भी
मालूम नहीं था, पूछते-पूछते
पहुँच ही गई।

रमेश : अच्छा किया। जाना जरूरी था।
तुम वापस अकेली ही आई थी।

प्रिया : नहीं, मैं और नीलम इक्ठ्ठी आई
थीं। आते समय मैटाडोर वाले ने
हम को बहुत दूर उतार दिया और
गर्मी में चल-चल के मेरा बुरा

चलियै मेरा बुरा हाल होई गेआ।

हाल हो गया।

रमेश : होर सनाऽ उन्दे घरै का प्रोग्राम
कनेहा रेहा ?

रमेश : और बताओ उनके घर का
कार्यक्रम कैसा रहा ?

प्रिया : ओह ते शैल हा। इक नच्चने
आहली ते चार गाने आहलियां
सद्दी दियां हियां। रुट्टी बनाने
आहले ने बी कमाल कीते दा हा।
खाने आहले सारे गै तरीफ करा
करदे हे।

प्रिया : वह तो अच्छा था। एक नाचने
वाली और चार गाने वाली बुलाई
हुई थीं। खाना बनाने वाले ने भी
कमाल किया था। खाने वाले
सभी ही तारीफ कर रहे थे।

रमेश : अच्छा। तां सच्च गै कमाल हा।
पर ओह गाने आहलियां कुड़ियां
कु'न हियां ?

रमेश : अच्छा। तो सच ही कमाल था।
पर, वे गाने वाली लड़कियाँ कौन
थीं ?

प्रिया : उन्दा ते पता नेई पर नच्चने
आहली कुड़ी कुतूं बाहरा दा
आई दी ही। दिखने आहले
लोक बी इ'यै पुच्छा करदे हे।

प्रिया : उनका तो मालूम नहीं, पर नाचने
वाली लड़की कहीं बाहर से आई
हुई थी। देखने वाले लोग भी यही
पूछ रहे थे।

रमेश : रुट्टी बनाने आहला लुहाई
इत्थूं दा हा जां उ'ब्बी कुतूं
बाहरा दा सद्दे दा हा ?

रमेश : रोटी बनाने वाला हलवाई यहीं से
था या वह भी कहीं बाहर से
बुलाया गया था ?

प्रिया : ओह शायद इत्थूं दा गै हा।
सुनो, तुस बी थक्के दे होंगेओ,
बिन्द रमान करी लैओ।

प्रिया : वह तो शायद यहीं से था। सुनिये,
आप भी थके होंगे कुछ, आराम
कर लीजिए।

रमेश : चलो। लेटे-लेटे अखबार गै
पढ़ी लैन्नां।

रमेश : चलो। लेटे-लेटे अखबार ही पढ़
लेता हूँ।

1. Repetition Drill (पुनरुक्ति अभ्यास)

1. मकान बनांदे-बनांदे साल होई गेआ ऐ।
2. मजदूरें कन्नै खपदे-खपदे ते समान ढोंदे-ढोंदे थक्की जन्ने आं।
3. गर्मी च फुल्के पकांदे-पकांदे परसा आई गेआ ऐ।
4. गुड़िया रुट्टी खंदे-खंदे गै सेई गई।
5. सारा दिन नचदे-टपदे ते पौड़ियां चढदे-उतरदे रौंहदे न।
6. उन्दे घर पुछदी - पछांदी पुज्जी गै गई।
7. लोग खाई-खाइयै बस नेई करा दे हे।
8. सब किश बनाई-बनूई ओड़ेआ ऐ आओ ते खाओ।
9. दफ्तर बी कम्मा च बैठे-बैठे थक्की जान होंदा ऐ?
10. छुट्टी आहले रोज सुत्ते-बैठे टैमां दा पता गै नेई लगदा।

2. Substitution Drill (स्थानापन्न अभ्यास)

Model (1)

गुड़िया खंदे-खंदे गै सेई गई।

(रोंदे-रोंदे)

गुड़िया रोंदे-रोंदे गै सेई गई।

जागत खेढदे-खेढदे थक्की गेआ।

(पढदे-पढदे)

(लिखदे-लिखदे)

(चलदे-चलदे)

Model (2)

जागत खेढी-खेढियै सेई गेआ।

(रोई-रोइयै)

जागत रोई-रोइयै सेई गेआ।

ओह चली-चलियै थक्की गई।

(पढ़ी-पढ़ियै)

(टूरी-टूरियै)

(पुछी-पुछियै)

3. Transformation Drill (रूपान्तरण अभ्यास)

Model (1)

में चलदे-चलदे थक्की गेआ।

में चलदे-चलदे थक्की गई।

में हसदे-हसदे रोई पेआ।

तूं डिगदे-डिगदे बचेआ।

ओह चलदे-चलदे रुकी गेआ।

Model (2)

अस खेढदे-खेढदे भुल्ली गे।

अस खेढदे-खेढदे भुल्ली गेइयां।

अस जंदे-जंदे बेही गे।

तुस आखदे-आखदे रेही गे।

ओह तुपदे-तुपदे आई पुज्जे।

4. उदाहरणों का अनुसरण करते हुए दी गई क्रियाओं के रूप बनाइए :-

उदाहरण :-	औना	औंदे-जंदे
	देना
	उट्ठना
	चढ़ना
उदाहरण :-	लिखना	लिखदे-पढ़दे
	खाना
	न्हौना
	आखना

5. पाठ की सहायता से रिक्त स्थान भरिए :-

1. मजदूरें कन्ने ते समान सब जनें थक्की जन्ने आं।

2. गर्मी च फुल्के परसा आई गेआ ऐ।

3. गुड़िया रुट्टी गै सेई गेई।
4. अज्जकल बच्चे पढ़दे बी हैन जां सेई जंदे न।
5. सारा दिन ते रौंहदे न।
6. सोनू उट्ठ ते उट्ठियै लै।
7. सोनू तूं न्हाई लेआ ऐ ते जा किश ते पढ़।
8. सब किश ओड़ेआ ऐ आओ ते खाओ।
9. गर्मी च मेरा बुरा हाल होई गेआ।

6. पढ़िए, समझिए और लिखिए :-

पीना-

पींदे-पींदे

पी-पीऐ

लेटना-

लेटदे-लेटदे

लेटी-लेटियै

दौड़ना

.....

.....

पकाना

.....

.....

खपना

.....

.....

बनाना

.....

.....

चलना

.....

.....

रोना

.....

.....

7. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :-

1. प्रिया गी केह करदे साल होई गेआ ?
2. गर्मी च केह करदे परसा आई गेआ ?
3. सारा दिन बच्चे केह करदे रौंहदे न ?
4. प्रिया दिनेश हुन्दे घर कि'यां पुज्जी ?

5. प्रिया ने सोनू गी केह करने आस्तै आखेआ ?
6. गर्मी च ओह्दा बुरा हाल कि'यां होआ ?
7. दफ्तर केह करदे थक्की जान होंदा ऐ ?
8. छुट्टी आहले दिन केह करदे टैमा दा पता नेई चलदा ?

8. निम्नलिखित कृदन्तों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए :-

बनांदे-बनांदे,	खपदे-खपदे,	ढोंदे-ढोंदे,	पकांदे-पकांदे,
डुबदे-डुबदे,	खेढी-खाढियै,	चढ़दे-उतरदे,	नचदे-टपदे,
लिखदे-पढ़दे,	पुछदी-पछांदी,	खाई-खाइयै,	चली-चलियै,
न्हाई-न्हूई,	दिक्खी-सुनी,	खाई-पी,	लेटे-लेटे,
सुत्ते-बैठे,	बैठे-बैठे,		

Vocabulary शब्दावली

बनांदे-बनांदे	बनाते-बनाते	खपदे-खपदे	खपते-खपते
ढोंदे-ढोंदे	ढोते-ढोते	पकांदे-पकांदे	पकाते-पकाते
खंदे-खंदे	खाते-खाते	डुबदे-डुबदे	डूबते-डूबते
करदे-करदे	करते-करते	खेढी-खाढियै	खेल-कूद कर
नचदे-टपदे	नाचते-कूदते	चढ़दे-उतरदे	चढ़ते-उतरते
लिखदे-पढ़दे	लिखते-पढ़ते	पुछदी-पछांदी	पूछते-पूछते
खाई-खाइयै	खा-खाकर	चली-चलियै	चल-चलकर
न्हाई-न्हूई	नहा-वहा	दिक्खी-सुनी	देख-सुन
खाई-पी	खा-पीकर	बैठे-बैठे	बैठे-बैठे

लेटे-लेटे	लेटे-लेटे	इक्कली	अकेली
पुज्जी	पहुँची	बजारा	बाज़ार से
अज्ज	आज	मुन्नन	मुंडन संस्कार
आह्ले	वाले	तौले	जलदी
थक्की	थकी	कु'त्थै	कहाँ
सेई	सो	जन्ने आं	जाते हैं
परसा	पसीना	थुआढ़े	आपके।
पौड़ियां	सीढ़ियाँ		

टिप्पणियाँ

- 16.1 इस पाठ में आप पुनरुक्त क्रियाओं तथा क्रियाओं के कर्तावाचक रूपों से अवगत हुए हैं।
- 16.2 डोगरी में पुनरुक्त क्रियाओं का प्रयोग अधिकतर वर्तमान कालिक और भूतकालिक क्रिया-रूपों की पुनरुक्ति से होता है। जैसे :-

बनांदे-बनांदे	‘बनाते-बनाते’
खन्दे-खन्दे	‘खाते-खाते’
बैठे-बैठे	‘बैठे-बैठे’
खड़ोते-खड़ोते	‘खड़े-खड़े’
नचदे-टपदे	‘नाचते-कूदते’
फिरी-फिरिदै	‘फिर-फिर कर’

- 16.3 वर्तमान कालिक क्रिया-रूपों से बनी पुनरुक्त क्रियाएं प्रायः दो रूपों में मिलती हैं :

- समान क्रियाओं की पुनरुक्ति से बनी
- भिन्न क्रियाओं की पुनरुक्ति से बनी

16.4 दो समान क्रियाओं से वर्तमान कालिक रूपों की पुनरुक्ति से बनी 'पुनरुक्त क्रियाएं' हैं :

मकान बनांदे-बनांदे साल होई गेआ ऐ।

'मकान बनाते-बनाते साल बीत गया है।'

फुल्के पकांदे-पकांदे परसा आई गेआ ऐ।

'रोटियाँ बनाते-बनाते पसीना आ गया है।'

सारा दिन मजूरें कन्नै खपदे-खपदे ते समान ढोंदे-ढोंदे थक्की गे आं।

'दिन भर मजदूरों से खपते-खपते और समान ढोते-ढोते थक गए हैं।'

यह सभी पुनरुक्त क्रियाएं एकारान्त रूप में आने के कारण अविकारी रूप में हैं और कार्य की निरन्तरता सूचित करते हुए क्रिया विशेषण का काम कर रही हैं।

16.5 वर्तमान कालिक क्रियाओं के ये पुनरुक्त रूप वाक्य के कर्ता के लिंग, वचन के अनुसार भी प्रयुक्त होते हैं। जैसे :-

ओह् रुट्टी खा करदी ही खंदी-खंदी गै सेई गई।

'वह खाना खा रही थी खाती-खाती ही सो गई।'

ओह्दियां स्हेलियां घर पुछदियां-पुछदियां आई गेइयां।

'उसकी सहेलियों घर पूछती-पूछती आ गई।'

ज्याणा रोंदा-रोंदा सेई गेआ।

'बच्चा रोता-रोता सो गया।'

16.6 दो भिन्न-भिन्न क्रियाओं के वर्तमान कालिक रूपों की पुनरुक्ति से बनी 'पुनरुक्त क्रियाएं' इस प्रकार हैं :-

बच्चे सारा दिन नचदे-टपदे रौंहदे न।

'बच्चे सारा दिन नाचते-कूदते रहते हैं।'

पैहले रुट्टी खाई लैओ ते फही लिखदे-पढ़दे र'वेओ।

‘पहले खाना खा लें फिर बाद में लिखते-पढ़ते रहें।’

इन दोनों उदाहरणों की पुनरुक्त क्रियाएं कर्ता के पुलिङ्ग-बहुवचनी रूप के अनुसार पुलिङ्ग बहुवचन में ही हैं। इसके साथ ही ये ‘एकारान्त’ रूप में आकर अविकारी भी रहती हैं। जैसे :-

कुड़ी नचदे-टपदे डिग्गी पेई।

‘लड़की नाचते-कूदते गिर पड़ी।’

कुड़ियां लिखदे-पढ़दे थक्की गईयां।

‘लड़कियाँ लिखते-पढ़ते थक गईं।’

नौकर नचदे-टपदे डिग्गी पेआ।

‘नौकर नाचते-कूदते गिर पड़ा।’

16.7 भूतकालिक क्रिया-रूपों से पुनरुक्त क्रियाएं भी दो प्रकार की होती हैं :-

- (i) समान क्रियाओं की पुनरुक्ति से बनी
- (ii) भिन्न क्रियाओं की पुनरुक्ति से बनी

16.8 दो समान भूतकालिक क्रिया रूपों से बनी पुनरुक्त क्रियाएं

बैठे-बैठे किश चिर गै होई गेआ।

‘बैठे-बैठे कुछ देर ही हो गई।’

खरा। लेटे-लेटे अखबार गै पढ़ी लैन्नां।

‘चलो। लेटे-लेटे अखबार ही पढ़ लेता हूँ।’

इन वाक्यों में भूतकालिक पुनरुक्त रूप क्रिया की स्थिति सूचित कर रहे हैं और ‘एकारान्त’ रूप में होने के कारण कर्ता के लिंग, वचन के अनुसार नहीं है। किन्तु ये वाक्य के कर्ता के अनुसार रूप ग्रहण करते हुए भी क्रिया विशेषणों का कार्य करते

हैं। जैसे :-

ओह बैठा-बैठा अखबार पढ़ता रहा।

‘वह बैठा-बैठा अखबार पढ़ता रहा।’

शीला लेटी-लेटी टी. वी. दिक्खा करदी ही।

‘शीला लेटी-लेटी टी. वी. देख रही थी।’

16.9 दो भिन्न-भिन्न क्रियाओं के भूतकालिक रूपों की पुनरुक्ति से बनी पुनरुक्त क्रियाएं हैं :-

तू सुत्ती-बैठी केह सोचदी रौहन्नी एं ?

‘तुम सोई-बैठी क्या सोचती रहती हो ?’

ओह बैठा-खड़ोता इक्कै गल्ल करदा रौहदा ऐ।

‘वह बैठा-खड़ा एक ही बात करता रहता है।’

ऊपर दिए गए वाक्यों में पुनरुक्त क्रियाएं कर्ता के लिंग, वचन अनुसार हैं और क्रिया विशेषण के अर्थ में प्रयुक्त हैं। यही पुनरुक्त क्रियाएं एकारान्त रूप में आकर अविकारी भी रहती हैं। जैसे :-

तू सुत्ते-बैठे केह सोचदी रौहन्नी एं ?

‘तुम सोए-बैठे क्या सोचती रहती हो ?’

ओह बैठे-खड़ोते इक्कै गल्ल करदा रौहदा ऐ।

‘वह बैठे-खड़े एक ही बात करता रहता है।’

16.10 पूर्व कालिक क्रिया रूपों की पुनरुक्ति से भी पुनरुक्त क्रियाएं बनती हैं और ऐसी पुनरुक्त क्रियाएं एक ही रूप में रहती हैं। जैसे :-

ज्याणे खेढी-खेढियै सेई जंदे न।

‘बच्चे खेल-खेल कर सो जाते हैं।’

फिरी-फिरियै मेरा हाल बुरा होई गेआ ऐ।

‘फिर-फिर कर मेरा हाल बुरा हो गया है।’

इन वाक्यों में 'खेढी-खेढियै' और 'फिरी-फिरियै' पूर्व कालिक क्रिया रूपों की क्रमशः 'खेढियै' और 'फिरियै' के पुनरुक्त रूप हैं। इन पुनरुक्त रूपों में संक्षेपीकरण की प्रवृत्ति रहती है इसीलिए 'फिरियै-फिरियै' के स्थान पर 'फिरी-फिरियै' और 'खेढियै-खेढियै' के स्थान पर 'खेढी-खेढियै' रूप प्रयुक्त होते हैं।

16.11

नच्चने आहली	'नाचने वाली'
गाने आहलियां	'गाने वाली'
खाने आहले	'खाने वाले'
रुट्टी बनाने आहला	'रोटी बनाने वाला'

क्रियाओं के कर्ता वाचक रूप हैं। ये संज्ञार्थक क्रियाओं को अन्त में 'आ' के स्थान पर 'ए' आदेश करके साथ में 'आहला' (वाला) लगाने से बने हैं और जिस क्रिया से बनते हैं उसके कर्ता के अर्थ का भाव प्रकट करते हैं।

16.12 क्रियाओं के कर्तावाचक रूप संज्ञा और विशेषण दो रूपों में प्रयुक्त होते हैं।

(i) संज्ञा के रूप में

चार गाने आहलियां सद्दी दियां न।

'चार गाने वाली बुलाई हुई हैं।'

रुट्टी बनाने आहले ने बी कमाल कीता हा।

'रोटी बनाने वाले ने भी कमाल किया था।'

(ii) विशेषण के रूप में

ओह गाने आहलियां कुड़ियां कु'न हियां ?

'वे गाने वाली लड़कियाँ कौन थीं ?'

रुट्टी बनाने आहला लुहाई इत्थूं दा हा ?

'रोटी बनाने वाला हलवाई यहाँ का था ?'

16.13 'गाने आहलियां' शब्द वाक्य में जब संज्ञा के अर्थ में प्रयुक्त होता तो संज्ञा की भूमिका निभाता है और यदि इसके साथ आगे कोई संज्ञा (जैसे कुड़ियां) जुड़ जाती है तो यह उस संज्ञा की विशेषता बतलाने के कारण विशेषण का काम करता है। जैसे गाने आहलियां कुड़ियां (गाने वाली लड़कियाँ)

16.14 कर्तवाचक क्रिया-रूप संज्ञा और विशेषण दोनों रूपों में कर्ता के लिंग, वचन कारक, के अनुसार रहते हैं। जैसे :-

(i) संज्ञा रूप में

पुलिंग

एकवचन रुट्टी बनाने आहले ने बी कमाल कीता हा।

'रोटी बनाने वाले ने भी कमाल किया था।'

(कर्ता कारक विभक्ति युक्त)

बहुवचन खाने आहले सारे गै तरीफ करा करदे हे।

'खाने वाले सभी तारीफ कर रहे थे।'

(कर्ता कारक सरल)

स्त्रीलिंग

एकवचन इक नच्चने आहली सद्दी दी ही।

(कर्म कारक सरल)

'एक नाचने वाली बुलाई (हुई) थी।'

बहुवचन चार गाने आहलियां बी सद्दी दियां हियां।

(कर्म कारक सरल)

'चार गाने वाली भी बुलाई (हुई) थीं।'

संज्ञा के रूप में आने पर इन कर्तवाचक रूपों में कारक के लिए भी परिवर्तन होता है।

(ii) विशेषण के रूप में

पुलिंग

एकवचन रुट्टी बनाने आह्ला लुहाई कुत्थूं दा हा ?
 'रोटी बनाने वाला हलवाई कहाँ का था ?'
बहुवचन दिक्खने आह्ले लोक बी इ'यै पुच्छा करदे हे ।
 'देखने वाले लोग भी यही पूछ रहे थे ।'

स्त्रीलिंग

एकवचन ओह नच्चने आह्ली कुड़ी कुतूं बाहरा दा आई दी थी ।
 'वह नाचने वाली लड़की कहीं बाहर से आई थी ।'
बहुवचन गाने आहलियां कुड़ियां कु'न हियां ?
 'गाने वाली लड़कियाँ कौन थीं ?'

विशेषण रूपों में प्रयुक्त होने पर ये कर्तावाचक रूप संज्ञा के लिंग, वचन और कारक के अनुसार होते हैं ।



पाठ-17
मेले जागे
(मेले जाएँगे)

नीतू : मीनू। तुगी अपना वायदा भुल्ली
गेआ ? इत्थै बैठे-बैठे केह सोचा
करनी एं ? चल तौले-तौले तयार
हो।

मीनू : तूं केहड़े वायदे दी गल्ल करा
करनी एं ? में केई वायदे कीते
होडन।

नीतू : तां एह गल्ल ऐ। चेता कर हां
उस दिन शवाले मंदर टुरदे-
टुरदे तूं केह आखेआ होग ?

मीनू : नीतू। में केइयें चीजें दे बारे च
आखदी होड। तूं दस्स तुगी केह
चाहिदा ऐ ? तूं इ'यां फलौहनियां
की पा करनी एं ? साफ-साफ
की नेई दसदी ?

नीतू : चीजें दे बारे च तूं कुसै होर गी
आखेआ होग। सच्चें-मुच्चें मिगी
तेरे शा किश नेई लोडदा ते नां
गै में कोई फलौहनियां पा करनी
आं। चेता कर हां तूं आखेआ
नेई हा जे शिवारात्री आहले दिन
अस साथें-साथें मंदर जागे। उत्थै
उस दिन बड़े प्रोग्राम होने न।

नीतू : मीनू। तुम अपना वादा भूल गई ?
यहाँ बैठे-बैठे क्या सोच रही हो ?
चल जल्दी से तैयार हो।

मीनू : तुम कौन से वादे की बात कर
रही हो ? मैंने तो केई वादे किए
होंगे।

नीतू : तो यह बात है। याद करो न उस
दिन शिवालय मन्दिर चलते-चलते
तूने क्या कहा होगा ?

मीनू : नीतू। मैं कई चीजों के बारे में
कहती हूँगी। तुम बताओ तुम्हें
क्या चाहिए। तुम इस प्रकार
पहेलियां क्यों बुझा रही हो ? साफ-
साफ क्यों नहीं कहती ?

नीतू : चीजों के बारे में तूने किसी और
से कहा होगा। यकीन मानो मुझे
तुम से कुछ नहीं चाहिए और न
ही मैं कोई पहेली बुझा रही हूँ।
याद करो तुमने कहा नहीं था
कि शिवारात्रि वाले दिन हम साथ-
साथ मन्दिर जाएँगे। उस दिन वहाँ
बहुत से कार्यक्रम होंगे।

मीनू : ठीक-ठीक। तू सच्च आखा करनी एं। में जरूर तुगी आखेआ होना ऐ ते घर आनियै मम्मी गी बी सनाया होग जे अस दोऐ रहोली-रहोली मंदर जागियां।

नीतू : तां ते मम्मी जाने आस्तै जरूर मन्नी जाडन ?

मीनू : हां। ओह ते पक्क गै मन्नी जाडन पर मुश्कल एह ऐ जे ओह इसलै घर नेई न ते नां गै मिगी पता ऐ जे ओह कु'त्थै गेइयां होडन।

नीतू : कोई गल्ल नेई तू अपनी भाबी गी सनाई आ ते चल। ओह ते घर गै होनी ऐ ?

मीनू : इसलै ओह बी घर नेई। पर, ओह अपनी भैन दे घर गै गेई होनी ऐ।

नीतू : उन्दे घर फोन ते होना गै तू उसी फोन पर दस्सी ओड़ ते फटोफट त्यार होई जा।

मीनू : फोन करने दी लोड़ नेई अस किश चिर बलगी लैन्ने आं। उ'न्नै तौले गै आई जाना ऐ।

नीतू : ठीक ऐ। इन्ने तगर तू त्यार होई जा। में तेरे आस्तै कपड़े तालनी आं।

मीनू : ठीक-ठीक। तुम सच कह रही हो मैंने जरूर तुम्हें कहा होगा और घर आकर मम्मी को भी बताया होगा कि हम दोनों साथ-साथ मंदिर जाएंगी।

नीतू : तब तो मम्मी जाने के लिए जरूर मान जाएंगी ?

मीनू : हाँ। वे तो पक्का मान जाएंगी पर मुश्किल यह है कि वे इस समय घर पर नहीं और न ही मुझे मालूम है कि वे कहाँ गई होंगी।

नीतू : कोई बात नहीं, तुम अपनी भाभी को कह दो और चलो। वह तो घर पर ही होगी ?

मीनू : इस वक्त वह भी घर पर नहीं। पर, वह अपनी बहन के घर तक ही गई होगी।

नीतू : उनके यहाँ फोन तो होगा ही तुम उसे फोन पर बता दो और जल्दी से तैयार हो जाओ।

मीनू : फोन करने की जरूरत नहीं। हम कुछ देर प्रतीक्षा कर लेते हैं वह जल्दी ही आ जाएगी।

नीतू : ठीक है। इतने में तुम तैयार हो जाओ। मैं तुम्हारे लिए कपड़ों का चयन करती हूँ।

मीनू : एह चंगी गल्ल ऐ। एह मेरी
लमारी ऐ। दस्स में केह लां ?

नीतू : दिक्ख। एह नीला टिमकड़े
आहला कनेहा शैल सूट ऐ !

मीनू : पर एह में अदुं तारा दे ब्याह
पर बी लाया हा।

नीतू : फही केह होआ तूं अज्ज बी
इसी लाई सकनी एं ?

मीनू : पर परती-परतिवै इक्कै सूट
लाना मिगी चंगा नेई लगदा।

नीतू : तां फही एह फुल्लें आहला सैल्ला
सूट लाई लै ते कनै एह सैल्ला
शाल बी लेई लै।

मीनू : शाल दी केह लोड़ ऐ ? इन्नी
ठण्ड ते होन नेई लगी।

नीतू : बेशक्क। हून भामें ठण्ड नेई ऐ
पर तुगी पता ऐ जे असें दिनभर
उत्थै मेला दिक्खना ऐ ते फही
उत्थै गै रातीं शिवजी दा ब्याह
बी सुनने दा प्रोग्राम बनाया हा ?

मीनू : हां। ओह ते ठीक ऐ।

नीतू : जि'यां-जि'यां दिन घरोग उ'आं
ठण्ड बी बधदी जाग। इसकरी
शालै बगैर ते तूं ठरी जागी।

मीनू : ठीक-ठीक। में समझी गई ओह
दिक्ख मेरी भाबी बी आई गई

मीनू : यह अच्छी बात है। यह मेरी
अलमारी है। वताओ क्या पहनूँ ?

नीतू : देखो। यह नीला बिन्दियों वाला
सूट कितना सुन्दर है !

मीनू : पर यह मैंने तब तारा की शादी
पर भी पहना था।

नीतू : तो क्या ? तुम आज भी इसे पहन
सकती हो ?

मीनू : किन्तु, बार-बार एक ही सूट
पहनना मुझे अच्छा नहीं लगता।

नीतू : तो फिर यह फूलों वाला हरा
सूट पहन लो और साथ में यह
हरा शाल भी ले लो।

मीनू : शाल की क्या जरूरत है ? इतनी
ठंड तो होगी नहीं।

नीतू : बेशक। इस समय चाहे सर्दी नहीं
है पर तुमको मालूम है कि हमने
दिन भर वहाँ मेला देखना है और
फिर रात को वहीं शिव विवाह
सुनने का प्रोग्राम भी बनाया था ?

मीनू : हाँ। वह तो ठीक है।

नीतू : जैसे-जैसे दिन ढलेगा वैसे-वैसे ठंड
भी बढ़ती जाएगी। इसलिए
शाल के बिना तो तुम ठिठुर जाओगी

मीनू : ठीक-ठीक। मैं समझ गई। वह
देखो मेरी भाभी भी आ गई है।

ऐ। हून तूं पज्ज मिन्ट बलग। में
फटाफट त्यार होई जन्नी आं।

नीतू : पज्ज की ? पन्द्रां मिन्ट बलगड।
तूं मजे-मजे कन्नै त्यार हो। फही
गै जाने दा बी अनन्द ऐ।

अब तुम पांच मिन्ट प्रतीक्षा करो।

मैं झटपट तैयार हो जाती हूँ।

नीतू : पाँच क्यों ? पन्द्रह मिनट प्रतीक्षा
करूंगी। तू मजे-मजे से तैयार
हो। तभी जाने का भी मज़ा है।

EXERCISES

1. मौखिक उत्तर दीजिए :-

1. नीतू मीनू गी केहड़े वायदे लेई चेता करा दी ही ?
2. नीतू ते मीनू दौनें शवाले मंदर कदूं जाना हा ?
3. शिवरात्री आहले रोज शवाले मंदर केह-केह होदा ऐ ?
4. मीनू ने नीतू गी किश चिर बलगने आस्तै की आखेआ ?
5. नीतू ने मीनू गी केहड़ा सूट लाने दी सलाह दित्ती ?
6. नीतू टिमकड़ें आहला नीला सूट लाने लेई की नेई मन्नी ?
7. नीतू ने मीनू गी शाल लैने आस्तै की आखेआ ?
8. नीतू केहड़ा सूट लाइयै मंदरै लेई त्यार होन लगी ही ?

2. उदाहरण वाक्यों के समान अलग-अलग वाक्य बनाएँ :-

ओह कु'त्थै गई होग ?

ओह कु'त्थै गइयां होडन ?

ओह कु'त्थै गेआ होग ?

ओह कु'त्थै गे होडन ?

राम कु'त्थै.....।

कुड़ियां कु'त्थै.....।

जागत कु'त्थै.....।

मुडे कु'त्थै.....।

3. Substitution Drill स्थानापन्न अभ्यास

- | | |
|----------------------------------|--------------|
| 1. में केई वायदे कीते होइन..... | (वायदे कीते) |
| में केई खत पढ़े होइन..... | (खत पढ़े) |
| | (कपड़े सीते) |
| | (कम्म कीते) |
| | (लोक दिक्खे) |
| | (लेख लिखे) |
| 2. तूं कुसै होर गी आखेआ होग..... | (आखेआ) |
| में रमा गी ठाकेआ होग | (ठाकेआ) |
| | (सनाया) |
| | (समझाया) |
| | (पढ़ाया) |
| | (पुछेआ) |

4. सहायक क्रिया के उपयुक्त रूप का प्रयोग करते हुए नीचे दिए गए वाक्यों के रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए। जैसे :-

में तुगी केइयें चीजें दे बारे च आखदी होइ। (होइ)

में उसी किश आखदा.....।

अस राधा गी किश पुछदे.....।

तूं मिगी रुट्टी खलांदी.....।

ओह मिगी टैलीफोन करदे.....।

पम्मी हून भिगी बलगदी.....।

अरुष ते शिखा स्कूल जंदे.....।

तुस कल शैहर गे.....।

5. कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर खाली स्थान भरिए :-

उदाहरण तूं इ'यां फलौहनियां की पा करनी एं? (फलौहनियां)

सच्चें-मुच्चें भिगी तेरे शा.....लोड़दा

कपड़ा/पैसा/किश/नेई

शिवरात्री आहले दिन अस.....मंदर जागे।

पल्ले/सार्थें-सार्थें/बडलै

अस किश चिर.....लैन्ने आं।

खेढी/खाई/बलगी

प्रथम और मध्यम पुरुषों के लिंग और वचन के अनुसार 'हो' - धातु के रूप बनाइये :-

उदाहरण

प्रथमपुरुष

	एकवचन	बहुवचन
पुलिंग	होड	होगे
स्त्रीलिंग	होड	होगियां

मध्यमपुरुष

	एकवचन	बहुवचन
पुलिंग
स्त्रीलिंग

अन्यपुरुष

एकवचन

बहुवचन

पुलिंग

.....

.....

स्त्रीलिंग

.....

.....

6. इन वाक्यों का डोगरी भाषा में अनुवाद कीजिए :-

चीजों के बारे में तूने किसी और से कहा होगा। यकीन मानो मुझे तुम से कुछ नहीं चाहिए।
न ही मैं कोई पहेली बुझा रही हूँ।

‘याद करो तुमने कहा नहीं था कि शिवरात्रि वाले दिन हम साथ-साथ मंदिर जाएँगे। उस दिन
वहाँ बहुत से कार्यक्रम होंगे।’

7. नीचे दिए गए वाक्यों की क्रिया के साथ कोष्ठक में दिए गए क्रिया-विशेषणों के उपयुक्त क्रिया विशेषण लगाइए :-

इत्थै बैठे-बैठे केह सोचा करनी एं (बैठे-बैठे)

.....की नेई दसदी ?

.....मंदिर जागे।

.....त्यार होई जा।

में.....त्यार होई जन्नी आं।

तू.....त्यार हो।

.....दिन घरोग।

.....ठण्ड बी बंधग।

जि'यां-जि'या, साथें-साथें, साफ-साफ, फटोफट-झटपट, मजे-मजे कन्नै,
उ'आं-उ'आं

Vocabulary शब्दावली

वायदा	'वादा'	कपड़े	'कपड़े'
गल्ल	'बात'	तालना	'चयन करना'
चेता	'याद'	टिमकड़े आह्ला	'बिंदियों वाला'
मंदर	'मंदिर'	कनेहा	'कैसा'
शवाला	'शिवालय'	शैल	'सुन्दर'
फलौहनी	'पहेली'	लाना	'पहनना'
आखना	'कहना'	अदू	'तब'
सच्चें-मुच्चें	सुचमुच	ब्याह	'विवाह'
लोड़दा	चाहिए	परती-परतियै	'बार बार'
शिवरात्री	शिवरात्रि	सूट	'सूट/जोड़ा'
रहोली	साथ-साथ	लगदा	'लगता'
जरूर	जरूर	फुल्ल	'फूल'
पक्क	जरूर/पक्का	सैल्ला	'हरा'
मुश्कल	'कठिन/मुश्किल'	कन्नै	'साथ'
फटोफट	'फटाफट'	शाल	'शाल'
लोड़	'जरूरत'	बलगना	'प्रतीक्षा करना'
ठण्ड	'सर्दी/ठण्ड'	चिर	'देर'
बेशक्क	'बेशक/निःसंदेह'	किश	'कुछ'
पता	'पता'	त्यार	'तैयार'
दिनभर	दिनभर	दिक्खना	'देखना'

सनाना	‘सुनाना’	जि‘या-जि‘यां	‘जैसे-जैसे’
दस्सना	‘बताना/दिखाना’	उ‘आ-उ‘आं	‘वैसे-वैसे’
चंगा	‘अच्छा’	बधना	‘बढ़ना’
चंगी	‘अच्छी’	बगैर	‘बिना’
लमारी	‘अल्मारी’	ठरना	‘ठिठुरना’
समझना	‘समझना’	पंज	‘पाँच’
भाबी	‘भाभी’	पंदरां	‘पंदरह’
मजे-मजे कन्नै	‘मजे-मजे से’		

टिप्पणियाँ

- 17.1 इस पाठ में आप डोगरी क्रियाओं के संदिग्ध अर्थों रूपों तथा संयुक्त क्रिया विशेषणों से परिचित हुए हैं।
- 17.2 डोगरी में संदिग्ध अर्थ अकर्मक और सकर्मक दोनों प्रकार की क्रियाओं में होता है। जैसे :-

अकर्मक	नां गै मिगी पता ऐ जे ओह कु‘त्थै गेइयां होडन। ‘न ही मुझे मालूम है कि वे कहाँ गई होंगी।’
सकर्मक	ते घर आनियै मम्मी गी बी सनाया होग। ‘और घर आकर मम्मी से भी कहा होगा।’
सकर्मक	नीलू ने नुमाइश दिक्खी होग किश आखी नेई सकदी ? ‘नीलू ने नुमाइश देखी होगी कुछ कह नहीं सकती।’

- 17.3 संदिग्ध क्रिया रूप भूतकाल और वर्तमान काल में बनते हैं और संदिग्ध अर्थ की सूचना ‘हो’ धातु के रूपों से होती है। मुख्य क्रिया से काल तथा कर्ता के लिंग वचन आदि की सूचना रहती है। जैसे :-

भूतकालिक रूपों में संदिग्ध अर्थ

में गेआ होड।	‘मैं गया हूँगा।’
अस गे होगे।	‘हम गए होंगे।’
तूं गेआ होगा।	‘तू गया होगा। तुम गये होंगे।’
तुस गे होंगेओ।	‘आप गये होंगे।’
ओह् गेआ होग।	‘वह गया होगा।’
ओह् गे होडन।	‘वे गए होंगे।’

स्त्रीलिंग

में गई होड।	‘मैं गई हूँगी।’
अस गेइयां होगियां।	‘हम गई होंगी।’
तूं गई होगी।	‘तू गई होगी। तुम गई होंगी।’
तुस गइयां होगियां।	‘आप गई होंगी।’
ओह् गई होग।	‘वह गई होगी।’
ओह् गेइयां होडन।	‘वे गई होंगी।’

ऊपर दिए गये उदाहरणों में ‘हो’ धातु संदिग्ध अर्थ के अतिरिक्त पुरुष आदि के विषय में भी सूचना दे रहा है।

17.4 वर्तमान कालिक रूपों में संदिग्ध अर्थ :-

वर्तमान काल में संदिग्ध अर्थ के लिए केवल मुख्य क्रिया के रूप में ही परिवर्तन होता है। भूतकाल के संदिग्ध अर्थ के लिए मुख्य क्रिया भूतकाल के रूप में होती है जैसे ‘गेआ’ (गया) और वर्तमान काल के संदिग्ध अर्थ के लिए वर्तमान काल के रूप में होती है। जैसे :-

में जंदा/जंदी होड	‘मैं जाता हूँगा/जाती हूँगी।’
ओह् जंदा/जंदी होग	‘वह जाता होगा/जाती होगी।’
तूं जंदा होगा।	‘तू जाता होगा/तुम जाते होंगे।’

तू जंदी होगी।	‘तू जाती होगी/तुम जाती होगी।’
अस जंदे होगे।	‘हम जाते होंगे।’
तुस जन्दियां होगियां।	‘आप जाती होंगी’
ओह् जंदे होडन।	‘वे जाते होंगे।’

आदि में

17.5	में रुट्टी खन्दा होड।	‘मैं खाना खाता हूँगा।’
	अस रुट्टी खन्दे होगे।	‘हम खाना खाते होंगे।’

ये वाक्य भी संदिग्ध अर्थ की सूचना दे रहे हैं अन्तर केवल इतना है कि यहाँ क्रिया के साथ कर्म का भी प्रयोग है। अतः यह सकर्मक क्रिया का संदिग्ध अर्थी रूप है। सकर्मक क्रियाओं के संदिग्ध अर्थी रूप भी अकर्मक क्रियाओं के समान बनते हैं जैसे ऊपर ‘जाना’ क्रिया से बने हैं।

- 17.6 सकर्मक क्रियाओं के भूतकालिक संदिग्ध अर्थ में क्रियाओं (मुख्य और सहायक) के रूप कर्म के समान होते हैं। इसलिए उनको कर्ता के लिंग, वचन, पुरुष आदि से कोई सम्बन्ध नहीं होता। यहाँ पर वे दोनों वाक्य के कर्म के लिंग और वचन के अनुसार आती हैं। जैसे :-

में कताब पढ़ी होग।	‘मैंने किताब पढ़ी होगी।’
तू कताब पढ़ी होग।	‘तूने किताब पढ़ी होगी।’
उ’नै कताब पढ़ी होग।	‘उसने किताब पढ़ी होगी।’
असें कताब पढ़ी होग।	‘हमने किताब पढ़ी होगी।’
तुसें कताब पढ़ी होग।	‘आपने किताब पढ़ी होगी।’

- 17.7 सकर्मक क्रियाओं के भूतकाल में वाक्य का कर्ता विभक्ति वाले कर्ता कारक में आता है। जैसे ऊपर दिए गए सभी वाक्यों में क्रमशः ‘में’ (मैंने), ‘तू’ (तुमने) ‘उ’नै’ (उसने) ‘असें’ (हमने) और ‘तुसें’ (आपने)। ये सभी कर्ता कारक की विभक्ति वाले रूप हैं।

उ’आ-उ’आं	वैसे-वैसे
जि’यां-जि’यां	जैसे-जैसे

17.8

तौले-तौले	जल्दी-जल्दी
ठीक-ठीक	ठीक-ठीक
साफ-साफ	साफ-साफ
साथें-साथें	साथ-साथ
रहोली-रहोली	साथ-साथ
फटो-फट	फटाफट
झटपट	झटपट
सच्चे-मुच्चे	सच-मुच

ये सभी संयुक्त क्रिया विशेषण हैं जो दो समान क्रियाविशेषणों के इकट्ठा आने से बने हैं।

17.9

तौले गै	जल्दी ही
जरूर गै	जरूर ही
दिनभर	दिनभर
राती बेल्लै	रात के समय
पक्क गै	अवश्य ही
अज्ज बी	आज भी
उत्थै बी	वहीं

ये भी संयुक्त क्रिया विशेषण हैं लेकिन इनमें क्रिया विशेषण के साथ बलसूचक शब्द है।



पाठ-18
गल्लें-गल्लें च
(बातों-बातों में)

- | | |
|--|---|
| मधु : केह बना दा ऐ ? | मधु : क्या बनाया जा रहा है ? |
| माधवी : किश नेई बस इक लेख लिखना हा। हत्थ पीड़ा मूजब सुधा कोला लखाऽ करनी आं। | माधवी : कुछ नहीं। बस एक लेख लिखना था। हाथ में दर्द के कारण सुधा से लिखवा रही हूँ। |
| मधु : कुसै होर कोला लखोआई लैना हा। | मधु : किसी और से लिखवा लेना था। |
| माधवी : की ? सुधा शैल लिखदी ऐ। होर कुसै कोला लखोआने दी केह जरूरत ऐ। | माधवी : क्यों ? सुधा अच्छी तरह लिखती है। और किसी से लिखवाने की क्या जरूरत है। |
| मधु : अच्छा। सुधा केहड़ी क्लासै च पढ़दी ऐ ? | मधु : अच्छा। सुधा कौन सी कक्षा में पढ़ती है ? |
| माधवी : बाहरमीं च। खरा कीता तुस आइयां। | माधवी : बारहवीं में। अच्छा किया आप आई। |
| मधु : में ते सिमरन गी बी औने आस्तै आखेआ हा। पर ओह बच्चें गी पढ़ाऽ करदी ही। माधवी, तूं बड़ा शैल स्वेटर लाए दा ऐ। दसस हां केह बनोआ दा ऐ अज्जकल ? | मधु : मैंने तो सिमरन को भी आने केलिए कहा था। परन्तु वह बच्चों को पढ़ा रही थी। माधवी, तुमने बहुत अच्छी स्वेटर पहनी है। बताओ तो क्या बुना जा रहा है आजकल। |
| माधवी : बनोना केह ऐ। अज्जकल जां ते बने बनाए खरीदने आं जां फही कुसै कोला बनोआन्ने आं। | माधवी : बुना क्या जाना है। आजकल या तो बने बनाए खरीदते हैं या फिर किसी से बनवाते हैं। |

एह स्वेटर ते मेरी भाबी ने
बनाया ऐ।

यह स्वेटर तो मेरी भाभी ने
बनाई है।

मधु : तुसें सुनेआं होना रघु होर बस
ऐक्सीडेंट च बाल-बाल बचे।
छड़े आपूं गै नेई बचे उ'नें होरनें
गी बी बचाया ते फही जेहड़े घट्ट
जख्मी होए दे हे उ'नें गी स्थानी
हस्पताल भेजेआ ते मते जख्मिये
गी बाहर भजोआया।

मधु : आपने सुना होगा रघु जी बस
दुर्घटना में बाल-बाल बचे
और औरों को भी बचाया।
फिर जो कम घायल थे उनको
स्थानीय हस्पताल भेजा और
अधिक गम्भीर घायलों को
बाहिर भिजवाया।

माधवी : शुकर ऐ कोई-ऐसी वैसी
गल्ल नेई होई। मधु, क्या तुगी
गर्मी नेई लगदी ? सुधा, जे एह
पक्खा चलदा ऐ तां चलाऽ हां ?
मेरे शा ते चलेआ नेई।

माधवी : शुक्र है कोई-वैसी बात
नहीं हुई। मधु, क्या तुम्हें गर्मी
नहीं लगती है ? सुधा, यदि यह
पंखा चलता है तो ज़रा चला दो।
मुझ से तो चला नहीं।

सुधा : मेरे कोला बी एह नेई चलदा।
गोपाल कोला चलोआन्नी आं।

सुधा : मुझ से भी यह नहीं चलता।
गोपाल से चलवाती हूँ।

मधु : रितु गी सद्दना हा। कि'यां
सदचै ?

मधु : ऋतु को बुलाना था। कैसे
बुलाएँ ?

सुधा : हूनै नौकरे गी भेजियै सदानी
आं।

सुधा : अभी नौकर को भेजकर
बुलवाती हूँ।

मधु : सन्नी कु'त्यू ऐ ? जागेआ
नेई ?

मधु : सन्नी कहाँ है। क्या अभी तक
सोया हुआ है ? जागा नहीं ?

सुधा : ओह आपूं कु'त्यू जागदा ऐ।
उस्सी ते जगाना पौंदा ऐ।
जगोआन्नी आं।

सुधा : वद खुद कहाँ जागता है।
उससे तो जगाना पड़ता है।
जगवाती हूँ।

मधु	: माधवी ते इत्थै गै ही। हून कु'त्थै गेई।	मधु	: माधवी तो यहाँ थी। अब कहाँ गई ?
सुधा	: दादी जी बमार न। ओह् आपूं उट्टी-बेही नेई सकदियां, उ'नें गी ठुआलना-बुहालना पौंदा ऐ। अम्मा उ'नें गी बुहाला करदियां न।	सुधा	: दादी जी बीमार हैं। वह स्वयं उठ-बैठ नहीं सकती हैं। उनको उठाना-बैठाना पड़ता है। माँ उनको बिठा रही है।
मधु	: सुधा, एह टोकरी चुक्क ते अंदर रक्ख। में दादी गी दिक्खियै औन्नी आं।	मधु	: यह टोकरी उठाओ और अंदर रखो। मैं दादी को देखकर आती हूँ।
सुधा	: एह बड़ी भारी ऐ। नौकरै शा गै चकान्नी आं।	सुधा	: यह बहुत भारी है। नौकर से ही उठवाती हूँ।
मधु	: हां, ओह्दे कोला गै चकोआ। लेई जा ते अंदर रखोआऽ।	मधु	: हाँ, उससे ही उठवा। ले जाओ और अन्दर रखवाओ।
सुधा	: एह्दे च किश अम्ब न सारें गी खलाएआं, दादी गी बी।	सुधा	: इसमें कुछ आम के फल हैं। सभी को खिलाना। दादी जी को भी।

EXERCISES

1. Repetition Drill (पुनरुक्ति अभ्यास)

1. इक लेख लिखना हा।
2. सुधा कोला लखाऽ करनी आं।
3. कुसै होर कोला लखोआई लैना हा।
4. सुधा बाहरमीं च पढ़दी ऐ।
5. ओह् ज्याणें गी पढ़ाऽ करदी ही।
6. हून ते जां बने - बनाए खरीदने आं ते जां बनोआन्ने आं।

7. ओह छड़े आपूं गै नेई बचे, होरनें गी बी बचाया।
8. उ'नें गी स्थानी हस्पताल भेजेआ ते किश जखिमये गी बाहर भजोआया।
9. सुधा, एह पक्खा चलदा ऐ तां चलाऽ हां। नेई, गोपाल कोला चलोआन्नी आं।
10. उसी जगाना पौंदा ऐ, जगोआन्नी आं।
11. अम्मा दादी होरें गी बुहाला करदियां न।
12. एह पैकट नौकरै गी चकाऽ ते अंदर रखोआऽ।

2. Transformation Drill (रूपान्तरण अभ्यास)

Model (1)

सुधा लिखा करदी ऐ।
 सुधा गी लखाऽ करनी आं।
 सिमरन पढ़ा करदी ऐ।
 सन्नी जागा करदा ऐ।
 नौकर चुक्का करदा ऐ।
 मधु खा करदी ऐ।

Model (2)

दादी जी, उट्ठो।
 दादी जी गी ठुआलो।
 जखमी बाहर भेजो।
 सुधा, पैकट चुक्क।
 मधु, पानी पी।
 सन्नी, जाग।

3. Substitution Drill (स्थानापन्न अभ्यास)

Model (1)

सन्नी लखांदा ऐ।
 सन्नी पढ़ांदा ऐ।

Model (2)

(पढ़)

अम्मा ने दादी गी बुहालना ऐ। (सौ)

अम्मा ने दादी गी सुआलना ऐ।

(चुक्क)

(खा)

(बन)

(पी)

(सुन)

(जाग)

(बच)

(चल)

4. निम्नलिखित क्रियाओं के प्रेरणार्थक रूप बनाकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए :-
 पढ़ना, लिखना, खाना, चुक्कना, पीना, बुनना, चलना।

Vocabulary शब्दावली

लेख	लेख	घट्ट	कम
पीड़ा मूजब	दर्द के कारण	जख्मी	घायल
लखाऽ	लिखा	भेजेआ	भेजा
कोला	से/द्वारा	मते जख्मी	गम्भीर घायल
लखोआई लैना हा	लिखवा लेना था	भजोआया	भिजवाया
खरा	अच्छा	चलोआन्नी आं	चलवाती हूँ
पढ़ाऽ करदी ही	पढ़ा रही थी	सद्दना	बुलाना
बनोआ करदा ऐ	बुना जा रहा है	सदचै	बुलाएं
बनोना	बुना जाना	भेजियै	भेज कर
बुने-बनाए	बुने-बुनाए	सदानी आं	बुलवाती हूँ
खरीदने आं	खरीदते हैं	सुत्तै दा	सोया हुआ
बनोआन्ने आं	बुनवाते हैं	जागेआ	जागा
लगदा	लगता	उसी	उसको
बाल-बाल बचे	बाल-बाल बचे	जगाना	जगाना
छड़े	केवल	जगोआन्नी आं	जगवाती हूँ
बचे	बचे	बेही	बैठी
होरनें गी	औरों को	बुहालना	बिठाना
बचाया	बचाया	बुहाला करदियां न	बिठा रही हैं
दादी जी	दादी जी	चुक्क	उठा
रक्ख	रख	बड़ा	बहुत/बड़ा
भारा	भारी	चकवानी आं	उठवाती हूँ
चकोआऽ	उठवा	पानी	पानी
पीना	पीना	पलाऽ	पिला
लेआन्नी	लाती (हूँ)	खलांऽ	खिलाऊं
खलाऽ	खिला		

18.1 इस पाठ में आप डोगरी क्रियाओं के प्रेरणार्थक रूपों से परिचित हुए हैं।

18.2 जब कोई कर्ता स्वयं काम न करके किसी दूसरे को करने की प्रेरणा देता है अथवा किसी से करवाने की प्रेरणा देता है तब क्रिया के रूप प्रेरणार्थक होते हैं। जैसे :-

में सुधा कोला लखाऽ करनी आं।

‘में सुधा से लिखा रही हूँ।’

होर कोह्दे कोला लखवोआना हा ?

‘और किससे लिखवाना था?’

पहले वाक्य में कर्ता ‘में’ (मैं) ने स्वयं न लिख कर सुधा को लिखने के लिए प्रेरित किया है। और दूसरे वाक्य में किसी अन्य व्यक्ति से लिखने का काम करवाने का भाव व्यक्त है।

पहले वाक्य का क्रिया रूप प्रथम प्रेरणार्थक है और दूसरे वाक्य का द्वितीय प्रेरणार्थक।

18.3 प्रेरणार्थक क्रियाएं अकर्मक और सकर्मक दोनों प्रकार की क्रियाओं से बनती हैं।

i) अकर्मक क्रियाओं से

रमा ने सीता गी सोआलेआ।

‘रमा ने सीता को सुलाया।’

रमा ने सीता गी सलोआया।

‘रमा ने सीता को सुलवाया।’

अम्मा उ’नें गी बोहालदियां न।

‘अम्मा उन्हें बिठलाती हैं।’

अम्मा उ’नेंगी बलोहांदियां न।

‘अम्मा उन्हें बिठलवाती हैं।’

ii) सकर्मक क्रियाओं के

टोकरी बड़ी भारी ऐ नौकरै शा चकान्नी आं।

‘टोकरी बहुत भारी है नौकर से उठवाती हूँ।’

हां ओह्दे कशा गै चकोआऽ।

‘हाँ उसी से उठवाओ।’

18.4 डोगरी में क्रियाओं के प्रेरणार्थक रूप निम्न प्रकार के होते हैं :-

18.4.1 प्रथम प्रेरणार्थक रूप के लिए ‘आऽ’ जुड़ता है और दूसरे प्रेरणार्थक रूप के लिए ‘ओआऽ’। जैसे :-

में बच्चें गी स्कूल भेजा करनी आं।

‘में बच्चों को स्कूल भेज रही हूँ।’

में बच्चें गी स्कूल भजोआऽ करनी आं।

‘में बच्चों को स्कूल भिजवा रही हूँ।’

इसी प्रकार चलना क्रिया से :-

चलाऽ

(चला)

चलोआऽ (चलवा)

‘बुनना’ क्रिया से :-

बनाऽ

(बुना)

बनोआऽ (बुनवा) रूप बनते हैं।

18.4.2 सौ (सो), ‘न्हौ’ (नहा), ‘बौह’ (बैठ) आदि औकारान्त धातुओं को औकारान्त बना कर प्रथम प्रेरणार्थक के लिए आव् और दूसरे प्रेरणार्थक के लिए ‘लोआऽ’ जोड़ने से प्रेरणार्थक क्रिया रूप बनते हैं। जैसे :-

रमा दादी गी नोहालदी ऐ

‘रमा दादी को नहलाती है।’

रमा दादी को किसी से नलोहांदी ऐ

‘रमा दादी को किसी से नहलवाती है।’

इसी प्रकार ‘सौना’ (सोना) क्रिया से :-

सोआलना (सुलाना) सलोआना (सुलवाना)

बोहालना (बिठाना) बलोहाना (बिठलवाना)

18.4.3 'घुल्' (पिघल) 'मिल्' (मिल) 'जुड़' (जुड़) आदि धातुओं के प्रेरणार्थक इस प्रकार बनते हैं।

प्रथम प्रेरणार्थक

घुलना — घलाऽ — ना (पिघलाना)

मिलना — मलाऽ — ना (मिलाना)

जुड़ना — जड़ाऽ — ना (जुड़ाना)

द्वितीय प्रेरणार्थक

घलोआऽ — ना (पिघलवाना)

मलोआऽ — ना (मिलवाना)

जड़ोआऽ — ना (जुड़वाना)

प्रयोग

शशि घ्यौ घलाऽ।

'शशि घी पिघलाओ'

शशि घ्यौ घलोआऽ।

'शशि घी पिघलवाओ।'

18.4.4. 'उट्ठ' (उठ) 'उतर' (उतर) आदि 'उ' से आरम्भ होने वाली धातुओं के प्रेरणार्थक क्रिया रूप इस प्रकार बनते हैं :-

प्रथम प्रेरणार्थक

उट्ठना (उठना)

ठोआलना (उठाना)

उतरना (उतरना)

तोआरना (उतारना)

द्वितीय प्रेरणार्थक

ठलोआऽ—ना (उठवाना)

तरोआऽ—ना (उतरवाना)

18.5 'खा' 'पी' आदि कुछ धातुओं के प्रेरणार्थक रूप बनाते समय 'ल्' का आगम होता है जैसे :-

प्रथम प्रेरणार्थक

खा (खा) — खलाऽ — ना (खिलाना)

पी (पी) — पलाऽ — ना (पिलाना)

द्वितीय प्रेरणार्थक

खलोआऽ — ना (खिलवाना)

पलोआऽ — ना (पिलवाना)

प्रयोग

प्रथम प्रेरणार्थक

रमा, राजू गी रुट्टी खलाऽ।

‘रमा राजू को खाना खिलाओ’।

द्वितीय प्रेरणार्थक

रमा, राजू गी रुट्टी खलोआऽ।

‘रमा राजू को खाना खिलवाओ।’

18.5.5. सु’ट्ट (फेंक), धो (धो), दे (दे), आख् (कह), सी (सी), आदि धातुओं से केवल द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया रूप बनते हैं। जैसे :-

सु’ट्ट _____ सट्टहाऽ/सटोहाऽ—ना ‘फेंकवाना’

धो _____ धोआऽ — ना ‘धुलवाना’

दे _____ दोआऽ — ना ‘दिलवाना’

आख् _____ खोआऽ — ना कहलवाना

सी _____ सेआऽ — ना सिलवाना

‘मैंने माली से कूड़ा फेंकवाया’।

रमा ने माता जी कशा पैसे दोआए।

‘रमा ने माता जी से पैसे दिलवाए।’

एह गल्ल राधा ने कुसै शा खोआई।

‘यह बात राधा ने किसी से कहलवाई।’

में कपड़े दर्जी शा नेई सेआंदी।

‘मैं कपड़े दर्जी से नहीं सिलवाती।’



पाठ-19
डोगरी कान्फ्रेंस
(डोगरी कान्फ्रेंस)

सुशील : कल मिगी मनोज होर मिले हे,
में उ'नें गी सनाया हा जे डोगरी
साहित्य सभा, भड्डू आसेआ
सैमीनार कीता जा करदा ऐ।
पर अजें तगर ओह पुजे नेई।

सुशील : कल मुझे मनोज जी मिले थे।
उन्हें सुनाया था कि डोगरी
साहित्य सभा, भड्डू की ओर
से सेमिनार किया जा रहा है।
परन्तु अभी तक वह पहुँचे नहीं।

शिवदेव : मिगी बी उ'नें गै सनाया। इ'यां ते
मिगी इत्तलाह ही जे सैमीनार होआ
करदा ऐ पर भुल्ली मेदा हा। इस
ब'रै इस संस्था आसेआ होर केह-
केह आयोजन कीते जा करदे न?

शिवदेव : मुझे भी उन्होंने ही सुनाया। ऐसे
तो मुझे सूचना थी कि सेमिनार हो
रहा है परन्तु भूल गया था। इस
वर्ष इस संस्था की ओर से और क्या-
क्या आयोजन किये जा रहे हैं?

सुशील : जि'यां हर ब'रै लोक मेला
लाया जंदा ऐ, लोकगीत-संगीत
दे कार्यक्रम कीते जंदे न, नमैश
लाई जंदी ऐ ते गोश्टियां
कीतियां जंदियां न-एह सब ते
इस ब'रै बी कीता गै जाग।
इसदे अलावा इक कार्य शाला
कीती करदी ऐ ते दो विशेष
बैठकां बी कीतियां जा करदियां न।

सुशील : जैसे हर वर्ष लोकमेला किया
जाता है, लोकगीत-संगीत के
कार्यक्रम किये जाते हैं, प्रदर्शनी
लगाई जाती है और गोष्ठियां
की जाती हैं-यह सब तो इस
वर्ष भी किया ही जाएगा।
इसके इलावा एक कार्य शाला
की जा रही है और दो विशेष
सभाएं भी की जा रही हैं।

शिवदेव : मुख्य परीहने पुज्जी गेदे न जां नेई?

शिवदेव : मुख्य अतिथि पहुँच गए हैं कि नहीं?

सुशील : नेई, अजें नेई। उ'नें गी लैन
कुसै गी भेजेआ गेआ ऐ,
औंदे गै होने।

शिवदेव : नहीं, अभी नहीं। उनको लाने
किसी को भेजा गया है। आते
ही होंगे।

शिवदेव : पिछली बारी जिसलै में पुज्जा
उसलै वन्दना गोआ करदी ही।
चलो, अंदर चलियै बौहन्ने आं।
जे पिछें बारी आई तां किश नेई
सनोना।

सुशील : हां, तुसें ठीक आखेआ।
सैमीनार दी कारवाई किश
सनोग जां नेई नाहरे जरूर
सनोडन, जेहड़े बाहर बलोडन।

शिवदेव : कार्ड कड्डो हां, केहू-केहू
कार्यक्रम न ?

सुशील : नौ बजे उद्घाटन कीता जाना
ऐ। पैहले सत्र च स्वागती भाशन
पढ़ेआ जाना ऐ, फही गतिविधियें
दी रपोट पेश कीती जानी ऐ।
दुए सत्र च चार शोध पत्र पढ़ेने
न ते फही स'जां कहानी गोष्टी च
सत्त कहानियां पढ़ोनियां न।

शिवदेव : धुआढ़े शा पढ़ेआ ऐ एहू, कार्ड
पर ख'ल्ल बरीक अक्खरें च
केहू लखोए दा ऐ ?

सुशील : बगैर ऐनका किश अक्खर
पढ़ोए ते किश नेई। उप्परली
सतर पढ़ेई गेई ऐ पर ख'लकियां
दऊं नेई पढ़ोइयां। होना
किश जलपान बारै लखोए दा।

शिवदेव : पिछली बार जब मैं पहुँचा उस
समय वन्दना गाई जा रही थी।
चलो अन्दर चलकर बैठते हैं।
यदि पीछे बारी आई तो कुछ
नहीं सुना जाएगा।

सुशील : हाँ, आपने ठीक कहा।
सेमिनार की कार्यवाही कुछ सुनी
जा सकेगी या नहीं। नारे जरूर सुने
जाएँगे जो बाहिर बोले जाएँगे।

शिवदेव : कार्ड निकालो न, क्या-क्या
कार्यक्रम हैं ?

सुशील : नौ बजे उद्घाटन किया जाना
है। पहले सत्र में स्वागत भाषण
पढ़ा जाना है, फिर गतिविधियों
की रिपोर्ट प्रस्तुत की जानी है।
दूसरे सत्र में चार शोध पत्र पढ़े
जाने हैं और फिर शाम को कहानी
गोष्ठी में सात कहानियाँ पढ़ी जानी हैं।

शिवदेव : आपसे पढ़ा गया है यह, कार्ड
पर नीचे बारीक अक्षरों में क्या
लिखा गया हुआ है ?

सुशील : बिना चश्मे कुछ अक्षर पढ़े गए
हैं और कुछ नहीं। ऊपर की
पंक्ति पढ़ी गई है परन्तु नीचे
की दो नहीं पढ़ी गई। होगा कुछ
जलपान के बारे में लिखा हुआ।

शिवदेव : बाहर एह नहरे कोहदे खिलाफ
बलोआ करदे हे ?

सुशील : विद्यार्थियें हड़ताल कीती दी ऐ
जे समें सिर लाके दी सफाई
बक्खी ध्यान दित्ता जा तां जे
लोकें गी मौसमी बमारियें शा
बचाया जाई सकै।

शिवदेव : एह ते बड़ी चंगी गल्ल ऐ।
लगदा ऐ मुख परौहने होर
आई गे न। कल लोकगीतें दे
कार्यक्रम च केह-केह रक्खेआ
गेआ ऐ। मसलन-गीतडु,
भाखां, ढोलरू वगैरा।

सुशील : भाखां खास तौर पर रक्खियां
गेइयां न ते शुआद्धा नां जज्जे दी
लिस्टा च रक्खेआ गेआ ऐ।

शिवदेव : जेकर मेरा नां जजे च रक्खेआ
गेआ होग तां ते मिगी अज्ज इत्थै
गै रुकना होग। ईनाम नगद दित्ते
जंदे न जां कुसै होर रूप च ?

सुशील : नगद गै दित्ते जंदे न।

शिवदेव : बाहिर ये नारे किसके खिलाफ
बोले जा रहे थे ?

सुशील : विद्यार्थियों ने हड़ताल की हुई
है कि समय पर इलाके की
सफाई की ओर ध्यान दिया
जाए ताकि लोगों को मौसमी
बिमारियों से बचाया जा सके।

शिवदेव : यह तो बहुत अच्छी बात है।
लगता है मुख्य अतिथि
जी आ गए हैं। कल लोकगीतों
के कार्यक्रम में क्या-क्या रखा
गया है मसलन-गीतडु, भाखें,
ढोलरू वगैरा।

सुशील : भाखें खास तौर पर रखी गई हैं
और आपका नाम निर्णायकों
की सूची में रखा गया है।

शिवदेव : यदि मेरा नाम निर्णायकों में रखा
गया होगा तब तो मुझे आज यहीं
रुकना होगा। ईनाम नकद दिये
जाते हैं या किसी और रूप में।

सुशील : नकद ही दिये जाते हैं ?

EXERCISES

1. Repetition Drill (पुनरुक्ति अभ्यास)

1. डोगरी साहित्य सभा, भड्डू आसेआ इक सैमीनार कीता जा करदा ऐ।
2. साहित्य सभा आसेआ होर केह-केह आयोजन कीते जा करदे न ?

3. लोक-मैला लाया जंदा ऐ, लोकगीत-संगीत दे कार्यक्रम कीते जंदे न।
 4. नमैश लाई जंदी ऐ ते गोश्टियां कीतियां जंदियां न।
 5. कार्यशाला कीती जा करदी ऐ ते बशेश बैठकां कीतियां जा करदियां न।
 6. नौ बजे उद्घाटन कीता जाना ऐ।
 7. पैहले सत्र च स्वागती भाशन पढ़ोना ऐ।
 8. दुए सत्र च चार शोध-पत्र पढ़ोने न।
 9. कार्डे पर खल्ल बरीक अक्खरें च केह लखोए दा ऐ?
 10. एह नाहरे कोहदे खलाफ बलोआ करदे हे?
2. दिए गए वाक्यों को उदाहरणों के अनुसार परिवर्तित कीजिए :—

Model (1)

डोगरी साहित्य सभा, भड्डू आसेआ इक सैमीनार कीता जा करदा ऐ।

डोगरी साहित्य सभा, भड्डू आसेआ इक सैमीनार कीता जा करदा हा।

1. इक कार्यशाला कीती जा करदी ऐ।
2. दो बशेश बैठकां कीतियां जा करदियां न।
3. होर केह-केह आयोजन कीते जा करदे न।
4. पैहले सत्र च स्वागती भाशन पढ़ोना ऐ।
5. रपोट पेश कीती जानी ऐ।
6. किश अक्खर पढ़ोए न ते किश नेई।

Model (2)

लोकमैला लाया जंदा ऐ, लोकगीत संगीत दे कार्यक्रम कीते जंदे न।

लोकमैला लाया गेआ ऐ, लोकगीत संगीत दे कार्यक्रम कीते गे न।

1. नमैश लाई जंदी ऐ।
 2. गोश्टियां कीतियां जंदियां न।
 3. ईनाम नगद दित्ते जंदे न।
 4. विद्यार्थियें हड़ताल कीती दी ऐ जे समें सिर लाके दी सफाई बक्खी ध्यान नेई दित्ता जंदा ऐ।
 5. डुग्गर वन्दना बी गाई जंदी ऐ।
 6. कवि गोश्टी बी रक्खी जंदी ऐ।
3. पढ़िए, समझिए और लिखिए

Model (1)

पढ़ना : पढ़ेआ जंदा ऐ/पढ़ोंदा ऐ

खाना :

रक्खना :

Model (3)

धोना : धोता जंदा हा/
धनुचदा हा

भरना :

परोना :

Model (5)

सद्दना : सद्दी जंदी ऐ/सदोंदी ऐ

पकड़ना :

खट्ठना :

Model (2)

देना : दित्ता गेआ ऐ/दनोआ ऐ

गाना :

लिखना :

Model (4)

चुक्कना : चुक्केआ गेआ हा/
चकोआ हा

बजाना :

फड़ना :

Model (6)

पीना : पीती गेई ऐ/पलोई ऐ

फंडना :

बंडना :

Model (7)

सुनना : सुनेआ जाग/सनोग

बोलना :

छट्टना :

Model (8)

चुनना : चुने जाइन/चनोइन

तुप्पना :

कड्डना :

4. दी गई क्रियाओं के कर्मवाच्यी रूप बना कर रिक्त स्थान भरिए :—

करना, देना, पढ़ना, लिखना, गाना

1. केई कार्यक्रम न।
2. ईनाम बी हे।
3. वन्दना अजें ऐ।
4. मेरे शा उप्परली सतर ही।
5. अजें नां न।

Vocabulary शब्दावली

आसेआ	की ओर से	कार्यशाला	कार्यशाला
कीता जा	किया जा	गोश्टियां	गोष्ठियाँ
करदा ऐ	रहा है		
पुज्जे	पहुँचे	कीतियां जंदियां न	की जाती हैं
सनाया	सुनाया	अलावा	इलावा
इत्तलाह	सूचना	कीती जा करदी ऐ	की जा रही है
भुल्ली गेदा हा	भूल गया हुआ था	बशेश	विशेष
कीते जा करदे न	किये जा रहे हैं	बैठकां	सभाएँ
जि'यां	जैसे	कीतियां जा	की जा रही हैं
		करदियां न	

लोक मेला	लोक मेला	लाया जंदा ऐ	लगाया जाता है
मुख परोहने	मुख्य अतिथि	नमैश	प्रदर्शनी
भेजेआ गेआ ऐ	भेजा गया है	लाई जंदी ऐ	लगाई जाती है
लैन	लाने	गोआ करदी ही	गाई जा रही थी
चलियै	चलकर	सनोचग	सुना जाएगा
कारवाई	कार्यवाही	सनोग/सनोचग	सुना जाएगा
सनोडन	सुने जाएँगे	नाहरे	नारे
बलोडन	बोले जाएँगे	कीता जाना ऐ	किया जाना है
पढ़ेआ जाना ऐ	पढ़ा जाना है	पढ़े जाने न	पढ़े जाने हैं
पढ़ोने न	पढ़े जाने हैं	पढ़ियां जानियां न	पढ़ी जानी हैं
पढ़ोएआ	पढ़ेआ गेआ	पढ़ोनियां न	पढ़ी जानी हैं
अक्खर	अक्षर	लखोए दा	लिखा हुआ
पढ़ोइयां/पढ़ियां	पढ़ी गई	पढ़ोए/पढ़े गे	पढ़े गये
गेइयां		लखोए दा	लिखा हुआ
खलाफ	खिलाफ	बलोआ करदे हे	बोले जा रहे थे
ध्यान	ध्यान	दित्ता जा	दिया जाए
बचाया जाई सकै	बचाया जा सके	रक्खियां गेइयां न	रक्खी गई हैं
रक्खेआ गेआ ऐ	रखा गया है	रक्खेआ गेआ होग	रखा गया होगा
नगद	नकद	दिस्ते जंदे न	दिये जाते हैं

19.1 इस पाठ में आप डोगरी क्रियाओं के कर्मवाच्यी रूपों से परिचित हुए हैं। डोगरी में संक्षेपी करण की प्रवृत्ति के कारण कर्मवाच्य के रूप अधिक रूपों से मिलते हैं ?

19.2 मुख्य क्रिया के भूतकालिक रूपों के साथ 'जा' सहायक क्रिया लगने से क्रिया के कर्मवाच्यी रूप बनते हैं। जैसे :-

साहित्य सभा, भड्डू आसेआ सैमीनार कीता जा करदा ऐ।

'साहित्य सभा, भड्डू की ओर से सेमिनार किया जा रहा है।'

समें सिर लाके दी सफाई बकखी ध्यान दित्ता जा।

'समय पर इलाके की सफाई की ओर ध्यान दिया जाए।'

19.3 संक्षेपी करण के कारण डोगरी में मुख्य धातु और सहायक धातु 'जा' मिलकर एक हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में कर्मवाच्य के रूप कई प्रकार से बनते हैं। जैसे :-

लखोए 'लिखे गए'

पढ़ोए 'पढ़े गए'

सनोचे 'सुने गए'

धनोए 'धोए गए'

खनोए 'खाए गए'

19.4 कर्मवाच्य के रूपों में मुख्य और सहायक दोनों क्रियाओं के लिंग, वचन आदि कर्म के समान होते हैं। जैसे :-

दो बशेश बैठकां कीतियां जानियां न।

'दो विशेष बैठकें की जानी हैं।'

इक खास प्रोग्राम कीता जाना ऐ।

'इक खास प्रोग्राम किया जाना है।'

लोकगीत – संगीत के कार्यक्रम कीते जंदे न।

‘लोकगीत – संगीत के कार्यक्रम किए जाते हैं।’

इसदे इलावा इक विशेष कार्यशाला बी कीती जा करदी ऐ।

‘इसके अतिरिक्त एक विशेष कार्यशाला भी की जा रही है।’

19.5 डोगरी में संक्षेपीकरण वाले रूपों में जब मुख्य और सहायक क्रियाएं मिलकर एक हो जाती हैं तो उनमें कर्म के लिंग, वचन आदि ‘जा’ सहायक धातु में ही रहते हैं। जैसे :-

खत पढ़ोआ।

‘पत्र पढ़ा गया।’

खत पढ़ोए।

‘पत्र पढ़े गए।’

चिट्ठी पढ़ोई।

‘चिट्ठी पढ़ी गई।’

चिट्ठियां पढ़ोइयां।

‘चिट्ठियां पढ़ी गईं।’

19.6 संक्षेपीकरण के कारण डोगरी क्रियाओं के रूप निम्न प्रकार के होते हैं :-

i) मुख्य धातु के साथ ‘ओ’ लगने से :-

भाशन पढ़ोना ऐ

‘भाषण पढ़ा जाना है’

पेपर पढ़ोने न

‘पेपर पढ़े जाने हैं’

रपोर्ट पढ़ोनी ऐ

‘रिपोर्ट पढ़ी जानी है’

कहानियां पढ़ोनियां न

‘कहानियां पढ़ी जानी हैं’

ii) मुख्य धातु के साथ ‘नो’ लगने से :-

पानी पनोग जां नेई, रुट्टी खनोई जाग।

‘पानी पिया जाएगा या नहीं, रोटी खाई जाएगी।’

कपड़े सनोई बी जाडन ते धनोई बी जाडन।

‘कपड़े सिल भी जाएंगे और धुल बी जाएंगे।’

iii) मुख्य धातु के साथ 'ओच' लगने से :-

कारवाई किश सनोचग जां नेई।

'कार्यवाही कुछ सुनाई पड़ेगी या नहीं'।

नाहरे जरूर सनोचडन।

'नारे अवश्य सुनाई पड़ेंगे'।

1 9.7 संक्षेपीकरण की इस प्रक्रिया में मुख्य धातुओं के रूपों में भी कुछ परिवर्तन होता है। जैसे :-

लिख ----- लख् = लखोना 'लिखा जाना'

सुन ----- सन् = सनोचना 'सुनाई पड़ना/सुना जाना'

पी ----- प् = पनोना 'पिया जाना'

खा ----- ख् = खनोना 'खाया जाना'

सी ----- स् = सनोना 'सिया जाना'

धो ----- ध् = धनोना 'धोया जाना'

तुप्प् ----- तप् = तपोना 'ढूँढा जाना'

1 9.8 क्रिया के कर्मवाच्य वाले रूपों के साथ वाक्य का कर्ता हमेशा करण कारक में होता है।
जैसे :-

थुआढ़े शा पढ़ोआ ऐ, काईं उप्पर केह लखोए दा ऐ?

“आपसे पढ़ा गया है, काई पर क्या लिखा गया है?”

गीतडु : डोगरी लोकगीतों का एक भेद, प्रायः श्रृंगारिक भाव व्यक्त करने के लिए प्रयुक्त होता है। इसमें एक गायक मुखिया उठ कर और नाच कर गीत के बोल बोलता है और बाकी के लोकगायक उसी बोल को दुहराते गाते हैं।

भाख : डुग्गर का विशेष लोकगीत है जो कंडी के इलाके में प्रचलित और अति लोकप्रिय है। यह गीत गाने का एक विशेष ढंग है। इसमें गायकों का समूह होता है और उस समूह

में शामिल लोग अपना एक हाथ कान पर रख कर दूसरे हाथ को हवा में लहराते हैं। एक सुर से शुरू करके बाद में अलग-अलग सुरों में बँट जाते हैं। गायकों में एक मुखिया होता है जो बाकी गायकों की अपेक्षा सुर को लम्बा खींचता है पर सभी के सुरों में सामंजस्य (Harmony) बना रहता है।

ढोलरू : यह ऋतु संबन्धी लोकगीत है। इन्हें 'बारामासे' भी कहा जाता है। इनमें गर्मी, सर्दी, बरसात, पतझड़, बसन्त आदि ऋतुओं के सुन्दर एवं मार्मिक वर्णन मिलते हैं।

'ढोलरू' गीत गाने वाली टोलियां चैत्रमास में घर-घर जाकर भी ये गीत गाती एवं अजीविका कमाती हैं।



पाठ — 20
डोगरी बुझारतां
(डोगरी पहेलियाँ)

- | | |
|--|---|
| श्यामला : बच्चेओ, केह सोचा करदे ओ ? | श्यामला : बच्चो क्या सोच रहे हो ? |
| दिनेश : तविषी ने इक बुझारत पाई ऐ
उसदा हल सोचा करने आं। | दिनेश : तविषी ने एक पहेली कही है
उसे बूझ रहे हैं। |
| श्यामला : बुझारत केह ऐ ? दस्सो। | श्यामला : पहेली क्या है ? बताओ। |
| तविषी : आँटी सुनो, इन्नी हारी थैली
सारे अन्दर फैली | तविषी : आँटी सुनो, इतनी सी थैली
सारे अन्दर फैली। |
| दिनेश : आँटी में बुझां ? | दिनेश : आँटी में बूझू ? |
| श्यामला : हां बेटे बुझो। | श्यामला : हाँ बेटे, बूझो। |
| तविषी : एह धूप-बत्ती ऐ की जे ओह
धुखियै सारे अंदर फैली जंदी ऐ। | तविषी : यह धूप-बत्ती है क्योंकि वह
जलकर सारे अंदर फैल जाती है। |
| श्यामला : अच्छा, हून शकुंतला दी बारी ऐ।
शकुंतला सनाऽ कोई फलौहनी। | श्यामला : अच्छा, अब शकुंतला की बारी है।
शकुंतला कहो कोई पहेली। |
| शकुंतला : रि'नदी खां पकांदी खां
टब्बैर कन्नै अद्ध बंडांऽ।
बुझो हां तां मन्नां। | शकुंतला : बनाती खाऊँ पकाती खाऊँ
परिवार के साथ हिस्सा
बंटाऊँ बूझो तो मानूँ। |
| सब्भै : इक भिन्टै च दस्सने आं। | सभी : एक मिनट में बताते हैं। |
| सुरेश : आँटी एह कड़छी ऐ। जिसलै
कड़छी कन्नै दाल-भत्त सब्जी
बगैरा बनाओ ते बरताओ तां
सब थमां पैहले उन्दा सुआद
इक स्हाबै कन्नै उ'ऐ लैदी ऐ। | सुरेश : आँटी यह कलछी है। जब कलछी
के साथ दाल-भात और सब्जी
आदि बनाएं और परोसें तो सबसे
पहले उनका स्वाद एक तरह से
कलछी ही लेती है। |

चन्द्रमोहन : आँटी, हून मेरी बारी, में
बुझारत पां ?

श्यामला : अच्छा बेटा पाओ।

श्यामला : इन्ना हारा छोकरा गास जाई
टंगोआ।

दिनेश : आँटी जी, एह ते जंदरा ऐ।
साफ लब्धा करदा ऐ।

शकुंतला : हां आंटी एह जवाब ठीक ऐ।
सुकन्या तुम्मी कोई बुझारत पा।

सुकन्या : लैओ सुनो – बाहर चबक्खै
काठ अंदर बैठे जगननाथ।

तविषी : में बुझां ?

सब्बै : हां बुझो

तविषी : बदाम।

चन्द्रमोहन : बिल्कुल स्हेई जवाब ऐ।

सुकन्या : अच्छा बुझो—“त्रै भ्रा इक-टोपी”

श्यामला : कुड़िये में दस्सां ?
इसदा जवाब ऐ चु’ल्ली दै त्रै
कुक्करे ते उन्दे उप्पर रक्खे दा
तवा।

सुकन्या : आँटी जवाब बिल्कुल ठीक ऐ।

श्यामला : हून में बुझारत पान्नी आं
“डींग पडींगी लकड़ी समान
जाई टक्करी।”

चन्द्रमोहन : आँटी अब मेरी बारी, में
पहेली कहूँ ?

श्यामला : अच्छा बेटा कहो।

चन्द्रमोहन : इतना सा छोकरू आसमान पर
जा लटका।

दिनेश : आँटी, यह तो ताला है,
सप्रफ दिख रहा है।

शकुंतला : हाँ आँटी यह उत्तर ठीक है।
सुकन्या तुम भी कोई पहेली कहो।

सुकन्या : लीजिए सुनिए बाहर चहुं ओर
काष्ठ अंदर बैठे जगन्नाथ।

तविषी : मैं बूझूँ ?

सब्बै : हां बूझो।

तविषी : बादाम।

चन्द्रमोहन : बिल्कुल सही उत्तर है।

सुकन्या : अच्छा बूझिए ‘तीन भाई एक टोपी’

श्यामला : बेटी मैं बताऊँ ?
इसका उत्तर है—चूल्हे के
तीन कींगरे और उनके
ऊपर रखा हुआ तवा।

सुकन्या : आँटी जवाब बिल्कुल सही है।

श्यामला : अब मैं पहेली कहती हूँ
“टेढ़ी मेढ़ी लकड़ी
आकाश जा टकराई”

सुकन्या : में दस्सनी आं—इसदा जवाब
ऐ—धूँ, की जे धूँ म्हेशां डींगा—
त्रेहडा उप्परै गी जंदा ऐ।

अस्मिता : हून मेरी बारी ऐ। कटोरे पर
कटोरा पुत्तर बब्बै कोला की
गोरा।

महेश : में दस्सनां इस बुझारत दा
जवाब—नारियल। हून इक
बुझारत में बी पान्नां, बुझ्झो—
मेरी मैंह सिक्कड़ खा पानी
दिक्खै मरी जा।

अस्मिता : में बुझ्झां—अंग्ग।

सुरेश : में बी इक बुझारत पान्नां,
बुझ्झो, इन्ना हारी कुन्नी जवें
कनै तुन्नी।

तविषी : एह दडूनी ऐ।

आदित्य : आँटी, मिगी बी बुझारत
पान देओ।

श्यामला : हां बेटे बोल्लो।

आदित्य : अक्खनी—मक्खनी रातीं भरी
दिनें सक्खनी।

शकुंतला : में दस्सनी आं—एह अम्बर ऐ।

श्यामला : क्या तुस लोक इ'यां गै
दिनभर फलौहनियां पांदे

सुकन्या : मैं बताती हूँ—इसका उत्तर
है धुआँ, क्योंकि धुआँ
हमेशा टेढ़ा—मेढ़ा होता है
और ऊपर को जाता है।

अस्मिता : अब मेरी बारी है। कटोरे
पर कटोरा बेटा बाप से भी
गोरा।

महेश : मैं बताता हूँ इस पहेली का उत्तर—
नारियल। अब एक पहेली मैं भी
कहता हूँ, बूझिए—मेरी भैंस लकड़ी
के छिलके खाए पानी देखे तो
मर जाए।

अस्मिता : मैं बूझूँ—आग।

सुरेश : मैं भी एक पहेली कहता
हूँ, बूझिए—इतनी सी हाँडी
जौ से भरी—भरी।

तविषी : यह खट्टा अनार है।

आदित्य : आँटी, मुझे भी पहेली
कहने दो।

श्यामला : हाँ बेटा कहो।

आदित्य : अक्खनी—मक्खनी रात
को भरी दिन को खाली।

शकुंतला : मैं बताती हूँ यह आकाश है।

श्यामला : क्या आप लोग ऐसे ही
दिनभर पहेलियाँ कहते

रौहगेओ जां किश खाहगे-
पीहगे बी ? चलो रुट्टी खाओ।

रहोगे या कुछ खाओ-पीओगे
भी ? चलो खाना खाओ।

तविषी : की नेई भुक्ख ते लग्गी
दी गै, चलो।

तविषी : क्यों नहीं भूख तो लगी
ही है, चलिए।

Vocabulary शब्दावली

बुझारत	पहेली	दडूनी	खट्टा अनार
थैली	थैली	रुट्टी	भोजन, रोटी
बुझना	बूझना	धूफ बत्ती	धूपबत्ती
धुखना	सुलगना, जलना	फलौहनी	बुझारत
रि'न्नना	पकाना	कड़छी	कलछी
बरताना	परोसना	सुआद	स्वाद
छोकरू	छोकरा	गास	आसमान
जंदरा	ताला	चबकखै	चहुं ओर
स्हेई	सही	बदाम	बादाम
चु'ल्ल	चूल्हा	कुक्करे	चूल्हे के कींगरे
डींग-पडींगा	टेढ़ा-मेढ़ा	बब्ब	बाप
सि'क्कड़	छिलका	कु'न्नी	मिट्टी की हांडी

दडूनी : खट्टे अनारों की एक किस्म जो प्रायः डुग्गर के पहाड़ी इलाकों में पैदा होती है। इस फल के दाने सुखाकर अनारदाना तैयार किया जाता है जो यहाँ की प्रसिद्ध सौगात है।



पाठ-21

जम्मू सूबे दे मशहूर धार्मिक थाहर

(जम्मू प्रान्त के प्रसिद्ध धार्मिक स्थान)

भीमू : नैन्तू, नमस्ते। केह हाल ऐ?

भीमू : नैन्तू, नमस्ते। क्या हाल है?

नैन्तू : नमस्ते। खरा ऐ मेरा हाल,
निकला करदा ऐ बक्त।
तूं सनाऽ राजी एं नां?

नैन्तू : नमस्ते। मैं ठीक हूँ।
समय निकल रहा है।
तुम सुनाओ कुशल तो हो?

भीमू : शुकर ऐ परमात्मा दा।

भीमू : परमात्मा की कृपा है।

नैन्तू : सच्च ऐ भाई, उसै दा सहारा
लोड़चदा ऐ।

नैन्तू : भाई सच ऐ। उसी का सहारा
चाहिए।

भीमू : क्या तूं जम्मू सूबे दे मशहूर
धार्मिक थाहरे दे बारे च किश
जानकारी रक्खना एं?

भीमू : क्या तुम जम्मू प्रान्त के प्रसिद्ध
धार्मिक स्थानों के बारे में कुछ
जानकारी रखते हो?

नैन्तू : हां, की नेई। में सभनें मशहूर
धार्मिक थाहरे दे बारे च चंगी
जानकारी रक्खनां। तूं इन्दे
बारे च सुनना चाहन्तां केह?

नैन्तू : क्यों नहीं। मैं सभी प्रसिद्ध धार्मिक
स्थानों के विषय में अच्छी
जानकारी रखता हूँ। तुम इनके
बारे में सुनना चाहते हो क्या?

भीमू : हां, भाई। तां गै ते में तुगी पुच्छेआ
ऐ। तां फही सनाऽ मिगी।

भीमू : हाँ, भाई। तभी तो मैंने तुम्हें
पूछा है। तो फिर मुझे सुनाओ

नैन्तू : लै सुन। साढे जम्मू सूबे च
सब थमां मता मशहूर धार्मिक
थाहर ऐ माता वैष्णो देवी दा
पवित्तर गुफा मंदर ऐ।

नैन्तू : लो सुनो। हमारे जम्मू प्रान्त में
सब से अधिक प्रसिद्ध धार्मिक
स्थान माता वैष्णो देवी का पवित्र
गुफा मंदिर है।

नैन्तू : लै हून अगें सुन। उधमपुर जिले

नैन्तू : लो अब आगे सुनो। उधमपुर

च शुद्ध महादेव नां आह्ला
शिवमंदर बी बड़ा मशहूर ऐ।

जिले में शुद्ध महादेव नामक
प्राचीन शिवमन्दिर भी बड़ा प्रसिद्ध है।

भीमू : हां, आखदे न जे एह
बड़ा प्राचीन थाहर ऐ।

भीमू : हाँ, कहते हैं कि यह बड़ा प्राचीन
धार्मिक स्थान है।

नैन्तू : तुगी शायद पता नेई जे जम्मू
सूबे दी मशहूर धार्मिक नदी
देवका बी शुद्ध महादेव दे कोला
दा गै निकलदी ऐ।

भीमू : तुम्हें शायद पता नहीं, कि जम्मू
प्रान्त की प्रसिद्ध धार्मिक नदी
देविका भी शुद्ध महादेव के पास
से ही निकलती है।

भीमू : सच्च। एह मिगी पता नेई हा।

भीमू : सच्च ही, यह मुझे पता नहीं था।

नैन्तू : साढ़े जम्मू सूबे च उ'आं ते
बड़ियां झीलां न, पर धार्मिक
महत्त्व आहलियां प्रमुख त्रै गै न।

नैन्तू : हमारे जम्मू प्रान्त में वैसे तो
अनेकों झीलें हैं, पर धार्मिक महत्त्व
वाली प्रमुख तीन ही झीलें हैं।

भीमू : हां, हां दस्सो ओह त्रै केहड़ियां न ?

भीमू : हाँ, बतलाइये वे तीन कौन सी झीलें हैं ?

नैन्तू : एह त्रै न - सरुई सर, मानसर ते
भद्रवाह दे कोल कपलास झील।
इसी बास कुंड बी आखदे न।

नैन्तू : ये तीन झीलें हैं—सरुईसर, मानसर
और भद्रवाह के पास कपलास
झील। इसे बास कुण्ड भी कहते हैं।

भीमू : इन्दा धार्मिक महत्त्व केहू ऐ ?

भीमू : इन झीलों का धार्मिक महत्त्व क्या है ?

नैन्तू : इ'नें त्रौनें झीलें च नागदेवता
दा बास मन्नेआ जंदा ऐ।
ते इ'यां लोक इन्दा धार्मिक
महत्त्व मनदे न।

नैन्तू : इन तीनों झीलों में नागदेवता का
निवास माना जाता है। तो इसलिए
लोग इनका धार्मिक महत्त्व मानते हैं।

भीमू : सुनेआ जे अजकल इ'नें झीलें
गी पर्यटन दी द्रिश्टी कनै
उन्नत कीता जा करदा ऐ।

भीमू : सुना जाता है कि आजकल
इन झीलों को पर्यटन की दृष्टि
से उन्नत किया जा रहा है।

नैन्तू : हां भीमू सरकार इन्दे तरक्की—

नैन्तू : हाँ भीमू, सरकार इनकी उन्नति

बाद्ले आससै खासा ध्यान देआ
करदी ऐ।

भीमू : ठीक ऐ। हून अगें दस्सो
जम्मू सूबे बिच्च होर केहड़े
धार्मिक थाहर न ?

नैन्तू : पुन्छ शैहरै दे कोल सिक्खें
दा धार्मिक स्थान नगाली साहब
ऐ। पुन्छ शैहरै थमां गै 20
किलोमीटर मंडी नां आहले थाहर
बुड्ढा अमरनाथ नां आहला
शिवमंदर बी बड़ा मशहूर ऐ।
रजौरी च मुसलमानें दी मशहूर
ज़ियारत शहादरा शरीफ बी
बड़ी मन्नी-परमन्नी दी ऐ।

भीमू : तुन्दा बड़ा-बड़ा धन्नवाद ऐ।
तुसें जेहड़े धार्मिक थाहर हून
तोड़ी दस्से न उन्दे बारे च
जानकारी प्राप्त करियै मन बड़ा
गै खुश होआ ऐ।

नैन्तू : लैओ हून अगें बी सुनो जे इत्थै
होर केहड़े धार्मिक थाहर न ?

भीमू : हां, सनाओ।

नैन्तू : पौनी नां आहले कस्बे दे कोल
शिव खोड़ी नां दा शिवजी
दा मंदर बड़ा मशहूर ऐ।

भीमू : ठीक ऐ। नैन्तू, आखदे न जे बाबा

की ओर विशेष ध्यान दे रही
है।

भीमू : ठीक है। अब आगे बतलाइए
जम्मू प्रान्त में और कौन से
धार्मिक स्थान हैं ?

नैन्तू : पुन्छ शहर के पास सिक्खों का
धार्मिक स्थान नगाली साहब है।
पुन्छ नगर से 20 किलोमीटर दूर
मण्डी नामक स्थान पर बुड्ढा
अमरनाथ नामक शिवमन्दिर
भी बड़ा प्रसिद्ध है। राजौरी में
मुसलमानों की प्रसिद्ध ज़ियारत
शहादरा शरीफ भी मानी हुई
धार्मिक जगह है।

भीमू : आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।
आपने जो धार्मिक स्थान अब तक
बतलाए हैं, उनके बारे में
जानकारी प्राप्त कर के मन अति
प्रसन्न हुआ है।

नैन्तू : लो अब आगे भी सुनिए यहाँ और
कौन-कौन से धार्मिक स्थान हैं ?

भीमू : हाँ, सुनाएँ।

नैन्तू : पौनी नामक कस्बे के पास शिव
खोड़ी नामक शिवजी का गुफा
मन्दिर भी बड़ा प्रसिद्ध है।

भीमू : ठीक है। नैन्तू, कहते हैं कि बाबा

जित्तो की जन्म भूमी गहार नां दा
थाहर बी बड़ा प्रसिद्ध ऐ।

नैन्तू : भीमू सिर्फ गहार गै नेई बल्के जम्मू
दे कोल झिड़ी प्रांड बी बाबा
जित्तो दे करियै गै मशहूर ऐ।

भीमू : नैन्तू, झिड़ी बाबा जित्तो दे कारण
की मशहूर ऐ ? बिंद गल्ला गी
खोह्लियै सनांदे।

नैन्तू : झिड़ी बाबा जित्तो दी कर्म भूमि
ते बलिदान भूमि होने करियै
मशहूर ऐ। इत्थै हर साल बड़ा
बड्डा मेला लगदा ऐ।

भीमू : नैन्तू, हून तुस मिगी जम्मू
शैहरै दे मशहूर धार्मिक थाहरें
जां मंदरें दे नां दस्सो।

नैन्तू : हां, सुनो। जम्मू शैहरै च श्री रघुनाथ
जी दा मंदर, श्री रणवीरेश्वर मंदर,
पीरखोह आह्ला गुफा मंदर,
बाह्वे किले च महाकाली दा
मंदर, जिसी बाह्वे आह्ली माता
बी आखदे न अति प्रसिद्ध न।
गुमट च नौगजिये पीर दी
दरगाह बी बड़ी मशहूर ऐ।

भीमू : भाई जी, तुसें किशतबाड़
दे कोल सरथल देवी दा ते
जिकर गै नेई कीता। ठाहरें
भुजें आह्ली महाकाली दी

जित्तो दी भूमि गहार नामक स्थान
भी बड़ा प्रसिद्ध है।

नैन्तू : भीमू, केवल गहार ही नहीं बल्कि जम्मू
के समीप झिड़ी नामक स्थान भी बाबा
जित्तो के कारण प्रसिद्ध है।

भीमू : नैन्तू, झिड़ी बाबा जित्तो के कारण
क्यों प्रसिद्ध है ? इस बात को जरा
खोलकर सुनाएँ।

नैन्तू : झिड़ी क्यों कि बाबा जित्तो की कर्म
भूमि और बलिदान भूमि है इसलिए
प्रसिद्ध है। इस स्थान पर प्रतिवर्ष
विशाल मेला लगता है।

भीमू : नैन्तू, अब आप मुझे जम्मू शहर
के प्रसिद्ध धार्मिक स्थानों या
मंदिरों के नाम बतलाएँ।

नैन्तू : हाँ, सुनिए। जम्मू नगर में श्रीरघुनाथ
मन्दिर, श्री रणवीरेश्वर मन्दिर,
पीरखोह का गुफा शिव मन्दिर,
बाहुकिले में महा काली का मन्दिर
जिसे बाह्वे वाली माता जी भी कहते
हैं अति प्रसिद्ध है। इसी प्रकार गुमट
में नौगजिये पीर की दरगाह भी
प्रसिद्ध है।

भीमू : भाई जी, आपने किशतबाड़ के
पास सरथल देवी का तो नाम
ही नहीं लिया है। अठारह
भुजाओं वाली महाकाली की मूर्ति

मूर्ति ते उसदे सवाऽ कुतै होर
है गै नेई।

तो इस स्थान के सिवाए कहीं
अन्यत्र है ही नहीं।

नैन्तू : भीमू, बड़ा-बड़ा धन्नवाद
में सच्च गै सरथल आह्ली
माता दे बारे च भुल्ली गै
गेदा हा।

नैन्तू : भीमू आपका बड़ा-बड़ा धन्यवाद।
सच ही मैं तो सरथल देवी के विषय
में बतलाना भूल गया था।

भीमू : अच्छा, जेकर जम्मू सूबे च होर
बी मशहूर धार्मिक थाहर हैन
तां अगें बी दस्सो।

भीमू : अच्छा, यदि जम्मू प्रान्त में और
भी प्रसिद्ध धार्मिक स्थान हैं तो
तो आगे भी सुनाएँ।

नैन्तू : लैओ सुनो। बलौर दा प्राचीन
शिवमंदर, बलौर दे गै कोल
सुकराला देवी दा मंदर, सुंदरी
कोट दी धारा उप्पर ते नगरी
पड़ोल च माता बाला सुन्दरी
दे मंदर ते पड़ोल दे गै कोल
ऐरवां च प्राचीन शिव मंदर
साढ़े जम्मू सूबे दी शोभा न।

नैन्तू : लो सुनिये। बिलावर का प्राचीन
शिवमन्दिर, बिलावर के ही पास
सुकराला देवी का मन्दिर, सुंदरी
कोट पहाड़ पर तथा नगरी पड़ोल
में माता बालासुन्दरी के मन्दिर
और पड़ोल के ऐरवा नामक स्थान
पर प्राचीन शिवमन्दिर हमारे जम्मू
प्रान्त की शोभा हैं।

भीमू : नैन्तू, तुन्दा मता-मता
धन्नवाद। तुसें इ'नें धार्मिक
जगहें दा ब्यान करियै मेरा ज्ञान
बधाई दिता ऐ।

भीमू : नैन्तू आपका बहुत-बहुत
धन्यवाद। आपने इन धार्मिक
स्थानों की जानकारी देकर
मेरा ज्ञान बढ़ा दिया है।

EXERCISES

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :-

1. सूबा जम्मू दा सभनें शा मता मशहूर धार्मिक थाहर केहड़ा ऐ।
2. उधमपुर जिले च केहड़ा शिवमंदर बड़ा मशहूर ऐ?

3. देवका नदी कु'त्थूं दा निकलदी ऐ?
 4. सूबा जम्मू च कि'नियां झीलां न?
 5. कपलास झील कु'त्थै ऐ?
 6. इ'नें झीलें च केहड़े देवता दा बास मन्नेआ जंदा ऐ?
 7. राजौरी च केहड़ा धार्मक थाहर मता प्रसिद्ध ऐ?
 8. पुन्छ शैहरै दे कोल केहड़ा धार्मक थाहर ऐ?
 9. 'शिवखोड़ी' केहड़े देवते दा स्थान ऐ?
 10. 'गहार' थाहर की प्रसिद्ध ऐ?
2. निम्नलिखित शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरिए :-
बाबा जित्तो, ठाहरें, सुकराला, नौगजिये, शिवमंदर
1. गुमट च पीर दी दरगाह बड़ी मशहूर ऐ।
 2. झिड़ी दे कारण मशहूर ऐ।
 3. बलौरे दे कोल देवी दा मंदर ऐ।
 4. भुजें आहली महाकाली दी मूर्ति सिर्फ सरथल देवी दे मंदरै च ऐ।
 5. ऐरवां च प्राचीन जम्मू सूबे दी शोभा न।
3. जम्मू शहर के धार्मिक स्थानों पर दस वाक्य लिखिए।
4. निम्नलिखित शब्दों को वाक्यों में प्रयोग कीजिए :-
स्हारा, धार्मिक, मशहूर, पवित्तर, मेला, कर्म भूमि, शिवखोड़ी, जन्मभूमि, सरूईसर, ध्यान, तरक्की, मानसर, खासा, प्राचीन
5. डोगरी में अनुवाद कीजिए :-
जम्मू प्रांत में कई प्रसिद्ध धार्मिक स्थान हैं। इन में वैष्णों देवी तथा शिवखोड़ी के गुफा मंदिर, शुद्ध महादेव का प्राचीन शिव मंदिर, बिलावर का शिवमंदिर, राजौरी में

शहादरा शरीफ जम्मू शहर में श्री रघुनाथजी, श्री रणबीरेश्वर, पीरखोह, बाहु किले में महाकाली का मन्दिर अति प्रसिद्ध हैं।

Vocabulary

धार्मिक थाहर	धार्मिक स्थान	हाल	हाल
सहारा	सहारा	मशहूर	प्रसिद्ध
जानकारी	जानकारी	वैष्णोदेवी	जम्मू प्रांत में एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान
पवित्र	पवित्र	झील	झील
मुख्य	देश	दृष्टि	दृष्टि
महत्त्व	महत्त्व	गुहार	डुंगर प्रसिद्ध
प्राप्त	प्राप्त		
झिड़ी	लोक नायक बावा जित्तो की कर्म एवं बलिदान भूमि		लोकनायक बावाजित्तो की जन्म भूमि
मेला	मेला	दरगाह	दरगाह

झिड़ी :

डुंगर के प्रसिद्ध लोक-नायक बावा जित्तो तथा उनकी बेटी बुआ कौड़ी की देहरी जम्मू के पास 'झिड़ी' नाम के स्थान पर स्थापित है। यहाँ हर वर्ष कार्तिक मास की पूर्णिमा को बड़ा विशाल मेला लगता है। यह मेला सात दिनों तक चलता है और यह मेला 'झिड़ी का मेला' नाम से प्रसिद्ध है ?।

श्री वैष्णो देवी :

डुंगर प्रदेश में त्रिकुटा पर्वत के दामन में स्थित वैष्णो देवी की गुफा तथा भवन की महिमा न्यारी है। यहाँ तीस फुट लम्बी गुफा में देवी का निवास चार पिंडियों के रूप में

मिलता है। यहाँ वैष्णो देवी के अतिरिक्त लक्ष्मी, सरस्वती तथा महाकाली की पिंडियाँ हैं। श्रद्धालु कटड़ा से आगे पैदल यात्रा करके देवी दर्शन के लिए आते हैं। वर्षभर देश-विदेश से आए भक्तों का तौताँ बंधा रहता है।

सरथल :

डुंगर प्रदेश के जिला डोडा में स्थित एक प्रसिद्ध शक्ति-स्थल है। यह स्थल देवी की अठारह भुजाओं वाली मूर्ति के कारण बहुत प्रसिद्ध है।



ग्राई ते शैहरी वातावरण
(ग्रामीण तथा शहरी वातावरण)

- राजेन्द्र : सोरता ग्रांऽ जाना ऐ केहड़ा
रस्ता ठीकरौहग ?
- राजेन्द्र : मुझे 'सोरता' गाँव जाना है।
कौन सा रास्ता ठीक रहेगा ?
- नरेन्द्र : में बी उत्थै गै जाना ऐ आओ
मेरे कनै।
- नरेन्द्र : मैंने भी वहाँ ही जाना है। आइए
मेरे साथ।
- राजेन्द्र : क्या तुस 'सोरते' गै रौहदे ओ ?
- राजेन्द्र : क्या आप सोरता गाँव में ही रहते हैं ?
- नरेन्द्र : हां जी, में सोरते गै रौहन्ना।
तुस कुत्थूं दे रौहने आहले ओ ?
- नरेन्द्र : हाँ जी, में 'सोरता' में ही रहता हूँ।
आप कहाँ के रहने वाले हैं ?
- राजेन्द्र : में जम्मू शैहर रौहन्ना।
- राजेन्द्र : मैं जम्मू शहर में रहता हूँ।
- नरेन्द्र : तां तुसें गी एह लाका सुनसान
जन लगा होना ?
- नरेन्द्र : तब आपको यह इलाका सुनसान
जैसा लगा होगा ?
- राजेन्द्र : नेई-नेई। बड़ा शैल लाका ऐ,
तुन्दा। किन्ना शांत ते मन
मोहना वातावरण ऐ इत्थै ?
- राजेन्द्र : नहीं-नहीं। बहुत सुंदर इलाका
है आपका। कितना शांत एवं
मनमोहक वातावरण है यहाँ ?
- नरेन्द्र : जी, गल्ल तां तुन्दी ठीक ऐ,
ब कु'त्थै शैहरी रौनकां ते
कु'त्थै एह जंगल-जाड़ ?
- नरेन्द्र : जी हाँ, बात तो आप की ठीक
है, परन्तु कहाँ शहर की रौनकें
तथा कहाँ ये जंगल-उजाड़।
- राजेन्द्र : तुस खुश्वा ठीक गलाऽ करदे
ओ। सच्चें गै शैहरी रौनकां
ते उत्थै दी दौड़-भज्ज इत्थै
नेई, पर असें शैहरियें गी बी
शांत वातावरण परसिंद ऐ।
- राजेन्द्र : आप शायद ठीक कह रहे हैं।
सच ही शहर की चहल-पहल
और भाग-दौड़ यहाँ नहीं है
लेकिन हम शहर वालों को भी
शांत वातावरण पसन्द है।

नरेन्द्र : इ'नें जंगलें दे शैहरी
चमक-दमक दा केहू मकाबला
ऐ ?

राजेन्द्र : सच्चें गै कोई मकाबला नेई।
शैहरें बेथ'वे, बस्तार ते
बेस्थाबे उद्योगीकरण प्रकृति दे
संतुलन गी बगाड़दे-बगाड़दे
जानलेवा होदे जा करदे न।

नरेन्द्र : पर, फही बी अस इ'नें जंगलें दी
अनदिकखी गै करदे जा करने
आं। बड़ा गै चर्ज ऐ।

राजेन्द्र : एह ते सच्ची गल्ल ऐ की जे एह
जंगल गै असें गी सेहत ते लम्मी
उमर देने आहले न। इस वास्तै
इन्दी हिफाजत निहायत जरूरी ऐ।

नरेन्द्र : ते इ'नें शैहरें दा केहू होग ?

राजेन्द्र : अज्ज शैहरें च बधदी जा करदी
गड़ियें-मोटरें ते कल-कारखानें
दी संख्या कन्नै वातावरण मता
गै प्रदूषत होदा जा करदा ऐ।
इस कोला बचने दी लोड़ ऐ।

नरेन्द्र : अच्छा जी। तुसें बड़ी गै
चंगी गल्ल दस्सी ऐ।

राजेन्द्र : हां, जंगलें दे एह भांत-सभांतड़े
रुखे-बूहटे, पशु-पैछी आदि

नरेन्द्र : इन जंगलों के सौन्दर्य एवं शहर
की चमक-दमक का क्या
मुकाबला है ?

राजेन्द्र : सच ही कोई मुकाबला नहीं।
शहरों के अनियोजित विस्तार
एवं असीमित उद्योगीकरण
प्रकृति के सन्तुलन को
बिगाड़ते-बिगाड़ते जानलेवा
होते जा रहे हैं।

नरेन्द्र : परन्तु फिर भी हम इन जंगलों
की उपेक्षा ही करते जा रहे हैं।
बड़ा ही आश्चर्य है।

राजेन्द्र : यह तो सच्ची बात ऐ क्योंकि ये
जंगल ही हमें स्वास्थ्य और दीर्घ
आयु देने वाले हैं। इसलिए इनकी
रक्षा अत्यन्त आवश्यक है।

नरेन्द्र : और इन शहरों का क्या होगा ?

राजेन्द्र : आज शहरों में बढ़ रही गाड़ियों,
मोटरों और कल कारखानों की
संख्या से वातावरण अत्यन्त
दूषित होता जा रहा है।
इससे बचने की आवश्यकता है।

नरेन्द्र : अच्छा। आपने बहुत बढ़िया
बात बताई है।

राजेन्द्र : हाँ, जंगलों के ये तरह-तरह के
पेड़-पौधे, पशु-पक्षी आदि

दिखो हां किन्ने साफ-सुथरे
वातावरण दी सिरजना करदे न ?

नरेन्द्र : तुसैं ठीक गलाया ऐ। कुश्वा
इससै करी अज्ज बी साढ़े लोक
रुक्ख-बूहटें ते पशु-पैछियें दी
पूजा करदे न। इन्दे पालन--
पोशन वगैरा गी पुनै आह्ला
कम्म समझने आहले लोक बी
घट्टु नेई न।

राजेन्द्र : तुन्दे पाससै केहड़े-केहड़े रुक्खे-
बूहटें दी पूजा-अर्चना होदी ऐ ?

नरेन्द्र : बड़, आमली, करौंगल,
तुलसी ते होर बट्ठेरे दुए रुक्ख
बूहटें गी कुसै नां कुसै परम्पारिक-
विधि कन्नै पूजने-राधने दा
आम रवाज ऐ। उ'आं लोक-
आस्थां नेहियां बी हैन जि'न्दे
धमां रुक्ख-बूहटें गी हानी पजाना,
दिन घरोते दे कुसै रुक्ख-बूहटे
गी छूहना-छेड़ना जां पही दिन
बार दा बचार कीते बिजन
कुसै रुक्ख-बूहटे गी कट्टना
भन्नना-त्रोड़ना आदि अनहित
दा मूजब गै समझेआ जंदा ऐ।

राजेन्द्र : सच्चें, एह सब जनमानस गी
रुक्खें-बूहटे दे म्हत्तव दी खरी
जानकारी दा गै सबूत ऐ।

देखो कितने साफ-सुथरे
वातावरण का सृजन करते हैं ?

नरेन्द्र : आपने ठीक कहा है।
शायद इसी कारण आज भी
हमारे लोग पेड़-पौधों एवं पशु-
पक्षियों की पूजा करते हैं इनका
पालन-पोषण, सुरक्षा इत्यादि
को पुण्य कार्य समझने वाले
भी कम नहीं हैं।

राजेन्द्र : आपके वहाँ कौन-कौन से पेड़-
पौधों की पूजा-अर्चना होती है ?

नरेन्द्र : पीपल, आमली, अमलतास,
तुलसी एवं बहुत से अन्य पेड़-
पौधों की किसी न किसी
पारम्परिक पद्धति से पूजा-
अर्चना करने का आम रिवाज
है। वैसे अनेक लोक-आस्थाएं
ऐसी भी हैं जिन से पेड़-पौधों
को हानि पहुँचाना, सूर्यास्त के
बाद किसी पेड़-पौधे को छूना-
हिलाना या फिर दिन-वार का
विचार किये बिना किसी पेड़-
पौधे को काटना, तोड़ना आदि
अनहित का कारण समझा जाता है।

राजेन्द्र : सच ही, यह सब, जनमानस को
पेड़-पौधों के महत्त्व की अच्छी
जानकारी का ही प्रमाण है।

नरेन्द्र : जी, ते इ'यां गै पशु-पैछियें ते
होर जीव-जैन्तुएं दी पूजा-
मानता बी जनमानस च
मजूद ऐ।

राजेन्द्र : तुन्दै केहड़े-केहड़े पशु-
पैछियें ते होर दुए जीव
जैन्तुएं दी पूजा-मानता होंदी
ऐ ?

नरेन्द्र : गौ, कुत्ता, कां, बांदर, चिड़ी,
नाग, कीड़ी, मकोड़ा आदि
लगभग सभनें जीव जन्तुएं
दी पूजा-मानता होंदी ऐ ते
इन्दी सुरक्खेआ गी हितकारी
समझेआ जंदा ऐ।

राजेन्द्र : किन्नी शैल गल्ल ऐ।
जनमानस दा प्रकृति दे
संतुलन सरबंधी एह सोहग
सच्चें गै गौरव करने जोग ऐ।

नरेन्द्र : जी, और ऐसे ही पशु-पक्षियों
तथा अन्य जीव-जन्तुओं की
पूजा-अर्चना भी जनमानस में
विद्यमान है।

राजेन्द्र : आप के यहाँ किन्न-किन पशु
पक्षियों तथा अन्य जीव-
जन्तुओं की पूजा-अर्चना होती
है ?

नरेन्द्र : गाय, कुत्ता, कौआ, बंदर,
चिड़िया, नाग, चींटी, मकोड़ा
इत्यादि लगभग सभी जीव-
जन्तुओं की पूजा-अर्चना होती
है तथा इनकी सुरक्षा को
हितकारी समझा जाता है।

राजेन्द्र : कितनी अच्छी बात है।
जनमानस का प्रकृति के संतुलन
के बारे में यह ध्यान सत्य ही
गौरव करने योग्य है।

EXERCISES

I. पाठ के आधार पर उत्तर दें :-

1. राजेन्द्र ने केहड़े ग्रांड जाना ऐ ?
2. राजेन्द्र कु'त्थूं दा रौहने आह्ला ऐ ?
3. नरेन्द्र कु'त्थै रौहदा ऐ ?
4. शैहरें दा वातावरण कनेहा ऐ ?
5. ग्रांड दा वातावरण कनेहा ऐ ?

II उपर्युक्त शब्दों से रिक्त स्थान भरिए—

(लाका, जाना, रौहदे, आरबला, प्रदूशत)

1. तुस कु'त्थै ओ ?
2. में बी उत्थै गै ऐ।
3. बड़ा शैल ते मनमोहना ।
4. वातावरण मता होदा जा करदा ऐ।
5. जंगल साढ़ी नरोई सेहत ते लम्मी दी जमानत न।

III पढ़ें, और ऐसे ही तीन वाक्य स्वयं बनाएँ।

जंगलें दे शलैपे ते शैहरी चमक-दमक दा केह मकाबला।

IV उदाहरण का अनुसरण करें एवं पाठ से ऐसे ही कुछ और संयुक्त शब्दों का चयन करें—

दौड़-भज्ज

V इन शब्दों को वाक्यों में प्रयोग करें।

जाना, रौहन्नां, चमक-दमक, लाका, आरबला

VI उचित वाक्यांशों को जोड़ कर वाक्य बनाएँ।

- | | |
|----------------------------|--------------------|
| 1. बधदा प्रदूशन जान लेवा | मता प्रदूशत ऐ। |
| 2. शैहरें दा वातावरण | होदा जा करदा ऐ। |
| 3. तुसें गी एह लाका तां | सुनसान लग्गा होना। |
| 4. किन्ना मनमोहना | जमानत न। |
| 5. जंगल साढ़ी नरोई सेहत ते | लाका ऐ। |
| लम्मी आरबला दी | |

VII शब्दों को उचित क्रम में प्रयोग करके शुद्ध वाक्य बनाएँ :-

1. ठीक तुस करदे गलाऽ ओ।

2. में गै रौहन्नां सोरतै।
3. कन्नै मेरे आओ।
4. रौहन्नां शैहर में जम्मू।
5. रस्ता रौहग केहड़ा ठीक ?

VIII उदाहरण का अनुसरण करें तथा कथनात्मक वाक्यों के प्रश्नात्मक वाक्य बनाएँ :-

में सोरतै गै रौहन्नां।

केह में सोरतै गै रौहन्नां ?

1. तुस जम्मू रौहदे ओ।

.....

2. तुसें गी एह लाका सुनसान लगगा होना।

.....

3. एह रस्ता ठीक रौहग।

.....

4. एह लाका बड़ा शैल ऐ।

.....

5. तुसें बी उत्थै गै जाना ऐ।

.....

Vocabulary शब्दावली

ग्रांस	गाँव	जानलेवा	जान लेने वाला
रस्ता	रास्ता		(मृत्युकारक)
बशक्क	निसंदेह	रौहना	रहना
शैहर	शहर	निगोसारी	अकेलापन
भुल्ली दी	भूली हुई	लाका	इलाका

सुनसान	सुनसान	गल्ल	बात
लगा होना	लगा होगा	अक्सर	प्रायः
मन मोहना	मन मोहक	तुलना	मकाबला
वातावरण	वातावरण	नरोई	निरोग्य
जंगल-जाड़	जंगल-उजाड़	लम्मी	लम्बी
शलैपा	सुन्दरता	आरबला	आयु
चमक-दमक	चमक-दमक	जमानत	जमानत
मकाबला	तुलना	बधदी	बढ़ती
सच्चें	सच्च ही	गड़ी-मोटर	गाड़ी-मोटर
बेथ'वे	अनियोजित	कल-कारखाने	कल-कारखाने
बस्तार	विस्तार	संख्या	संख्या
बेस्हाबा	असीमत	प्रदूशत	प्रदूषित
उद्योगीकरण	उद्योगीकरण	भांत	भांति के
प्रकृति	प्रकृति	रुक्ख-बूहट	पेड़-पौधे
संतुलन	संतुलन	पशु-पैछी	पशु-पक्षी
बगाड़ना	बिगाड़ना	दिक्खना	देखना
साफ-सुथरे	साफ-सुथरे	सिरजना	सृजन
बचार	विचार	गलाया	कहा
बिजन	बिना	खुशपा	शायद
बढना	काटना	इसै करी	इसी कारण
त्रोड़ना	तोड़ना	पूजा-मानता	पूजा-मान्यता
मूजब	कारण	हरिकाम	विद्यमान
जनमानस	जनमानस	पालमा	पालन
खरी	अच्छी	सुरक्खेआ	सुरक्षा
महत्त्व	महत्त्व	जानकारी	जानकारी

पुन्न-कारज	पुण्य-कार्य	सबूत	प्रमाण
बड़	पीपल	होर	और
आमली	आमली	दुए	दूसरे
करौंगल	अमलतास	गौ	गाय
तुलसी	तुलसी	कुत्ता	कुत्ता
बध्हेरे	बहुत से	कां	कौआ
परम्पारिक	पारम्परिक	बांदर	बंदर
नभाना	निभाना	चिड़ी	चिड़िया
संदर्भ	संदर्भ	नाग	नाग
रवाज	रिवाज	कीड़ी	कीड़ी-चींटी
आस्थां	आस्थाएं	मकोड़ा	मकोड़ा
दिन घरोना	सूर्यास्त होना	हितकारी	हितकारी
छूना छेड़ना	छूना-हिलाना	सोह्ग	ध्यान
दिनवार	दिन वार	गौरव	गौरव
जोग	योग्य		



पाठ-23

डुग्गर दे पर्व - तेहार

(डुग्गर के पर्व - त्योहार)

बिमला : शीला भैन नमस्ते।

बिमला : शीला बहन नमस्ते।

शीला : नमस्ते जी, सनाओ केहू हाल ऐ ?

शीला : नमस्ते जी, सुनाइए क्या हाल है ?

बिमला : बड़े दिनें बाद लब्धियां ओ।
ठीक ते है हियां ?

बिमला : बहुत दिनों बाद दिखीं। ठीक
तो थीं ?

शीला : ठीक गै ही पर में इत्थै नेही,
तीर्थे गेदी ही।

शीला : ठीक ही थी पर मैं यहाँ नहीं
थी, तीर्थ यात्रा पर गई हुई थी।

बिमला : तुस बड़ियां नित-नीमी ओ
अपने पर्व-तेहारें दे बारे च
सब किश जानदियां-भालदियां
ओ। हून अस बी स्याने होआ
करने आं असें गी बी किश
दस्सी ओड़ो हां इन्दे बारै।

बिमला : आप बहुत नित्य-नेम करती हैं
अपने पर्व-त्योहारों के बारे
में सब कुछ जानती हैं। अब
हम भी बजुर्ग हो रहे हैं हमें
भी इनके बारे में कुछ
जानकारी दे दें।

शीला : कु'त्थूं दा शुरू करां ? खरा
ब'रे दे शुरू थमां गै दस्सना
शुरू करनी आं। साढ़े नमें ब'रे
दा रम्भ चेतार म्हीने औने आहले
पैहले नराते कन्ने होंदा ऐ ते
फही इसदे बाद लड़ो लड़ी तेहार
औंदे रौह्दे न। नौमें नराते गी
'रामनौमी' दा तेहार मनाया जंदा
ऐ ते फही बसाख म्हीने दी सडरांदी
गी बसाखी दा तेहार औंदा ऐ।
जेहड़ा सिर्फ इत्थै गै नेई साढ़े

शीला : कहाँ से शुरू करूँ ? अच्छा वर्ष
के आरम्भ से ही बताना शुरू
करती हूँ। हमारा नया वर्ष चैत्र
मास के प्रथम नवरात्रे से आरम्भ
होता है। और फिर इसके बाद
एक के बाद एक करके त्योहार
आते जाते हैं। नवें नवरात्र को
'रामनवमी' का त्योहार मनाया
जाता है। फिर बैसाख मास की
संक्रान्ति को 'वैशाखी' का त्योहार
आता है जो सिर्फ यहाँ ही नहीं

गुआंढी प्रदेश पंजाब च बी धूमधाम
कन्नै मनाया जंदा ऐ।

हमारे पड़ोसी प्रदेश पंजाब में भी
धूमधाम से मनाया जाता है।

बिमला : हां बसाखी दा तेहार ते बड़ा
बड़ा तेहार होंदा ऐ। इसदा
मिगी पता ऐ।

बिमला : हाँ वैशाखी का त्योहार तो बहुत
बड़ा त्योहार होता है। इसके
बारे में मुझे मालूम है।

शीला : इसदे बाद धमदे दा तेहार,
निर्जला कास्ती, राहड़े दा तेहार,
सकोलड़े (मिञ्जरां), रंखड़ी
दा, ठौगरें दा बर्त, बच्छ दुआह,
द्रुब्बडी, नागपंचमी आदि मते
सारे तेहार कन्नै-कन्नै उठी
औदे न।

शीला : इसके बाद 'धमदे' का त्योहार,
निर्जल एकादशी, राहड़ों का
त्योहार, सकोलड़े (मिंजरां का
त्योहार), राखी का त्योहार श्रीकृष्ण
जन्माष्टमी व्रत, बच्छ बारस, राधा
अष्टमी, नागपंचमी आदि बहुत से
त्योहार साथ-साथ आ जाते हैं।

बिमला : हां भैन इन्दे च मते तेहार ते
बर्ते आहले न।

बिमला : हाँ बहन इनमें बहुत से त्योहार
तो व्रत उपवास वाले हैं।

शीला : एह ते तुगी पता गै होना ऐ की
जे तुम्मी ते बर्त रक्खनी एं
इ'नें मौकें। इन्दे बाद नराते,
दसैहरा, हरतालका, कर्वा चौथ,
देआली आदि तेहार बी किट्टे-
किट्टे औदे न।

शीला : यह तो तुम्हें मालूम ही होगा क्योंकि
तुम भी तो व्रत रखती हो इन अवसरों
पर। इनके बाद नव-रात्रे, दशहरा,
हर तालिका व्रत, कर्वा चौथ और
दीवाली आदि त्योहार भी इकट्ठे-
इकट्ठे ही आते हैं।

बिमला : हां, फही इन्दे बाद तेहारें दा
किश छिंडा पेई जंदा ऐ।

बिमला : हाँ, फिर इनके बाद त्योहार
कुछ देर से आते हैं।

शीला : ठीक आखा करनीं। फही कुतै
पोह म्हीने दे खीरा च 'लोहड़ी'
ते उसदे दुए रोज 'अत्रैण' दा
दिन पर्व औंदा ऐ।

शीला : ठीक कह रही हो फिर कहीं पौष
माह के अन्त में लोहड़ी और
उसके अगले उत्तरायण का पर्व
आता है।

बिमला : लोहड़ी दे अगें-पिच्छें गै भुगगे
दा बर्त बी औंदा ऐ।

शीला : हां उ'ब्बी इ'नें दिनें गै औंदा ऐ।
इसदे बाद, बसंत-पैंचमी,
शिवरात्रि, होली, चैतर-चौदेआ
आदि दे तेहार औंदे न।

बिमला : एह ते हिन्दुएं दे तेहार होए
नां। सिक्ख ते मुसलमान भ्राएं
दे तेहार बी इत्थै खासे मनोंदे
न ?

शीला : हां की नेई ? गुरु अर्जुनदेव दा
जन्मदिन, गुरु हर गोबिंद दा
गुरुपर्व, गुरुनानक देव ते गुरु
गोविन्द सिंह आदि सभनें गुरुएं
दे गुरु पर्व इत्थै बड़ी धूमधाम
कनै मनाए जंदे न। इ'यां गै
निक्की ईद, बड्डी ईद, शब-ए-
बरात, रमजान बगैरा मुसलमान
भ्राएं दे तेहार बी पूरी अकीदत
कनै मनोंदे न। ते बुद्ध ते जैनियें
दे तेहार बी अपने समें पर औंदे
न ते अपने-अपने तरीके कनै
मनाए जंदे न।

बिमला : तां सच्चें गै साढ़े इस डुग्गर
प्रदेश च ब'रा भर तेहारें दी
गैहमा-गैहमी रौहदी ऐ।

बिमला : लोहड़ी के आगे-पीछे ही गणेश
चतुर्थी का व्रत भी आता है।

शीला : हाँ, वह भी इन्हीं दिनों आता है।
इसके बाद बसंत पंचमी,
शिवरात्रि, होली, चैत्रचतुर्दशी,
होली आदि के पर्व आते हैं।

बिमला : ये तो हिंदुओं के त्योहार हुए न।
सिक्ख और मुस्लिम भाइयों के
त्योहार भी यहाँ काफी मनाए
जाते हैं ?

शीला : हाँ क्यों नहीं ? गुरु अर्जुन देव का,
जन्मदिन गुरु हर गोविन्द का गुरुपर्व,
गुरुनानक देव और गुरु गोविन्द सिंह
आदि सभी गुरुओं के गुरु पर्व यहाँ
बड़ी धूमधाम से मनाए जाते हैं। ऐसे
ही छोटी ईद, बड़ी ईद, शब-ए-
बारात, रमजान आदि मुस्लिम
भाइयों के त्योहार भी पूरी श्रद्धा
के साथ मनाए जाते हैं और बुद्ध
एवं जैन धर्म अनुयायियों के
त्योहार भी अपने-अपने समय
पर आते हैं और अपने-अपने
ढंग से मनाए जाते हैं।

बिमला : तो सच ही हमारे इस डुग्गर
प्रदेश में वर्ष भर त्योहारों की
गहमा-गहमी लगी रहती है।

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :-

1. नमें ब'रे दा रम्भ कदू कोला मन्नेआ जंदा ऐ?
2. नौमें नराते गी केहड़ा तेहार मनाया जंदा ऐ?
3. बसाखी दा तेहार कदू औंदा ऐ?
4. पोह् म्हीने दे खीरा च औने आहले तेहारै दा केह नां ऐ।?
5. लोहड़ी दे दुए रोज केहड़ा तेहार औंदा ऐ?
6. सिक्ख समुदाए दे प्रमुख तेहार केहड़े न?

2. निम्नलिखित शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुन कर रिक्त स्थान भरिए :-

ठौगरें दा बर्त, लोहड़ी, कर्वा चौथ, बसाखी, रामनौमी, होली

1. अत्रैण थमां इक दिन पैहलें दा तेहार होंदा ऐ।
2. रक्खड़ी दे बाद औने आहला तेहार ऐ।
3. देआली शा पैहलें औंदी ऐ।
4. धमदे दा तेहार दे बाद औंदा ऐ।
5. गी रंगें दा तेहार बी आखदे न।
6. नौमें नराते गी आखदे न।

3. डुग्गर दे पर्वे—तेहारें पर दस वाक्य लिखो :-

4. निम्नलिखित कथनात्मक वाक्यों के निषेधात्मक वाक्य बनाइए :-

1. होली सडरांदी आहले दिन होंदी ऐ।
2. शिवरात्री गी गणेश जन्म दे तौर पर मनाया जंदा ऐ।
3. नागपैचमी गी ठण्डे—मिट्ठे पानी दियां शबीलां लाइयां जंदियां न।

4. लोहड़ी हाड़ म्हीने च औंदी ऐ।

5. बसाखी दे इकदम बाद रक्खड़ी दा तेहार औंदा ऐ।

सकोलड़े = रंगदार धागे और गोटे का बना कर्ण आभूषण जो सावन मास की संक्रान्ति के दिन राहड़ों के समाप्ति-त्योहार पर डाला जाता है। हिमाचल में इसे 'मिंजरां' कहा जाता है।

ठौगरें दा बर्त = श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का व्रत

नाग पैंचमी = नाग पंचमी

देआली = दीवाली

लोहड़ी = लोहड़ी

ईद = ईद

गुरुपर्व = गुरुपर्व

अकीदत = श्रद्धा, अकीदत

Vocabulary शब्दावली

पर्व-तेहार	पर्व-त्योहार	लब्धना	दिखना, मिलना
तीर्थ	तीर्थ	नित-नीमी	नित्य-नेम करने वाली
जानना	जानना		
स्याना	बजुर्ग, समझदार		
लड़ो-लड़ी	एक के बाद दूसरा ; साथ-साथ आते रहना		
रम्भ	आरम्भ		
म्हीना	महीना		
ब'रा	वर्ष		

नराते	नवरात्रे
रामनौमी	रामनवमी
गुआंढी	पड़ोसी
बसाखी	वैशाखी
धमदें	आषाढ़ मास की संक्रान्ति का पर्व
राहड़े	डुग्गर का प्रसिद्ध नारी त्योहार जो आषाढ मास की संक्रान्ति को शुरू होकर सावन मास की संक्रान्ति तक चलते हैं। इस अवसर पर घड़ा आदि के उपरिभाग को जमीन में गाढ़ कर बीच में अनाज बीजा जाता है इन्हें राहड़ों की संज्ञा दी जाती है। राहड़ों के चौगिर्द नाना प्रकार के रंगों से चित्रकला भी की जाती है।

धमदें :

आषाढ़ मास की संक्रान्ति को डुग्गर में 'धमदें' का त्योहार-पर्व मनाया जाता है। इसे 'धर्म ध्याड़ा' भी कहा जाता है। इस दिन अपने पितरों-पुरखों के निमित्त पानी से भरे घड़े, फल, सब्जी, अन्न, दालें, पंखी आदि दान किए जाते हैं और विवाहित बहनों-बेटियों को भी अन्न, फल, वस्त्र, नकद पैसे आदि दिए जाते हैं।

राहड़े :

'राहड़े' नामक विशेष त्योहार भी डुग्गर का प्रसिद्ध त्योहार है। यह आषाढ़ मास की संक्रान्ति को आरम्भ होकर सावन मास की संक्रान्ति को सम्पन्न होता है। इस समय लड़कियाँ (विवाहित एवं कंवारी) मिट्टी के घड़ों आदि के अग्रभाग (मुख वाला भाग) लेकर उन्हें कच्ची जमीन में गाढ़ देती हैं और उनके बीच में फसल के बीज बोए जाते हैं, फिर आषाढ़ मास के प्रत्येक रविवार को ये लड़कियाँ रंग-बिरंगे कपड़े पहन कर, एकत्र होकर जलाशय पर जाती हैं और वहाँ पर नाना प्रकार के खाद्य पदार्थ खाती, उत्सव मनाती हैं। अन्यथा प्रतिदिन शाम को जिस स्थान पर 'राहड़े' बीजे होते हैं वहाँ पर एकत्र हो राहड़ों के गीत गाती, खुशी मनातीं और प्रीतिभोज के गीत गाती हैं। अन्ततः सावन मास की संक्रान्ति के दिन सब लड़कियाँ नदी, तालाब आदि किसी जलाशय पर एकत्र होती हैं जहाँ इन राहड़ों को प्रवाहित किया जाता है और साथ ही नए-नए रंग-बिरंगे वस्त्र, आभूषण पहन कर नाना प्रकार के पकवान, मिठाई, फल आदि खाती-पीती मौज मनाती

हैं। सावन मास के तथा विशेषकर राहड़ों के गीत गाती हैं। यह राहड़ों का समापन समारोह होता है और इसे 'बड्डा रुट्ट' भी कहते हैं। रेशम और गोटे से बने विशेष कर्णाभूषण जिन्हें 'सकोलड़' कहा जाता है वह भी इस दिन पहने जाते हैं। कुछ लोग इसे सकोलड़ों का त्योहार भी कहते हैं।

नराते :

नवरात्रों के पर्व को डोगरी में 'नराते' कहा जाता है। यह पर्व वर्ष में दो बार मनाया जाता है। चैत्रमास में तथा अश्विन मास में यह नौ-नौ दिनों के लिए मनाया जाता है। यह कन्याओं का विशेष पर्व होता है। कन्याएं मिलकर किसी एक स्थान पर खेती बीजती हैं जिसे माता (देवी) का प्रतीक माना जाता है और वहीं पर दीवाल आदि में देवी की मिट्टी की प्रतिमा स्थापित की जाती है जिसकी हर रोज प्रातः-सायं पूजा होती है। रोज शाम को कन्याएं उक्त स्थान पर मिल-बैठ प्रतिभोज करती हैं जिसे 'चूटी' कहा जाता है। नवरात्रे के अन्तिम दिन प्रत्येक घर में कन्यापूजन होता है और सायंकाल को नवरात्रे रखने वाली लड़कियाँ कान्ह और सखियों का प्रदर्शन करती हैं।

लोहड़ी :

यह त्योहार मकर संक्रांति के एक दिन पूर्व मनाया जाता है। डुग्गर में इस त्योहार का निराला ही रंग होता है। लड़के-लड़कियों में विशेष उत्साह होता है जो लोहड़ी से लगभग एक माह पूर्व ही इसकी तैयारियों में लग जाते हैं। लड़के 'छज्जा' बनाते हैं जो काष्ठ के ढांचे पर रंग-बिरंगे कागज के फूलों और मध्य में मोर के चित्र से सजा होता है। लोहड़ी के दिन लड़के डंडारस खेलते और छज्जा नाच प्रस्तुत करते हैं। जिन घरों में लड़के का विवाह या फिर लड़का उत्पन्न हुआ होता है उन घरों में लोग विशेषकर छज्जा नाच करते 'लोहड़ी' माँगते हैं। नव विवाहिता कन्याओं - बहुओं को पीहर और ससुराल की ओर से वस्त्राभूषणों की भेंट भी दी जाती है। इस त्योहार के मुख्य खाद्य तिल और चावल के बने पदार्थ होते हैं। रात्रि के समय 'लोहड़ी' जलाई जाती है और लोग मिलकर बैठते हैं एवं शीतऋतु में आनन्द मनाते हैं।

नाग पंचमी :

सावन मास में शुक्लपक्ष की पंचमी को डुग्गर प्रदेश में नाग पंचमी का पर्व मनाया जाता है। सावन-भादों दोनों मास गर्मी और बरसात के मास हैं। उमस बहुत होती है अतः साँप-बिच्छू आदि कीड़े भी होते हैं। संभवतः इस त्योहार के पीछे इन सर्प-बिच्छू आदि से रक्षा हेतु इनकी पूजा का विधान है। इस दिन लगभग हर घर में विभिन्न प्रकार के पकवान आदि बनते हैं और भूमि या

दीवार पर नागों के चित्र बनाकर उन्हें इन सभी व्यंजनों का भोग लगाकर उनकी स्तुति करते हुए घर-परिवार की भलाई की कामना की जाती है।

वसाखी :

यह त्योहार वैशाख मास की संक्रांति को मनाया जाता है। इस दिन विक्रमी संवत् आरम्भ होता है और सारा वर्ष, ऋद्धि-सिद्धि, खुशहाली और सुख, समृद्धि में बीते ऐसी कामना से इस पर्व को मनाया जाता है दूसरा यह 'रबी' की फसल पक कर तैयार होने की खुशी में भी मनाया जाता है इसलिए इस पर्व पर स्नान-दान आदि धार्मिक कृत्यों के अतिरिक्त खाने-पीने, पहनने, नाचने-गाने आदि का भी उत्सव है। लोग आपस में मुबारकबाद देते एवं मिठाई भी बाँटते हैं। इस अवसर पर भंगड़ा नाच का प्रदर्शन भी होता है।

रामनवमी :

चैत्रमास के नवरात्रों की नवमी तिथि को यह पर्व मनाया जाता है। इस दिन भगवान राम का जन्म हुआ था। अतः मंदिरों में विशेष पूजा-अराधना, हवन-यज्ञ आदि होते हैं। कन्या-पूजन भी इस दिन विशेष रूप से होता है। मंदिरों आदि में मेले भी लगते हैं।



पाठ — 24
डोगरी लोकगीत
(डोगरी लोकगीत)

अम्मां : “तेरे मैहलें दे बिच-बिच
बे,” बाबल डोला अड़ी बो
गेआ।”

कमला : अम्मां। तुस बड़ा गै सुहाना
गीत गुनगनाऽ करदियां ओ।
केहड़ा गीत ऐ एह?

अम्मां : एह ‘सुहाग’ लोकगीत ऐ।
कुड़ी दे ब्याह उप्पर सुहाग
गाए जंदे न। एह सुहाग
कुड़ी सौहरे टोरदे बेल्लै गाया
जंदा ऐ।

कमला : अम्मां। सच्च गै इस गीतै च
बड़ी बेदन ऐ। में पुच्छना
चाहन्नी आं जे साढ़े डुग्गर
च किन्नी किस्में दे लोकगीत
प्रचलत न?

अम्मां : धिये, एह ते तूं बड़ी गै चंगी
गल्ल पुच्छी ऐ। नेई तां अज्जै-
कल्लै दियां कुड़ियां ते फिल्मी
गीत गै परसिंद करदियां न।

कमला : तुस जानदियां गै जे डुग्गर संस्कृति
कन्नै मिगी बड़ा मोह ऐ, कीजे

अम्मां : “तेरे मैहलें दे बिच-बिच
बे, बाबल डोला अड़ी बो
गेआ।”

कमला : अम्मां। आप बहुत ही मधुर
गीत गुनगुना रही हैं। कौन
सा गीत है यह?

अम्मां : यह ‘सुहाग’ लोकगीत है।
लड़की के विवाह पर सुहाग
गाए जाते हैं और यह सुहाग
लड़की ससुराल भेजते समय
गाया जाता है।

कमला : अम्मां। सच ही इस गीत में
बहुत वेदना है। मैं जानना
चाहती हूँ कि हमारे डुग्गर में
कितने प्रकार के लोक गीत
प्रचलित हैं?

अम्मां : कमला बेटी, यह तो तुमने
बहुत ही अच्छी बात पूछी है।
अन्यथा आजकल तो लड़कियाँ
फिल्मी गीत ही पसंद करती हैं।

कमला : आप तो जानती ही हैं कि डुग्गर
संस्कृति के साथ मुझे बहुत

मिगी अपनी धरती कन्नै
मता प्यार ऐ। इसै करी इस सुहाग
गीते दे बोल्ले मेरा दिल
छूही लेआ ऐ।

लगाव हैं, क्योंकि मुझे अपनी धरती
के साथ अति प्यार है। इसीलिए
इस सुहाग गीत के इन शब्दों ने
मेरा हृदय छू लिया है।

अम्मां : धिये, मिगी एह सुनिचै होर
मती खुशी होई ऐ जे तुगी
डुग्गर दे लोक गीतें कन्नै बी
प्यार ऐ।

अम्माँ : बेटी, मुझे यह सुनकर अति
प्रसन्नता हुई है कि तुम्हारा
डुग्गर के लोक गीतों के साथ भी
प्यार है।

कमला : प्यार ऐ तां गै ते तुन्दे कोला
इन्दे बारे च पुच्छा करनी आं।

कमला : प्यार है तभी तो आप से इनके
बारे में पूछ रही हूँ।

अम्मां : धिये, बड़ी चंगी सोच ऐ तेरी।

अम्माँ : बेटी, बहुत अच्छी सोच है
तुम्हारी।

कमला : अच्छा, हून मिगी तुस एह
दस्सो डुग्गर च केह्डे-केह्डे
लोक गीत गाए जंदे न ?

कमला : अच्छा अब मुझे यह बताइए
कि डुग्गर में कौन-कौन से
लोक गीत गाए जाते हैं ?

अम्मां : खरा। ध्यान लाइचै सुन।

अम्माँ : ठीक है। ध्यान से सुनो।

कमला : हां, सुना करनी आं।

कमला : हाँ, सुन रही हूँ।

अम्मां : साढ़े लोकगीत साढ़े जीवन दियें
सारियें गतिविधियें कन्नै जुड़े
दे न इस लेई में उरसै स्हाबै
कन्नै इन्दा वर्णन करन लगी आं।

अम्माँ : हमारे लोकगीत हमारे जीवन
की सभी गतिविधियों से
सम्बन्धित हैं इसलिए मैं उसी
क्रम से इनका वर्णन करती हूँ।

कमला : ठीक ऐ।

कमला : ठीक है।

अम्मां : बधावे लोक गीत खुशी दे हर
मौके पर गाए जंदे न ते
बेहाइयां जागतै दे जन्म उप्पर,

अम्माँ : 'बधावे' लोकगीत खुशी के हर
अवसर पर गाए जाते हैं और
'बेहाइयाँ' लड़के के जन्म पर,

मुन्नन, सूतरा, बरसगंठ आदि
मौके पर गाइयां जंदियां न।

कमला : अम्मां इन्दे लावा होर केहड़े—
केहड़े लोकगीत संस्कारें आदि
कन्नै सरबंधत न ?

अम्मां : कमला 'सुहाग' लोकगीत बारै
ते तुगी दस्सी गै ओड़ेआ ऐ।
जे कुड़ी दे ब्याह उपर गाए
जंदे न ते 'घोड़ियां' लोकगीत
जागतै दे ब्याह पर गाए जंदे
न। इ'ने संस्कार गीतें दे
इलावा डोगरी लोक गीतें दियां
होर बी मतियां किस्मां न।

कमला : अम्मां, एह होर गीत केहड़े—
केहड़े मौके पर गाए जंदे न ?

अम्मां : साढ़े जिन्ने बी पर्व हैन उन्दे
कन्नै सरबंधत गीत बी प्रचलत
न, जि'यां नरातें दे गीत—भेटां,
आरती, चूटी बगैरा, राहड़ें
दे गीत, लोहड़ी दे गीत,
बसाखी दे भांगड़े दियां बोलियां
ते सद्दां, शिवरात्रि दे मौके पर
शिव ब्याह बगैरा अनेकां गीत
इस डुग्गर संस्कृति दा अंग न।

कमला : अम्मां। खेतरे च कम्म करदे
बेल्लै बी लोक किश गांदे न

मुंडन, नामकरण, वर्षगाँठ आदि
अवसरों पर गाई जाती हैं।

कमला : अम्माँ, इनके अतिरिक्त और
कौन-कौन से लोकगीत संस्कारों
आदि से सम्बन्धित हैं ?

अम्माँ : कमला 'सुहाग' लोकगीत के
विषय में तो तुम्हें बता ही दिया
है कि लड़की के विवाह पर गाए
जाते हैं और 'घोड़ियां' लोक-
गीत लड़के के विवाह पर गाए
जाते हैं। इन संस्कार गीतों के
अतिरिक्त डोगरी लोकगीतों के
और भी कई प्रकार हैं।

कमला : अम्माँ। ये बाकी लोक गीत कौन-
कौन से अवसर पर गाए जाते हैं ?

अम्माँ : हमारे जितने भी पर्व—त्योहार हैं
उनसे सम्बन्धित गीत भी प्रचलित
हैं, जैसे नवरात्रों के गीत—भेटें,
आरती, चूटी (रात्रि भोज) वगैरा,
राहड़ों के गीत, लोहड़ी के गीत,
वैशाखी के भांगड़ा नाच की बोलियाँ,
शिवरात्रि के अवसर पर शिव—
विवाह आदि अनेक गीत इस
डुग्गर संस्कृति का अंग हैं।

कमला : अम्माँ। खेतों में कार्य करते
समय भी लोग कुछ गाते—

नां ?

अम्मां : हां कमला ! लोक कम्म काज करदे बेल्लै जेहड़े गीत गांदे न उ'नेंगी श्रम गीत आखदे न जि'यां सुहाड़ी, गरलोडी, लाद्दी, चक्की आदि गीत मुख्ख श्रमगीत न।

कमला : अम्मां। चक्की गीत ते चक्की पींहदे बेल्लै गांदे होने पर बाकी गीत केहड़े मौके पर गाए जंदे न ?

अम्मां : 'लाद्दी' गीत घरें—मकानें पर छत पांदे मौके, 'सुहाड़ी' गोडी करदे बेल्लै ते 'गरलोडी' शह्तीर आदि ढोंदे बेल्लै गाया जंदा ऐ।

कमला : अम्मां किश गीत ऐसे बी होडन जेहड़े खेढदे मौके गाए जंदे न ?

अम्मां : हां कमला उ'ब्बी गीत बथ्हेरे न। ज्याणें दिर्यें लगभग सभनें खेढें कन्नै कोई नां कोई गीत जुड़े दा ऐ, जि'यां कीकली, कौड़ी, अत्तर पत्तर, कोरड़ा शपाकी, ठीकरीमठीकरी बगैरा केई गीत न।

गुनगुनाते हैं न ?

अम्मां : हाँ कमला। लोग कामकाज करते समय जो गीत गाते हैं उन्हें श्रमगीत कहा जाता है, जैसे सुहाड़ी, गरलोडी, लाद्दी, चक्की आदि के गीत मुख्ख श्रमगीत हैं।

कमला : अम्माँ। चक्की गीत तो चक्की पीसते समय गाते होंगे पर बाकी गीत कौन से अवसर पर गाए जाते हैं ?

अम्माँ : 'लाद्दी' गीत घर—मकानों पर छत डालते समय, 'सुहाड़ी' गुडाई करते समय और 'गरलोडी' शहतीर आदि उठाते समय गाया जाता है।

कमला : अम्माँ कुछ गीत ऐसे भी होंगे जो खेलते समय गाए जाते हैं ?

अम्माँ : हाँ कमला वे भी बहुतेरे हैं। बच्चों की लगभग सभी खेलों से कोई न कोई गीत जुड़ा है। जैसे, कीकली, कबड्डी, अत्तर—पत्तर, कोरड़ा शपाकी, ठीकरीमठीकरी आदि केई खेलगीत हैं।

कमला : तां ते बड़े लोकगीत न डोगरी
च ?

कमला : तब तो बहुत से लोकगीत हैं
डोगरी में ?

अम्माँ : लोकगीत ते होर बी बड़े न
पर अज्ज इन्ने गै काफी न।
बाकी कल दस्सड।

अम्माँ : लोकगीत तो और भी बहुत हैं,
पर आज इतने ही काफी हैं।
बाकी कल बताऊँगी।

कमला : ठीक ऐ अम्माँ।

कमला : ठीक है अम्माँ।

EXERCISES

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखें :-

1. अम्माँ केहड़ा लोकगीत गुनगनाऽ करदी ही ?
2. 'सुहाग' लोकगीत केहड़े मौके पर गाया जंदा ऐ ?
3. जागत-जन्म दे मौके पर केहड़े लोकगीत गाए जंदे न ?
4. जागतै दे ब्याह पर केहड़े लोकगीत गाए जंदे न ?
5. सुहाड़ी केहड़ी किस्मा दा लोकगीत ऐ ?
6. कु'नें पअें लोक खेवें दे नां लिखो जि'न्दे कनै गीत बी गाए जंदे न।

2. रिक्त स्थानों में उपयुक्त शब्द भरिए :-

1. लाद्दी गीत घरें-मकानें पर पांदे मौके गाया जंदा ऐ।
2. घोड़ियां दे ब्याह पर गाइयां जंदियां न।
3. लोकगीत खुशी दे हर मौके पर गाए जंदे न।
4. लोकगीत कुड़ी दे ब्याह दे मौके पर गाए जंदे न।
5. कम्म-काज करदे बेल्लै जेहड़े गीत गाए जंदे न उ'नेगी आखदे न।

3. बहुवचन बनाइए और वाक्यों में प्रयोग भी कीजिए :-

लोकगीत, बिहाई, बधावा, सुहाड़ी, चक्की-गीत, सुहाग, भेंट।

4. डोगरी लोकगीतों के बारे में दस वाक्य लिखिए।

5. डोगरी में अनुवाद कीजिए :-

डोगरी लोकगीतों का डोगरी लोक साहित्य में विशेष स्थान है। इन गीतों के कई भेद हैं। इनका भाव पक्ष बहुत प्रबल है। इन गीतों के सौंदर्य को छंद और अलंकार कई गुणा बढ़ा देते हैं। लोक कथाओं की तरह ही लोकगीतों के भी कई संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। इनके प्रकाशन का काम जम्मू-कश्मीर अकैडेमी आफ़ आर्ट, कल्चर एण्ड लैंग्वेजिज़ ने अपने जिम्मे लिया हुआ है।

Vocabulary शब्दावली

सुहाग	डोगरी लोकगीतों की एक किस्म जो लड़की के विवाह पर गाए जाते हैं।	प्रचलत	प्रचलित
धरती	धरती	गतिविधियां	गतिविधिएं
मुन्नन	मुंडन संस्कार	सूतरा	नामकरण संस्कार
बरस गंढ	वर्ष गाँठ	बेदन	वेदन
भेंट	भेंट (भगती लोक गीतों की एक किस्म)	बेल्ला	समय
शह्तीर	शहतीर	लगभग	लगभग
कीकली	लड़कियों का एक खेल और उसका गीत	कौडी	कबड्डी
कोरड़ा- शपाकी	बच्चों का एक खेल जिसमें हारने वाले को कपड़े से मारा जाता है।	श्रमगीत	श्रमगीत
ठीकरी- मठीकरी	ठीकरी छुपा कर खेले जाने वाला एक खेल।	बथ्हेरे	बहुतेरे

सुहाग :

लड़की के विवाह पर गाए जाने वाले लोक गीतों को डुंगर में 'सुहाग' कहा जाता है। इनमें प्रायः लड़की का पीहर से बिछुड़ने का मार्मिक दर्द भरा होता है।

घोड़ी :

लड़के के विवाह पर गाए जाने वाले लोकगीतों को 'घोड़ियाँ' कहा जाता है। इनमें वर बधु के लिए मंगल कामना के साथ-साथ हँसी मजाक आदि का पुट भी होता है।

भेट :

डोगरी लोकगीतों के भक्ति गीतों का एक भेद है। इसमें किसी देवी-देवता की स्तुति की गई होती है।

आरती :

यह भी डोगरी का भक्ति लोकगीत है। जिसमें देवी-देवता की स्तुति अराधना करते हुए उसके गुणों का गायन होता है।

बधावे :

कुलदेवता की स्तुति में गाए जाने वाले लोकगीतों को डोगरी में बधावे कहा जाता है। किसी भी मंगल कार्य के आरम्भ में 'बधावे' गाए जाते हैं।

वेहाइयां :

यह संस्कार गीत है जो लड़के के जन्म, उसके नामकरण, संस्कार, मुंडन संस्कार आदि के समय खुशी में गाए जाते हैं।

कीकली :

यह खेलगीत का एक भेद है। दो लड़कियाँ मिल कर एक दूसरे की बाहें पकड़ कर गोल दायरों में तेज-तेज घूमती हैं जिसको 'कीकली पाना' कहते हैं और इस खेल के समय उक्त नामक गीत गाया जाता है।

कोरड़ा शपाकी :

यह भी खेलगीत है। इस खेल में सभी खेलने वाले एक दायरे में बैठ जाते हैं और खिलाड़ी उस दायरे के इर्द-गिर्द चक्कर लगाते हुए यह कहता चलता है “कोरड़ा शपाकी जुमेरात आई जे’तो बाकी के खिलाड़ी कहते हैं ‘जेहड़ा आगें-पिच्छें दिक्खै ओहदी शामत आई जे।’”

ठीकरीमठीकरी :

यह भी एक खेलगीत है। ठीकरी से खेला जाता है और खेलते समय इसे गाया जाता है।

अत्तर-पत्तर :

अत्तर-पत्तर खेल खेलते समय यह गीत गाया जाता है और इसे भी अत्तर-पत्तर नाम से पुकारा जाता है।

चूटी :

नवरात्रों के अवसर पर लड़कियाँ रोज सायंकाल मिल बैठ, प्रीती-भोज करती हैं जिसे ‘चूटी करना’ कहा जाता है और उस समय जो गीत गाया जाता है उसे चूटी का गीत कहते हैं।

सुहाड़ी :

यह एक श्रमगीत है। खेतों में बीज बोते, धान की पौध लगाते और गुड़ाई आदि करते समय प्रायः जो गीत गाए जाते हैं उन्हें डोगरी में ‘सुहाड़ी’ कहते हैं।

गरलोडी :

यह भी श्रमगीत है। मेहनत-मजदूरी करते, शहतीर उठाते-ढोते समय प्रायः गरलोडी नामक लोकगीत गाए जाते हैं।

लादूदी :

यह भी श्रमगीत का एक भेद है। घर-मकानों की छत डालते समय लादूदी नामक श्रमगीत गाए जाते हैं।

भाँगड़ा :

यह डुग्गर का एक प्रसिद्ध लोकनाच है जो विशेषकर मैदानी इलाके में नाचा जाता है। वैशाखी के उत्सव पर डुग्गर में भाँगड़ा नाच का विशेष रंग होता है। इस नाच के लिये विशेष प्रकार के लोक गीत गाए जाते हैं, जिन्हें 'बोलियां', 'सद्दां' कहा जाता है। 'बोलियां' सद्दां विशेष आह्वान के साथ कुछ गाकर कहा जाता है और भाँगड़ा नाच नाचा जाता है।



डोगरी साहित्य दा परिचे (डोगरी साहित्य का परिचय)

दीपक : मनिराम दो कप चाह मक्खन
टोस्ट लेई आ।

मनिराम : बेहतर जनाब, हूनै लेई
औन्नां।

राजू : दीपक, अज्जकल केह
लखोआ दा ऐ ?

दीपक : 'वत्स विकल' दा उपन्यास 'फुल्ल
बिना डाहल्ली' पढ़ियै मकाया
ऐ ते गजल लिखने दा मूड
बने दा ऐ अज्जकल।

राजू : अच्छा। तां ते कमाल ऐ।
सनाऽ हां कोई ताजा गजल।

दीपक : इस बेल्लै पूरी गजल चेतै
नेई ऐ। कल्ल सनाड। में डोगरी
साहित्य दा इतिहास नां दी
कताब खरीदना चाहन्नां,
भलां कुत्थूं दा ध्होग ?

राजू : 'डोगरी साहित्य दा इतिहास'
तूं केह करना ? मतेहान देना
ऐ के ?

दीपक : नेई मतेहान ते नेई देना, पर

दीपक : मनीराम दो कप चाय और
मक्खन-टोस्ट ले आओ।

मनिराम : बेहतर जनाब, अभी लाता
हूँ।

राजू : दीपक, आजकल क्या लिखा
जा रहा है ?

दीपक : वत्स विकल का उपन्यास 'फुल्ल
बिना डाहल्ली' पढ़कर समाप्त
किया है और गजल लिखने का
मूड है आजकल।

राजू : अच्छा। तब तो कमाल है।
सुनाओ तो ज़रा कोई ताजा गजल।

दीपक : इस समय पूरी गजल याद
नहीं, कल सुनाऊँगा। मैं
'डोगरी साहित्य दा इतिहास'
नाम पुस्तक खरीदना चाहता
हूँ, भला कहाँ से मिलेगी।

राजू : 'डोगरी साहित्य दा इतिहास'
तुम्हें क्या करना है ? परीक्षा
देनी है क्या ?

दीपक : नहीं परीक्षा तो नहीं देनी, पर

डोगरी लेखकें ते उन्दियें
रचनाएं बारै मुख्तसर जनेही
जानकारी हासल करना
चाहन्नां।

डोगरी लेखकों और उनकी
रचनाओं के विषय में
मुख्तसर सी जानकारी प्राप्त
करना चाहता हूँ।

राजू : जे एह गल्ल ऐ तां पुछदा
चल पही, केह पुछना ऐ ?

राजू : यदि यह बात है तो फिर पूछते
चलो, क्या पूछना है ?

दीपक : राजू, डोगरी साहित्य गी
पढ़ना होऐ तां पैहले केह पढ़ना
चाहिदा ऐ ?

दीपक : राजू, डोगरी साहित्य को
पढ़ना हो तो पहले क्या पढ़ना
चाहिए ?

राजू : कहानी पढ़ो, उपन्यास पढ़ो,
लेख, निबन्ध बगैरा जो किश
भी चाहो पढ़ी सकदे ओ।

राजू : कहानी पढ़, उपन्यास पढ़,
लेख, निबन्ध वगैरा जो कुछ
भी चाहो पढ़ सकते हैं।

दीपक : कविता की नेई ?

दीपक : कविता क्यों नहीं ?

राजू : शुरू-शुरू च गद्य पढ़ो पद्य बाद
च पढ़ेओ। कविता दा आनन्द गै
बक्खरा ऐ ओह बी जेकर कवि
दे मुहां सुनी जा तां आनन्द दी
क्या बात ऐ। पर जेकर तुसेंगी
कविता पसंद ऐ तां तां कविता
कनै शुरू करी सकदे ओ।

राजू : शुरू-शुरू में गद्य पढ़ पद्य बाद
में पढ़ना। कविता का आनन्द
ही अलग है वह भी यदि कवि
की वाणी में सुनी जाए तो
आनन्द की क्या बात है। पर,
यदि आपको कविता पसंद है
तो कविता से शुरू कर सकते हैं।

दीपक : में जानना चाहन्नां जे डोगरी
साहित्य दा रम्भ भला कविता
कनै गै होआ हा जां कहानी
आदि कनै ?

दीपक : मैं जानना चाहता हूँ डोगरी
साहित्य का आरम्भ भला
कविता से ही हुआ था या
कहानी आदि से ?

राजू : हर भाशा आह्ला लेखा

राजू : हर भाषा की भाँति डोगरी में

डोगरी च बी पैहले कविता
गै सिरजी गई ही।

भी पहले कविता ही लिखी
गई थी।

दीपक : डोगरी कविता दा सभनें थमां
पराना नमूना कदूं दा मन्नेआ
जंदा ऐ ?

दीपक : डोगरी कविता का सब से
पुराना नमूना किस समय का
माना जाता है ?

राजू : अज्जै तगर होई दी खोज
मताबक सोहलमी सदी दे
मानक चंद होर पैहले डोगरी
कवि हे।

राजू : आज तक हुई खोज के
अनुसार सोलहवीं सदी के
मानक चंद डोगरी के पहले
कवि थे।

दीपक : ते पैहला कहानीकार कु'न हा ?

दीपक : तो पहला कहानीकार कौन था।

राजू : डोगरी दे पैहले कहानीकार
भगवत्प्रसाद साठे हे।

राजू : डोगरी के पहले कहानीकार
भगवत्प्रसाद साठे थे।

दीपक : उन्दे कहानी संग्रह दा नां केह
ऐ ?

दीपक : उनके कहानी संग्रह का नाम क्या
है ?

राजू : 'पैहला फुल्ल'

राजू : 'पैहला फुल्ल'।

दीपक : बाह भाई। नां ते बड़ा सार्थक ऐ।
तुस इस संग्रह दियां कहानियां
पढ़ी चुके दे होगेओ ?

दीपक : बाह भाई। नाम तो बहुत सार्थक
है। आप इस संग्रह की कहानियाँ
पढ़ चुके होंगे ?

राजू : चरोकनियां पढ़ी चुके दा आं
में इन्दे दुए संग्रह 'खालीगोद'
दियां बी सब्भै कहानियां
पढ़ी लेई दियां न।

राजू : बहुत देर से पढ़ चुका हूँ। मैंने
तो इनके दूसरे कहानी संग्रह
'खालीगोद' की भी सभी
कहानियाँ पढ़ ली हैं।

दीपक : अम्मी पढ़ना चांहड पर एह कताबां
कु'त्थूं थोई सकदियां न ?

दीपक : मैं भी पढ़ना चाहूँगा, परन्तु ये
किताबें कहाँ से मिल सकती हैं ?

राजू : डोगरी संस्था, कर्णनगर थमां
जां फही कल्चरल अकैडमी
दे बाहर 'किताबघर' थमां लेई
सकदे ओ ते लायब्रेरियें चा बी
लेई सकदे ओ।

दीपक : राजू, तुस भिगी डोगरी
साहित्य दे चोनमें-चोनमें
लेखकें-साहित्यकारें दे ते
उन्दियें खास-खास रचनाएं
दे नां दस्सी सकदे ओ ?

राजू : की नेई ? आधुनिक डोगरी
साहित्य असल च इस सदी दे
चौथे दहाके च गै लखोना शुरू
होआ।

दीपक : इसदे पैहलें दा साहित्य मिलदा
नेई होना।

राजू : पैहले शायद लखोई-छपोई
गै नेई हा सकेआ।

दीपक : फही चानचक्क एह सीर
कि'यां फुटी पेई ?

राजू : भारत दे हर प्रान्ता च देश
व्यापी सांस्कृतिक चेतना दी
लैहर जित्थै-जित्थै पुज्जी
उत्थूं दी जनता दे मना च

राजू : डोगरी संस्था, कर्ण नगर से
या फिर कल्चरल अकैडमी के
बाहिर 'किताबघर' से खरीद
सकते हो और लायब्रेरियों से
भी ले सकते हो।

दीपक : राजू, तुम मुझे डोगरी साहित्य
के चुने हुए कवियों, लेखकों
तथा उनकी खास खास
रचनाओं के नाम बतला
सकते हो ?

राजू : क्यों नहीं ? आधुनिक डोगरी
साहित्य वास्तव में शताब्दी के
चौथे दशक में ही लिखा जाना
आरम्भ हुआ था।

दीपक : इससे पहले का साहित्य तो
मिलता ही नहीं होगा।

राजू : पहले शायद लिखा भी नहीं
गया होगा और न ही छपा जा
सका होगा।

दीपक : फिर अचानक यह स्रोत कैसे
फूट पड़ा था ?

राजू : भारत के प्रत्येक प्रान्त में देश
व्यापी सांस्कृतिक चेतना की
लहर जहाँ-जहाँ पहुँची वहाँ कि
जनता के मन में अपनी मातृभाषा

आपनी मां-भाशा ते अपने
सांस्कृतिक बिरसे गी जीवत
करने दी तांहग जागी पेई।

और अपनी सांस्कृतिक
विरासत को जीवित रखने
की ललक जाग पड़ी थी।

दीपक : पही केहू होआ ?

दीपक : फिर क्या हुआ ?

राजू : केहू होना हा ? कवियें, कहानी
कारें कलम फगड़ी लेई ते दीनू
भाई पन्त होरें जोरदार सुरै
च कवितां लिखियै डोगरा
कौम गी झुनकेआ। डोगरी
भाशा गी लोकप्रिय बनाया।
डोगरें गी डोगरी बोलने ते
डोगरी च लिखने लेई
प्रेरेआ।

राजू : क्या होना था ? कवि और
कहानी कारों ने कलम उठा
ली और दीनू भाई पन्त ने
प्रबल सुर में कविता लिखकर
डोगरा समाज को झकझोरा।
इस प्रकार उन्होंने डोगरी
भाषा को लोक प्रिय बनाया।
डोगरों को डोगरी भाषा
बोलने और डोगरी में लिखने
के लिए प्रेरित किया।

दीपक : बड़ा गै चंगा कम्म कीता।
उसदे बाद डोगरी साहित्य च
दिनोदिन बाद्धा होन लगी
पेआ होना ऐ ?

दीपक : बड़ा ही प्रशंसा योग्य कार्य
किया। उसके बाद डोगरी
साहित्य में दिन प्रति दिन
वृद्धि होती गई होगी ?

राजू : बिलाशक सन् 1960 दे
लगभग डोगरी च त्रै उपन्यास
'शानो', 'हाड़, बेड़ी ते पत्तन'
ते 'धारां ते धूड़ां' छपियै सामने
आए। सन् 1961 ई. च
'त्रिवेणी' निबन्ध संग्रह छपी
गेआ। नाटक दा मुंढ 1935 ई.

राजू : निस्सन्देह। सन् 1960 ई
के लगभग डोगरी में तीन
उपन्यास 'शानो' 'हाड़, बेड़ी
ते पत्तन' और 'धारा ते धूड़ां'
छपकर सामने आए। सन
1961 में 'त्रिवेणी' निबन्ध
संग्रह छपकर तैयार हुआ।

च गै पेई चुके दा हा।

नाटक का श्रीगनेश सन्

1935 में ही हो चुका था।

दीपक : कुन्न लिखेआ हां ओह पैह्ला
नाटक ते उसदा केह नां ऐ ?

दीपक : वह पहला नाटक किसने
लिखा था ? और उसका नाम
क्या था ?

राजू : ओह पैह्ला नाटक पूरा नाटक
नेई हा, बल्के नाटक दा इक
भेद एकांकी हा। 'अछूत' नां
दे इस एकांकी दे लेखक हे
विश्वनाथ खजूरिया होर।

राजू : वह पहला नाटक पूरा नहीं था।
बल्कि नाटक का एक भेद
एकांकी था। 'अछूत' नामक
इस नाटक के लेखक थे
स्व० विश्वनाथ खजूरिया।

दीपक : केह भला डोगरी च साहित्य दियां
होर विधां बी मिलदियां न ?

दीपक : क्या डोगरी में साहित्य की
अन्य विधाएं भी मिलती हैं ?

राजू : की नेई ? 'बदली कलावे' नां
दा गीत संग्रह 'अस ते आं
बनजारे लोक' नां दा गजल
संग्रह 'रामायण' ते जित्तो' नां
दे महाकाव्य, 'शेरे लाला हंसराज
महाजन दी जीवनी, 'पगडंडियां'
नां दी आत्मकथा 'पैहलियां
बांगां' नां दा साँन्नट संग्रह
'सोध समुन्दरें दी' नां दा
चमुखा संग्रह, 'गूढे धुंधले
चेहरे' नां दा रेखा चित्र
संग्रह, 'डोगरी साहित्य
चर्चा' ते त्रै डोगरी साहित्य
दे इतिहास बगैरा सुद्धा

राजू : क्यों नहीं ? 'बदली कलावे'
नामक गीत संग्रह 'अस ते आं
बनजारे लोक' नामक गजल
संग्रह 'रामायण' और
'जित्तो' नामक महाकाव्य
'शेरे डुग्गर लाला हंस राज'
नामक जीवनी, 'पगडंडिया'
नामक, आत्मकथा
'पैहलियां बांगां' शीर्षक से
साँन्नट संग्रह, 'सोध समुन्दर
दी' नामक चपक्ती का संग्रह,
'गूढे-धुंधले चेहरे' नामक
रेखा चित्र संग्रह 'डोगरी
साहित्यचर्चा' और तीन

किश ऐ।

डोगरी साहित्य के इतिहास
आदि बहुत कुछ है।

दीपक : दूइयें भाशाएं दे अनुवाद बी
डोगरी च होए दे होने न ?

दीपक : दूसरी भाषाओं से अनुवाद
भी डोगरी में किये गए होंगे ?

राजू : हां, डोगरी दा पैह्ला अनुवाद
'धर्मपुस्तक' 1818 ई. च
छपेआ हा। फही संस्कृत, हिन्दी,
अंग्रेज़ी उर्दू, बंगला, मलयालम
आदि भाशाएं दियें साहित्यक
रचनाएं दे अनुवाद बी होदे
रेह न।

राजू : हाँ, डोगरी का पहला अनुवाद
'धर्मपुस्तक' सन् 1818
प्रकाशित हुआ था। फिर
संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेज़ी, उर्दू,
बंगला, मलयालम आदि
भाषाओं की साहित्यिक
रचनाओं के अनुवाद भी होते
रहे हैं।

दीपक : इसदा मतलब ऐ जे इसलै
डोगरी साहित्य च बड़ा किश
ऐ।

दीपक : इसका अभिप्राय है कि इस
वक्त डोगरी साहित्य में बहुत
कुछ है।

राजू : जरूर। अज्जकल किश
पत्रिका ते अखबारां बी
डोगरी च छपा करदियां न।

राजू : अवश्य। आजकल कुछ
पत्रिकाएं और समाचार पत्र
भी डोगरी में छप रहे हैं।

दीपक : राजू जी तुन्दा मता—मता
धन्यवाद। तुसें मुख्तसर
हारी गल्ला बाता राहें
मिगी डोगरी साहित्य कन्नै
बाकवी करोआई दिक्ती ऐ।

दीपक : राजू जी, आपका बड़ा
धन्यवाद। आपने संक्षिप्त सी
बात—चीत से मुझे डोगरी
साहित्य के साथ परिचित
करवा दिया है।

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :-

1. राजू 'डोगरी साहित्य दा इतिहास' की खरीदना चांहदा ऐ?
2. डोगरी साहित्य दा रम्भ केहड़ी विधा कन्नै होआ हा?
3. डोगरी कविता दा सभनें थमां पराना नमूना कदूं दा मन्नेआ जंदा ऐ?
4. डोगरी दा पैहला कहानीकार कु'न हा?
5. 'पैहला फुल्ल' केहड़ी विधा दी रचना ऐ?
6. आधुनिक डोगरी साहित्य दा मुंढ कदूं पेआ?
7. डोगरें गी डोगरी च लिखने दी प्रेरणा कु'न्न दिती?
8. 'त्रिवेणी' संग्रैह कदूं छपेआ?
9. डोगरी दा पैहला अनुवाद केहड़ा ऐ ते एह कदूं छपेआ हा?
10. 'रामायण' केहड़ी विधा दी रचना ऐ?

2. उदाहरण का अनुसरण करते हुए कथनों को सही कीजिए :-

उदाहरण : 'पैहला फुल्ल' कविता संग्रैह ऐ।

पैहला फुल्ल कविता संग्रैह नेई कहानी संग्रैह ऐ।

1. रामायण इक उपन्यास ऐ?
2. 'अस ते आं बनजारे लोक' गीतें दा संग्रैह ऐ।
3. डोगरी दा पैहला कवि दत्तु गी मन्नेआ गेआ ऐ।
4. 'फुल्ल बिना डाहल्ली' मदन मोहन शर्मा दा उपन्यास ऐ।
5. डोगरी दे पैहले कहानीकार नरेन्द्र खजूरिया न।

3. निम्नलिखित शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुन कर रिक्त स्थान भरिए :-

विश्वनाथ खजूरिया, मूड, अछूत, त्रै, गीत

1. गज़ल लिखने दाबने दा ऐ।
 2. सन् 1960 दे लगभग डोगरी च उपन्यास छपे।
 3. डोगरी दे पैहले एकांकी दा नां ऐ।
 4. 'अछूत' एकांकी दे रचनाकार होर न।
 5. 'बदली कलावे' इक संग्रह ऐ।
4. शब्दों को उचित क्रम में प्रयोग करके वाक्य बनाएँ :-

1. कोई हां गज़ल ताजा सनाऽ।
2. केह अज़कल दा लखोआ ऐ।
3. पैहले गै सिरजी कविता गई च बी डोगरी।
4. कहानी दा उन्दे संग्रह ऐ नां केह?
5. पैहला हा ओह कुन्न नाटक लिखेआ?

5. पढ़िए, समझिए और लिखिए :-

लिखेआ लिखेआ गेआ

मकाया मकाया गेआ

सनाया

दित्ता

छापेआ

प्रेरेआ

दस्सेआ

Vocabulary शब्दावली

चाह	चाय, चाह	गज़ल	गज़ल
मुख्तसर	संक्षिप्त	बक्खरा	अलग
सिरजना	सृजना	नमूना	नमूना, उदाहरण
खोज	खोज	मताबक	अनुसार, मुताबक
सार्थक	सार्थक	चरोकना	बहुत देर का
चोनमां	चुनींदा	दूहाका	दशक
चानचक्क	अचानक	सीर	सीर
लैहर	लहर	जीवत	जीवित
तांहग	ललक, इच्छा	सुर	स्वर, सुर
बादूधा	बढ़ोतरी	मुंढ	आरम्भ, शुरुआत, शुरू
विलाशक	बिलाशक	सुद्धा	बहुत
बाकवी	परिचय		



